

डॉ० रमेश पोखरियाल निशंक जी के उपन्यासों में राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना

पी०के० विश्वविद्यालय शिवपुरी (म०प्र०)
से
हिन्दी विषय में पीएच०डी० उपाधि हेतु
प्रस्तुत

शोध—प्रबन्ध

शोधार्थी

श्रीमती लक्ष्मी देवी

नामांकन सं.-161595214147

शोध निर्देशिका

डॉ० ब्रजलता शर्मा

हिन्दी विभाग



2025

पी०के० विश्वविद्यालय, शिवपुरी (म०प्र०)

ग्राम—थनरा, पोस्ट—दिनारा, तहसील—करैरा, एन०एच०—27, शिवपुरी (म.प्र.) पिन—473551

Website: www.pkuniversity.edu.in

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी



घोषणा-पत्र

मैं लक्ष्मी देवी (शोध छात्रा), घोषणा करती हूँ कि हिंदी विभाग पी.के. विश्वविद्यालय शिवपुरी (म.प्र.) के अन्तर्गत "डॉ० रमेश पोखरियाल निशंक जी के उपन्यासों में राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना" विद्यावाचस्पति (पी-एच.डी.) उपाधि हेतु यह शोध प्रबन्ध मेरी स्वयं की मौलिक रचना है। इसके पूर्व यह शोध कार्य किसी अन्य के द्वारा कहीं भी प्रस्तुत नहीं किया गया है।

अपना यह शोध कार्य मैंने परम श्रेष्ठ शोध निर्देशिका डॉ० ब्रजलता शर्मा, हिंदी विभाग पी.के. विश्वविद्यालय शिवपुरी (म.प्र.) के निर्देशन में पूर्ण किया है। विद्यविद्यालय नियमावली धारा-07 के अन्तर्गत अपने शोध केन्द्र पर निर्धारित मानक के अनुरूप उपस्थित रहकर निर्देशिका महोदया के निर्देशन में मैंने स्वयं पूर्ण किया है।

दिनांक: 25.08.2025

लक्ष्मी देवी
शोधार्थी

लक्ष्मी देवी



पी०के० विश्वविद्यालय

(यूजीसी अधिनियम 1956 की धारा 2एफ के तहत मध्य प्रदेश सरकार के अधिनियम संख्या 17, 2015 के अनुसार स्थापित विश्वविद्यालय)
ग्राम-भानरा, तहसील-करैरा, पोस्ट-दिनारा, एनएच-27, शिवपुरी (MP) पिनकोड-473665

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि लक्ष्मी देवी ने 'डॉ० रमेश पोखरियाल निशंक जी के उपन्यासों में राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना' शीर्षक पर मेरे निर्देशन में शोध-प्रबन्ध पूर्ण किया।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध सामग्री मौलिक है। यह सम्पूर्ण या आंशिक रूप से किसी परीक्षा के लिए प्रयोग नहीं की गयी है। यूजीसी विनियम 2018 के अनुसार शोधार्थी का शोध कार्य किसी अन्य शोध-प्रबन्ध की अनुकृति नहीं है।

इन्होंने मेरे निर्देशन में 240 दिन से अधिक उपस्थित होकर शोध कार्य पूर्ण किया है।

मैं संस्तुति करती हूँ कि यह शोध प्रबन्ध इस योग्य है कि मूल्यांकन हेतु विश्वविद्यालय को प्रस्तुत किया जाये।

- I. अभ्यर्थी द्वारा स्वयं किए गए कार्य का प्रतीक है।
- II. विधिवत पूरा किया गया है।
- III. विश्वविद्यालय की पीएच.डी. उपाधि से संबंधित अध्यादेश की आवश्यकताओं को पूरा करती है।

शोध निर्देशिका

दिनांक: 25/8/2025

प्रो० (डॉ०) ब्रजलता शर्मा



P.K. UNIVERSITY

(University established under section 2f of UGC act 1956 vide mp government act no 17 of 2015)

Village- Thanra Tehsil, Karera NH 27 District Shivpuri M.P.)

FORWARDING LETTER OF HEAD OF INSTITUTION

The Ph.D. thesis entitled, 'डॉ. रमेश पोखरियाल निशंक जी के उपन्यासों में राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना' Submitted by Shri/Smt./Ku. लक्ष्मी देवी (नामांकन- 161595214147) is forwarded to the university in six copies. The candidate has paid the necessary fees and there are no dues outstanding against him/her.

Name Prof. Dr. Mahalakshmi Jha

Seal



Date:

Place: P.K. University Shivpuri

.....
PAV

(Signature of Head of Institution where the Candidate was registered for Ph.D degree)

Bhooma
Signature of the

Supervisor Date: 25/08/2025

.....

Place: १५-८-२५

Address:

.....

कॉपीराइट हस्तांतरण प्रमाण-पत्र

थीसिस का शीर्षक : "डॉ० रमेश पोखरियाल निशंक जी के उपन्यासों में राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना"

उम्मीदवार का नाम : श्रीमती लक्ष्मी देवी

कॉपीराइट हस्तांतरण

अधोहस्ताक्षरी एतद्वारा पी०के० विश्वविद्यालय को पीएच०डी० की उपाधि प्रदान करने के लिए प्रस्तुत उपरोक्त थीसिस के सभी कॉपीराइट सौंपते हैं।

दिनांक: 25.08.2025

स्थान: पी०के० विश्वविद्यालय
सी०ग०

लक्ष्मी देवी
श्रीमती लक्ष्मी देवी



P.K. UNIVERSITY

(University established under section 2f of UGC act 1956 vide mp government act no 17 of 2015)

Village- Thanra, Tehsil- Karera, NH 27 District Shivpuri (M.P.)



The Report is Generated by DrillBit Plagiarism Detection Software

Selected Language

Hindi

Submission Information

Author Name	लक्ष्मी देवी
Title	डॉ०रमेश पोखरियाल निशंक जी के उपन्यासों में राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना
Paper/Submission ID	2569064
Submitted by	library.pku@gmail.com
Submission Date	2024-11-23 13:27:10
Document type	Thesis

Result Information

Similarity

1%

A Unique QR Code use to View/Download/Share Pdf File





P.K. UNIVERSITY
SHIVPURI (M.P.)

University Established Under section 2F of UGC ACT 1956 Vide MP Government Act No 17 of 2015

CENTRAL LIBRARY

Ref. No. PKU/C.LIB /2025/PLAG. CERT./ 208

Date: 12.07.2025

CERTIFICATE OF PLAGIARISM REPORT

1. Name of the Research Scholar : Laxmi Devi
2. Course of Study : Doctor of Philosophy (Ph.D.)
3. Title of the Thesis : डॉ. रमेश पोखरियाल निशंक जी के उपन्यासों में
राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना
4. Name of the Supervisor : Dr. Brajlata Sharma
5. Department : Art
6. Subject : Hindi
7. Acceptable Maximum Limit : 10% (As per UGC Norms)
8. Percentage of Similarity of
Contents Identified : 1%
9. Software Used : Drillbit
10. Date of Verification : 23.11.2024

Nalini
(Librarian, Central Library)
P.K. University, Shivpuri (M.P.)
LIBRARIAN
P.K. University
Shivpuri (M.P.)

ADD: VIL: THANRA, TEHSIL: KARERA, NH-27, DIST: SHIVPURI (M.P.) -473665
MOB: 7241115902, Email: library.pku@gmail.com

आभार

सर्वप्रथम मैं ज्ञान की देवी माँ सरस्वती एवं देवों में प्रथम देव श्री गणेश जी का वन्दन करती हूँ, जीवन में किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने में मजबूत इच्छा शक्ति के अलावा अन्य लोगों की आशाओं प्रेम व सहायता की भी आवश्यकता पड़ती है, जिससे हम अपने लक्ष्य को प्राप्त करते हैं। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को पूर्ण करने में जिन विद्वानजनों ने अपना बहुमूल्य योगदान तथा सुझाव दिया उन सभी के प्रति मैं अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करना अपना नैतिक कर्तव्य समझती हूँ। शोध प्रबन्ध की पूर्णता उन्हीं श्रेष्ठजनों को समर्पित करती हूँ।

सर्वप्रथम मैं पी०के० विश्वविद्यालय के श्री जगदीश प्रसाद शर्मा (माननीय कुलाधिपति), प्रो० (डॉ०) योगेश चन्द्र दुबे (माननीय कुलपति), प्रो० मुकेश चंसोरिया (प्रति कुलपति), डॉ० जितेन्द्र मिश्रा (प्रशासनिक निदेशक), डॉ० जितेन्द्र मलिक (रजिस्ट्रार), डॉ० ऐमन फातिमा (शैक्षणिक डीन), डॉ० भास्कर नल्ला (अनुसंधान डीन) और डॉ० रजनी जी के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ, जिनके सहयोग से मेरा यह शोध प्रबन्ध कार्य पूर्ण हुआ।

शोध प्रबन्ध को पूर्ण कराने में कुशल मार्गदर्शन और निर्देशन महत्वपूर्ण भूमिका डीन कला संकाय डॉ० महालक्ष्मी जौहरी जी का भी विशेष सहयोग के लिए आत्मिक आभार व्यक्त करती हूँ। मैं अपनी निष्ठा और सहृदय का पी०के० विश्वविद्यालय के विद्वानजनों का कोटि-कोटि आभार प्रकट करती हूँ जिन्होंने मुझे यह शोधकार्य करने का अवसर प्रदान किया। इस शोध कार्य को पूर्ण करने के समय काल में मुझे एक नवीन जीवन की अनुभूति हुई एवं बहुत कुछ सीखने को मिला है। क्योंकि हम हर समय कुछ-न-कुछ सीखते रहते हैं इसलिए मन की अनन्त गहराइयों से हार्दिक अभिनन्दन व्यक्त करते हुए मैं बार-बार विश्वविद्यालय के प्रत्येक सदस्य सहयोग एवं कृतज्ञता के लिए सहृदय आभार प्रकट करती हूँ।

मेरे इस प्रस्तुत शोध कार्य की निर्देशिका एवं मेरी मार्गदर्शिका आदरणीय प्रो० (डॉ०) ब्रजलता शर्मा जी को मैं हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने अपने अनुभवी एवं कुशल निर्देशन में इस शोध कार्य को सार्थक रूप देने में मुझे सहयोग प्रदान किया एवं समय-समय

समय-समय पर मेरा मार्गदर्शन किया। आपके कुशल निर्देशन में ही प्रस्तुत शोध कार्य अन्तिम रूप में पहुँच पाया, जिसका मैं सहृदय आभारी रहूँगी।

मैं अपने पूर्ण मन से परमपूज्यनीय डॉ० रमेश पोखरियाल निशंक जी का कोटि-कोटि आभार व्यक्त करती हूँ जिनके उपन्यासों पर मुझे शोध कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैं डॉ० बैचन कण्डियाल जी का भी सहृदय आभार प्रकट करती हूँ जिन्होंने मुझे समय-समय पर अपना अनुमोल सहयोग देकर मेरी समस्याओं का निराकरण करने में सहयोग दिया। इस शोध कार्य के दौरान विशेष समर्थन और सहयोग के लिए मैं अपने पति डॉ० लक्ष्मण सिंह जी का भी हार्दिक आभार करना चाहूँगी जिनके बिना यह शोध कार्य सम्पन्न होना असम्भव था। मेरे पति का विशेष रूप से योगदान इस शोध प्रबन्ध में रहा है।

अतः इस मनुष्य जीवन में इनकी अर्द्धांगिनी बनने का सौभाग्य और इस शोध कार्य द्वारा जीवन की सार्थकताएं सिद्धि के मार्ग पर इनके सहयोग प्राप्त करने के लिए जरूर मेरे किन्ही प्रारब्ध सुकर्मों का ही फल है। साथ ही अपने दोनों बच्चों वर्षा सिंह और ऋषभ का भी बहुत आभार व्यक्त करती हूँ कि मेरे शोध कार्य के दौरान इनका भी पूर्ण स्नेह मिला।

मैं प्राचार्य डॉ० पी०एस० जंगवाण राजकीय महाविद्यालय गुप्तकाशी (विद्यापीठ), रुद्रप्रयाग (उत्तराखण्ड) का भी आभार व्यक्त करती हूँ कि जो मुझे अपना बहुमूल्य समय देकर सलाह तथा अपना मार्गदर्शन देते रहते हैं।

मैं अपनी माता जी श्रीमती मन्दोदरी देवी जी एवं पिता जी स्व० श्री जीत सिंह राणा जी एवं अपने चारों भाईयों श्री पुष्कर सिंह राणा, श्री सुखदेव सिंह राणा, श्री लक्ष्मण सिंह राणा, श्री बिजेन्द्र सिंह राणा का भी विशेष आभार प्रकट करती हूँ कि इन्होंने इस शोध कार्य में मेरा सहयोग प्रदान किया।

इस शोध प्रबन्ध के लेखन में मैंने त्रुटियों से बचने का यथा संभव प्रयास किया है तथा त्रुटियों का रह जाना स्वाभाविक ही है। इसलिए मैं क्षमा प्रार्थी हूँ।

दिनांक: 25.08.2025

लक्ष्मी देवी
शोधार्थी

लक्ष्मी देवी

अनुक्रमणिका

अध्याय	विवरण	पृ०सं०
	प्रस्तावना	01-02
अध्याय- 1	डॉ० 'निशंक' जी का व्यक्तित्व	03-40
1.1	डॉ० 'निशंक' जी का पारिवारिक जीवन	05-07
1.2	डॉ० 'निशंक' जी का राजनीतिक जीवन	07-16
1.3	डॉ० 'निशंक' जी का सामाजिक परिवेश	16-23
1.4	डॉ० 'निशंक' जी के व्यक्तित्व के प्रेरक प्रसंग	23-40
अध्याय-2	डॉ० 'निशंक' जी का कृतित्व	41-70
2.1	डॉ० 'निशंक' जी की प्रकाशित कृतियाँ	42-46
2.2	डॉ० 'निशंक' जी का काव्य जगत	46-51
2.3	डॉ० 'निशंक' जी का कथा साहित्य	51-68
2.4	कथा साहित्य का निष्कर्ष	68-70
अध्याय-3	डॉ० 'निशंक' जी के उपन्यासों का संसार	71-120
3.1	उपन्यास साहित्य का इतिहास	71-72
3.2	उपन्यास का उद्भव और विकास	72-78
3.3	हिन्दी उपन्यासों का वर्गीकरण	78-81
3.4	डॉ० 'निशंक' जी के प्रारम्भिक काल	81-114
3.5	डॉ० 'निशंक' जी के उपन्यासों का वर्गीकरण	114-120
अध्याय-4	राष्ट्र और राष्ट्रीयता	121-154
4.1	राष्ट्र की परिभाषा और विकास	122-135

4.2	राष्ट्र की वर्तमान स्थिति	135-137
4.3	डॉ० 'निशंक' जी के उपन्यासों में राष्ट्रीय चेतना	137-138
4.4	चेतना का अर्थ एवं राष्ट्रीय चेतना	138-154
अध्याय-5	संस्कृति का स्वरूप	155-189
5.1	संस्कृति की परिभाषा एवं प्रकार	157-163
5.2	संस्कृति का वर्तमान स्वरूप	163-164
5.3	डॉ० 'निशंक' जी के उपन्यासों में सांस्कृतिक चेतना	165-166
5.4	डॉ० 'निशंक' जी के उपन्यासों में संस्कृति एवं संस्कार	166-189
अध्याय-6	उपसंहार	190-197
	संदर्भ ग्रंथ सूची	198-204
	डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी से साक्षात्कार	205-207

सार

किसी भी साहित्यिक कृति को समझने के लिए साहित्यकार की व्यक्तिगत यात्रा एवं उनके विचारों को समझना आवश्यक है। डॉ. रमेश पोखरियाल “निशंक” जी को एक उपन्यासकार, एक कवि व लेखक के रूप में जानने समझने के लिए उनके लिखे गए साहित्य ही दर्पण है, क्योंकि एक उपन्यासकार का व्यक्तित्व किसी ना किसी रूप में अपने जीवन और समाज से प्रभावित एवं प्रेरित करने वाला होता है। उन्होंने साहित्य के जगत में अनेक प्रकार की विधाओं की रचना की, चाहे उपन्यास हो या कविताएं या कहानियां आदि इन्होंने साहित्यिक जगत के लिए एक प्रेरणा का श्रोत बनाया। डॉ. रमेश पोखरियाल “निशंक” जी ने उपन्यासों में ग्रामीण जीवन का उल्लेख किया उनके जीवन की सहजता, सरलता, तत्परता और मानव मूल्यों के प्रति विकसित अवस्था उनके साहित्य में या उनके उपन्यासों में पल्लवित होती है। उनके उपन्यास जनमानस के लिए एक प्रेरणा का श्रोत बनकर सामने आए हैं।

डॉ. रमेश पोखरियाल “निशंक” जी बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी हैं। उनका साहित्यिक और राजनैतिक मार्ग बहुत ही कठिन रहा है। उन्होंने अपने जीवन में संघर्ष के विभिन्न पड़ाव देखे। उनके साहित्यिक जीवन में स्पष्ट दिखाई देता है कि डॉ० निशंक जी आधुनिक युवा पीढ़ी के लिए आदर्श एवं प्रेरणादायक व्यक्तित्व हैं। वे उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री के साथ-साथ हरिद्वार के सांसद और भारतीय संसद में कैबिनेट शिक्षामंत्री रहे थे। उनके द्वारा लिखित साहित्य या उपन्यासों में न केवल दर्शन, देश प्रेम और लोकजन पर आधारित है बल्कि रूढ़िवादी परम्परा, सामाजिक और महिलाओं की विभिन्न समस्याओं पर लिखी गयी है। उन्होंने अपने लेखन में संवेदनशीलता, निडरता, सत्यनिष्ठा, धीर, गम्भीर एवं वैचारिक साहित्यकार के रूप में अपना परिचय दिया है।

इनके द्वारा निम्नलिखित औपन्यासिक ग्रन्थों का लेखन एवं सृजन किया गया है। मेजर निराला (2008), निशान्त (2008), बीरा (2008), पहाड़ से ऊँचा (2008), अपना पराया (2010), पल्लवी (2010), प्रतिज्ञा (2014), छूट गया पड़ाव (2010), कृतघ्न

(2015), भागोवाली (2015), शिखरों के संघर्ष (2016), जिन्दगी रूकती नहीं (2014) है। डॉ० निशंक जी के उपन्यास देश प्रेम, इतिहास, पारिवारिक पृष्ठभूमि, मानव जीवन मूल्यों, संघर्ष, समर्पण, त्याग और संस्कार आदि की भावना पर आधारित है।

डॉ. रमेश पोखरियाल "निशंक" जी से मेरी भेंट शोध लेखन कार्य में दो बार हुई थी। पहली बार परमार्थ निकेतन ऋषिकेश में दो दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के दौरान तथा दूसरी बार उनके निजी आवास तथा कार्यालय देहरादून में हुई थी। उनके सौम्यशील, सुहृदय और मधुर व्यवहार से मैं अत्यन्त प्रभावित हुई। उनके लिखित साहित्य और उपन्यासों की कहानियाँ जितनी रुचिकर मनोरंजक, रोचक और ललित है, उतनी ही संवेदनापूर्ण है। डॉ. रमेश पोखरियाल "निशंक" जी हिन्दी साहित्य के समस्त भारतीय साहित्यकारों में से एक है। वह अपने सर्वोच्च साहित्यिक कृतियों के कारण लोकनायक और लोककवि जैसी लोकप्रियता के लिए प्रख्यात है।

साहित्यकार निशंक जी ने साहित्य की अनेक विधाओं— कविता, कहानी, यात्रावृत्त न केवल आदि में कार्य किया है बल्कि उन्होंने जीवन प्रबन्ध, संस्मरण तथा उपन्यास के क्षेत्र में भी निरन्तर लेखन का कार्य किया है। उनके व्यक्तित्व व कृतित्व पर कई शोध कार्य जारी है, बल्कि आज भी देश—विदेश की अनेक भाषाओं में उनकी रचनाओं का अनुवाद हो रहा है। इसके साथ—साथ उन्हें पुरस्कारों व सम्मानों से भी सम्मानित किया गया है।

पिनानी गाँव उत्तराखण्ड में जन्म देने वाले मूर्धन्य साहित्यकार डॉ० निशंक जी के उपन्यासों में निहित पहाड़ी आंचल की खुशबू और सुन्दरता उनके साहित्य में झलकती है।

मैंने अपने शोध प्रबन्ध में मानव मूल्यों की परम्पराओं, चिन्ता, मानवीय मनोविज्ञान, नारी के संघर्ष, राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना, नारी चेतना, पहाड़ों की संस्कृति और ग्रामीण लोक संवेदना आदि को विभिन्न पक्षों के माध्यम से डॉ० निशंक जी के उपन्यासों का अध्ययन करके प्रस्तुत किया है।

प्रस्तावना

किसी भी साहित्यिक कृति को समझने के लिए साहित्यकार की व्यक्तिगत यात्रा एवं उनके विचारों को समझना आवश्यक है। डॉ. रमेश पोखरियाल "निशंक" जी को एक उपन्यासकार, एक कवि व लेखक के रूप में जानने समझने के लिए उनके लिखे गए साहित्य ही दर्पण है, क्योंकि एक उपन्यासकार का व्यक्तित्व किसी ना किसी रूप में अपने जीवन और समाज से प्रभावित एवं प्रेरित करने वाला होता है। उन्होंने साहित्य के जगत में अनेक प्रकार की विधाओं की रचना की, चाहे उपन्यास हो या कविताएं या कहानियां आदि इन्होंने साहित्यिक जगत के लिए एक प्रेरणा का श्रोत बनाया। डॉ. रमेश पोखरियाल "निशंक" जी ने उपन्यासों में ग्रामीण जीवन का उल्लेख किया उनके जीवन की सहजता, सरलता, तत्परता और मानव मूल्यों के प्रति विकसित अवस्था उनके साहित्य में या उनके उपन्यासों में पल्लवित होती है। उनके उपन्यास जनमानस के लिए एक प्रेरणा का श्रोत बनकर सामने आए हैं।

डॉ. रमेश पोखरियाल "निशंक" जी बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी हैं। उनका साहित्यिक और राजनैतिक मार्ग बहुत ही कठिन रहा है। उन्होंने अपने जीवन में संघर्ष के विभिन्न पड़ाव देखे। उनके साहित्यिक जीवन में स्पष्ट दिखाई देता है कि डॉ० निशंक जी आधुनिक युवा पीढ़ी के लिए आदर्श एवं प्रेरणादायक व्यक्तित्व हैं। वे उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री के साथ-साथ हरिद्वार के सांसद और भारतीय संसद में कैबिनेट शिक्षामंत्री रहे थे। उनके द्वारा लिखित साहित्य या उपन्यासों में न केवल दर्शन, देश प्रेम और लोकजन पर आधारित है बल्कि रूढ़िवादी परम्परा, सामाजिक और महिलाओं की विभिन्न समस्याओं पर लिखी गयी है। उन्होंने अपने लेखन में संवेदनशीलता, निडरता, सत्यनिष्ठा, धीर, गम्भीर एवं वैचारिक साहित्यकार के रूप में अपना परिचय दिया है।

इनके द्वारा निम्नलिखित औपन्यासिक ग्रन्थों का लेखन एवं सृजन किया गया है। मेजर निराला (2008), निशान्त (2008), बीरा (2008), पहाड़ से ऊँचा (2008),

अपना पराया (2010), पल्लवी (2010), प्रतिज्ञा (2014), छूट गया पड़ाव (2010), कृतघ्न (2015), भागोवाली (2015), शिखरों के संघर्ष (2016), जिन्दगी रुकती नहीं (2014) है। डॉ० निशंक जी के उपन्यास देश प्रेम, इतिहास, पारिवारिक पृष्ठभूमि, मानव जीवन मूल्यों, संघर्ष, समर्पण, त्याग और संस्कार आदि की भावना पर आधारित है।

डॉ. रमेश पोखरियाल “निशंक” जी से मेरी भेंट शोध लेखन कार्य में दो बार हुई थी। पहली बार परमार्थ निकेतन ऋषिकेश में दो दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के दौरान तथा दूसरी बार उनके निजी आवास तथा कार्यालय देहरादून में हुई थी। उनके सौम्यशील, सुहृदय और मधुर व्यवहार से मैं अत्यन्त प्रभावित हुई। उनके लिखित साहित्य और उपन्यासों की कहानियाँ जितनी रुचिकर मनोरंजक, रोचक और ललित है, उतनी ही संवेदनापूर्ण है। डॉ. रमेश पोखरियाल “निशंक” जी हिन्दी साहित्य के समस्त भारतीय साहित्यकारों में से एक है। वह अपने सर्वोच्च साहित्यिक कृतियों के कारण लोकनायक और लोककवि जैसी लोकप्रियता के लिए प्रख्यात है।

साहित्यकार निशंक जी ने साहित्य की अनेक विधाओं— कविता, कहानी, यात्रावृत्त न केवल आदि में कार्य किया है बल्कि उन्होंने जीवन प्रबन्ध, संस्मरण तथा उपन्यास के क्षेत्र में भी निरन्तर लेखन का कार्य किया है। उनके व्यक्तित्व व कृतित्व पर कई शोध कार्य जारी है, बल्कि आज भी देश—विदेश की अनेक भाषाओं में उनकी रचनाओं का अनुवाद हो रहा है। इसके साथ—साथ उन्हें पुरस्कारों व सम्मानों से भी सम्मानित किया गया है।

पिनानी गाँव उत्तराखण्ड में जन्म देने वाले मूर्धन्य साहित्यकार डॉ० निशंक जी के उपन्यासों में निहित पहाड़ी आंचल की खुशबू और सुन्दरता उनके साहित्य में झलकती है।

मैंने अपने शोध प्रबन्ध में मानव मूल्यों की परम्पराओं, चिन्ता, मानवीय मनोविज्ञान, नारी के संघर्ष, राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना, नारी चेतना, पहाड़ों की संस्कृति और ग्रामीण लोक संवेदना आदि को विभिन्न पक्षों के माध्यम से डॉ० निशंक जी के उपन्यासों का अध्ययन करके प्रस्तुत किया है।

डॉ० 'निशंक' जी का व्यक्तित्व

1. भूमिका

किसी भी साहित्य को समझने के लिए साहित्यकार या उपन्यासकार की निजी विचार धारा एवं यात्रा को समझना या परखना अति आवश्यक है। उपन्यास (साहित्य) की कोई कृति उपन्यासकार की जाति होती है। अतः उपन्यासकार की कृतियों में वह सब कुछ पाया जाता है जो एक उपन्यासकार के परिवेशगत विचार भावनाओं के साथ-साथ संस्कार भी होते हैं।

उपन्यास और कला में उपन्यासकार और कलाकार अपने व्यक्तित्व का सदैव प्रभाव छोड़ते हैं। हिन्दी के उपन्यासकारों में जैसे लाला श्री निवासदास, मन्नूभण्डारी, अज्ञेय, मुंशीप्रेमचंद, देवकीनन्दन खत्री, भगवतीचरण वर्मा, जय शंकर प्रसाद आदि ने सामाजिक, आंचलिक, ऐतिहासिक, घटना प्रधान आदि उपन्यासों में अपने भावों एवं विचारों को बहुत ही कलात्मक ढंग से अभिव्यक्त किया है। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी को एक उपन्यासकार, कहानीकार, लेखक, कवि, के रूप में समझने के लिए उनके द्वारा लिखित साहित्य या उपन्यास ही एक प्रतिरूप हैं, क्योंकि एक उपन्यासकार का अस्तित्व किसी न किसी रूप में समाज से प्रभावित एवं प्रेरित होता है। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी की रचनाएं ही उनका अस्तित्व हैं। अतः उनके अस्तित्व का मूल्यांकन आन्तरिक और बाहरी प्रमाणों के आधार पर किया जाना उचित है।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी उन उपन्यासकारों में से हैं जिन्होंने बहुत ही अल्पकाल में उपन्यासों की रचना करके उपन्यास जगत में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया है। इनके जीवन से समन्धित बातों का वर्णन निम्न प्रकार से किया गया है।

1.1 डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी का जन्म शिक्षा—दीक्षा एवं परिवार

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी का जन्म 15 जुलाई 1959 को उत्तराखण्ड के जनपद पौड़ी गढ़वाल के सुदूर प्रकृति की गोद में बसे अत्यन्त रमणीय गांव

पिनानी में श्री परमानंद पोखरियाल और विश्वंभरी देवी पोखरियाल जी के अत्यंत निर्धन ब्राह्मण परिवार में हुआ था। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि के साथ-साथ अनेक प्रतिभाओं के भी धनी थे, उनके पिता जी एक साधारण मनुष्य जो कि हरिद्वार में माली के रूप में जीवन यापन करते थे। इनकी माता जी घर का काम-काज संभालने वाली एक साधारण धार्मिक विचारों की महिला थी। डॉ० 'निशंक' जी पर अपनी परिवार की परिस्थितियों का गहरा प्रभाव पड़ा जिसके फलस्वरूप उनमें भावुकता, दया, देशसेवा, समाजसेवा आदि गुणों का विकास हुआ। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी एक राजनेता होने के साथ-साथ एक साहित्यिक रचनाकार, कवि, कहानीकार, लेखक, उपन्यासकार भी हैं। उनके द्वारा रचित रचनाएं उत्तम तथा श्रेष्ठ प्रकार की हैं। उन्होंने लगभग 200 से भी अधिक रचनाएं लिखकर हिन्दी साहित्य में भी उच्च स्थान स्थापित करके अति अल्प समय में उच्चकोटि के साहित्यकार बन गये हैं।¹

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी साधारण परिवार में जन्म लेने के बाद भी अपनी प्रतिभा और बुद्धिमता के बल पर ही उच्च कोटि के पत्रकार, साहित्यकार और राजनेता बनकर विधायक, मंत्री और मुख्यमंत्री जैसे ऊंचे और सर्वोच्च पदों पर पहुंचे।

शिक्षा-दीक्षा- डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी जमीनी स्तर से सर्वोच्च स्तर तक पहुंचने वाले उत्तराखण्ड के पहले मुख्यमंत्री हैं। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने अत्यंत गरीबी से संघर्ष करते हुए पढाई की, अपनी प्राथमिक शिक्षा अपने ही गांव के विद्यालय से प्राप्त की तथा माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक शिक्षा के लिए गांव से आठ से दस किमी दूर जंगलों को पार करते हुए पास के गांव के विद्यालय में जाते थे। मार्ग में प्रकृति की कई अतुलनीय छटाओं और सौन्दर्य का वे प्रतिदिन दर्शन करते थे, प्रकृति के इसी स्वरूप का डॉ० रमेश पोखरियाल निशंक जी के मासूम हृदय पर गहरा प्रभाव पड़ा और इसी के प्रभाव के बाद डॉ० 'निशंक' जी में एक साहित्यकार या उपन्यासकार का जन्म हुआ, उन्होंने हिन्दी साहित्य में उच्च कोटि का साहित्य लिखना शुरू किया।

¹ 'निशंक' जी का रचना संसार से प्राप्त जानकारी।

उच्च शिक्षा के लिए उन्होंने हेमवती नन्दन बहुगुणा गढवाल विश्वविद्यालय श्रीनगर (उत्तराखण्ड) में प्रवेश लिया और संस्कृत में स्नातकोत्तर की परीक्षा पास की तथा पी-एचडी की उपाधि प्राप्त की थी। छात्र जीवन के दौरान उन्होंने अकादमिक और अतिरिक्त गतिविधियों (पाठ्यक्रम के अतिरिक्त) दोनों में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर विभिन्न सम्मानों को प्राप्त किया है। बहुत ही कम आयु में एक विद्यालय के प्राचार्य के रूप में और अध्यापन के क्षेत्र में नियुक्त हुए। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने सरस्वती शिशु मंदिर जोशीमठ और सरस्वती शिशु मंदिर कर्णप्रयाग में अध्यापन एवं प्राचार्य का कार्य लम्बे समय तक किया। कर्णप्रयाग सरस्वती शिशु मंदिर से ही डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने कर्णप्रयाग विधान सभा क्षेत्र का चुनाव लड़ा और विजयी हुए।

परिवार— इनके परिवार में तीन पुत्रियाँ हैं। वर्ष 1985 में डॉ० 'निशंक' जी का विवाह सुश्री कुसुमकान्ता पोखरियाल से हो गया था। इनका स्वभाव निशंक जी के स्वभाव से मेल खाता था। इनकी पत्नी एक सरकारी विद्यालय में शिक्षिका थी। डॉ० 'निशंक' जी का प्रेम विवाह हुआ था किन्तु बदकिस्मती से समय से पहले ही उनकी पत्नी कैंसर से पीड़ित होने से उनको जीवन के आधे मार्ग में अकेले छोड़कर प्रभु के शरण में चली गई। डॉ० 'निशंक' जी को संतान के रूप में तीन पुत्रियों की प्राप्ति हुई। इनकी सबसे बड़ी बेटी आरुषि की शादी फरवरी 2014 में हुई है। वे अंतर्राष्ट्रीय स्तर की भारतीय क्लासिकल (शास्त्रीय) कथक डांसर के साथ ही फिल्म निर्देशन और निर्माण के साथ-साथ एक कवयित्री भी हैं। मेजर निराला नाम से उन्होंने अपनी पहली क्षेत्रीय फिल्म भी बनाई थी। उन्हें अपने उल्लेखनीय कार्य के लिए कई बड़े पुरस्कार मिल चुके हैं।

डॉ० निशंक जी की दूसरी बेटी श्रेयसी निशंक ने हिमालयन इन्स्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस देहरादून से एम.बी.बी.एस. की पढाई की। पहले तो विदेश में ही नौकरी शुरू की थी बाद में देशसेवा और देशभक्ति के जज्बातों से लबालब होने के कारण विदेशी नौकरी छोड़कर भारतीय सेना में मेडिकल अफसर बनकर डॉ० श्रेयसी निशंक ने उत्तराखण्ड की सैन्य परम्परा को जारी रखा और विधिवत रूप से सेना में बतौर सेकेन्ड लेफ्टिनेंट आर्मी मेडिकल कोर ज्वाइन की है। उनकी तीसरी बेटी

बिदुषी ने एमिटी विश्वविद्यालय की विधि परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त कर स्वर्ण पदक हासिल किया है। वे हाईकोर्ट में वकालत कर रही हैं।

साहित्यकार या व्यक्ति के व्यक्तित्व को मुख्यतः दो रूपों में बाँटा जा सकता है—

1. बाह्य व्यक्तित्व— बाहरी व्यक्तित्व में व्यक्ति या साहित्यकार या साहित्यकार की वेशभूषा, रहन सहन, बोली, भाषा का तरीका, खानपान, परम्पराएं, बाहरी क्रियाकलापों का वर्णन किया जाता है। डॉ० 'निशंक' जी के बाहरी व्यक्तित्व की यदि बात करें तो उनके बोलने का साधारण तरीका जो कि बड़े प्यार से लोगों से बात करते हैं, उनके बात करने के तरीके से यह अहसास नहीं होता कि वे इतने बड़े साहित्यकार या उपन्यासकार या राजनीतिज्ञ हैं। इतने बड़े पदों पर रहने के बावजूद भी उनमें नाममात्र का भी बड़प्पन या अहम नहीं रहता है। वेशभूषा की बात करें तो वह ज्यादातर कुर्ता पजामा या धोती कुर्ता ही पहनना पसंद करते हैं। विशेष कार्यक्रमों या समारोहों के दौरान उनको कोटपैट में भी देखा जाता है लेकिन वे सादा जीवन उच्च विचारों में ही विश्वास रखते हैं।

2. आन्तरिक व्यक्तित्व— आन्तरिक व्यक्तित्व उपन्यासकार के बाहरी व्यक्तित्व की अपेक्षा उनका अधिक महत्वपूर्ण है। क्योंकि मनुष्य के बाह्य व्यक्तित्व को आन्तरिक व्यक्तित्व ही मार्ग दर्शन कराता है। मनुष्य एक दूसरे के आचरण व्यवहार, बातचीतों से उनके मन की भावनाओं का पता लगा सकता है। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी का आन्तरिक व्यवहार या आन्तरिक दृष्टि से वे एक अध्यनशील, चिन्तनशील एवं गहरे विचारधारा को व्यक्त करने वाले व्यक्ति हैं। बचपन में गुजारे संघर्ष के दिनों की याद उनमें भरे होने से इनका मन अत्यधिक सरल है। इतने उच्च पदों पर होने के बावजूद भी उनमें तनिक भी अहंकार नहीं रहता है। इनका अन्तः व्यक्तित्व इनकी कृतियों में भरपूर उभरकर सामने आया है। वे एक अत्यन्त भावुक व्यक्ति भी हैं, जो विभिन्न व्यक्तियों की भावनों को समझते हुए उनकी यथा संभव मदद करते हैं। जबकि एक बुद्धिमान व्यक्ति तार्किक स्वभाव के कारण भावनात्मक संवेदनाओं से सदैव दूर होता है।

केदारनाथ आपदा के समय वहाँ पर जाकर डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने लोगों से भावनात्मक रूप से जुड़कर यथा संभव मदद की और बाद में

केदारनाथ आपदा के बारे में एक मार्मिक और भावनात्मक पुस्तक लिखी जिसको पढ़ते ही आँखों से बरबस आँसू छलक पड़ते हैं। इससे यही प्रतीत होता है कि डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी एक भावनात्मक व्यक्ति हैं। डॉ० 'निशंक' जी की 21 श्रेष्ठ कहानियाँ भी दया, प्रेम, सहानुभूति, संवेदना, त्याग, परोपकार व सहयोग इत्यादि भावनाओं से परिपूर्ण हैं।

'निशंक' जी के उपन्यासों में देश सेवा या देशभक्ति भावना का उल्लेख सभी जगह पर किया गया है। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के साहित्यिक तथा राजनीतिक सफर में भी राष्ट्रभक्ति या देशभक्ति की भावना झलकती है, उनके उपन्यास मेजर निराला, निशान्त, वीरा आदि उपन्यासों में इसका बहुत ही सुन्दर उल्लेख किया गया है। उपन्यासों के अलावा उनकी कहानियों, कविताओं, यात्रा वृत्तान्तों, ग्रन्थों आदि या सभी रचनाओं में देशसेवा की भावना का चित्रण बहुत ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

उनके लगभग सभी उपन्यासों में देशभक्ति या देशसेवा पूरी तरह से आधारित है। उपन्यास अधिकतर सैनिकों की सेवाओं पर या देशभक्ति पर आधारित हैं। मेजर निराला उपन्यास में 'निशंक' जी ने देशसेवा के विषय में निम्न पंक्तियाँ लिखी हैं— देश की माटी और अपने स्वाभिमान से बहुत प्यार है उसे और इसके लिए वह कुछ भी कर गुजरने को तैयार है। अपने लहू की एक-एक बूंद वह देश के लिए बहाने को तैयार है, किन्तु एक इंच जमीन भी वह दुश्मन के कब्जे में नहीं देना चाहता। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी द्वारा संकलित कविताओं में भी देशसेवा या देशभक्ति की भावना कूट-कूट कर भरी है।

1.2 डॉ० 'निशंक' जी का राजनीतिक जीवन

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी को उत्तराखण्ड की राजनीति का चाणक्य कहा जाता है। देश की राजनीति में भी डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी किसी पहचान के मोहताज नहीं हैं। भारतीय जनता पार्टी के दिग्गज नेताओं में गिने जाने वाले डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने कड़े संघर्ष के बाद ही राजनीतिक मंजिल प्राप्त की है। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रचारक

रहे हैं। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने एक स्कूल शिक्षक से देश के पहले शिक्षा मंत्री तक का सफर तय किया है। कभी सरस्वती शिशु मंदिर के स्कूल में शिक्षक रहे डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के मन में बचपन से ही समाज सेवा विद्यमान थी। इसी कारण उन्होंने राजनीति को समाज सेवा का माध्यम बनाया। राजनीतिक सफर में इनके महत्वपूर्ण पड़ाव निम्न हैं—

1. वर्ष 1991 से वर्ष 2012 तक पाँच बार उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखण्ड की विधान सभा में विधायक रहे।
2. वर्ष 1991 में पहली बार उत्तर प्रदेश की कर्णप्रयाग विधानसभा से विधायक निर्वाचित हुए तत्पश्चात वर्ष 1993 एवं 1996 में लगातार तीन बार विधायक रहे।
3. वर्ष 2000 में उत्तराखण्ड राज्य निर्माण के बाद प्रदेश के पहले वित्त, राजस्व कर, पेयजल सहित 12 विभागों के मंत्री बने।
4. वर्ष 2007 में उत्तराखण्ड सरकार में चिकित्सा स्वास्थ्य, भाषा तथा विज्ञान प्रौद्योगिकी विभाग के मंत्री बने।
5. वर्ष 2009 में उत्तराखण्ड प्रदेश के सबसे युवा मुख्यमंत्री का दायित्व सम्भाला।
6. वर्ष 2011 में भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बने।
7. वर्ष 2012 में डोईवाला क्षेत्र से विधायक निर्वाचित हुये।
8. वर्ष 2014 में डोईवाला से इस्तीफा देकर हरिद्वार लोकसभा क्षेत्र से सांसद निर्वाचित।
9. वर्ष 2019 में पुनः हरिद्वार से चुनाव जीतकर भारत के शिक्षा मंत्री बनाए गए।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के अनुसार मैंने तो कभी ग्राम प्रधान भी बनने के बारे में नहीं सोचा था, जिस पार्टी ने मुझ जैसे सामान्य व्यक्ति पर विश्वास करके पार्टी का सदस्य बनाकर मुझे उत्तर प्रदेश जैसे भारत के सबसे बड़े राज्य का दो-दो बार कैबिनेट मंत्री बनाया उस पार्टी को मैं माँ और मातृभूमि के बाद का स्थान मानता हूँ। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने उत्तर प्रदेश में मंत्री रहते

हुये राजनीतिक कौशल, ज्ञान और ध्वनि समन्वय एवं कौशल की सहायता से उत्तराखण्ड राज्य में हरिद्वार और ऊधमसिंह नगर को शामिल करने जैसे जटिल और संवेदनशील मुद्दों को सुलझाया।

उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री रहते हुये उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिमालयी संस्कृति को लाने के लिए अनगिनत सफल प्रयास किये। राज्य से संचालित करने के लिए लघु उद्योगों को प्रोत्साहित करने के लिए केंद्रीय बिक्री कर 4 प्रतिशत से घटा कर 1 प्रतिशत किया। राज्य की सभी आवश्यक वस्तुओं और वस्तुओं के लिए 364 करोड रुपये के राजस्व में वृद्धि हुई कुल कर संग्रहण में 575 करोड रुपये से 1100 करोड की बढ़ोतरी हुई।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी की सहायता से पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वाले लोगों की जीवन शैली के स्तर को बढ़ाने के लिए कई योजनाओं को प्रारंभ किया, कृषि में विभिन्न प्रकार के उपकरणों को सस्ते तथा उचित दामों पर किसानों को उपलब्ध कराया साथ ही किसानों को दी जाने वाली उर्वरकों पर भी भारी छूट देकर किसानों की खेती की उर्वरकता की मात्रा को बढ़ाया गया। गंगा नदी की स्वच्छता तथा उसे प्रदूषण मुक्त करने के लिए 'स्पर्श गंगा अभियान' की शुरुआत की। मुख्यतः आज की नमामी गंगे योजना डॉ० 'निशंक' जी के स्पर्श गंगा अभियान से ही प्रेरित अभियान है, जो कि केन्द्र सरकार की बहुत बड़ी योजना है।

वर्तमान में हरिद्वार संसदीय निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हुए भारतीय जनता पार्टी के एक वरिष्ठ सदस्य हैं जो कि उनकी 40 सालाना अनुभव और कड़ी मेहनत का ही परिणाम है। 1991 में कर्णप्रयाग विधान सभा क्षेत्र से भारतीय जनता पार्टी के विधायक के रूप में शुरू होता है, पर इससे पहले ही वे भाजपा के प्रचारक और मुख्य कायकर्ता रह चुके थे। उन्होंने धरातलीय कायकर्ता होते हुए भाजपा को नई ऊंचाईयों तक पहुंचाया। बीजेपी ने इनको कर्णप्रयाग से डॉ० शिवानन्द नौटियाल के विरुद्ध उतारा और भारी मतों से जीत दर्ज की।

पाँच बार उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखण्ड से विधायक— डॉ० रमेश पोखरियाल निशंक जी वर्ष 1991 में कर्णप्रयाग विधान सभा के लिए डॉ० शिवानन्द नौटियाल के खिलाफ प्रथम बार चुनाव लड़ा, जो कि कांग्रेस के बड़े दिग्गज नेता थे। डॉ०

निशंक ने डॉ० शिवानन्द नौटियाल को भारी मतों के अंतर से हराकर कर्णप्रयाग विधान सभा सीट जीतकर पहली बार उत्तर प्रदेश विधान सभा पहुंचे। उसके बाद फिर वर्ष 1993 में दुबारा निर्वाचित हुए और 1996 में तीसरी बार विधान सभा चुनाव जीते और 1997 में कल्याण सिंह सरकार में पर्वतीय विकास विभाग के कैबिनेट मंत्री बनाए गये। वर्ष 1999 में श्री राम प्रकाश गुप्ता के मुख्य मंत्री काल में डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' को उ० प्र० सरकार में संस्कृति, पूर्ति एवं धर्मस्व मंत्री बनाया गया।²

अपने कार्यकाल में डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने सम्बंधित विभागों में महत्वपूर्ण सुधार करके जनता के बीच में अपना विश्वास मजबूत बनाया, साथ ही भाजपा में भी अपनी जगह मजबूत बनाई। लोकलुभावन सुधारों से सभी लोग डॉ० रमेश पोखरियाल निशंक की कार्यशैली से बहुत प्रभावित रहते थे।

उत्तराखण्ड सरकार के 12 विभागों के मंत्री— वर्ष 2000 में उत्तराखण्ड राज्य निर्माण के बाद प्रदेश में पहले वित्त, राजस्व कर, पेयजल सहित 12 अन्य विभागों के कैबिनेट मंत्री बने। अपने मंत्रीत्व काल में इन्होंने जनता के हितार्थ कई महत्वपूर्ण कार्य किए तथा जनता को कई प्रकार की सुविधाएं देने की कोशिशें की। इन्होंने वित्त मंत्री रहते हुए वित्त संबंधी कई सुधार किए जिसके कारण उत्तराखण्ड की जनता इनको इनके कार्यों के लिए हमेशा याद रखती है। पेय जल मंत्री रहते डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने पहाड़ों में गांव—गांव पेयजल योजनों का जाल बिछाया। गांव—गांव जल पहुंचाकर पहाड़ी जनता को काफी संतुष्ट करने की कोशिश की, राजस्व मंत्री रहते हुए राजस्व कर में डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने काफी छूट देकर जनता में अपना विश्वास मजबूत किया। बजट सत्र में लोक लुभावन बजट पेश करके जनता और मुख्यमंत्री के चहेते मंत्री बने उस समय बी० सी० खण्डूड़ी के बाद सबसे ताकतवर नेता थे। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने जनता के बीच जाकर अपनी छवि को ऊंचा उठाने की बहुत कोशिश की, कड़ी मेहनत और लगन से वे सफलता प्राप्त करते रहे।

² डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक'— मेजर निराला।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी की कार्यशैली से सभी लोग प्रभावित रहते थे, जनता के बीच जाकर काम-काज की चर्चा, जनता का विश्वास, आलोचना आदि को वे खुले मन से सुनते थे। गरीबी में बिताया संघर्ष, पत्रकारिता का अनुभव, शिक्षण का ज्ञान, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, इन चार खम्भों पर ही डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी का राजनैतिक जीवन स्थापित है।

स्वास्थ्य, भाषा तथा विज्ञान प्रौद्योगिकी विभाग के मंत्री— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने 2007 में मंत्री रहते हुए उत्तराखण्ड के विज्ञान, चिकित्सा और स्वास्थ्य विभाग में महत्वपूर्ण विकास करके जनता का विश्वास जीता था, इन्होंने कृषि के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण क्रांति करके बहुत बदलाव या परिवर्तन किए। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने पहाड़ी किसानों के लिए बहुत सारी योजनाएं लाकर पहाड़ी किसानों का स्तर ऊंचा उठाने की कोशिश की विदेशों से संयुक्त समझौता करके नये-नये प्रकार के कृषि उपकरण या यंत्रों को किसानों के लिए मंगाया और सस्ते दामों पर किसानों को उपलब्ध करवाये।

उर्वरकों या खादों में भी किसानों को भारी छूट देकर खेती की उर्वरता को बढ़ाने की कोशिश की। उत्तराखण्ड का स्वास्थ्य मंत्री का पद संभालते हुए स्वास्थ्य विभाग में कई परिवर्तन किए, उन्होंने प्रत्येक जिले में अस्पताल खुलवाए उनमें अच्छे डाक्टरों को नियुक्त करके स्वास्थ्य सेवा को चुस्त दुरुस्त किया। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने उत्तराखण्ड में कई नये मेडिकल कालेज मंजूर करके मेडिकल शिक्षा में भी क्रांतिकारी परिवर्तन लाए, डॉ० 'निशंक' जी द्वारा सुदूर पहाड़ों में एम्बुलेंस सुविधा उपलब्ध कराकर स्वास्थ्य सेवाओं में काफी सुधार किया।

उनके ही द्वारा सर्वप्रथम 108 राष्ट्रीय एम्बुलेंस सेवा शुरू की गई जो कि धीरे-धीरे पूरे देश में प्रसारित होने लगी है, सर्व प्रथम डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी द्वारा ही दूरस्थ पहाड़ के गांव तक हेलीकॉप्टर के द्वारा हेली एम्बुलेंस सेवा से गर्भवती महिला को देहरादून पहुंचाया गया था। यह हेली एम्बुलेंस सेवा कुछ समय तक चलती रही बाद में अधिक खर्चीली होने के कारण यह सेवा सरकार के द्वारा बन्द कर दी गई।

उत्तराखण्ड के सबसे युवा मुख्यमंत्री— 2009 में डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने सबसे युवा मुख्यमंत्री पद की सपथ ग्रहण की। युवा मुख्यमंत्री होते हुए डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी एक युवा पुरुष के जैसे कार्य करते थे, जोशीला स्वभाव होने के कारण उत्तराखण्ड जैसे पहाड़ी राज्य, जहां की भौगोलिक परिस्थिति ज्यादातर पहाड़ी है। डॉ० 'निशंक' जैसे युवा मुख्यमंत्री पाकर जनता की आशाओं पर चार चांद लग गये थे। इन्होंने अपने मुख्यमंत्रित्व काल में बहुत प्रकार की राष्ट्रीय सेवाएं शुरू की जिनमें राष्ट्रीय एम्बुलेंस सेवा तथा दूर दराज के पहाड़ी क्षेत्रों के लिए हेलिकोप्टर एम्बुलेंस सेवा भी शुरू की 2008 से 2011 तक डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी उत्तराखण्ड के पांचवें मुख्यमंत्री रहे, डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने राजनैतिक कौशल, ज्ञान और ध्वनि समन्वय कौशल की सहायता से उत्तराखण्ड राज्य में हरिद्वार और ऊधमसिंह नगर को शामिल करने जैसे जटिल और संवेदनशील मुद्दों को सुलझाया।

अंतर्राष्ट्रीय फोरम में हिमालयी संस्कृति को लाने के लिए अनगिनत सफल प्रयास किए। राज्य से संचालित करने के लिए लघु उद्योग को प्रोत्साहित करने के लिए केंद्रीय बिक्री कर 4 प्रतिशत घटाकर 1 प्रतिशत किया। राज्य के सभी आवश्यक वस्तुओं के लिए 364 डिपो खोले और इस तरह से 61.75 करोड़ से 128 करोड़ रुपये राज्यस्व में वृद्धि हुई। कुल कर संग्रहण में 575 करोड़ रुपये से 1100 करोड़ रुपये की वृद्धि हुई। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने अपने मुख्यमंत्रित्व काल में कई बहु-उद्देश्यीय परियोजनाएं चलाकर प्रदेश को विकास की राह पर अग्रसर किया। कई स्कूल, कालेज खोलकर शिक्षा व्यवस्था को सुधारा। नई औद्योगिक नीति चलाकर नये उद्योग धन्धों की शुरुआत की गई।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने विज्ञान और तकनीकी मंत्री रहते हुए राज्य में विज्ञान और तकनीकी से राज्य का विकास किया। नई-नई तकनीकी से विकास की गति बढ़ती चली गई और वे जनता के बीच अपना विश्वास बढ़ाते गये। विज्ञान और प्रौद्योगिकी की सहायता से पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वाले लोगों की जीवन शैली के स्तर को सुधारने के लिए कई योजनाओं को शुरू किया। पहाड़ों में होने वाले अकस्मात नुकसान से बचने के लिए मौसम विज्ञान में काफी सुधार किया।

गांव-गांव तक सड़कों का जाल बिछाया, नये-नये पुलों का निर्माण कराया जाने लगा, स्कूल, कालेजों में सुयोग्य शिक्षकों को नियुक्ति देकर शिक्षा में काफी सुधार किया गया। गंगा नदी की स्वच्छता तथा उसे प्रदूषण मुक्त करने के लिए सर्वप्रथम स्पर्श गंगा अभियान शुरू किया गया बाद में केन्द्र सरकार द्वारा नमामी गंगे योजना इसी स्पर्श गंगा योजना का नवीनतम रूप है।

डोईवाला से विधायक— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने 2012 में डोईवाला विधान सभा क्षेत्र से चुनाव लड़ा और जीते, डोईवाला क्षेत्र से जीतने के बाद इन्होंने डोईवाला क्षेत्र में बहुमुखी विकास किया जिससे डोईवाला क्षेत्र की जनता काफी प्रसन्न थी। एक मुख्यमंत्री के विधान सभा क्षेत्र में विकास की बाढ़ स्वाभाविक ही होती है। अतः विकास होता चला गया। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने डोईवाला में कई प्रकार की योजनाएं चलाकर डोईवाला की जनता की जीवन शैली में परिवर्तन किया। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने डोईवाला के स्कूलों, कॉलेजों में आधुनिक शिक्षा की व्यवस्था करके डोईवाला क्षेत्र में अत्याधुनिक अस्पताल खोलकर जनता को सुविधाएं उपलब्ध करवाई। उस समय डोईवाला विधानसभा क्षेत्र एक आदर्श विधानसभा क्षेत्र कहलाता था। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने डोईवाला क्षेत्र में गली, वार्ड, गांव, बस्ती, कस्बा, शहरी क्षेत्र आदि समस्त क्षेत्रों में समान रूप से विकास किया।

हरिद्वार लोकसभा क्षेत्र से सांसद— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने 2014 में डोईवाला से त्यागपत्र देकर हरिद्वार लोकसभा क्षेत्र से सांसद का चुनाव लड़ा और चुनाव जीतकर सांसद नियुक्त हुए, 2014 से लगातार हरिद्वार क्षेत्र से डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी सांसद बनते रहे हैं। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के अनुसार हरिद्वार उनके बचपन के खेलने का आंगन रहा है। इसलिए हरिद्वार को उन्होंने अपना कर्मस्थली संसदीय क्षेत्र चुना है। हरिद्वार संसदीय क्षेत्र में डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने कई प्रकार की योजनाएं चलाकर हरिद्वार संसदीय क्षेत्र की जनता की जीवन शैली बदलने की कोशिश की तथा लाभान्वित किया। हरिद्वार में गंगा नदी के किनारे बाढ़ रोकने से लेकर गंगा नहर को आधुनिक विकास कार्यों के साथ जोड़कर विकसित करके सर्वजनहिताए को चरितार्थ किया है।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी द्वारा हरिद्वार कुंभ मेला क्षेत्र में भी बहुत सी योजनाओं का शुभारम्भ किया गया इसके साथ-साथ चहुमुखी विकास का भी श्री गणेश किया। जिसके कारण डॉ० 'निशंक' जी से हरिद्वार की जनता संतुष्ट रहती है, हरिद्वार की कोई भी जनता या कहीं की भी जनता उनसे मिलती रहती है, इसी कारण से उन्हें जनता द्वारा अक्सर याद किया जाता है। उन्होंने हरिद्वार की झुग्गी झोपड़ियों में भी सड़कें, अस्पताल, स्कूल खोलकर झुग्गी झोपड़ियों में रहने वाली जनता का भी दिल जीता। अपने संसदीय क्षेत्र हरिद्वार में अक्सर डॉ० 'निशंक' जी अनेक सामाजिक कार्यों में भाग लेते रहते हैं।

जब से डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी हरिद्वार के सांसद बने हैं। तब से हरिद्वार की जनता के अनुसार हरिद्वार की जनता को अपना नेता मिल गया है। हरिद्वार का छोटा सा विकास हो या बड़ी-बड़ी योजनाएं निशंक जी के द्वारा सभी का समय-समय पर मुआयना किया जाता है, आवश्यक होने पर प्रशासन को सुधार या रद्द करने का आदेश दे देते हैं।

भारत के शिक्षा मंत्री— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने 2019 में भारत के शिक्षा मंत्री का पद सम्भाला जिसको पहले मानव संसाधन विकास मंत्रालय कहा जाता था। 2019 में शिक्षा मंत्री डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी द्वारा नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर कार्य करने के बाद से नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति पूरे देश में लागू करवाई गई। भारत सरकार की नई शिक्षा नीति लगभग 33 साल बाद डॉ० 'निशंक' जी 29 जुलाई 2020 में लागू की गई।

इस नीति में शिक्षकों के प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान दिया गया। प्राइवेट स्कूलों में मनमाने ढंग से फीस रखने और बढ़ाने को भी रोकने का प्रयास किया जाएगा। नेशनल साइंस फाउंडेशन की तर्ज पर नेशनल रिसर्च फाउंडेशन लाई जाएगी जिससे पाठ्यक्रम में जुड़ाव के साथ सामाजिक विज्ञान को शामिल किया जाएगा। शिक्षण के माध्यम के रूप में पहले से पाँचवीं तक मातृभाषा का प्रयोग किया जाएगा। यदि किसी कारण वश विद्यार्थी उच्च शिक्षा के बीच में ही कोर्स छोड़कर चले जाते हैं तो ऐसा करने पर उन्हें नई शिक्षा नीति के अनुसार पहले वर्ष में कोर्स

को छोड़ने पर प्रमाण पत्र, दूसरे वर्ष में छोड़ने पर डिप्लोमा एवं अन्तिम वर्ष पर डिग्री देने का प्रावधान है।

हरिद्वार से सांसद— डॉ० 'निशंक' जी 2014 से 2024 तक लगातार हरिद्वार उत्तराखण्ड से सांसद बनते रहे हैं, हरिद्वार हिन्दुओं का एक पवित्र एवं धार्मिक स्थान है जिले का हर एक नगर पवित्र तथा हिंदुओं का प्रमुख तीर्थ स्थान है। सांसद पद पर रहते हुए डॉ० निशंक जी उत्तराखण्ड की राजनीति में सदैव सक्रिय रहते हैं। उत्तराखण्ड में चुनाव छोटा हो या बड़ा डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी हमेशा ही सक्रिय रहते आये हैं। वे भारतीय जनता पार्टी को हमेशा अपनी मां का दर्जा देते आये हैं। पार्टी के सभी बड़े नेताओं में डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी बहुत लोकप्रिय होने के साथ-साथ बहुत ही सम्मानित व्यक्ति भी हैं। इसलिए उन्हें उत्तराखण्ड की राजनीति का चाणक्य कहा जाता है। विराट अनुभव के कारण निशंक जी राजनीति के धुरंधरों में गिने जाते हैं। अपनी कूटनीतिक शैलियों के कारण ही उन्हें उत्तराखण्ड की राजनीति का चाणक्य कहा जाता है।

हरिद्वार के चहुंमुखी विकास में डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी का अनमोल योगदान रहता है। जब भी वे हरिद्वार दौरे पर जाते हैं तो पूरे संसदीय क्षेत्र का मुआयना करते हुए लोगों से मिलते, विकास कार्यों की उनके बीच चर्चा करते और जनता के बीच अपना विश्वास मजबूत करते हैं। 2014 से लगातार डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी हरिद्वार संसदीय क्षेत्र से लगातार जीतते आ रहे हैं। यह उनकी जनता के बीच लोकप्रियता का ही परिणाम है।

उत्तराखण्ड राजनीति के चाणक्य— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी को उत्तराखण्ड की राजनीति का चाणक्य कहा जाता है। उत्तराखण्ड की राजनीति को वे संघ परिवार का नजदीकी रहने से बहुत ही बारीकी से जानते आये हैं। जनता की सेवा के लिए वे कई बार खुद अपनी ही पार्टी से ही लड़ पड़े थे। कई बार उन्होंने सरकार में रहते हुए कई अहम फैसले लिए जिससे सरकार को सभी पार्टियों द्वारा सराहा गया। केन्द्र की सभी पार्टियों की सरकार द्वारा डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी को उत्तराखण्ड की राजनीति का पुरोधा और राजनीति का विशेषज्ञ होने से उनसे समय-समय पर सलाह, मंत्रणा ली जाती है। डॉ० 'निशंक'

जी ने बचपन से किये अथाह संघर्ष से ही ऊंचे से ऊंचे पद पर पहुंचे जो उन्हें और नेताओं से अलग दिखाता है, इसी संघर्ष से मिले अनुभव से ही उनको उत्तराखण्ड की राजनीति का चाणक्य कहा जाता है।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी में अपार राजनैतिक अनुभव होने के कारण उन्हें उत्तराखण्ड की राजनीति में महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है, लगातार अथक राजनैतिक प्रयास, सबसे अनुभवी नेता अपनी वाक्शैली के कारण डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी को उत्तराखण्ड की राजनीति का लोकप्रिय नेता कहा जाता है।

1.3 डॉ० 'निशंक' जी का सामाजिक परिवेश

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी का सामाजिक परिवेश प्रारम्भ से ही संघर्षमय रहा है। वे प्रारम्भिक जीवन से ही लेकर उच्च शिक्षा तक कड़े संघर्षों का सामना करते रहे। डॉ० 'निशंक' जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्ति हैं। डॉ० 'निशंक' जी अपने सामाजिक परिवेश से जुड़े होने के कारण अपने आपको अभिव्यक्त करने के लिए छटपटाते थे। उनके भीतर जो घटित घटनाएं थी, समाज को प्रभावित करने वाले प्रत्येक क्षेत्र को डॉ० 'निशंक' जी ने अपने साहित्य में वर्ण्य विषय बनाया। परिस्थिति, संघर्ष, अनुभव, सहयोग, कर्तव्य की दृष्टि से निशंक जी ने इनका उपयोग अपने सृजनशील व्यक्तित्व के निर्माण में किया है। पत्रकारिता से जुड़े होने से 'निशंक' जी को अधिक सूज-बूझ और पैनी दृष्टि उपलब्ध हुई। डॉ० 'निशंक' जी का पत्रकारिता में अर्जित अनुभव और समाज सेवा के अनुभव से ही उनका राजनैतिक सफर सहज होता चला गया।

डॉ० 'निशंक' जी ने अपनी रचनाओं में शहरी एवं ग्रामीण परिवेश का प्रतिपादन किया। इनके साहित्य में बेवस, गरीब, लाचार एवं मजदूर वर्ग, संघर्ष तथा बच्चों का माँ-बाप के प्रति असंवेदनशील व्यवहार देखने को मिलता है। सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय रहने वाले 'निशंक' जी अब तक लगभग 200 से अधिक पुस्तकों का प्रकाशन कर चुके हैं। उनकी प्रखरता, संकल्पशीलता, रचनाधर्मिता और

संवेदनशीलता का प्रमाण देती है। निश्चित ही 'निशंक' जी ने कृतियों की रचना कर राष्ट्र एवं समाज का गौरव बढ़ाया है।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी का सामाजिक परिवेश निम्नलिखित शीर्षकों पर लिखित है —

सामाजिक प्रेरणा— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' का जन्म गांव में होने और समाज से जुड़े होने के साथ-साथ परंपराओं, प्रथाओं, रीति-रिवाजों, जाति वर्ग विशेष से मजबूती से जुड़े हुए थे। ब्राह्मण कुल में पैदा होने से जातिवादी परंपराओं से मजबूती से बंधे हुए थे। लेकिन डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी बचपन से ही जातिवादी परंपरों के धुर विरोधी रहे, इसी कारण से वे अपने समस्त साहित्य में जातिवादी राजनीति का कड़ा विरोध किया। पत्रकारिता से जुड़े होने से समाज सेवा का अनुभव होता चला गया। बचपन से ही एक छोटे से गांव से संघर्ष करते हुए उठकर उन्होंने कई प्रकार की सामाजिक प्रथाओं से लड़ा और उठ खड़े हुए जो कि एक कड़वा अनुभव ही कहलाता है।

उन्होंने अपने इसी अनुभव को विभिन्न प्रकार के आडम्बरों, अंधविश्वासों, कुरीतियों आदि को दूर करने का हथियार बनाया। इसी सामाजिक अनुभव के कारण उन्हें अथाह सामाजिक प्रेरणा मिली डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी अपने साहित्य (काव्य, निबन्ध, उपन्यास आदि) के माध्यम द्वारा भी सामाजिक विषमताएं दूर करने की कोशिश करते रहे हैं। उन्होंने अपने अथक प्रयास से समाज में व्याप्त अनेक बुराईयों को दूर किया जिससे उन्हें सामाजिक प्रेरणा मिलती रही।

दृढ़ निश्चयी— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी एक दृढ़ निश्चयी व्यक्ति रहे हैं, उनका जीवन बचपन के समय से ही संघर्षों से सामना करने के अनुभव से ही शिक्षा से लेकर शिक्षण तक और शिक्षण से लेकर राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रचारक और प्रचारक से लेकर एक विधायक और विधायक से मंत्री, मंत्री से मुख्यमंत्री तक का सर्वोच्च नेता के सफर को दृढ़ निश्चयी राजनेता का ही उदाहरण है। फर्स से लेकर अर्स तक का सफर अपने दृढ़ निश्चय से ही पूरा किया है। जीवन में कई बार ऐसा समय भी आया जब इनके पास खाने के भी पैसे नहीं थे। फिर भी इन्होंने अपने दृढ़ निश्चय के बल पर ही चुनाव लड़े और जीतते चले गये। उनको अपने ही

पारिवारिक समाज में कई बार दुत्कार, बेइज्जत होना पडा, कई बार सामाजिक संघठनों का भी सामना करना पडा जिसको उन्होने बडी वाक्पटुता एवं कुशल वाक्शैली से या अपने व्यवहार से आसानी से सुलझा लिया था। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी बहुत ही सुलझे हुए राजनेता, साहित्यकार हैं।

उनके बचपन के दिनों से ही वे दृढ़ निश्चयी थे। जब भी वे किसी काम के बारे में ठान लेते तो उस काम को पूरा करके ही छोड़ते थे। स्कूल के दिनों में स्कूल जाते समय सामने खड़े बाघ के सामने दृढ़ तापूर्वक खड़ा होना और उफनते पहाडी नाले को दृढ़तापूर्वक पार करते समय बहना और गांव की महिलाओं द्वारा बचाना दृढ़ निश्चयता का ही उदाहरण है। इसी प्रकार अपने गांव से पांचवीं पास करने के बाद प्रतिदिन आठ से दस किलोमीटर दूर दूसरे गांव के छटवीं से लेकर बारहवीं तक पढाई दृढ़ निश्चयता का ही उदाहरण है। अत्यधिक गरीबी के कारण भी श्रीनगर जाकर पढाई करना तथा एम०ए० संस्कृत की उपाधि अर्जित करना दृढ़ संकल्प या दृढ़ निश्चय का ही उदाहरण है।

संघर्षशीलता— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने बचपन के दिनों से ही कठोर संघर्ष किया था। उनका संघर्ष गरीबी, शिक्षा, जीवन, परिवार, समाज आदि से रहा। कक्षा छटवीं से बारहवीं तक की पढाई के लिए अपने गांव से प्रतिदिन 8—10 किमी चढाई और उतराई पैदल चलना या बरसात के दिनों में उसी रास्ते पर नदी में बह जाना या बाघ से बाल—बाल बचना यह सब डॉ० 'निशंक' जी की संघर्षशीलता का ही उदाहरण है। अत्यधिक निर्धन होते हुए भी श्रीनगर कालेज से पढाई करना,

सरस्वती शिशु मंदिर में शिक्षण हेतु जुडना फिर सारे संघर्षों से लड़ते हुए वे अपने लक्ष्य को प्राप्त करते हैं। एक छोटे से विद्यालय के शिक्षक से ऊपर उठकर राजनीति के विभिन्न उच्च पदों पर अपने—आपको राजनैतिक रूप से स्थापित करना ही उनकी संघर्षशीलता का प्रतीक है। राजनीति के उच्च पदों पर भी अपनी योग्यता के आधार पर ही सामंजस्यता से संतुलित करके सर्वोच्च स्तर पर संघर्षशीलता से ही पहुंचे हम उनको हमेशा ही संघर्षशील देखते हैं। उनमें सर्वोच्च प्रकार की नेतृत्व क्षमता, कुशल वाक्पटुता, संघर्षशीलता के कारण ही विकसित हुई हैं।

इन अनमोल प्रतिभाओं से वे सभी को अपना प्रशंसक बना देते हैं। यही संघर्षशीलता के कारण ही पहले विधायक, मंत्री, मुख्य मंत्री फिर सांसद और फिर केन्द्रीय मंत्री और भारत के पहले शिक्षामंत्री बने। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी का पूरा जीवन कड़े संघर्ष से ही प्राप्त हुआ है। इन्हीं सब संघर्षशीलता के कारण ही डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी उच्च शिखर को छूते हैं।

परिवर्तनशीलता— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी का पूरा जीवन परिवर्तनशीलता में दृढ़ विश्वास से ही बना हुआ है। अत्यंत गरीब परिवार में पैदा होने पर भी उन्होंने सर्वोच्च शिक्षा प्राप्त की और शिक्षक बनकर अपना ज्ञानार्जन करने लगे परिवर्तनशीलता के कारण ही राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से जुड़कर भाजपा के टिकट पर जीतकर विधायक बने फिर परिवर्तनशीलता के कारण ही राजनैतिक ऊंचाईयों को छूते रहे हैं। उन्होंने स्नातक की उपाधि के बाद ही सरस्वती शिशु मंदिर में शिक्षण कार्य शुरू किया। मगर वहां भी वे संघ परिवार से जुड़ गये और भाजपा राजनैतिक परिवार से जुड़कर चुनाव लड़कर उत्तर प्रदेश विधान सभा पहुंच गये, उसके बाद डॉ० 'निशंक' जी के पैर कभी भी रुके नहीं।

राजनीति की ऊंचाईयों को छूते रहने के बाद वे विधायक, मंत्री, मुख्यमंत्री बने। दूसरी तरफ हिन्दी साहित्य की सेवा में भी उन्होंने कहानी, उपन्यास, कविता, यात्रा वृत्तांत आदि विधाओं को लिखकर हिन्दी साहित्य में भी सर्वोच्च स्थान पर पहुंचे। उच्चकोटि का साहित्य लिखकर डॉ० 'निशंक' जी ने पाठकों के दिलों में भी उत्तम कोटि के साहित्यकार की छवि बनाई है।

आधुनिक हिन्दी साहित्य में डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी का नाम उच्च कोटि के साहित्यकारों में गिना जाता है। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के जीवन में सफलता यह सब परिवर्तनशीलता के कारण ही मिलती रही है।

गरीबों से सहानुभूति— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी जीवनभर गरीबों के लिए काम करते रहे। उनका स्कूल टीचर का जीवन हो या एक स्वयं सेवक का जीवन या मुख्यमंत्री का जीवन या साहित्यकार का जीवन उन्होंने हमेशा ही गरीब के कल्याणार्थ काम किया। उत्तराखण्ड के वित्त मंत्री रहते हुए उन्होंने कई योजनाएं चलाकर गरीबों के लिए कार्य किया, बचपन के दिनों से ही घोर गरीबी में जीवन

बिताने पर गरीबों के प्रति उनके मन में हमेशा के लिए भावनात्मक स्थान बन गया था। गरीब परिवार में जन्म लेने से उनको गरीबों से बहुत लगाव रहता था, वे गरीबी का अर्थ भली भांति समझते हैं। जब भी उनको मौका मिलता है वे गरीबों की भरपूर मदद करते हैं। शिक्षण काल में भी वे गरीब छात्रों का विशेष ध्यान रखते थे। विधायक या मंत्री बनने के बाद भी डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी को जब भी मौका मिलता तो गरीबों के घर जरूर जाया करते थे। अनेक गरीब कल्याणकारी योजनाएं चलाकर और गरीबों को बैंकों से कम ब्याज दर पर लोन या आर्थिक मदद की अनेक योजनाएं उत्तराखण्ड सरकार द्वारा उनके शासन काल में चलाई गई।

भाईचारा— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने हमेशा ही भाईचारे की भावना को स्वीकृत किया है। वे हमेशा ही आपसी भाईचारे से ही सारी समस्याओं को सुलझाने का प्रयास करते हैं। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने बचपन के दिनों से ही विभिन्न प्रकार की समस्याओं से जूझते हुए समस्याओं को आपसी भाईचारे से हल करने या समाधान करने के तरीके का ही जीवनभर अनुसरण किया। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' के अनुसार केन्द्र की राजनीति हो या राज्य सरकार की समस्या का समाधान हमेशा ही आपसी भाईचारे से ही होता आया है। डॉ० 'निशंक' जी अपने अध्यापन काल में रहें हों या पत्रकारिता काल में या राजनेता के रूप में पर उन्होंने हमेशा आपसी भाईचारे की ही भावना का समर्थन या प्रयोग किया है। मुख्यमंत्रीत्व काल में भी डॉ० 'निशंक' जी भाईचारे की भावना पर अडिग रहे उन्होंने कभी भी किसी को कानून हाथ में लेने नहीं दिया।

जात-पात का विरोध— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी द्वारा आजीवन जात-पात का विरोध किया गया। वे अक्सर जातपात के मामलों में अपने परिवार, अपने समाज से भी भिड़ जाया करते थे। यद्यपि वे ब्राह्मण कुल में पैदा हुए थे पर कभी भी अपने राजनैतिक जीवन में जात-पात को बढ़ावा नहीं देते थे, वे कभी भी बिना किसी राजनैतिक स्वार्थ के या लाभ के या बिना जात-पात के या भेदभाव के सभी वर्गों के लोगों के साथ या सभी जाति के लोगों के साथ समान सामंजस्य रखते थे। अक्सर दलित वर्गों के घर कुशल क्षेम पूछनें या विकास कार्यों का हाल-चाल को जानने के

लिए चले जाया करते थे। दलित तथा पिछड़े वर्गों का हाल-चाल जानते रहने के कारण इनकी लोकप्रियता में वृद्धि होती रही।

शिक्षण के दिनों में भी डॉ० 'निशंक' जी कभी भी जात-पात को नहीं मानते थे, संघ परिवार तथा भाजपा में होने के बाद भी उन्होंने हमेशा ही जात-पात का विरोध किया है। उनकी जात-पात विरोधी नीति के कारण ही डॉ० 'निशंक' जी को भाजपा में सर्वोच्च स्थान मिला था।

प्रगतिशीलता— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी एक अत्यधिक निर्धन परिवार से उठकर उच्चतम स्तर की पढाई करके शिक्षण से जुड़े तत्पश्चात राजनीति में प्रवेश करके उच्च राजनैतिक पदों पर पहुँचे यह सब उनकी प्रगतिशीलता का ही उदाहरण है। डॉ० 'निशंक' जी ने सामाजिक क्षेत्र में भी निरंतर प्रगतिशीलता दिखाई देते हैं। उन्होंने समाज में व्याप्त आडम्बरों अंधविश्वासों आदि के उन्मूलन के लिए अनेक कार्य किये हैं। इसके अलावा डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने सामाज के विभिन्न क्षेत्रों में उन्नति के लिए बहुयामी प्रगतिशीलता के निरन्तर कार्य करते रहे सामाजिक सेवा के लिए डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने विद्यार्थी जीवन से लेकर शिक्षक जीवन और राजनैतिक ऊँचाईयां छूने के बाद भी कार्य करते रहे। पत्रकारिता के जीवन में भी उन्होंने पत्रकारिता के माध्यम से लोगों में जागृति लाने का प्रयास करते रहे। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने अखबार, पत्र, पत्रिका में लेख लिखकर निरंतर समाज सुधार के लिए काम करके प्रगतिशीलता दिखाई है।

जागरूकता एवं सृजनशीलता— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी अपने प्रारम्भिक समय से ही बहुत ही जागरूक और सृजनशील व्यक्तित्व के राजनेता रहे हैं। कड़े संघर्ष से ही उनमें जागरूकता और सृजनशीलता विकसित होती चली गई। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी जीवन के शिक्षण काल में हो या राजनैतिक काल में हों सभी क्षेत्र में जागरूक और सृजनशीलता से ही उन्नति करते रहे। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने आरम्भ से ही एक जागरूक, परिपक्व और सचेत साहित्यकार, सामाजिक कार्यकर्ता एवं राजनेता के रूप में कार्य किया है। वे अपने शुरुआती समय से ही जागरूकता एवं सृजनशीलता के कारण ही जीवन की सर्वोच्च ऊँचाईयों को छूते रहे। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने एक साधारण

शिक्षक के रूप में सरस्वती शिशु मंदिर से उठ कर उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री और बाद में केंद्र सरकार में पहले शिक्षा मंत्री तक का सफर जागरूकता एवं सृजनशीलता के कारण ही तय कर पाये हैं।

डॉ० 'निशंक' जी द्वारा अपने साहित्यिक योगदान में कविताओं, कहानियों, उपन्यासों, यात्रा वृत्तांतों आदि के माध्यम से लोगों में जागरूकता लाने की पूरी-पूरी कोशिश की है। उनकी रचनाओं को पढ़कर लोगों ने अपने व्यवहारिक जीवन में बहुत अच्छा परिवर्तन किया है, जिससे वे डॉ० 'निशंक' जी के सदैव के लिए ऋणी रहते हैं।

स्व निर्माण भावना— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी स्वयं के निर्माता स्वयं ही रहे हैं। गरीबी से उठकर शिक्षण से जुड़ना और फिर स्वयं सेवक के बाद बीजेपी में उच्च पदों पर जाना स्वयं निर्माण भाव से ही अग्रसर हुए हैं। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने हिन्दी साहित्य में भी विभिन्न विधाओं में उच्च कोटि की रचनाओं को लिख कर कविता संसार, कहानी संसार, उपन्यास संसार में अपनी धाक जमा दी थी, यह सब स्वयं निर्माण भाव से ही समभव हुआ है। वे स्वयं निर्माण भाव से ही स्वयं निखर कर ऊंचाईयों पर पहुंचे हैं। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी पत्रकारिता से जुड़ने के बाद से हुए अनुभव से ही स्वयं परिपूर्ण हुए। पत्रकारिता के कारण से भी उनमें पैनी दृष्टि और तार्किक शक्ति का विकास हुआ जो उनमें सृजनशीलता के कारण ही स्वयं भाव विकसित हुआ और वे साधारण शिक्षक से ऊच्च स्तर पर पहुंचे। डॉ० 'निशंक' जी के जीवन में सघर्षशीलता से उन्नति की प्रेरणा मिलती रही। और वे ऊंचाईयों को छूते रहे।

डॉ० 'निशंक' जी द्वारा उनके जीवन में जो भी प्राप्त हुआ है उनके कठिन परिश्रम, जागरूकता, सहनशीलता, अति विशिष्ट नेतृत्व क्षमता के कारण ही प्राप्त हुआ है। जो कि स्वयं निर्माण भाव के ही कारण सम्भव है।

स्वार्थहीनता पर बल— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी का जीवन हमेशा ही स्वार्थहीन रहा है। उन्होंने जीवनभर चाहे वह शिक्षक के पद रहें हों या राजनेता कभी भी स्वार्थ के लिए काम नहीं किया।

डॉ० 'निशंक' जी द्वारा पढाए गए बच्चे अभी भी उनको याद करके कहते हैं कि डॉ० निशंक जी ने कभी भी स्वार्थवश किसी भी विद्यार्थी को नहीं पढाया होगा। उन्होंने कभी किसी को कम या ज्यादा नहीं आंका होगा। शिक्षक के बाद वे राजनेता के रूप में तेजी से उभरे वहां पर भी उन्होंने कभी भी स्वार्थ या पक्षपात वाली राजनीति नहीं की। अक्सर वे जनता का कोई भी कार्य हो जल्दी-जल्दी से ही पूरा करवा देते थे। विकास कार्यों का भी वे सन्तुलन रखते थे। किसी जिले को कम या अधिक योजनाएं नहीं देते थे सबको जनसंख्या के अनुसार ही योजनाएं या विकास कार्य वितरित किये जाते थे। अतः डॉ० 'निशंक' जी का सारा जीवन स्वार्थ से अछूता रहा है।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी का सम्पूर्ण जीवन स्वार्थ से हमेशा दूर रहा है, अनेक उच्च पदों पर रहने के बाद भी उनमें कभी भी स्वार्थ की भावना कहीं भी नहीं मिलती है। उनका गरीबों के लिए संघर्ष का जीवन हो या शिक्षा के लिए संघर्ष या राजनीति में उच्च पदों के लिए संघर्ष या हिन्दी साहित्य में उच्च कोटि के साहित्यकार सभी जगह उन्होंने स्वार्थ से दूर रहकर अपनी अलग ही पहचान बनाई है।

1.4 डॉ० 'निशंक' जी के व्यक्तित्व के प्रेरक प्रसंग

डॉ० 'निशंक' जी के व्यक्तित्व के प्रेरक स्रोत या प्रेरक प्रसंग निम्न रूप में है:-

अत्यन्त गरीबी में गुजरा बचपन- डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने अपना बचपन अत्यन्त गरीबी में गुजारा, पौड़ी गढ़वाल जिले के पिनानी गांव जहाँ जन्म हुआ था। वही से प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करके आगे की पढाई के लिए रोजाना 8-10 किलोमीटर पैदल पहाड़ी रास्ता तय करते थे। इस दौरान मौत से भी कई बार सामना करना पड़ता था। एक बार तो वे बरसात के मौसम में पहाड़ी नदी को पार करते समय नदी के बहाव में बह गये थे, किसी तरह से गांव की महिलाओं की मदद से नदी से बाहर निकाले गए और दूसरी बार अचानक सामने से बाघ आ गया था। मृत्यु निश्चित थी किंतु वह चुपचाप खड़े रहे लगभग 5 मिनट बाद बाघ खुद ही जंगल की तरफ चला गया और इनको नई सांस मिल गई थी। डॉ० रमेश

पोखरियाल निशंक जी का जीवन बहुत ही कठिन संघर्ष में गुजरा लेकिन उन्होंने इन कठिनाइयों का सामना डट कर किया। यह वर्तमान पीढ़ी के लिए एक शिक्षा तथा प्रेरणा का विषय है।

पत्रकारिता जीवन— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी का पत्रकारिता के क्षेत्र में भी अहम योगदान रहा। निशंक जी महान विद्वान हैं जिन्होंने साहित्यिक, राजनीतिक, समाज सेवा व शिक्षण के साथ-साथ पत्रकारिता के पेशे से भी जुड़े हुए थे। डॉ० निशंक जी ने सबसे पहले दैनिक जागरण से अपना पत्रकार पेशा शुरू किया था। डॉ० 'निशंक' जी एक कुशल और परिपक्व पत्रकार के रूप में जाने जाते थे।

उनको लेखन की कला का सभी लोग जादू मानते थे। उनकी पैनी तथा खोजी दृष्टि ने उन्हें तार्किक स्वभावी व्यक्तित्व बना दिया था। कोटद्वार में हिमालयी सरोकारों पर आधारित पत्रिका नव राह, नव चेतना प्रकाशित की और फिर 1986-87 में सीमान्तवार्ता समाचार पत्र शुभारम्भ किया। इसी सम्मान में कोटद्वार की साहित्यांचल संस्था ने निशंक उप नाम दिया और यही उपनाम आज तक विभूषित है।

- विगत 23 वर्षों से सीमान्तवार्ता के प्रधान सम्पादक।
- नई चेतना शोध संस्थान के संस्थापक निर्देशक।
- नई राह नई चेतना शोध पत्रिका के सम्पादक।
- कई राष्ट्रीय एवं स्थानीय पत्र पत्रिकाओं में कविताएं, कहानियां, लेख आदि प्रकाशित।
- शिक्षण काल में शिक्षण के साथ-साथ डॉ० 'निशंक' जी साहित्यिक गतिविधियों में भी सक्रिय रहे।
- डॉ० 'निशंक' जी अपने पत्रकारिता के जीवन में एक निर्भीक पत्रकार थे। जिन भी अखबारों या पत्रिकाओं के लिए उन्होंने काम किया उन सभी को उन्होंने अपनी ईमानदार छवि से अपना सब कुछ न्योछावर किया उनकी पैनी दृष्टि, तार्किक शक्ति आदि से पत्र-पत्रिकाओं को बुलंदियों पर पहुंचा दिया था। इसी

पैनी और तार्किक शक्ति से ही डॉ० 'निशंक' जी को नित नई ऊंचाइयां प्राप्त हुई, जिसने उन्हें जीवन भर परिपूर्ण बनाए रखा।

राजनीति में प्रवेश— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के अनुसार 1985–86 में स्व० अटल बिहारी वाजपेयी की पर्वतीय क्षेत्र की यात्रा के दौरान अटल जी के साथ रहने का मौका मिला, तब से उनके अटल जी के साथ मधुर सम्बन्ध रहे। अटल जी को उनमें भविष्य के नेता की प्रतिभा दिखाई दी। वर्ष 1991 में उन्होंने 'निशंक' जी को बुलाकर उ० प्र० विधान सभा का चुनाव लड़ने को कहा। कर्णप्रयाग सीट पर दिग्गज कॉंग्रेसी नेता डॉ० शिवानन्द नौटियाल जी विधायक थे। डॉ० शिवानन्द नौटियाल, डॉ० निशंक के नजदीकी रिस्तेदार भी थे। अपने ही परिवार के सदस्यों के द्वारा विरोध के बाद भी उनके खिलाफ चुनाव मैदान में उतरे और विजयी हुए। यह जिन्दगी का दूसरा अहम पड़ाव था, यही से डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी की राजनीतिक जीवन की शुरुआत हुई।

स्व० अटल बिहारी जी के कहने पर राजनीति में आये इस वाक्य के लिए बड़े-बड़े राजनेता जीवनभर स्व० अटल जी जैसे राजनीति के या भाजपा के पितामह की सेवा करते रहे पर ये शब्द बहुत कम लोगों को स्व० अटल जी द्वारा कहे गये थे। यह वाक्य डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के राजनैतिक जीवन के लिए आदर्श ही नहीं वरदान वाक्य है जिसे सभी राजनेता नहीं लिख सकते। यह वाक्य भी भावी युवाओं के लिए एक प्रेरणादायक प्रसंग है। इसी वाक्य का डॉ० 'निशंक' जी ने जीवनभर अनुसरण करते रहे और जीवन में आगे बढ़ते रहे।

राजनैतिक सफर— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने वर्ष 1991 में पहली बार कर्णप्रयाग क्षेत्र से उ० प्र० विधान सभा के सदस्य के रूप में निर्वाचित हुए 2012 तक पाँच बार विजयी होते रहे, पहले उ० प्र० और फिर उत्तराखण्ड विधान सभा के सदस्य के रूप में निर्वाचित हुए। पहली बार उत्तर प्रदेश में और फिर उत्तराखण्ड विधान सभा के सदस्य रहे। 1997 और 1999 में उत्तर प्रदेश सरकार में मंत्री बने। सन 2000 में अलग उत्तराखण्ड राज्य बनने के बाद कैबिनेट मंत्री बने। 2009 में उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री बने, और इस पद पर लगभग ढाई साल तक मुख्यमंत्री रहे। वर्ष 2012 में डोईवाला विधानसभा क्षेत्र से विधायक चुने गये। वर्ष 2014 में

हरिद्वार लोकसभा क्षेत्र से सदस्य निर्वाचित हुए। पूरे पांच साल लोकसभा के आश्वासन समिति के सभापति रहे। वर्ष 2019 में हरिद्वार से लगातार दूसरी बार लोकसभा सदस्य निर्वाचित होने पर केन्द्र में मानव संसाधन विकास मंत्री (शिक्षा-मंत्री) बने, वर्तमान में हरिद्वार से सांसद हैं।

साहित्यिक सफर— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने बचपन से ही संघर्षों का सामना करने से ही उनका बालमन में प्रकृति द्वारा एक साहित्यकार के रूप में बीज अंकुरण होने लग गया था और प्राकृतिक अंचल में खेलने कूदने से इनका बाल मन कोमल साहित्यकार के रूप में परिवर्तित होता चला गया। पहली बार साहित्यिक सफर 1983 में पहली कविता संग्रह समर्पण प्रकाशित हुई। देश विदेश में कई भाषाओं में उनके साहित्य का अनुवाद हो चुका है। यूगांडा, नेपाल, मॉरिशस, श्रीलंका, जर्मनी, हॉलैंड, रूस, नार्वे, जापान, इंडोनेशिया, भूटान सहित कई यूरोपीय देशों में सम्मान मिला। देश विदेश की 300 से अधिक साहित्यिक एवं सामाजिक संस्थाओं द्वारा राष्ट्र गौरव एवं यूथ आइकन अवार्ड दिये गये हैं।

हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं कविता, कहानी, संस्मरण, उपन्यास, पर्यटन साहित्य, यात्रा वृत्तांत आदि लिखकर हिन्दी साहित्य को उच्च स्तर पर पहुंचाया।

कविता संग्रह— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने अब तक लगभग 14 कविता संग्रह लिख लिए हैं। इन कविताओं में डॉ० 'निशंक' जी ने अपने बाल मन में उपजे विचारों को कविताओं का रूप देकर संग्रह किया। डॉ० 'निशंक' जी द्वारा अपनी कविताओं में देशप्रेम, देशभक्ति, नारी की दशा, युवाओं में जागरण आदि का उल्लेख किया है। पाठकों को ये कविताएं बहुत पसंद आती हैं। 14 कविता संग्रहों में डॉ० 'निशंक' जी ने कविताओं को बहुत ही सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया है। कविताओं में प्राकृतिक सुंदरता को मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है। 14 कविता संग्रह एक तरह से डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी की कविताओं की कवितांजली है। संसार कायरों के लिए नहीं, मैं गंगा बोल रही हूं आदि बहुत सारी कविताएं उनके साहित्यिक मन को पाठकों के सामने प्रस्तुत किया।

कहानी संग्रह— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के अब तक 14 कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। बाल मन, संघर्षशील जीवन और पत्रकारिता के अनुभव से उन्होंने विभिन्न कहानियों को लिखा। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने इन कहानियों को संग्रह कर 21 श्रेष्ठ कहानियां संग्रह नाम दिया। ये कहानियां पहाड़ों की जीवन शैली, पहाड़ों की समस्याएं, प्राकृतिक दृश्यों, गांव के जीवन, पलायन, अंधविश्वास, कुरीतियों, देशभक्ति, नारी की वर्तमान स्थिति पर आधारित हैं। जिनमें डॉ० 'निशंक' जी ने बहुत ही मार्मिक ढंग से कहानियों को पाठकों के पसंद अनुरूप बनाया है। जो कि आडंबर, अंधविश्वास आदि पर आधारित कहानियों में भी बहुत ही परिपक्व चित्रण किया है। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी की प्रतिभा का यह सबसे स्पष्ट प्रमाण है, गेहूँ के दाने, बस एक ही इच्छा आदि अनेक कहानियों के ही उदाहरण हैं।

उपन्यास— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने लगभग 12 उपन्यास लिखे हैं। जिनमें मुख्यतः मेजर निराला, भागोंवाली, निशांत, वीरा, पल्लवी, छूट गया पडाव, अपना पराया, कृतघ्न, प्रतिज्ञा, शिखरों के संघर्ष, पहाड़ से ऊंचा, जिन्दगी रुकती नहीं हैं। इन उपन्यासों में डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' द्वारा देशभक्ति, समाजसेवा, नारी दशा, सामाजिक सुरक्षा, सामाजिक अंधविश्वास, सामाजिक आडंबर, कुरीतियों, रीति रिवाजों का बहुत ही सुंदर वर्णन किया है। पहाड़ों की जीवन शैली, रहन-सहन, देश भक्ति, देश प्रेम, कर्तव्यनिष्ठा का सुन्दर वर्णन किया है। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी द्वारा लिखित सभी उपन्यासों में एक उत्तम साहित्यिक शैली का प्रयोग हुआ है, सभी उपन्यासों में पात्रों का चरित्र-चित्रण को अति उत्तम ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

सभी उपन्यास ऐतिहासिक और वर्तमान समय के अनुसार ही लिखे गये हैं। जिनमें देशभक्ति, देशप्रेम आदि बड़े मार्मिक तथा मनोरंजन ढंग से प्रस्तुत किया गया है। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के सभी उपन्यास पाठकों में बहुत अधिक लोकप्रिय और प्रचलित हैं। सभी उपन्यासों को राष्ट्रीय स्तर पर कई बार पुरस्कृत किया जा चुका है, कई उपन्यासों पर फिल्में भी बन चुकी हैं। वर्तमान समय में डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी का रचना संसार में प्रत्येक रविवार को डॉ० 'निशंक'

जी की रचनाओं पर ऑनलाइन सेमीनार (वेबीनार) का आयोजन किया गया है। जिसमें 9 अक्तूबर 2022 को 78 वां रचना संसार प्रतिज्ञा उपन्यास पर चर्चा या गोष्ठी आयोजित हुई।

पर्यटन ग्रंथ— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी जब भी विभिन्न देशों में भ्रमण या राजनैतिक उद्देश्य के लिए जाते हैं तो वहां के अनुभव को उन्होंने पर्यटन ग्रंथों के रूप में संकलित किया गया है। पर्यटन या भ्रमण और सैर सपाटे के दौरान उन्होंने प्राकृतिक झरनों, पहाड़ों, नदियों, झीलों, सागर, समुद्र तथा विभिन्न प्राकृतिक दृश्यों, विभिन्न देशों की भौगोलिक सुन्दरता, सांस्कृतिक विरासतों का बहुत ही सुन्दर सचित्र वर्णन किया जिससे उनको विभिन्न देशों द्वारा उपाधियों, सम्मानों अथवा पुरस्कारों द्वारा समय-समय पर डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी को सम्मानित और आमंत्रित किया है। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी द्वारा लगभग 4 पर्यटन ग्रंथ लिखे गये हैं। जो कि उनके द्वारा पर्यटन से जुड़े रोमांचकारी अनुभवों या भौगोलिक सुन्दरता को ग्रंथों के रूप में संजोया गया है। जिनको सभी पाठकों द्वारा भूरि-भूरी प्रशंसा के साथ बड़े मनोरंजक और पथ प्रदर्शक के रूप में पढ़ी और सहेजी जाती है।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी द्वारा पर्यटन ग्रंथों में यात्रियों के लिए मानचित्र, यातायात के साधन, सुविधाएं, समस्याओं आदि का लाभदायक वर्णन किया है, कोई भी अनजान व्यक्ति भी इन देशों का भ्रमण डॉ० 'निशंक' जी द्वारा रचित पर्यटन ग्रंथों को पढ़कर जा सकता है।

यात्रा वृत्तांत— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी द्वारा लिखित यात्रा वृत्तांत परंपरागत संस्कृति एवं आधुनिकता का संगम है। अपनी यात्रा के दौरान घटित छोटी-बड़ी घटनाओं, दृश्यों, विशिष्ट व्यक्तियों से मुलाकातों आदि का सजीव चित्रण किया है, संक्षिप्त में यही यात्रा वृत्तांत कहलाता है जो निम्न है—

1. मारीशस की स्वर्णिम स्मृतियां।
2. खुशियों का देश भूटान।
3. एक दिन नेपाल में।

4. पूर्वी अफ्रीका का प्रवेश द्वार युगांडा।
5. दक्षिण पूर्व एशिया का प्रवेश द्वार थाईलैंड।
6. मेरी यूनेस्को यात्रा।
7. उगते सूरज का देश जापान।
8. परंपरागत संस्कृति का संगम आष्ट्रिया और राजधानी बियना।

ये सभी डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी द्वारा लिखित यात्रा वृत्तांत हैं। इन यात्रा वृत्तांतों में सबसे पहले मारीशस और उसके बाद भूटान, नेपाल, युगांडा, थाईलैंड, यूनेस्को, जापान, आष्ट्रिया, आदि देशों का भ्रमण करके यात्रा वृत्तांतों को संकलन बनाकर हिन्दी साहित्य के पाठकों के लिए अमूल्य और मनोरंजक विधा के रूप में सहेजा जो कि चिर काल तक याद रखा जाएगा।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' का अन्य साहित्य— डॉ० 'निशंक' जी के अन्य साहित्य में जैसे वे एक कहानीकार हैं वैसे ही वे एक लेखक भी हैं। उन्होंने अनेक शहीद सैनिकों के परिवारों से मिलकर उनके पत्रों का संकलन करके उनका संपादन भी किया। हिमालय का महाकुंभ नंदा राजजात यात्रा जिसमें गढवाल और कुमाऊं की ईष्ट देवी भगवती नंदा की गाथाओं का वर्णन किया गया है। धरती का स्वर्ग उत्तराखण्ड भी उत्तराखण्ड की हरी-भरी वादियों और देवताओं की भूमि उत्तराखण्ड के बारे में है, जिसमें देवी-देवताओं के मंदिरों आदि के बारे में लिखा गया है। नन्दा हिमालय गॉडेस (अंग्रेजी अनुवाद) भी उत्तराखण्ड की अधिष्ठात्री देवी भगवती नन्दा की गाथा को अंग्रेजी में लिखा गया है, यह भी महत्वपूर्ण कृतियाँ हैं।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी द्वारा सफलता के अचूक मंत्र में उन्होंने युवा पीढ़ी के विकास के संदर्भ में लिखा है, युवाओं को सफलता का मंत्र उदाहरण सहित समझाया है जिसका लाभ युवा पीढ़ी उठाती रहती है।³

पहाड के लिए समर्पित व्यक्तित्व— शिक्षक से लेकर राजनीति के सर्वोच्च स्तर तक की ऊचाईयों छूने तक के सफर को प्रसिद्ध पर्यावरणविद् पद्म श्री डॉ० अनिल

³ इंटरनेट विकीपिडिया से प्राप्त जानकारी।

प्रकाश जोशी के शब्दों में मैंने—डॉ० निशंक जी के संघर्ष को बहुत नजदीक से देखा है। 1991 में पहली बार डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी द्वारा कर्णप्रयाग सीट से कांग्रेसी नेता डॉ० शिवानंद नौटियाल को टक्कर देने लिए चुनाव में उतरे थे। तब सभी ने इनका मजाक उड़ाया था लेकिन 'निशंक' जी ने अपने विधान सभा क्षेत्र के कोने-कोने का दौरा किया और घर-घर जा कर लोगों से मिले, लोगों से चुनाव और विकास की चर्चा की वे जनता में जाकर खुलकर बात करके समस्याओं को सुलझाने का प्रयास किया करते थे। इनकी जुझारु प्रवृत्ति को देखकर जनता ने इनको अपना नेता चुना मैं इसका साक्षी हूँ।

डॉ० 'निशंक' जी एक ऐसा व्यक्तित्व है जो बहुत मेहनती और हमेशा पहाड़ के लिए समर्पित भाव से जुड़ा रहे, उनकी सबसे बड़ी पहचान वे हमेशा ही अपने को ठेठ पहाड़ी कहना उचित समझते हैं। जो कि भावी पीढ़ी के लिए एक प्रेरणा स्रोत का काम करता है। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी अपने आप सम्पूर्ण रूप से पहाड़ के लिए समर्पित तो हैं ही साथ ही आपकी तीनों बेटियाँ भी पहाड़ के लिए पूरी तरह समर्पित हैं, सबसे बड़ी बेटी कला और फिल्मों के माध्यम से पहाड़ की सेवा कर रही तो दूसरी बेटी सेना में डॉक्टर बनकर देश सेवा करके उत्तराखण्ड का यश बढ़ा रही है तो तीसरी बेटी भी विभिन्न कार्यों द्वारा पहाड़ का नाम रोशन कर रही हैं।

सम्मान एवं उपलब्धियाँ— उत्कृष्ट साहित्य सृजन के लिये डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी को अभी तक विभिन्न देशों, प्रदेशों, विश्वविद्यालयों, साहित्यिक संस्थाओं, आदि द्वारा समय-समय पर उपलब्धियाँ तथा सम्मान से विभूषित किया गया है या मिल चुके हैं जो निम्नलिखित हैं—

1. लंदन में मिला वातायन अंतर्राष्ट्रीय शिखर सम्मान।
2. कनाडा में मिला अंतर्राष्ट्रीय साहित्य गौरव सम्मान।
3. कनाडा, जर्मनी एवं यू.एस.ए. द्वारा अंतर्राष्ट्रीय 3जी अवार्ड।
4. लंदन में डॉ० निशंक को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लिए सम्मान।
5. हालैण्ड में मिला अजेय स्वर्ण पदक।

6. कुवैत में प्रवासी सम्मान 2020 ।
 7. यूक्रेन की राजधानी में सम्मानित ।
 8. फ्रांस में गोपियो अंतर्राष्ट्रीय असाधारण उपलब्धि सम्मान ।
 9. मॉरीसश में असाधारण उपलब्धि सम्मान ।
 10. पोलैण्ड में मिला एन्वायरमेंटल कंजर्वेशन अवार्ड ।
 11. आस्ट्रिया में पर्यावरण एवं गंगा संरक्षण के लिए सम्मानित ।
 12. बेल्जियम में एन.आर.आई. एप्रेशियेसन अवार्ड ।
 13. मॉरीसश में मिला मॉरीसश सम्मान ।
 14. युगांडा में मिला मानवीय शिखर सम्मान ।
 15. नेपाल में हिमाल गौरव सम्मान ।
 16. थाईलैंड में पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्द्धन के लिए सम्मान ।
 17. भूटान में हैप्पीनैस अवार्ड ।
 18. जापान में दायतो बांका विश्व विद्यालय से साहित्यिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में सम्मान ।
 19. श्रीलंका में डी0 लिट0 की उपाधि से सम्मानित ।
 20. देश के राष्ट्रपतियों द्वारा भी सम्मानित ।
 21. स्व0 अटल बिहारी वाजपेई द्वारा साहित्य भारती सम्मान ।
 22. 'निशंक' जी के साहित्य पर कई पी-एच0 डी0, फिल्में और एल्बम बने हुए हैं ।
 23. ब्रिटिश पार्लियामेंट में भारत गौरव सम्मान ।
 24. हिन्दी यूनिवर्स फाउंडेशन नीदरलैंड ने साहित्य भूषण सम्मान से नवाजा ।
- 1) लंदन में मिला वातायन अंतर्राष्ट्रीय शिखर सम्मान— वैश्विक हिंदी परिवार एवं वातायन की ओर से आयोजित सम्मान समारोह में विश्वभर के लेखक, कवि, पत्रकार,

चिन्तक एवं शिक्षाविद ऑनलाइन रहे। वातायन के अध्यक्ष मीरा कौशिक नेहरू युवा केन्द्र लन्दन के निदेशक प्रतिष्ठित लेखक डॉ० अमीश त्रिपाठी, वातायन के ट्रस्टी संरक्षक विंडसर मेडनहेड की वैरोनेस श्रीला फ्लैदर, ब्रिटिश सांसद श्री वीरेन्द्र शर्मा, प्रसिद्ध लेखिका दिव्या माथुर, डॉ० निखिल कौशिक, डॉ० पदमेश गुप्ता, अतरीपा ठाकुर मुखर्जी तथा वाणी प्रकाशन की निदेशक अदिति माहेश्वरी की उपस्थिति में डॉ० 'निशंक' जी को वातायन अंतर्राष्ट्रीय शिखर सम्मान प्रदान किया गया।

वातायन संस्था कवियों, लेखकों और कलाकारों के कल्याण हेतु सामाजिक, सांस्कृतिक और शैक्षणिक गतिविधियों का आयोजन करती है। इससे पूर्व यह सम्मान गीतकार प्रसून जोशी, जावेद अख्तर, राजेश रेड्डी, कुंवर बेचैन, निराफालजी जैसी अनेक हस्तियों को दिया जा चुका है।

2) कनाडा में अंतर्राष्ट्रीय साहित्य गौरव सम्मान— हिंदी रायटर गिल्ड कनाडा द्वारा डॉ० रमेश पोखरियाल निशंक को उनकी साहित्य सेवा और लेखन के लिए साहित्य गौरव सम्मान प्रदान किया गया। कार्यक्रम में कनाडा में भारत के काउंसलर अपूर्वा श्रीवास्तव, भारत के हाईकमिशनर अजय बिसारिया, हिन्दी रायटर गिल्ड के निदेशक विजय विक्रान्त, इसरो के पूर्व निदेशक कस्तूरी रंगन, केंद्रीय हिंदी संस्थान के उपाध्यक्ष अनिल जोशी, सैलजा सक्सेना आदि की उपस्थिति में वर्चुअल माध्यम से तत्कालीन राज्यपाल बेबी रानी मौर्य के हाथों से यह सम्मान डॉ० 'निशंक' को दिया गया।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी को बधाई देते हुए राज्यपाल बेबी रानी मौर्य ने कहा कि डॉ० निशंक जी कवि, लेखक, पत्रकार होने के साथ-साथ लोकप्रिय नेता भी हैं। विधायक, मुख्यमंत्री, सांसद और केंद्रीय मंत्री रहते हुए भी उन्होंने साहित्य सेवा के प्रति अपना समर्पण योगदान सिद्ध किया है।

3) अंतर्राष्ट्रीय 3 जी अवार्ड— कनाडा, जर्मनी एवं यू.एस.ए. की संस्था सृजनी, द क्रियेटिव वूमेन द्वारा डॉ० 'निशंक' को उनकी साहित्यिक सेवाओं के लिए अंतर्राष्ट्रीय ग्लोबल जीनीयस गैलैक्सी अवार्ड से विभूषित किया गया। एक शाम मानवतावादी साहित्यकार एवं कवि डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के सम्मान के नाम से आयोजित इस विशेष समारोह में यू०एस०ए० कनाडा और जर्मनी से अर्चना पांड्या,

श्वेता सिंह, प्राची रंधावा एवं शिप्रा शिल्पी के साथ ही डॉ० सुधांसु शुक्ला (पोलैंड) डॉ० बी.एल.गोंड (भारत), श्वेता सिंह उमा (मास्को), श्रीमती पूनम सुजीवन (मॉरीशस), पंकज शर्मा पत्रकार आज तक (भारत) एवं डॉ० रचना तिवारी (भारत) ने अपने विचार रखे।

4) लंदन में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लिए सम्मान— लंदन में डॉ० 'निशंक' जी को नई शिक्षा नीति के माध्यम से शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए कैंब्रिज विश्व विद्यालय द्वारा डॉ० 'निशंक' जी को सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार दिल्ली में उन्हें अंतर्राष्ट्रीय प्रबंधन के निदेशक राड स्मिथ द्वारा प्रदान किया गया। राड स्मिथ ने लम्बे समय बाद भारतीय शिक्षा प्रणाली में आये सुधारात्मक बदलावों की प्रशंसा करते हुए डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के प्रयासों को परिवर्तनकारी बताया तथा इस अवसर पर अरविंदो सोसाइटी के शिक्षा प्रमुख सभ्रांत शर्मा, सचिव विजय पोद्दार, कैंब्रिज विश्व-विद्यालय की प्रीति, एच०डी०एफ०सी० बैंक समूह के अध्यक्ष आशिया सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित थे।

5) हालैंड में मिला अंतर्राष्ट्रीय अजेय स्वर्ण पदक— वैश्विक महर्षि संगठन द्वारा डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के साहित्यिक कृतित्व एवं भाव सम्पन्नता के लिए अंतर्राष्ट्रीय अजेय स्वर्ण पदक प्रदान किया गया। 40 देशों के प्रतिनिधियों की उपस्थिति में हालैंड में आयोजित संगठन के वार्षिक वैदिक सम्मेलन में संगठन प्रमुख डॉ० टोनी नाडर ने उन्हें यह सम्मान दिया। पुरस्कार ग्रहण करते हुए डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने कहा कि वे यह पुरस्कार उन कोरोना योद्धाओं को समर्पित करते हैं। जिन्होंने चिकित्सक, नर्स एवं मेडिकल स्टाफ के रूप में अपनी जान की परवाह किये बिना चौबीसों घंटे समर्पण भाव एवं कर्तव्यनिष्ठा से कार्य किया। कार्यक्रम में वैदिक भारत परियोजना के राष्ट्रीय निदेशक दिग्विजय भी उपस्थित थे।

6) कुवैत में मिला प्रवासी सम्मान 2020— भारतीय प्रवासी परिषद कुवैत द्वारा डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी को नये भारत के निर्माण के लिए प्रवासी सम्मान 2020 सम्मानित किया गया। 21वीं सदी का ज्ञान एवं तकनीकी आधारित विश्व भारत की ओर काफी उम्मीद भरी —दृष्टि से देख रहा था। शिक्षा मंत्री के रूप में डॉ०

रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के कार्यकाल में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व एवं मार्ग दर्शन में राष्ट्रीय शिक्षानीति को संस्तुति प्रदान की गयी।

7) यूक्रेन में भी सम्मानित— यूक्रेन में योग फाउण्डेशन आफ यूक्रेन द्वारा डॉ० 'निशंक' जी को गंगा एवं पर्यावरण लिए सम्मानित किया गया। सम्मान ग्रहण करते हुए डॉ० निशंक जी ने कहा कि यह सम्मान हर उस व्यक्ति का सम्मान है जो गंगा, हिमालय और प्रकृति से प्रेम करता है और उनमें श्रद्धा रखता है। इस अवसर पर यूक्रेन में भारतीय राजदूत श्री मनोज भारती, भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के निदेशक कुमार आनंद, यूक्रेन योग फाउंडेशन की अध्यक्षा टेलेना टेरेसोवा (माता सती), यूक्रेन सोलर के अध्यक्ष श्री अनातोली क्रावतसोव तथा यूक्रेन में डिप्टी चीफ मिशन जी०आर० मीणा, यूक्रेन में सीरिया के राजदूत डॉ० हसन खडौर के अलावा यूक्रेन के अनेक गणमान्य लोग तथा कई सामाजिक संगठनों के पदाधिकारी गण उपस्थित थे।

8) गोपियो अंतर्राष्ट्रीय असाधारण उपलब्धि सम्मान— फ्रांस की राजधानी पेरिस के इण्डिया हाउस में अप्रवासी भारतीय उद्योग पतियों के अंतर्राष्ट्रीय संगठन ग्लोबल ऑर्गेनाइजेशन ऑफ इण्डियन ऑरिजन (गोपियो) द्वारा डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी को उनकी साहित्यिक उपलब्धियों के लिए गोपियो अंतर्राष्ट्रीय सम्मान से सम्मानित किया गया। गोपियो (फ्रांस) के अध्यक्ष श्री मन्नू स्वामी ने कहा कि यह उनका सौभाग्य है कि कला, संस्कृति और वैश्विक नवोन्मेशी क्रिया कलापों की राजधानी पेरिस में वे डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी का सम्मान कर रहे हैं। इस अवसर पर फ़ेडरेशन ऑफ इंडिया इन फ्रांस के प्रधान श्री जोगेन्द्र सिंह, श्री दादिये, श्री अरुण गुलाटी एवं बड़ी संख्या में कला, संस्कृति और साहित्य से जुड़े अनेक गणमान्य लोग उपस्थित थे।

9) अंतर्राष्ट्रीय असाधारण उपलब्धि सम्मान— मारीशस में ग्लोबल ऑर्गेनाइजेशन ऑफ इण्डियन ऑरिजन द्वारा वर्ष 2010 में डॉ० 'निशंक' जी को उनके उत्कृष्ट साहित्य सृजन के लिए मारीशस में गोपियो अंतर्राष्ट्रीय असाधारण उपलब्धि सम्मान प्रदान किया गया। तत्समय यह सम्मान गोपियो के अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री महेन्द्र उच्चान एवं मारीशस के तत्कालीन प्रधान मंत्री डॉ० नवीन राम गुलाम द्वारा प्रदान

किया। इस अवसर पर श्री उच्चायन ने कहा कि डॉ० रमेश पोखरियाल निशंक की असाधारण साहित्यिक प्रतिभा और राजनैतिक प्रखरता को देखते हुए हम उन्हें गोपियो सम्मान प्रदान करते हुए गर्व महसूस कर रहे हैं।

अंतर्राष्ट्रीय असाधारण उपलब्धि सम्मान पाने के पश्चात मॉरीशस के राष्ट्रपति सर अनिरुध जगन्नाथ ने डॉ० 'निशंक' जी के सम्मान में राष्ट्रपति भवन में भोज दिया जिसमें मॉरीशस के प्रधानमंत्री, मंत्रीगण, और शीर्षस्थ लोग उपस्थित रहे जिन्होंने डॉ० 'निशंक' जी को बधाई दी।

10) पोलैंड में इंवायरमेंटल कंजर्वेशन अवार्ड— पोलैंड की राजधानी वारसा में डॉ० 'निशंक' को हिमालय और गंगा संरक्षण में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए बी० जी० गुप इंवायरमेंटल कंजर्वेशन अवार्ड प्रदान किया गया यह अवार्ड गुप के चेयरमेन साईकेत वासु, पोलैंड में भारत के राजदूत श्री सेवांग नामग्याल एवं वारसा विश्वविद्यालय के अध्यक्ष डॉ० रवि रंजन तथा प्रख्यात लेखक एवं अंतर्राष्ट्रीय मामलों के विशेषज्ञ श्री संजय भूटानी द्वारा संयुक्त रूप से दिया गया। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी का स्वागत करते हुए डॉ० रविरंजन ने कहा कि निशंक जी राजनीति और साहित्य का विलक्षण संगम है। पोलैंड में उनका आना हिन्दी भाषा के प्रेमियों के लिए सुखद है। इस अवसर पर भारतीय समुदाय के अध्यक्ष श्री पवन गुरजानी, भारतीय समुदाय दूतावास के वरिष्ठ अधिकारी श्री अमरजीत ताकी एवं यदराम यादव, पूर्व राजदूत श्री संतोष जी, उद्योगपति श्री अशोक मनानी, इण्डिगो इण्टर नेशनल के अध्यक्ष हरीश लालवानी, प्रोफेसर सुरेश नौटियाल तथा बी० जी० गुप की सी०ई०ओ० श्रीमती नंदनी उपस्थित थी।

11) आस्ट्रिया में मिला सम्मान— आस्ट्रिया की राजधानी वियना में डॉ० 'निशंक' जी को पर्यावरण एवं गंगा संरक्षण के लिए सम्मानित किया गया। संयुक्त राष्ट्र में भारतीय प्रतिनिधित्व कर रहे मयंक शर्मा, विश्व ऊर्जा संस्थान के डॉ० अंसारी, वियना के हिंदू मंदिर अध्यक्ष श्री आहुजा द्वारा डॉ० 'निशंक' जी को संयुक्त रूप से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर डॉ० 'निशंक' जी की बहुचर्चित पुस्तक विश्व धरोहर गंगा का विमोचन भी किया गया। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी का स्वागत करते हुए श्री मयंक शर्मा ने डॉ० 'निशंक' जी के कृतित्व और उनके द्वारा सामाजिक हित से

जुडे अभियानों से पूरा विश्व परिचित है। उन्होंने डॉ० 'निशंक' जी को स्पर्श गंगा, आर्शीवाद योजना और संवेदना जैसी जनहित कार्यक्रम के लिए बधाई दी। इस अवसर पर वियना के हेड आफ चांसरी भगवान यादव, भारतीय दूतावास के अधिकारी हेस्मादीन अन्सारी, फर्स्ट सेक्रेटरी कॉमर्स सुभाष गुप्ता आदि सहित वियना के प्रकृति और पर्यावरण से जुड़े अनेक स्थानीय समुदाय के अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

12) एन० आर० आई० एप्रेसियेसन अवार्ड— बेल्जियम की राजधानी ब्रसेल्स में डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी को पर्यावरण और साहित्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान हेतु एन० आर० आई० एप्रेसियेसन अवार्ड से सम्मानित किया गया। यह सम्मान डॉ० 'निशंक' जी को एन० आर० आई० सभा के अध्यक्ष तरसेम सिंह शेरगिल तथा भारतीय दूतावास के वरिष्ठ अधिकारी धीरेन्द्र गर्ब्याल तथा इंडिया वर्ल्ड फाउण्डेशन के अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष विजय मलिक द्वारा प्रदान किया गया।

13) मारीसश सम्मान— मारीसश में साहित्य और राजनीतिक क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए मॉरीशस के तत्कालीन प्रधानमंत्री डॉ० नवीन राम गुलाम द्वारा डॉ० 'निशंक' जी को वर्ष 2010 में मारीसश का सर्वश्रेष्ठ सम्मान प्रदान किया गया। इस अवसर पर डॉ० नवीन रामगुलाम ने कहा कि डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' साहित्य सृजन के साथ ही राजनीति क्षेत्र में सतत सक्रिय हैं, डॉ० निशंक जैसे असाधारण उपलब्धि वाले व्यक्ति को यह सम्मान प्रदान करते हुए मुझे हर्ष की अनुभूति हो रही है।

14) मानवीय शिखर सम्मान— युगांडा में साहित्य में मानवीय संवेदनाओं के लिए युगांडा के प्रधानमंत्री रुहूकाना रुगांडा द्वारा मानवीय शिखर सम्मान प्रदान किया गया। इस अवसर पर श्री रुगांडा ने कहा कि डॉ० 'निशंक' जी ने राजनैतिक क्षेत्र में होने के बावजूद भी अपने साहित्य में जिस प्रखरता के साथ मानवीय संवेदनाओं को उठाया है वह अतुलनीय है। इससे यह प्रमाणित होता है कि वे मानवीय संवेदनाओं को सर्वोच्च प्राथमिकता देते थे।

15) हिमाल गौरव सम्मान— हिमालय की गोद में जन्में डॉ० 'निशंक' जी को उनकी साहित्यिक, सांस्कृतिक और सामाजिक उपलब्धियों के लिए हिमाल गौरव सम्मान

प्रदान किया गया, यह सम्मान तत्कालीन प्रधानमंत्री पुष्प कमल दहल के द्वारा प्रदान किया गया। इस अवसर पर श्री दहल ने कहा कि डॉ० 'निशंक' जी के साहित्यिक और सांस्कृतिक निकटता बढ़ेगी, जिस तरह डॉ० निशंक जी सामाजिक सांस्कृतिक और राजनैतिक क्षेत्र में एक साथ सक्रिय हैं यह उनके बहुआयामी व्यक्तित्व को दर्शाता है। दुनिया के लिए यह बड़ी बात है।

16) पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन के लिए सम्मान— थाईलैंड में हिमालयी सरोकारों और पर्यावरण संरक्षण के लिए राजकुमारी, राजादरशी, जयकुरा ने सम्मानित किया। राजकुमारी राजादरशी जयंकुरा ने कहा कि गंगा, पर्यावरण और हिमालयी सरोकारों को बचाने के लिए डॉ० 'निशंक' जी द्वारा जो कार्य किये गये और अभियान चलाया गया उसके लिए डॉ० 'निशंक' जी को धन्यवाद देती हूँ।

17) हैप्पीनेस अवार्ड— भूटान के प्रधान मंत्री श्री शोरिंग तोबके द्वारा डॉ० 'निशंक' जी को यह हैप्पीनेस अवार्ड प्रदान किया गया। प्रधानमंत्री शोरिंग ने कहा कि डॉ० 'निशंक' जी ने अपने साहित्य को समाज सेवा और राजनैतिक कृतित्व से विश्व में प्रसन्नता (हैप्पीनेस) फैलाई है, इसलिए वह विश्व के हैप्पीनेस के ब्रांड एम्बेसडर हैं। भूटान उन्हें यह सम्मान प्रदान करते हुए हर्ष का अनुभव करता है।

18) दायतो बांका विश्व विद्यालय में सम्मान— जापान में दायतो बांका विश्व विद्यालय ने डॉ० 'निशंक' जी को साहित्यिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए सम्मानित किया। डॉ० निशंक जी द्वारा इस अवसर पर छात्र-छात्राओं को मध्य भारतीय संस्कृति और सभ्यता विषय पर अपना व्याख्यान भी प्रस्तुत किया।

19) श्रीलंका में सम्मान— श्रीलंका में अंतर्राष्ट्रीय ओपन यूनिवर्सिटी द्वारा डॉ० 'निशंक' जी को डी० लिट० की उपाधि से सम्मानित किया गया और श्रीलंका की प्रथम महिला महेला राजपक्षे द्वारा डॉक्टर ऑफ साइंस की उपाधि से सम्मानित किया गया।

20) देश के राष्ट्रपतियों द्वारा सम्मान— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी को देशभक्ति पुस्तकों का विमोचन भारत के राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह द्वारा देश हम ना जलने देंगे पुस्तक का विमोचन किया गया। डॉ० शंकर दयाल शर्मा द्वारा डॉ०

‘निशंक’ जी की काव्यकृति मातृभूमि के लिए विमोचन किया गया। तत्कालीन महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल को भी डॉ० रमेश पोखरियाल ‘निशंक’ जी द्वारा श्री बद्रीविशाल की स्मृति चिह्न भेंट की गई। डॉ० ए.पी.जे. अब्दुल कलाम द्वारा डॉ० ‘निशंक’ जी की कृति ए वतन तेरे लिए का लोकार्पण किया गया। डॉ० प्रणव मुखर्जी द्वारा डॉ० निशंक जी की पुस्तक संसार कायरों के लिए नहीं का विमोचन किया गया और महामहिम राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद द्वारा डॉ० ‘निशंक’ जी की पुस्तक आस्था आध्यात्म का लोकार्पण किया गया।

स्वर्गीय प्रधानमंत्री भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेई द्वारा डॉ० रमेश पोखरियाल ‘निशंक’ जी को साहित्य भारती सम्मान से भी सम्मानित किया गया।

इनके अलावा डॉ० रमेश पोखरियाल ‘निशंक’ जी के साहित्य पर अनेकों विश्व विद्यालयों द्वारा अभी तक 50 से अधिक शोध हो चुके हैं। इनका साहित्य विभिन्न विश्व विद्यालयों में पाठ्यक्रमों में पढाया जाता है। देश के विभिन्न प्रकाशनों द्वारा डॉ० ‘निशंक’ जी की विभिन्न विधाओं की लगभग 200 से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। कविता, कहानी, उपन्यास, संस्मरण, डायरी, यात्रा वृत्तांत, पर्यटन ग्रंथ, तथा बाल साहित्य सहित हिन्दी की लगभग सभी विधाओं में डॉ० ‘निशंक’ जी की अब तक आठ दर्जन से अधिक पुस्तकें देश के प्रमुख प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित हो चुकी हैं।⁴

डॉ० रमेश पोखरियाल ‘निशंक’ की अनेकों पुस्तकें हिन्दी, तमिल, तेलगू, मलयालम, संस्कृत, कन्नड, गुजराती, मराठी, भोजपुरी, गढ़वाली, पंजाबी, उडिया आदि अनेक भाषाओं के अतिरिक्त अंग्रेजी, नेपाली, फ्रेंच, डच, स्पैनिश, क्रियोल आदि विदेशी भाषाओं में भी हुआ है। डॉ० रमेश पोखरियाल ‘निशंक’ जी के देशभक्ति गीत देश के अनेक आकाशवाणी एवं दूरदर्शन केंद्रों पर प्रसारित किये जाते हैं और देश के अनेकों विद्यालयों में प्रार्थना के रूप में गाये जाते हैं।

डॉ० रमेश पोखरियाल ‘निशंक’ जी के उपन्यास मेजर निराला, बीरा, एवं छूट गया पडाव पर फीचर फिल्में बनी हुई हैं तथा कविताओं पर गीतों के एलबम बने हैं।

⁴ दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी पत्रिका (परमार्थ निकेतन ऋषिकेश)।

साहित्य सृजन, गंगा एवं हिमालय संरक्षण, संवर्धन, समाज सेवा और राजनैतिक उपलब्धियों के लिए डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी को अब तक देश-विदेश की 300 से अधिक संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया जा चुका है।

निष्कर्ष— उपरोक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी का जन्म एक उच्च साहित्यकार के रूप में हुआ है। इस विवरण में 'निशंक' जी का जीवन परिचय का उल्लेख किया गया, इसके साथ ही इनकी शिक्षा-दिक्षा, परिवार और इनके व्यक्तित्व के विषय में लिखा गया है। निशंक जी का राजनीतिक सफर 1991 से लेकर वर्तमान समय तक अनेक विभागों में कार्य किया है। इन्हें उत्तराखण्ड की राजनीति का चाणक्य भी कहा जाता है। इन्होंने सामाजिक क्षेत्र में भी बहुत ही दृढ़ निश्चयी, संघर्षशीलता, परिवर्तनशीलता, गरीबों से सहानुभूति, भाईचारा, जातपात का विरोध आदि की निस्वार्थ सेवा की, इनको लोग प्रेरक प्रसंग के रूप में भी लेते हैं। इस अध्याय में निशंक जी के साहित्य का भी उल्लेख किया गया इसके साथ ही अनेकों सम्मानों से सम्मानित किया गया है। इन सभी का वर्णन उपरोक्त अध्याय में किया गया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि 'निशंक' जी एक उच्चकोटि के साहित्यकारों में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त किए हुए हैं। ,

संदर्भ

1. 'निशंक' जी का रचना संसार से प्राप्त जानकारी ।
2. डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक'— मेजर निराला ।
3. इंटरनेट विकीपिडिया से प्राप्त जानकारी ।
4. दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी पत्रिका (परमार्थ निकेतन ऋषिकेश) ।

द्वितीय अध्याय

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी का कृतत्व

डॉ० 'निशंक' छात्र जीवन से ही लिखते रहे हैं। तब वे कवितायें और कहानियाँ लिखकर अपने सहपाठियों को सुनाया करते थे। शिशु मंदिर में अध्यापन के दौरान उन्होंने पत्र-पत्रिकाओं के लिये लिखना प्रारम्भ किया और लगातार छपते रहे। पुस्तक के रूप में वर्ष 1983 में उनका पहला काव्य संग्रह 'समर्पण' प्रकाशित हुआ फिर तो सृजन की यह धारा अविरल, अबाध बहती चली गई।

डॉ० सोनिका रानी के अनुसार— 'डॉ० निशंक बचपन से ही कविता, कहानी लिखकर अपने सहपाठियों को सुनाया करते थे, अध्ययनकाल से इनकी कवितायें पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने लगी। इनकी प्रारम्भिक कविताओं में संवदेना एवं भाषा की प्रौढ़ता दिखायी देती है।'¹

डॉ० 'निशंक' ने हिन्दी साहित्य की सभी विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई है। कविता, कहानी, उपन्यास, डायरी, रिपोर्ताज, यात्रा वृत्तांत, जीवनी, खंडकाव्य, धर्म एवं संस्कृति, पर्यटन, बाल साहित्य एवं व्यक्तित्व विकास आदि विषयों पर अब तक उनकी आठ दर्जन से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इनमें 16 काव्य संग्रह, 19 कहानी संग्रह, 12 उपन्यास, 2 खण्डकाव्य, 10 व्यक्तित्व विकास और जीवनी, 11 यात्रा वृत्तांत, 5 पर्यटन ग्रंथ, 3 डायरी एवं संस्मरण, 6 बाल साहित्य एवं 2 धर्म एवं संस्कृति से सम्बन्धित साहित्य शामिल है।²

डॉ० महेशचन्द्र लिखते हैं— 'संघर्षों से जूझते हुए डॉ० 'निशंक' निरन्तर जीवन पथ पर चलते रहे और माँ सरस्वती की कृपा उन पर निरन्तर बरसती रही। इसका परिणाम यह हुआ कि उन्होंने अपने जीवन का आरम्भ शिक्षक के रूप में किया और वहीं से वे पत्रकार, कवि, कथाकार, पुरातत्ववेत्ता और संस्कृतिवेत्ता के रूप में सफलता प्राप्त करते गये।'³

¹ (डॉ० सोनिका रानी— डॉ० 'निशंक' के काव्य में राष्ट्रीयता के स्वर हिन्दी साहित्य निकेतन बिजनौर, संस्करण 2021 पृष्ठ 72)

² डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' — समर्पण पृष्ठ 26

³ (डॉ० योगेन्द्रनाथ शर्मा 'अरुण' (संपा०)— डॉ० 'निशंक' के काव्य में इन्द्रधनुषी चिंतन, हिंदी साहित्य निकेतन, बिजनौर, संस्करण—2019, पृष्ठ 24)

2.1 डॉ० 'निशंक' की प्रकाशित कृतियाँ

डॉ० 'निशंक' का अब तक प्रकाशित साहित्य निम्नवत है—

कविता संग्रहः—

1. समर्पण
2. नवांकुर
3. मुझे विधाता बनना है
4. तुम भी मेरे साथ चलो
5. देश हम जलने न देंगे
6. जीवन पथ में
7. मातृभूमि के लिये
8. कोई मुश्किल नहीं
9. ऐ वतन तेरे लिये
10. संघर्ष जारी है
11. सृजन के बीज
12. अँधेरा जा रहा है
13. भूल पाता नहीं
14. मृगतृष्णा
15. परीक्षा लेती जिन्दगी
16. सुप्रभात जिन्दगी

खण्डकाव्यः

1. प्रतीक्षा
2. मैं गंगा बोल रही

कहानी संग्रह:-

1. बस एक ही इच्छा
2. क्या नहीं हो सकता
3. भीड़ साक्षी है
4. रोशनी की एक किरण
5. खड़े हुये प्रश्न
6. विपदा जीवित है
7. एक और कहानी
8. मेरे संकल्प
9. मील के पत्थर
10. टूटते दायरे
11. अंतहीन
12. केदारनाथ आपदा की सच्ची कहानियाँ
13. वाह जिन्दगी
14. निशंक की 21 सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ
15. कथायें पहाड़ों की (संयुक्त)
16. कोरोना काल की करुण कहानियाँ
17. जीने का नाम जिन्दगी
18. डॉ० 'निशंक' की लोकप्रिय कहानियाँ (संकलित)
19. मेरी प्रारम्भिक कहानियाँ (संयुक्त)

उपन्यास:-

1. मेजर निराला
2. बीरा

3. निशान्त
4. छूट गया पड़ाव
5. अपना पराया
6. पहाड़ से ऊँचा
7. पल्लवी
8. प्रतिज्ञा
9. भागोंवाली
10. कृतघ्न
11. शिखरों के संघर्ष (संयुक्त)
12. जिन्दगी रूकती नहीं

व्यक्तित्व विकास एवं जीवनी:—

1. सफलता के अचूक मंत्र
2. भाग्य पर नहीं परिश्रम पर विश्वास करें
3. संसार कायरों के लिये नहीं (स्वामी विवेकानन्द का जीवन प्रबन्ध)
4. सपने जो सोने न दें (डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम के जीवन पर)
5. हिमालय में स्वामी विवेकानन्द
6. युग पुरुष भारतरत्न अटल जी
7. एकात्म मानववाद के प्रणेता पं० दीनदयाल उपाध्याय
8. मानवता के प्रणेता महर्षि अरविन्द
9. पेशावर कांड के महानायक वीर चन्द्र सिंह गढ़वाल
10. हिमालय में टैगोर और गीतांजलि

बाल साहित्य:—

1. आओ सीखें कहानियों से

2. कर्मयोगी स्वामी विवेकानन्द
3. स्वामी विवेकानन्द जीवन यात्रा
4. शिकागो में स्वामी विवेकानन्द
5. आगे बढ़ो: स्वामी विवेकानन्द
6. सकारात्मक सोच: स्वामी विवेकानन्द

पर्यटन एवं तीर्थाटन:—

1. धरती का स्वर्ग उत्तराखण्ड भाग-1: हिमालय का महाकुम्भ नन्दा देवी राजजात
2. धरती का स्वर्ग उत्तराखण्ड भाग-2: स्पर्श गंगा: उत्तराखण्ड की पावन जल धारायें
3. धरती का स्वर्ग उत्तराखण्ड भाग-3: आलौकिक सौन्दर्य (उत्तराखण्ड नैसर्गिक स्थल)
4. धरती का स्वर्ग उत्तराखण्ड भाग-4 आस्था एवं अध्यात्म

विदेश यात्रायें:—

1. मॉरीशस की स्वर्णिम स्मृतियाँ
2. भारतीय संस्कृति का संवाहक इंडोनेशिया
3. एक दिन नेपाल में
4. खुशियों का देश भूटान
5. वैश्विक चाकलेट की राजधानी बेल्जियम
6. मेरी यूनेस्को यात्रा
7. दक्षिण पूर्व एशिया का प्रवेश द्वार थाईलैण्ड
8. पूर्वी अफ्रीका का प्रवेश द्वार युगाण्डा
9. परम्परागत संस्कृति और आधुनिकता का संगम ऑस्ट्रिया
10. उगते सूरज का देश जापान

11. यूरोप के सांस्कृतिक केन्द्र फ्रांस की यात्रा
12. मेरी यूक्रेन यात्रा

डायरी एवं संस्मरण:—

1. मेरी कथा मेरी व्यथा (शहीदों के पन्त्रों का संकलन)
2. प्रलय के बीच (केदारनाथ आपदा पर केन्द्रित)
3. आपदा के वह भयावह दिन (उत्तराखण्ड में 2010 में आई आपदा पर केन्द्रित)

धर्म एवं संस्कृति:—

1. भारतीय संस्कृति, सभ्यता एवं परम्परा
2. विश्व धरोहर गंगा
3. विश्व धरोहर: महाकुम्भ

पर्यावरण:—

हिमनद: मानव जीवन का आधार

शैक्षिक:—

1. चुनौतियों को अवसरों में बदलता भारत
2. मूल्य आधारित शिक्षा
3. शिक्षा के माध्यम से राष्ट्र निर्माण
4. Regaining Indias Glory

2.2 डॉ० 'निशंक' जी का काव्यजगत

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने अनेक प्रकार के काव्य संग्रह लिखकर हिन्दी काव्य जगत की सुन्दरता में चार चांद लगाए हैं। उन्होंने अपनी काव्य संग्रहों में देशभक्ति, देशप्रेम, पहाड़ों की समस्याएं, महिलाओं की स्थितियों, महिलाओं का जीवन स्तर, पहाड़ों से पलायन, पहाड़ों की समस्याएं आदि विषयों को अपनी कविताओं के द्वारा उठाया है।

उनके द्वारा लिखित विभिन्न काव्य संग्रह निम्नलिखित हैं—

1. **समर्पण**— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी द्वारा 1983 में सबसे पहली कविता संग्रह समर्पण प्रकाशित हुई, जिसमें उन्होंने देशप्रेम, देशभक्ति या बलिदान को कविता के सुन्दर रूप में व्यक्त किया है। कविता में डॉ० 'निशंक' जी द्वारा देश के नौजवानों में कविता के माध्यम से देशभक्ति को जाग्रत करने की अलख जगाई गई है, कविता संग्रह में रस, छंद, अलंकार का प्रयोग भी बहुत ही सटीक ढंग से हुआ है।

*सैकड़ों मस्तक चढ़े माँ,
मैं भी उनमें एक हूँ (जारी)
चाहता हूँ वन्दनीय माँ,
क्षण व क्षण प्रत्येक हूँ।⁴*

2. **नवांकुर**— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी द्वारा 1984 में कविता संग्रह नवांकुर प्रकाशित हुई, नवांकुर एक अनमोल कविता संग्रह है। नवांकुर में डॉ० 'निशंक' जी ने अपने बचपन के दिनों को नई-नई कोपलो के माध्यम से कविता के रूप में प्रकट किया है, रस, छंद, अलंकार का प्रयोग डॉ० 'निशंक' जी ने सटीक ढंग से प्रयोग किया हुआ है।

*याद मुझे उस कंटक वन की
जिससे होकर निकला हूँ
विपदानल की ज्वालाओं में
सदा मोम सा पिघला हूँ।⁵*

उपरोक्त पंक्तियां नवांकुर काव्य संग्रह से ही उद्धृत हैं। जिसमें कवि (डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक') प्रारम्भिक जीवन के दिनों में किये गये संघर्ष और कठिन परिश्रम को अपनी कविता के माध्यम से व्यक्त करते हैं।

3. **जीवन पथ में**— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी द्वारा जीवन पथ में 77 (सतहत्तर) कविताओं का संग्रह है। जिनमें से कुछ प्रमुख कविताएं निम्नलिखित हैं, उनके द्वारा वीर पुरुषों या वीर नौजवानों की प्रशंसा में कविता के माध्यम से अलख

⁴ वही — नवांकुर पृष्ठ 30

⁵ वही — जीवन पथ में पृष्ठ 21

जगाने की कोशिश की है, रस, छंद, अलंकारों का प्रयोग भी यथारूप से सटीक ही हुआ है।

लीक-लीक तो कायर चलते,

तुम बीर बनो पथ को जानो।

तोड़ सभी कारा के बंधन,

तुम बात सुनो मेरी मानो।⁶

4. देश हम जलने न देंगे— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने अपनी प्रारम्भिक रचनाओं में मातृभूमि के प्रति समर्पित हैं, जिसका भाव दृष्टव्य है। प्रस्तुत कविता में कवि (डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी) द्वारा देश पर समर्पित वीरों के बलिदान की भूरी-भूरी प्रशंसा करते हैं कि मैं हमारी मातृभूमि पर न्योछावर होने को कविता के माध्यम से प्रकट करते हुए कहते हैं, कि मैं भी उनमें से एक हूँ।

सैकड़ों मस्तक चढ़े माँ,

मैं भी उसमें एक हूँ।

हता हूँ वन्दनीय माँ,

क्षण व कण प्रत्येक हूँ।⁷

5. प्रतिक्षा (खण्डकाव्य)— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के इस कविता संग्रह में सरस, सुंदर और उपमान भरी कविताएं हैं, जिनमें देश भक्ति को नौजवानों में जाग्रत करने के लिए सुन्दर ढंग से वर्णित की गई हैं। रस, छंद, अलंकारों का प्रयोग बहुत ही सटीक ढंग से हुआ है।

क्रांति पर्व है आज उधर,

कौन यहाँ दुख शांत करेगा।

सूर्य किरण सा कब सुत मेरा,

⁶ वही — देश हम जलने न देंगे पृष्ठ 65

⁷ वही — देश हम जलने न देंगे पृष्ठ 65

देहरी पर आलोक भरेगा।^९

6. सृजन के बीज— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने अपनी कविता संग्रह सृजन के बीज में कसौटी कविता में डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने नौजवानों को प्रोत्साहित करके लिखी इस कविता संग्रह में बहुत ही बढ-चढ कर नौजवानों में कविता के माध्यम से साहस को संचारित किया है। कविता की पंक्तियों में रस, छंद, अलंकार का प्रयोग बहुत ही अनुभवी तरीके से किया है।

जो चट्टानों से ना टकराए

वो कब झरना बनता है,

उलझते टकराते इन राहों में

ये झरना हर पल छनता है।

दुस्सह थपेड़ों को सहकर बाधाएं पार जो करता है,

वही जीवन के अभिनव पथ पर

लक्ष्य-शिखर को पाता है।^९

7. कोई मुश्किल नहीं— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने कोई मुश्किल नहीं काव्य संग्रह में लगभग 75 कविताएं संग्रहित की हैं, जिनमें से प्रस्तुत कविता में बहुत ही सुन्दर वर्णन करते हुए लिखी हैं। प्रस्तुत कविता में डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी कविता के माध्यम से कहते हैं कि जीवन में संघर्ष तो करना ही पड़ता है, संघर्ष या परिश्रम करने के बाद मेहनत का फल मिलता है।

डॉ० 'निशंक' जी ने यथा सम्भव ही प्रस्तुत कविता में रस, छंद, अलंकारों का प्रयोग किया है।

घने बादलों का झुरमुट तो क्षण भर में छंट जाएगा,

मेरा स्वर्णिम दिवस तो सूर्य धरा पर लाएगा।

आच्छादित हो ज्योति धरा पर श्वासों में बस जाएगी,

^८ वही — प्रतीक्षा पृष्ठ 54

^९ वही — सृजन के बीज पृष्ठ 28

हर स्पंदन से कौंध-कौंध वह अंतर में समाएगी।¹⁰

8. तुम भी मेरे साथ चलो— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने तुम भी मेरे साथ चलो कविता संग्रह 2019 प्रकाशित की थी। प्रस्तुत कविता में उन्होंने एक पथ प्रदर्शक के रूप में कविताओं को प्रस्तुत करके सुन्दर वर्णन किया है, कविता संग्रह में यथाचित ही अलंकार, रस, छंद आदि मिल जाते हैं।

अभी तक तो रात है, अब घोरतम मिट जाएगा।

भटका अंधेरे में भटकता, राह अपनी पाएगा।¹¹

उपरोक्त कविता के अलावा निम्न लिखित कविता भी डॉ० 'निशंक' जी ने तुम भी मेरे साथ चलो में ही संकलित किए हैं। प्रस्तुत कविता में कवि (डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक') द्वारा एक पथ प्रदर्शक के रूप में गिरते सम्भलते हुए संघर्ष करने के गुर बताए हैं।

बढ़ रहा हूं मैं उठाने, गिर रहा जो लडखडाता,

जा रहा पथ गामिनी पर मीत तेरे गीत गाता।¹²

9. ऐ वतन तेरे लिए— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने अपने कविता संग्रह ऐ वतन तेरे लिए में देश के युवाओं में भक्ति की अलख जगाने के लिए कविता के माध्यम से कहते हैं। देश प्रेम में हम सभी को कठोर संघर्षों से गुजरना पड़ेगा और अंत में हमें हमारी मंजिल मिल जाएगी कविता में डॉ० 'निशंक' जी द्वारा अलंकार, छंद, रस का यथोचित प्रयोग हुआ है।

फैला है अंधियारा जग में, मिल कर दूर भगाएंगे,

नई किरण हैं, हम आशा की नूतन दीप जलाएंगे।

स्वार्थों को तुकरायेंगे हम, गीत विजय के गायेंगे,

नयी किरण हैं हम आशा की, नूतन दीप जलाएंगे।¹³

¹⁰ वही — तुम भी मेरे साथ चलो पृष्ठ 25

¹¹ वही — ऐ वतन तेरे लिए पृष्ठ 118

¹² वही — मातृ भूमि के लिए पृष्ठ 46

¹³ वही — कोई मुश्किल नहीं पृष्ठ 24

10. मातृ भूमि के लिए— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने काव्य संग्रह मातृभूमि के लिए में से प्रस्तुत कुछ कविताएं भारत के सपूतों के लिए भारत माता की सेवा को समर्पित कुछ कविताएं निम्न लिखित हैं।

उठे बीर जब भारत भू के
देश प्रेम को दिया पुकार,
भारत— भू की रक्षा करने
मिटे क्रांति में पूत हजार।
मंत्र एक था बीरों का
मुक्त देश को करना
और राष्ट्रधाती तत्वों का
शीश हमेशा हरना ¹⁴

उपरोक्त कविता संग्रहों में डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने एक सुलझे हुए साहित्यकार के रूप में या एक परिपक्व कवि के रूप कविताओं की रचना करके साहित्य की बुलंदियों पर पहुंचे।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने समस्त कविता संग्रहों में रस, छंद, अलंकार का सही प्रयोग किया है, जिससे कविताओं का स्वरूप निखरता गया है और कविताओं की सुन्दरता बढ़ती चली गई।

2.3 डॉ० 'निशंक' जी का कथा साहित्य

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी का हिन्दी साहित्य को अनमोल देने उनकी लिखी हुई विभिन्न विधाएं हैं जिनमें सुन्दर काव्यों के अलावा कथा साहित्य भी है।

एक कथाकार या कहानीकार के रूप में डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने कई अनमोल कहानी लिखी हैं, जिनको विभिन्न संग्रहों में संकलित किया गया है।

¹⁴ डॉ० रमेश पोखरियाल निशंक – मेरे संकल्प पृष्ठ 69

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने पहाड़ की संस्कृति, कला, खान-पान, जीवन स्तर को सुधारने के लिए उन्होंने बीड़ा उठाया है जो कि कविताओं, कहानियों, उपन्यासों या अन्य साहित्यिक माध्यम से भी हुआ है।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी की कहानियों में देशभक्ति, देशप्रेम, नारी दशा, अंधविश्वास, रीति रिवाज, प्रथाओं का उल्लेख किया है, जो इस प्रकार से हैं।

(क) मेरे संकल्प— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी द्वारा रचित इस कहानी संग्रह में लगभग दस कहानियां हैं। इन कहानियों में उच्च कोटि की साहित्यिक शैलियों का प्रयोग किया गया है। कहानियां पढ़कर यथार्थता का अनुभव होता है। ज्यादातर कहानियां पहाड़ों के जीवन पर आधारित हैं।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी द्वारा एक कुशल एवं परिपक्व साहित्यकार के रूप में कहानी लिखी गई है।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी की कहानियां निम्न लिखित कहानी शीर्षकों पर आधारित है।

1— भाग्य की लकीर— भाग्य की लकीर कहानी का पात्र मानवेंद्र गरीबी में पैदा होकर टाटा संस्था की छात्रवृत्ति पर अमेरिका में पढाई करके नासा में वैज्ञानिक बनता है, पर देश के प्रति देशभक्ति से वह भारत में ही इसरो में वैज्ञानिक बनता है।

अस्पताल के बेड पर कैंसर से पीड़ित मानवेंद्र के पिताजी की मृत्यु होने पर नर्स कहती है सर बेड जल्दी से खाली कर दो दूसरा पेशन्ट इंतजार में बैठा है। तो पिता जी यादों में खोया मानवेंद्र की तंद्रा टूट जाती है।¹⁵

2— मेरे संकल्प— करछुना गांव की कुंती देवी द्वारा शराबियों को सुधारने के लिए लिया गया संकल्प की कहानी है। जिसमें करछुना गांव तथा सीमंध गांव के बीच खेतों को लेकर झगडा चलता रहना दिखाया गया है।

गांव के मनवरसिंह द्वारा कच्ची शराब बनाकर बेचने तथा शराबी हुडदंगो द्वारा गांव की बहु बेटियों का रास्तों में आना-जाना मुस्किल हो जाने से कुंती देवी ग्राम प्रधान बनकर दूसरे गांव की महिलाओं को भी अपने साथ करके

¹⁵ वही — भाग्य की लकीर पृष्ठ 9

मनवरसिंह को पुलिस द्वारा पकडवाकर जेल भिजवाकर शराबियों पर नकेल कसती है।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी द्वारा भाषा शैली को आकर्षक ढंग से सजाया गया है।

3- परीक्षा- डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी द्वारा इस कहानी में गांव के प्रदीप को मुख्य पात्र के रूप में बनाकर उसकी गरीबी के कारण सिविल सर्विस परीक्षा की कोचिंग समय से पूर्ण ना होकर उसके पिता बसंतु लाल की बीमारी से असामयिक मृत्यु हो जाती है। उसकी प्रतिभा को देखकर गांव का ही एक व्यक्ति भुवन लाला उसकी मदद करने के लिए आगे आता है, फिर आइ० ए० एस० की परीक्षा को पास करके अफसर बन जाता है। कहानी में डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी द्वारा यथार्थ वर्णन करते हुए कहानी को जीवंत बना दिया है। यही विशेषता के कारण वे सर्वोच्च साहित्यकार माने जाते हैं।¹⁶

4- ठीया- पहाड से पलायन करके अमरोहा में आलीशान घर (ठिया) बनाकर बसे नीतेश के बड़े बेटे का एक्सीडेंट हो जाता है तथा छोटा बेटा भी दिल का मरीज होता है। ज्योतिषी द्वारा गांव जाकर पूजा करने को कहकर नीतेश गांव पहुंचकर गांव की पुरानी यादों में खो जाता है।¹⁷

5- छलावा- इस कहानी में पहाड के एक युवा मवलेश प्रसाद के शोलापुर में बिल्डर्स के पास पानी पिलाने की नौकरी करता है। धीरे-धीरे वह गलत संगति में फंस कर हत्या जैसे जघन्य अपराध करके गांव आकर गांव के भोले-भाले लोगों को भी अपने जाल में फंसाकर विधायक बन जाता है। इसी बीच शोलापुर से पुलिस आकर मवलेश को पकडकर ले जाती है, पूरी कहानी एक जीवंत छलावा ही लगती है। ऐसी उच्च-कोटि की कहानियां लिखने का श्रेय केवल डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी को ही जाता है।¹⁸

6- भय- रेल के डब्बे में यात्रियों के द्वारा एक दूसरे को आपस में डर तथा भय की कहानी सुनाकर सभी यात्री आपस में ही डर और भय से खिडकियां और दरवाजा

¹⁶ वही — परीक्षा पृष्ठ 26

¹⁷ वही — ठीया पृष्ठ 30

¹⁸ वही — छलावा पृष्ठ 18

बंद कर देते हैं। जो कि अक्सर रेल के भीड़ भरे डब्बों में हो जाया करती है इसलिए जीवंत लगती है।¹⁹

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने कहानी को इस प्रकार से बनाया गया है कि यह यथार्थ या जीवंत लगती है।

7- प्रतीक्षा- सी० बी०आर०आई० (केंद्रिय भवन निर्माण संस्थान) के गेस्ट हाउस की नई इंचार्ज गुंजन की योग्य जीवन साथी की तलाश की प्रतीक्षा में डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी द्वारा यह कहानी बनाई गई है। गुंजन अपनी कुशलता एवं मृदुभाषिता के कारण गेस्ट हाउस में सबकी चहेती बन जाती है जिसके बाद उसको अपना इच्छित जीवन साथी मिल जाता है। कहानी में प्रयुक्त शैली से एक उच्च कोटि के लेखक, साहित्यकार का ही परिचय मिलता है।²⁰

8- कहां भूल हुई- डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी द्वारा रचित इस कहानी में गरीबी से उठकर अधिकारी तथा मंत्री बने नारायण सिंह के बिगडैल और जिद्दी बेटा जो मेयर की हत्या करके पुलिस द्वारा पकड़ा जाता है। जब नारायण सिंह और उनकी पत्नी को पता लगता है कि उनके बेटे ने अपराध किया है, तो वे यही सोचते हैं कि उनकी परवरिश में कहां भूल हुई जो ऐसा लडका पैदा हुआ है।²¹

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी द्वारा कहानी बहुत ही सुंदर ढंग से लिखी गई है।

9- आदमखोर- गढवाल का ज्यादातर क्षेत्र वनों से घिरा होने के कारण जंगली जानवर गांव में आ जाने से आदमखोर बन जाता है, काण्डई गांव के सैनिक जगतसिंह के बेटे किशोर को मारकर आदमखोर बाघ जंगल की तरफ ले जाता है। सभी गांव वालों को रातभर दूढ़ने के बाद भी सुबह ही किशोर का क्षत-विक्षत शव मिलता है। जिला कार्यालय में सभी गांव वाले जाकर आदमखोर बाघ को मारने की आज्ञा लेकर आते हैं।²²

¹⁹ वही- भय पृष्ठ 24

²⁰ वही - प्रतीक्षा पृष्ठ 35

²¹ वही - कहां भूल हुई पृष्ठ 49

²² वही - आदमखोर बाघ पृष्ठ 11

10— आश्रय— आश्रय कहानी अनाथ आश्रम पर आधारित है। सुबह टहलते समय अस्पताल के नजदीक रूपेश को नवजात बच्ची रीना मिलती है, रूपेश रीना को पालकर उसके जैसे हजारों अनाथ बच्चों के लिए अनाथ आश्रम बनाता है। अनाथ आश्रम में कई महिलाएं रहती हैं, जिनमें से जवान रीना को देखकर मेयर रूपेश रीना को अपने फार्म हाउस की सेवा के लिए मांगता है। यह सुनकर रूपेश गुस्से में चला जाता है, मेयर पुलिस भेजकर रूपेश को जेल भेज देता है।²³

आश्रम की सभी महिलाएं एक होकर आश्रम की पत्रिका में रूपेश के बारे में उसकी सच्चाई लिखती हैं, फिर पुलिस रूपेश को बरी करके मेयर को सजा दिलाती है। आश्रय कहानी में डॉ० 'निशंक' जी ने एक बार फिर एक सुलझे हुए साहित्यकार के जैसे अपनी कुशलता का परिचय दिया है।

(ख) वाह जिन्दगी— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने वाह जिन्दगी कहानी संग्रह में लगभग पंद्रह कहानियां संग्रहित की हैं। वाह जिन्दगी कहानी संग्रह में कहानियों में अधिकतर ग्रामीण जन-जीवन पर आधारित है।²⁴ कहानी संग्रह निम्नलिखित शीर्षकों पर वर्णित हैं—

1. वाह जिन्दगी।
2. वापसी।
3. साक्षात्कार।
4. रद्दीवाला।
5. साक्षात दर्शन।
6. दण्ड।
7. भाग्यचक्र।
8. वक्त की ठोकर।
9. वसंती।
10. सजा तो मिलेगी।

²³ वही — आश्रय पृष्ठ 14

²⁴ वही — वाह जिन्दगी पृष्ठ 8

11. आस्था जीत गई।
12. ठौर।
13. हम हैं न साथ।
14. कफन कर्ज में।
15. दुष्चक्र।

(ग) भीड साक्षी है— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के भीड साक्षी है कहानी संग्रह में निम्नलिखित कहानियां लिखी गई है। इनमें डॉ० 'निशंक' जी ने रोशनी की एक किरण कहानी में आशावादी विचारों पर कहानी बनी है। किसे दोष दें कहानी में आरोप प्रत्यारोपों के ऊपर कहानी बनी है।²⁵

उसी प्रकार मनीला एक पर्यटन या यात्रा वृत्तांत प्रकार की या आधारित कहानी है, अंतिम क्षण तक कहानी में भी संघर्ष भरी कथा है।

भीड साक्षी है कहानी में भीड को लेकर कहानी बनाई है। अप्रत्याशित कहानी भी अचानक या अकस्मात हुए परिवर्तन पर आधारित कहानी है। उसी प्रकार दिहाड़ी पर भी एक मजदूरी पर आधारित कहानी है और ऐसा क्या कारण भी उद्देश्य पर आधारित कहानी है।

"ड्राइवर" भी ड्राइवरी पेशा पर आधारित कहानी है। और अपना दर्द भी चिंताओं पर आधारित कहानी है। इसका प्रथम संस्करण 2007 में विनसर पब्लिकेशन द्वारा प्रकाशित हुआ।

1. रोशनी की एक किरण।
2. किसे दोष दें।
3. मनीला।
4. अंतिम क्षण तक।
5. भीड साक्षी है।
6. अप्रत्याशित।

²⁵ वही — भीड साक्षी है पृष्ठ 39

7. दिहाडी पर।
8. ऐसा क्या कारण।
9. झाइवर।
10. अपना दर्द।

(घ) टूटते दायरे— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने इस कहानी संग्रह में जग की जीत कहानी में अपने कार्यों में सम्पूर्णता प्राप्त करना है। और टूटते दायरे में अपनी सीमाओं का टूटना है।²⁶

उसी प्रकार अंधेर कहानी में निराशावादी विचार धाराओं का उल्लेख है। और हत्यारे में हत्या से सम्बंधित कहानी है। भिखारिन कहानी में भी भिखारी को आधार बनाकर कहानी बनी है।

अपराधी कौन है में भी अपराध से सम्बंधित कहानी है, अहसास भी अहसासों की कहानी है। बेडियां भी बंधन पर आधारित कहानी है। पगली कहानी में भी एक दुखियारी महिला पर आधारित कहानी है। खोया सम्मान भी बेइज्जती पर आधारित कहानी है।

नशा भी एक सामाजिक कहानी है जो समाज में फैले नशा खोरी पर आधारित है, और जैसी करनी वैसी भरनी भी एक सामाजिक कहानी है। लालच बुरी बला है में लालच या लोभ पर आधारित है। नया जीवन भी नई जागृति पर आधारित है।

कृतज्ञ भी आपसी भाईचारे और अहसानों की कहानी है। विडंबना कहानी में असमंजस भरी कहानी है, सच्चा प्यार कहानी में पवित्र प्यार पर आधारित कहानी है, उसी प्रकार वापसी कहानी अपने परंपराओं पर वापस लौटने की कहानी है।

वापसी कहानी में निम्नलिखित कहानी संग्रहित हैं।

1. जग की जीत।
2. टूटते दायरे।

²⁶ वही — टूटते दायरे पृष्ठ 78

3. अंधेर ।
4. हत्यारे ।
5. भिखारिन ।
6. अपराधी कौन ।
7. अहसास ।
8. बेडियां ।
9. पगली ।
10. खोया सम्मान ।
11. नशा ।
12. जैसी करनी वैसी भरनी ।
13. लालच बुरी बला है ।
14. नया जीवन ।
15. कृतज्ञ ।
16. विडंबना ।
17. सच्चा प्यार ।
18. वापसी ।

(ड) क्या नहीं हो सकता— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने इस कहानी संग्रह में निम्नलिखित कहानियां लिखी हैं। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने "दे सको तो" कहानी में नितिन अपनी पत्नी से वादा करता है यही वादा भी कहानी का सार है। और "क्यों नहीं हो सकता" कहानी में पत्नी द्वारा पति को घर पर ही रोजगार देने की सलाह पर आधारित है तथा "बन्द कहानी" में भारत बन्द की कहानी है।²⁷

²⁷ वही — क्या नहीं हो सकता पृष्ठ 55

“जितना ईमानदार” कहानी में रेलवे के टीटी को ईमानदारी का पाठ पढ़ाना है, “वह जरूर लौटेगा” कहानी में गांव की बुजुर्ग माता अपने बहू-बेटा का इन्तजार करते हैं, उसी प्रकार “दोष किसे दूँ” कहानी में पुलिस के सिपाही की कहानी जो पत्नी और नौकरी दोनों खो देता है। “आत्महत्या करूंगी” कहानी में सुबह ही कोई महिला रोते हुए दरवाजा खोलकर नौकरी के लिए गिडगिडाती है, उसी प्रकार “दरार कहां पड़ी” कहानी में भी मंगलू के परिवार की कहानी पारिवारिक विघटन पर बनी है।

“रिक्सावाला” कहानी में एक ईमानदार और दयालु रिक्सेवाले की कहानी है जो कूड़े के ढेर से बच्चे को उठाकर पढ़ाता और लिखाता है। “परिचित” कहानी में गांव के एक गरीब व्यक्ति की कहानी है। जिसे पुलिस पकड़कर ले जाती है तो रविन्द्र और विमल उसकी मदद करके उसकी चक्की छुड़ा लेते हैं। “कैसी किस्मत” कहानी में एक शराबी दामाद द्वारा पत्नी, ससुराल वालों को बार-बार पैसों के लिए तंग करने की कहानी है। यह कहानी संग्रह विनसर पब्लिशिंग देहरादून द्वारा 2007 से छपना शुरू हुई है।

1. दे सको तो।
2. क्या नहीं हो सकता है।
3. बन्द।
4. कितना ईमानदार।
5. वह जरूर लौटेगा।
6. किसे दोष दूँ।
7. आत्महत्या करूंगी।
8. दरा कहां पड़ी।
9. रिक्सा वाला।
10. अपरिचित।
11. कैसी किस्मत।

(च) एक कहानी और— इस कहानी संग्रह में डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने निम्नलिखित कहानियां लिखी हैं, एक और बेड खाली हो गया कहानी में अस्पताल की दयनीय दशा की कहानी है। संवेदनहीन और मनीआर्डर पहाड के जीवन पर आधारित कहानियां हैं।²⁸

“मनीआर्डर” कहानी में सैनिक द्वारा घर पर पैसे भेजने पर देरी के कारण कहानी लिखी है। “बेजुबान” में केदारनाथ यात्रा में खच्चरों की दयनीय स्थिति की कहानी है तो नकेल कहानी में जनता द्वारा प्रशासन और हेलीकाप्टर कम्पनी को सबक सिखाना है।

“यक्ष प्रश्न” में गोपाल द्वारा स्थापित नर सेवा नारायण सेवा के बारे में है, “गरीबी हटाओ” कहानी में सरजू गरीबी से लडते-लडते मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। “राम प्रसाद जी” में कहानी प्रकाश के साक्षात्कार से सम्बन्धित है।

“पश्चाताप” कहानी में चिंतामणी पात्र की अपनी कहानी है, और “आशियाना” कहानी में रुकमणी और उसके परिवार की गरीबी की कहानी है। “चक्रव्यूह” कहानी में शशांक एक बहुराष्ट्रीय कम्पनी में मैनेजर की कहानी है।

1. एक और बेड खाली हो गया।
2. संवेदनहीन।
3. मनीआर्डर।
4. बेजुबान।
5. नकेल।
6. एक यक्ष प्रश्न।
7. गरीबी हटाओ।
8. राम प्रसाद जी।
9. पश्चाताप।
10. आशियाना।
11. चक्रव्यूह।

²⁸ वही —एक कहानी और पृष्ठ 53

(छ) केदारनाथ आपदा की सच्ची कहानियाँ— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी द्वारा इन कहानियों में से "और मैं कुछ नहीं कर सका" में आपदा को देखकर डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी खुद ही के बारे में लिखते हैं, और वो देख रहा है में "आपदा" के बारे में लिखते हुए कहते हैं, भगवान खुद ही आपदा को देख रहे हैं।²⁹

"मुआवजा" में भी मृतकों में मुआवजा बांटने को लेकर कहानी लिखी है, "अपने ही जाल कहानी में" एक महिला द्वारा रुपये हड़पने के लिए झूठी कहानी गढ़ी है। "पानी और पानी" में यात्रियों द्वारा बारिश की आप बीती कहानी है।

"लौट आया हूँ" कहानी में सुषमा और रघुवीर की कहानी है, रघुवीर बाढ़ से बचकर अचानक घर वापस आता है। "सब उसका है" कहानी में लेखक द्वारा दया लाला द्वारा भण्डारा करने को कहा है। "उसी प्रकार सब एक जैसे नहीं होते" कहानी में बम्बई से आये गोपाल द्वारा आपदा पीड़ितों में राहत सामग्री बांटने पर लिखी गई है।

और "घर वापसी" कहानी में जग्गू जिसको पहले लोगों द्वारा गुण्डा समझा जाता था। केदारनाथ आपदा में मसीहा बनकर उभरता है। "जिंदगी रुकती नहीं है" में जीवन आपदा के बाद भी चलती रहती है।

"नोटिस" कहानी में बैंक का लोन के नोटिस के बारे में है।

"जिंदा हूँ" में किसी और के लिए केदारनाथ आपदा में बचे बम्बई के सेठ द्वारा पीड़ितों की सेवा करने के लिए है। "लौटकर आएगा" कहानी में लेखक द्वारा गुप्ता जी द्वारा उसकी ईमानदारी से खुश होकर अपने होटल में काम पर रख लिया जाता है।

उसी प्रकार "कितना खुदार" कहानी में ईमानदारी पर कहानी बनी है, तो "तलास अपनों की" कहानी में अपने रिश्तेदारों को ढूँढने के ऊपर कहानी बनी है। "इक रिश्ता दिल का" में वंशीलाल के बड़े भाई-भाभी द्वारा पार्टी रखने पर अपने नौकर के नाम सब कुछ करने पर बनी है।

²⁹ वही — केदारनाथ यात्रा की सच्ची कहानी पृष्ठ 130

“अनजान” कहानी में भी देहरादून के अस्पताल की कहानी है। “पीडा से भी ऊपर” कहानी में ऊखीमठ में पहुंचकर जनता द्वारा विभिन्न प्रकार के प्रश्न पूछकर कहानी बनी है। और “रिस्तों का भ्रमजाल” कहानी में राजीव और सुमन के रिस्तेदारों द्वारा सम्पत्ति हड़पने के बारे में है।

“झगड़े का समाधान” कहानी में जमीन के एक टुकड़े को लेकर हुआ झगड़े का समाधान की है। “भीड़ के बीच” कहानी में गुप्तकाशी बाजार की कहानी पर बनी कहानी है।

1. और मैं कुछ नहीं कर सका।
2. वो देख रहा है।
3. मुआवजा।
4. अपने ही जाल में।
5. पानी और पानी।
6. लौट आया हूं।
7. सब उसका है।
8. सब एक जैसे।
9. घर वापसी।
10. जिंदगी रुकती नहीं।
11. नोटिस।
12. जिंदा हूं।
13. पीडा से भी ऊपर।
14. अनजान।
15. एक रिस्ता दिल का।
16. तलाश अपनों की।
17. कितना खुद्दार।
18. लौटकर आयेगा।
19. रिस्तों का भ्रमजाल।
20. झगड़े का समाधान।
21. भीड़ के बीच।

(ज) कथाएं पहाड़ों की— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के द्वारा कथाएं पहाड़ों की कहानी संग्रह में एक और बेड खाली हो गया कहानी में अस्पताल के मरीजों के अस्पतालों की स्थिति के बारे में लिखी है। "संवेदनहीन" कहानी में बैंक की कुर्की पर आधारित है, तो "मनीआर्डर" कहानी सैनिक के पैसे समय पर घर पर न भेजने पर घर के बारे में है। और बेजुबान कहानी में केदारनाथ यात्रा में खच्चरों पर आधारित है। "नकेल" कहानी में जनता द्वारा प्रशासन और हेलीकाप्टर कम्पनी को झुकाने पर बनी है। एक "यक्ष प्रश्न" कहानी में भी गोपाल द्वारा स्थापित संस्था नर सेवा नारायण सेवा के बारे में लिखी है। "गरीबी हटाओ" कहानी में गरीबी तथा गरीबी उन्मूलन के बारे में लिखा है, और "राम प्रसाद जी" कहानी में प्रकाश के साक्षात्कार के बारे में कहानी बनी है।³⁰

"पश्चाताप" कहानी में चिन्तामणी पात्र के बारे में कहानी बनी है। और "आशियाना" कहानी में रुकमणी का बेटा, बहु और बच्चों की मजदूरी पर आधारित कहानी है। "चक्रव्यूह" कहानी में भी एक बहुराष्ट्रीय कम्पनी में काम करने वाले शशांक पर आधारित है।

"प्रायश्चित्त" कहानी में पछतावे पर आधारित मुकेश पर केंद्रित है। जबकि "ईर्ष्या" कहानी में दो पत्नियों की कहानी है। "आतंक" कहानी होटल पर हुए आक्रमण के बारे में है। तो "महान कौन" कहानी में मजदूर द्वारा मजबूरी में मशीन चुरा कर ले जाना तथा मैनेजर द्वारा प्रमोशन देकर पूरी सुविधा देकर हृदय परिवर्तन कर दिया जाता है।

"दर्द" कहानी में सुचित्रा के आंख का दर्द की कहानी है, और "सम्पत्ति" कहानी में सुहास को बैंक की किस्त जमा न करने पर आये नोटिस के बारे में है। "नियत" कहानी में घर के बारे में लिखी है और "आखिर क्यों" कहानी में चिंकी की ममता भरी कहानी है।

"बड़ी सीख" कहानी में स्वतंत्रता आन्दोलनकारी के बेटे जितेन्द्र की कहानी है। वहीं "आनन्द मरते नहीं" कहानी में फेफड़ों के कैंसर रोग से पीड़ित शरत पर आधारित है।

³⁰ निशंक जी का रचना संसार

“दोषी कौन” कहानी में पत्नी सुमित्रा और शर्मिला पर आधारित है। और “भाग्य की लकीर” कहानी में मानवेंद्र की कहानी है जो रात भर अपने पिता के साथ अस्पताल में रहता है। “संकल्प” कहानी में करछुना और गडूना गांव की कहानी है।

“परीक्षा” कहानी में प्रदीप की कहानी है जो गांव से उठकर एक प्रशासनिक अधिकारी बन जाता है। “ठिया” कहानी आश्रय पर आधारित है, और “छलावा” कहानी भी दिखावा पर आधारित है जबकि भय कहानी डर पर आधारित है।

“प्रतीक्षा” कहानी इंतजार पर आधारित है उसी प्रकार “कहां भूल हुई” कहानी में भूल पर आधारित “आदमखोर” कहानी में आदमखोर बाघ की कहानी पर आधारित है। “आश्रय” कहानी में सहारे पर आधारित कहानी है, “जग की रीत” कहानी में दुनियादारी की रीत के बारे में लिखा है। “अंधेर” कहानी में नकारात्मक सोच के बारे में लिखा है और “वापसी” कहानी में अपने घर वापसी पर आधारित है।

“प्यार” कहानी में सच्चे प्यार पर आधारित कहानी है, “विडम्बना” कहानी में असमंजस की स्थिति पर आधारित कहानी है। “लालच बुरी बला है” कहानी में लालच पर आधारित कहानी है। “जैसी करनी वैसी भरनी” कहानी में करतूतों की सजा पर आधारित कहानी है।

इसी प्रकार “खोया पाया” कहानी भी और “नशा” कहानी में नशे पर आधारित कहानी है, “अहसास” कहानी आभास पर आधारित कहानी है और “बेडियां” कहानी बंधनों पर आधारित है।

“अपराधी” कौन कहानी में दोषी व्यक्ति पर आधारित कहानी है, “भिखारिन” कहानी भी इच्छाओं पर आधारित है। “पगली” कहानी में विक्षिप्त महिला पर आधारित है, “हत्यार” कहानी में अपराधी पर आधारित कहानी बनी है।

1. एक और बेड खाली है।
2. संवेदनहीन।
3. मनीआर्डर।
4. बेजुबान।
5. नकेल।
6. एक यक्ष प्रश्न।

7. गरीबी हटाओ ।
8. राम प्रसाद जी ।
9. पश्चाताप ।
10. आशियाना ।
11. चक्रव्यूह ।
12. प्रायश्चित्त ।
13. ईर्ष्या ।
14. आतंक ।
15. महान कौन ।
16. सम्पत्ति ।
17. दर्द ।
18. नियत ।
19. अंधेर ।
20. जग की जीत ।
21. आश्रय ।
22. आदमखोर ।
23. कहां हुई भूल ।
24. प्रतीक्षा ।
25. भय ।
26. छलावा ।
27. ठीया ।
28. परीक्षा ।
29. संकल्प ।
30. भाषा की लकीर ।
31. आनंद मरते नहीं ।
32. दोषी कौन ।
33. बड़ी सीख ।
34. आखिर क्यों ।

35. हत्यारे ।
36. भिखारिन ।
37. पगली ।
38. अपराधी कौन ।
39. अहसास ।
40. बेडियां ।
41. खोया सम्मान ।
42. नशा ।
43. जैसी करनी वैसी भरनी ।
44. लालच बुरी बला ।
45. नया जीवन ।
46. कृतज्ञ ।
47. विडम्बना ।
48. सच्चा प्यार ।
49. वापसी ।

(झ) खडे हुए प्रश्न— यह कहानी संग्रह विनसर पब्लिशिंग देहरादून 2006, 2008, 2015 में प्रकाशित हो चुके हैं, इस कहानी संग्रह का विमोचन स्व0 प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेई द्वारा किया गया था ।

इसमें संकलित कहानियां निम्नलिखित हैं—

“खडे हुए प्रश्न” कहानी में सुरेश बाबू देबू की मजबूरियों के बारे में सोचते हैं और उन्हीं प्रश्नों को खडे हुए प्रश्न नाम दिया गया । उसी प्रकार “लक्ष्य” कहानी में शेखर कॉलेज में पढ़ाते-पढ़ाते गरीब बेसहारा लोगों के बच्चों को समाज सेवा के रूप में पढ़ाता है तो पत्नी रानी मना करती है । फिर अचानक रानी को दुर्घटना होने पर पता चलता है, फिर रानी भी चुपके-चुपके वहीं में समाज सेवा करने लगती है ।

उसी प्रकार “उम्मीद” कहानी में भी देवेश को इण्टरव्यूह से दुबारा नौकरी की आशा बनी रहती है । तथा “बीनू” कहानी में 1999 की मानसरोवर यात्रियों के ऊपर पिथौरागढ़ के पास मालपा में पूरी पहाड़ी के गिरने की कहानी है ।

“अपाहिज” कहानी में बीनू की कहानी है, “तकदीर” कहानी में हिमांशु एक फुटबाल खिलाड़ी का अवसर गंवाने के बाद अपने ही घर गांव में अवसर ढूंढता है। “अभिषप्त” कहानी में गणेशपुर गांव की है जिसमें गांव वालों पर अभिशाप का कहर रहता है।

“कुछ नहीं जिन्दगी में मदन” नामक पात्र की कहानी है जो अपने परिवार के सभी सदस्यों को एक दुर्घटना में गंवा देता है, तथा अस्पताल की समाज सेवा में अपने को वस्तु रखता है। “नियति” कहानी में भी गांव के युवक विक्रम की कहानी है, जो एक बच्चे को बाघ से बचाता है परन्तु लूंगी चाचा को बचाते-बचाते खो देता है।

उसी प्रकार “उत्सर्ग” कहानी में उत्तराखंड आंदोलन में हुए “दमन” की कहानी है, और “अविश्वास” कहानी में किशन नामक युवा की कहानी अविश्वास पर आधारित है।

1. खड़े हुए प्रश्न।
2. लक्ष्य।
3. उम्मीद।
4. बीनू।
5. अपाहिज।
6. तकदीर।
7. अभिषप्त।
8. कुछ नहीं जिन्दगी।
9. उत्सर्ग।
10. अविश्वास।

डॉ० रमेश पोखरियाल ‘निशंक’ जी ने अपनी विभिन्न कहानी संग्रह में राष्ट्रीय चेतना, सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना, स्त्रियों की सामाजिक दशा, देशभक्ति, सामाजिक जागरूकता, पहाड़ की समस्याओं का समाधान भी बखूबी से किया है।³¹

³¹ डॉ० रमेश पोखरियाल निशंक – मेजर निराला

पहाड से पलायन एवं देवभूमि से पलायन, देवभूमि उत्तराखण्ड की आपदा समस्याओं जैसे बाढ़, भूस्खलन, वनों में आग आदि का समाधान व निराकरण के बारे में विस्तृत ढंग से अपनी कहानियों में वर्णन किया है।

उनकी कहानियां साहित्य की सर्वोच्च कृतियां मानी जाती हैं। उनकी कहानियों में हिन्दी की उत्कृष्ट रचनाएं मिलती हैं। कहानियां पूर्णतः सामाजिक और समाज से जुड़ी हैं, कहानियां पढ़ने पर आभासी नहीं बल्कि वास्तविक और जीवंत लगती हैं। यही शैली डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी को उत्तम कोटि का साहित्यकार बनाती है।

2.4 कथा साहित्य का निष्कर्ष

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि डॉ० 'निशंक' जी का हिन्दी साहित्य में अद्वितीय स्थान है। इन्होंने अपने साहित्य में अनेक कृतियां लिखी हैं। इन रचनाओं में देशभक्ति, राष्ट्रप्रेम, संस्कृति, प्रेम, आस्था, दर्शन, वैश्विक चेतना की छटा दिखाई देती है। डॉ० 'निशंक' जी के उपन्यास पहाड की अनेकों समस्याओं पर आधारित है। डॉ० निशंक जी 21वीं सदी के साहित्यकारों में श्रेष्ठ स्थान रखते हैं। उन्होंने साहित्य जगत को 200 से अधिक रचनाओं को लिखकर अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया गया है। इन्होंने हिन्दी साहित्य को श्रेष्ठ स्तर का काव्य संग्रह, कहानी संग्रह, उपन्यासों, निबंध, जीवनी, यात्रा वृत्तांत, की रचना करके हिन्दी साहित्य को अनमोल विरासत प्रदान की है।

संदर्भ

1. डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' – समर्पण पृष्ठ 26
2. वही – नवांकुर पृष्ठ 30
3. वही – जीवन पथ में पृष्ठ 21
4. वही – देश हम जलने न देंगे पृष्ठ 65
5. वही – प्रतीक्षा पृष्ठ 54
6. वही – सृजन के बीज पृष्ठ 28
7. वही – तुम भी मेरे साथ चलो पृष्ठ 25
8. वही – ऐ वतन तेरे लिए पृष्ठ 118
9. वही – मातृ भूमि के लिए पृष्ठ 46
10. वही – कोई मुश्किल नहीं पृष्ठ 24
11. डॉ० रमेश पोखरियाल निशंक – मेरे संकल्प पृष्ठ 69
12. वही – भाग्य की लकीर पृष्ठ 9
13. वही – परीक्षा पृष्ठ 26
14. वही – ठीया पृष्ठ 30
15. वही – छलावा पृष्ठ 18
16. वही – भय पृष्ठ 24
17. वही – प्रतीक्षा पृष्ठ 35
18. वही – कहाँ भूल हुई पृष्ठ 49
19. वही – आदमखोर बाघ पृष्ठ 11
20. वही – आश्रय पृष्ठ 14
21. वही – वाह जिन्दगी पृष्ठ 8

22. वही – भीड साक्षी है पृष्ठ 39
23. वही – टूटते दायरे पृष्ठ 78
24. वही – क्या नहीं हो सकता पृष्ठ 55
25. वही – एक कहानी और पृष्ठ 53
26. वही – केदारनाथ यात्रा की सच्ची कहानी पृष्ठ 130
27. वही – विपदा जीवित है पृष्ठ 35
28. डॉ० रमेश पोखरियाल निशंक – मेजर निराला
29. वही – बीरा
30. वही – पहाड से ऊंचा
31. वही – निशांत
32. वही—अपना पराया
33. वही – प्रतिज्ञा
34. वही – पल्लवी
35. वही – भागोंवाली
36. वही – शिखरों के संघर्ष
37. वही – छूट गया पडाव
38. वही – जिंदगी रुकती नहीं
39. निशंक जी का रचना संसार

तृतीय अध्याय

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के उपन्यासों का संसार

3.1 उपन्यास साहित्य का इतिहास

उपन्यास शब्द अंग्रेजी के नॉवेल शब्द का पर्यायवाची है। नॉवेल का अर्थ नया होता है, फ्रांस में नोवास शब्द का प्रयोग होता था, साधारणतः इसका अर्थ चित्रण प्रस्तुत करने वाली कहानी होती है। इटली में इसे नॉवेल नाम दिया गया है। हिन्दी में उपन्यास विधा अंग्रेजी से ही आई है। मुख्यतः इसे फिक्शन भी कहते हैं जिसे काल्पनिक या रंगीनियों से युक्त जीवन होता है, कुछ लोगों ने इसे रोमांस भी कहा है। रोमांस में जहां संभव कल्पनाएं भरी होती हैं वहीं उपन्यास में सम्भव प्रतीत होने वाली कल्पना पर आधारित होती है।

परिभाषा— उपन्यास साहित्य की एक स्वतंत्र विधा के रूप में प्रस्फुटित हुआ है। इसमें मानव जीवन का चित्रण किया जाता है। भले ही इसके पात्र काल्पनिक होते हैं, यहां पर अलग-अलग नामों में विद्यमान होते हैं।¹

उपन्यास दो शब्दों से मिलकर बना है। उप और न्यास उप का अर्थ पास में तथा न्यास का अर्थ स्थापना कहा जाता है अतः सामने उपस्थित विषय की स्थापना करना उपन्यास है।

न्यू इंग्लिश डिक्शनरी के अनुसार वृहद आकार, गद्य आख्यान या वृत्तांत, जीवन के प्रतिनिधि का दावा करने वाले पात्रों और कार्यों को जिस कथानक में दिखाया जाता है, उसे उपन्यास कहते हैं।

क्रोचे के अनुसार— “उपन्यास से अभिप्राय उस गद्यमय गल्प कथा से है। जिसमें वास्तविक जीवन का वास्तविक चित्रण होता है।”²

आर० बर्टन के अनुसार— “उपन्यास गद्य में रचित लेखक के समकालीन जीवन का अध्ययन है, जिसकी रचना लेखक समाज के उत्थान-पतन की भावना से अनुप्राणित

¹ रमेश पोखरियाल 'निशंक', मेजर निराला, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1997

² रमेश पोखरियाल 'निशंक', बीरा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008.

होकर करता है। इसके लिए वह प्रेम तत्व की प्रधानता ग्रहण करता है, क्योंकि अपने सामाजिक सम्बन्धों में मानव परस्पर इसी में बंधे होते हैं।”

डॉ० श्यामसुन्दर दास के अनुसार— “उपन्यास मनुष्य के वास्तविक जीवन की कल्पना कथा है।”

उपन्यास सम्राट प्रेमचंद के अनुसार— “मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके मूल रहस्यों को खोलना ही उपन्यास है।”

पाश्चात्य और भारतीय विद्वानों के अनुसार— “उपन्यास जीवन का कल्पनापरक वास्तविक चित्रण है।”

इस प्रकार कह सकते हैं कि उपन्यास को मानव जीवन का महाकाव्य कहा जाता है। उपन्यास में वास्तविक घटनाएं कल्पना के द्वारा नवीन रूप में प्रस्तुत की जाती हैं, परन्तु उपन्यास की घटनाएं जीवन से सम्बन्ध होने के कारण यथार्थ, वास्तविक और स्वाभाविक ही लगती हैं।

डॉ० रमेश पोखरियाल ‘निशंक’ जी ने हिंदी उपन्यासों को लिखना 1997 में मेजर निराला से शुरू किया। इनके अधिकांश उपन्यास सामाजिक, राष्ट्रभक्ति, सांस्कृतिक और आंचलिक प्रकार के रहे हैं। डॉ० रमेश पोखरियाल ‘निशंक’ जी ने एक साहित्यकार के रूप में कहानी, कविता, यात्रा वृत्तांत, पर्यटन ग्रन्थ, सर्वश्रेष्ठ कृतियां, उपन्यास लिखे हैं। डॉ० रमेश पोखरियाल ‘निशंक’ जी के उपन्यासों में देशभक्ति, प्राकृतिक सामाजिक एवं मानवीय भावनाओं से ओतप्रोत हैं।

3.2 उपन्यास का उद्भव और विकास

डॉ० रमेश पोखरियाल ‘निशंक’ जी का सामाजिक जीवन प्रारंभ से ही संघर्षमय रहा, उन्होंने बचपन से लेकर उच्च शिक्षित होने तक कड़ा संघर्ष किया। इसी कड़े संघर्ष से ही उन में बहुमुखी प्रतिभा का जन्म होता है उन्हीं प्रतिभाओं में से एक उपन्यास लेखन भी है। उनके उपन्यासों में सामाजिक जीवन, देशभक्ति कूट-कूट कर भरी है।

हिन्दी उपन्यास अपनी शैलीगत विशिष्टता की दृष्टि से भले ही पाश्चात्य साहित्य विशेष रूप से अंग्रेजी साहित्य के सम्पर्क और प्रभाव से हिन्दी साहित्य के

सम्पर्क और प्रभाव से हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल की उपज कही जा सकती है, किन्तु अपने कथा तत्व की प्रमुखता की दृष्टि से उपन्यास की भारतीय परंपरा भी अत्यंत प्राचीन है। सम्भवतः उस समय मनुष्य ने लिखना भी नहीं सीखा था। वेदों में वर्णित अनेक कथाएं प्राचीन मानव की कथा या कहानी के प्रति रुचि की परिचायक हैं। पुराण, रामायण, महाभारत आदि प्राचीन ऐतिहासिक ग्रन्थों में एक नहीं बल्कि अनेक कथाओं का भण्डार प्राप्त होता है, जो अनेक उपन्यासों की सामग्री प्रस्तुत करते हैं। आज अनेक उपन्यासकारों ने उनमें से कथाओं को लेकर स्वतंत्र उपन्यासों की रचना की है।³

(1) हिन्दी उपन्यासों का उद्भव— उन प्राचीन कथाओं में संवाद योजना, चरित्र—चित्रण आदि औपन्यासिक तत्वों की भी प्राप्ति होती है। ऋग्वेद के शुनःशेष की कथा, यम—यमी संवाद, पुरुरवा, उर्वशी संवाद आदि में पर्याप्त कथा तत्व हैं। इसके बाद ब्राह्मण ग्रन्थों और पुराणों में अनेक महापुरुषों की कहानियों का वर्णन है। इनके वर्णन में कल्पना और रोचकता इन्हें उपन्यासों के करीब ले आता है। ऐतरेय व शतपथ, ब्राह्मण अनेक कथाओं से भरे पड़े हैं। उपनिषद् भी कथाओं से शून्य नहीं हैं। याज्ञवल्क्य, मैत्रीयी और नचिकेता आदि की कथाएं इनसे भरी पड़ी हैं। इसके बाद पंचतंत्र, हितोपदेश, कथासरित् सागर, वृहत कथा, जातक कथाएं आदि अनेक कथाएं प्राकृत, अपभ्रंश आदि भाषाओं में भी मिलती हैं। दण्डी का दशकुमारचरित्र तथा बाणभट्ट की कथा कादम्बरी भी अपने ढंग का उपन्यास ही है।⁴

प्राचीन भारतीय साहित्य में चाहे वह संस्कृत, प्राकृत, या अपभ्रंश किसी भी भाषा का हो, कथा साहित्य का अभाव नहीं है। इस कथा साहित्य के द्वारा प्राचीन साहित्यकारों द्वारा मानव जीवन के अनेक रहस्यों, सत्यों और उलझनों को प्रस्तुत किया है। इनमें हमें प्राचीन झलक देखने को मिलती है। प्राचीन आचार—विचार, संस्कृति, जीवन दर्शन आदि का ज्ञान इनसे प्राप्त होता है। इस प्रकार ये कथाएं आधुनिक उपन्यासों में उद्देश्य निहित होता था।

³ रमेश पोखरियाल 'निशंक', निशांत, भावना प्रकाशन, दिल्ली, 2008.

⁴ रमेश पोखरियाल 'निशंक', छूट गया पड़ाव, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010.

(2) **प्राचीन साहित्याचार्य और उपन्यास**— प्राचीन साहित्याचार्यों ने साहित्य के इस महत्वपूर्ण अंग की महत्ता को परखा था। महाकाव्य और नाटक की ही भांति इसका शास्त्रीय विवेचन किया था। इसके दो विभाग किये थे दृढ़ पाख्यान और कथा साहित्य। हिन्दी साहित्य के जन्म के साथ आरम्भ से ही गद्य और पद्य साहित्य समान रूप से विकसित हुआ।

(3) **उपन्यास-साहित्य का विकास**— आधुनिक काल में जिस समय हमारे देश में पाश्चात्य साहित्य और संस्कृति के सम्पर्क के कारण राष्ट्रीय जागरण की देश व्यापी लहर उत्पन्न हो रही थी, और राष्ट्रीय जागरण में अपने सहयोगी के उत्तरदायित्वों की महति भूमिका निभाने के लिए हिन्दी गद्य और उनका जन्म हो रहा था उसी समय हिन्दी गद्य की विभिन्न विधाओं का जन्म हो रहा था, उसी समय हिन्दी गद्य की अन्य विधाओं के साथ उपन्यास का भी जन्म हुआ। राष्ट्रीय जागरण में अपने सहयोगी के उत्तरदायित्व की भूमिका को निभाने के उद्देश्य से आरम्भ से ही हिन्दी उपन्यासों में राष्ट्रीय चेतना तथा राष्ट्रीय जागरण का तत्व स्पष्ट रूप से प्राप्त होता है।

(क) **प्रथम चरण**— हिन्दी उपन्यासों का आरम्भ बंगला और मराठी भाषा के उपन्यासों के अनुवाद से आरम्भ होता है। यद्यपि बंगला और मराठी भाषा का साहित्य भी आरम्भ में पद्यमय था, किन्तु उन भाषाओं में हिन्दी साहित्य से पहले गद्य साहित्य का विकास पहले हुआ। यही कारण है कि बंगला और मराठी भाषाओं में उपन्यास साहित्य पहले लिखा गया। यद्यपि इन भाषाओं में भी उपन्यास का आरम्भ पाश्चात्य साहित्य के सम्पर्क से ही हुआ है। हिन्दी की अपेक्षा बंगला और मराठी भाषाएं पाश्चात्य साहित्य के सम्पर्क में पहले आये अतः उनमें गद्य विधाओं का सूत्रपात पहले हुआ। हिन्दी में उपन्यास रचना का प्रभाव अधिकांशतः बांग्ला और मराठी साहित्य के माध्यम से हुआ है।⁵

हिन्दी के सर्वप्रथम मौलिक उपन्यासकार होने का श्रेय श्री निवास दास को प्राप्त होता है। उनका मौलिक उपन्यास परीक्षा गुरु 1882 में प्रकाशित हुआ था। श्री निवास दास जी के बाद हिन्दी के अनेक लेखकों ने उपन्यास लिखना शुरू किया। बाबू रत्नचन्द ने नूतन चरित्र, राधाकृष्णदास ने स्वर्णलता, मरता क्या न करता,

⁵ रमेश पोखरियाल 'निशंक', अपना-पराया, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2010.

निस्सहाय हिन्दू, बालकृष्णभट्ट ने नूतन ब्रह्मचारी, सौ अजान और एक सुजान, किशोरी लाल गोस्वामी ने लवंग लता, कुसुम कुमारी, प्रताप नारायण मिश्र ने राज सिंह, इंदिरा, युगलांगुलीय, राधारानी आदि मौलिक उपन्यास लिखे और अंग्रेजी, बांग्ला, मराठी आदि भाषाओं में अनुवाद किये। इस युग में पं० किशोरी लाल गोस्वामी ने सर्वाधिक उपन्यास लिखे। आपके छोटे बड़े उपन्यासों की संख्या पैसठ के लगभग है।

इन सभी उपन्यासों में सामाजिक सुधार की भावना व्याप्त है। विधवाओं की दयनीय दशा, सामाजिक कुरीतियों के परिणाम आज इनके विषय हैं। इस युग में ऐतिहासिक इतिवृत्ति को लेकर भी कुछ उपन्यास लिखे गये, जिनमें इतिहास के पृष्ठों से कथा ग्रहण करके लेखकों ने तत्कालीन जीवन पर प्रभाव डालने के उद्देश्य से उनकी रचना की।

इस युग में रचित उपन्यासों की एक दूसरी धारा तिलस्मी और अय्यारी के उपन्यासों की भी है, जो सर्वाधिक प्रसिद्धि को प्राप्त हुई है। देवकी नन्दन खत्री, दुर्गाप्रसाद खत्री, गोपालराम गहमरी के नाम इस क्षेत्र में उल्लेखनीय हैं।

इस युग के समस्त उपन्यास—साहित्य दो वर्गों में बांटा गया है। जिनमें उपदेश का स्वर अधिक है, आचार, धर्म, नीति, समाज सुधार आदि की भावना से प्रेरित सामाजिक और ऐतिहासिक उपन्यास और शुद्ध मनोरंजन के लिए लिखे गये उपन्यास तिलस्मी और अय्यारी पर आधारित हैं।

प्रथम वर्ग के उपन्यासों में तत्कालीन समाज की बदलती हुई परिस्थितियों में नये आदर्शों का वर्णन मिलता है। तो दूसरे वर्ग के उपन्यासों में कल्पित राजवर्ग और उससे सम्बन्धित को लेकर षडयंत्र, अय्यारी, तिलस्मी का मनोरंजक एवं रोमान्चकारी वर्णन मिलता है।

(ख) द्वितीय चरण— हिन्दी उपन्यास साहित्य के विकास में द्वितीय चरण का आरम्भ उपन्यास क्षेत्र में प्रेमचंद के आगमन से स्वीकार किये जाते हैं। प्रेमचंद ने एक नई राष्ट्रीय चेतना लेकर उपन्यास लिखने आरम्भ किये थे। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन और राष्ट्रीय चेतना ने एक संगठित शक्ति का रूप ग्रहण कर लिया था। भारतेन्दु काल में राष्ट्रीय जागरण केवल सांस्कृतिक सुधार तथा भारतीय गौरव के पुनरुत्थान

के रूप में आरम्भ हुआ वह स्वराज्य—स्थापना का रूप ग्रहण कर चुका था। परिणाम स्वरूप उपन्यास साहित्य में भी हमें वही परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में समाज के निम्न वर्ग, मध्यम वर्ग, मजदूर वर्ग, किसान वर्ग के जीवन की आर्थिक, राजनैतिक एवं सामाजिक समस्याओं के साथ—साथ इनके संबंधों से उत्पन्न पारिवारिक तथा व्यक्तिगत जीवन की समस्याओं का सफल समाधान प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में सफल प्रयास किया है।

उनके आरम्भिक उपन्यासों में आदर्श की स्थापना का आग्रह है, ऐसा आदर्श जिसे वे निश्चय करके चले। लेकिन प्रभा से लेकर गोदान तक वे क्रमशः आदर्श से यथार्थवाद की ओर अग्रसर हुए जान पड़ते हैं। तात्पर्य यह है कि उनके बाद के उपन्यासों में आदर्श कथा की यथार्थ परिस्थितियों से स्वतः निकलता है। वह कथा के घात—प्रतिघात पर आधारित है।⁶

प्रेमचंद ने उपन्यास— साहित्य के विकास का जो दूसरा चरण प्रस्तुत किया, उनके प्रभाव से अनेक नये उपन्यासकार इस क्षेत्र में आगे आये।

इस युग के उपन्यासकारों और उपन्यासों में विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। बृजनन्दन सहाय (सौन्दर्योपासक 1919), जयशंकर प्रसाद (कंकाल, तितली, इरावती, पूर्ण) अवधनारायण (विमाता 1932), शिवपूजनसहाय (देहाती दुनिया 1925), आचार्य चतुरसेन शास्त्री (हृदय की परख, व्यभिचार, अमर अभिलाषा, आत्मदाह, नीलमती, वैशाली नगर वधू आदि) विश्वंभरनाथ शर्मा कौशिक (मां भिखारिणी आदि) पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र दिल्ली का दलाल, चंद हसीनों के खतूत, बुधुवा की बेटी, शराबी, घटा, सरकार तुम्हारी आंखों में आदि, चण्डी प्रसाद हृदयेश, मनोरमा, मंगल प्रभात आदि।

प्रताप नारायण मिश्र (विदा), राधिका रमण प्रसाद सिंह (तरंग, राम—रहीम, पुरुष और नारी आदि), द्विवेदी (राम लाल और कल्याणी), जी० पी० श्रीवास्तव (गंगा जमुनी, दिल जले की आह), दिल जले की आह, वृन्दावन लाल वर्मा (गढ कुंढार, विराटा की पदमिनी, कुण्डली चक्र, महारानी लक्ष्मीबाई, मृगनयनी, माधव जी सिंधिया आदि), भगवती प्रसाद वाजपेयी (मीठी चुटकी, अनाथ पत्नी, त्यागमयी, प्रेम विवाह,

⁶ रमेश पोखरियाल 'निशंक', पहाड़ से ऊँचा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002.

पतिता की साध, दो बहनें, चलते-चलते, भूदान, अधिकार का प्रश्न आदि), कृपानाथ मिश्र (प्यास), जैनेन्द्र कुमार (परख, सुनिता, त्यागपत्र, कल्याणी, विवर्त, व्यतीत), इलाचंद्र जोशी (गृणामयी, पर्दे की रानी, प्रेत और छाया, संयासी, निर्वासित, मुक्ति पथ, जहाज का पंक्षी आदि), गोविंद वल्लभ पंत (प्रतिमा, दारा, प्रगति की राह आदि), सूर्यकान्त निराला त्रिपाठी (अप्सरा, अलका, लिली, निरुपमा, प्रभावती, बल्लेसुर बकरिहा, कुली भाट, चोटी की पकड़ आदि)।

प्रेमचन्द युगीन उपरोक्त तथा अन्य उपन्यासकारों को चेतना और प्रवृत्ति की दृष्टि से तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है—

1. कुछ उपन्यासकारों ने मानव जीवन की समस्याओं को समाज की भूमिका में रखकर परखा तथा व्यापक सामाजिक और उभरती राजनीतिक चेतना के प्रसंग में मनुष्य की चारित्रिक विषमताओं, सामाजिक विषमताओं और मनुष्य के राज्य तथा समाज के सम्पर्क को क्रिया प्रतिक्रिया के रूप में जन जीवन के यथार्थ रूप का व्यापक तथा मानवीय स्वरूप का दिग्दर्शन किया जाता है।
2. कुछ उपन्यासकारों ने फ्रायड के मनोविश्लेषण के आधार पर मानसिक रूप से रूग्ण चरित्रों का केवल चित्रण प्रस्तुत किया है
3. इस प्रकार के उपन्यासकारों ने मनुष्य के सामाजिक जीवन की विषमताओं को साम्राज्य विरोधी राजनीतिक संघर्ष के प्रसंग में चित्रित किया है।

जहां प्रेमचंद ने मानव जीवन के व्यापक चित्रण को अपना लक्ष्य बनाया, वहीं जैनेन्द्र ने व्यक्ति के पारिवारिक संकुचित जीवन में उठने वाली समस्याओं का वर्णन किया। जैनेन्द्र के उपन्यासों में बांग्ला उपन्यासों के लेखक शरत चन्द्र की परम्परा है। इनके उपन्यासों में कथा और घटनाओं की अधिकता नहीं होती। कथा अपने में सरल और संक्षिप्त होती है, किन्तु पात्रों के चरित्रों के कारण कथा में मार्मिकता, रहस्यात्मकता तथा समस्या रूपी उलझन छा जाती है। इसमें मानव के चरित्र उसके जीवन की परिस्थितियों और उनकी समस्याओं को समझने में सहायता प्राप्त होती है।

उग्र ने समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, गन्दगी और कुत्सा के नग्न चित्रों को अपने उपन्यासों में सामाजिक कुरीतियों का बड़ा ही मार्मिक चित्रण है, किन्तु उनमें मर्यादा का अभाव है, इसलिए उनका प्रभाव विपरीत पड़ता है। इलाचंद्र जोशी, अज्ञेय, भगवती चरण वर्मा आदि ने फ्रायडवादी मनोविज्ञान के सिद्धान्तों पर मनोविश्लेषणात्मक उपन्यासों की रचना की।

(ग) तृतीय चरण— प्रेमचंद की सजग सामाजिक जीवन के चित्रण की परंपरा को अधिक यथार्थ रूप में लेकर लिखी जानी वाली प्रगतिवादी विचारधारा को हिन्दी उपन्यासों के विकास में तीसरे चरण का आरम्भ स्वीकार किया जा सकता है। प्रगतिवादी विचार धारा के हिन्दी उपन्यासों में मजदूरों, किसानों और मध्य वर्ग के आर्थिक, राजनैतिक और सामाजिक संघर्षों का चित्रण है। इनमें निम्न वर्ग में उभरती संदेह (सस्पेंस) और चेतना को मुखरित किया गया है। इस नई प्रगतिवादी चेतना को लेकर उपन्यास लिखने वालों में प्रमुख—यशपाल, कृष्णचंद्र, उपेंद्रनाथ अशक, नागार्जुन, रांगेय राघव, श्री कृष्ण, अमृतराय, डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी आदि हैं।⁷

3.3 हिन्दी उपन्यासों का वर्गीकरण

हिन्दी के समस्त उपन्यासों को देखने से स्पष्ट प्रतीत होता है कि कथावस्तु की दृष्टि से उपन्यास विकास के तीन वर्ग हैं।

(अ) सामाजिक उपन्यास ।

(ब) ऐतिहासिक उपन्यास ।

(स) पौराणिक उपन्यास ।

(अ) सामाजिक उपन्यास— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के सम्पूर्ण उपन्यासों को कथावस्तु की दृष्टि से सभी उपन्यासों को सामाजिक उपन्यासों में ही रखा जा सकते हैं। उन्होंने अपने सभी बारह उपन्यासों में सामाजिक समस्याओं को आधार बनाकर पाठकों के सामने रखे हैं, पाठकों द्वारा काफी सराहे गये हैं। डॉ० रमेश

⁷ रमेश पोखरियाल 'निशंक', पल्लवी, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 2010.

पोखरियाल 'निशंक' जी के मेजर निराला और छूट गया पडाव पर दो गढवाली (स्थानीय) भाषा पर फिल्में भी बन चुकी हैं।

(ब) ऐतिहासिक उपन्यास— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के कुछ उपन्यास कथावस्तु की दृष्टि से ऐतिहासिक उपन्यास माने जा सकते हैं। उन्होंने पहाड के इतिहास पर वीरा, मेजर निराला, प्रतिज्ञा आदि ऐतिहासिक उपन्यास लिखे हैं। पहाड के ऐतिहासिक जन-जीवन का उन्होंने सुंदर वर्णन अपने उपन्यासों में किया है। विभिन्न ऐतिहासिक घटनाओं का डॉ० 'निशंक' जी द्वारा अपने उपन्यासों में कथावस्तु बनाकर प्रस्तुत करके हिंदी साहित्य को अनमोल भेंट प्रस्तुत की है।

(स) पौराणिक उपन्यास— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के अधिकतर उपन्यास कथावस्तु की दृष्टि से पौराणिक विचारों से भी ओत-प्रोत हैं। डॉ० निशंक जी के अधिकतर उपन्यासों को उन्होंने पौराणिक विचारों, घटनाओं, पात्रों आदि का चरित्र-चित्रण पर आधारित करके लिखे हैं।

अतः कथावस्तु की दृष्टि से भी अध्ययन किए जाएं तो डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के उपन्यास शुद्धतम रूप से परिष्कृत उदाहरण हैं।

सभी सामाजिक उपन्यासों में यद्यपि मानव के सामाजिक और व्यक्तिगत संघर्षों और समस्याओं का चित्रण है। लेकिन लेखक की चेतना में भिन्नता तथा दृष्टिकोण के भेद के अनुसार प्रगतिवादी, फ्रायडवादी, गांधीवादी आदि भेद हो जाते हैं। लेखक ने जिस दृष्टि से सामाजिक जीवन और उनकी समस्याओं तथा संघर्षों का चित्रण किया है, इससे उपन्यास की चेतना और उद्देश्य में अन्तर उत्पन्न हो जाता है।

(4) उपन्यास तकनीकी के नये प्रयोग— उपन्यासों की तकनीकी में भी अनेक नवीन प्रयोग सामने आये हैं, जिनमें ये उल्लेखनीय हैं— राहुल जी का सिंह सेनापति, हजारी प्रसाद द्विवेदी जी का उपन्यास बाणभट्ट की आत्मकथा, शिव प्रसाद मिश्र की बहती गंगा, धर्मबीर भारती का सूरज का सातवां घोड़ा, गुनाहों का देवता, राजेन्द्र यादव का प्रेत बोलते हैं आदि।

पिछले दशक में हिन्दी उपन्यास ने अभूतपूर्व उन्नति की है। शिल्प और चेतना दोनों ही दृष्टियों से अनेक नये उपन्यास जन्म लेकर ख्याति प्राप्त करके हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक होने का गौरव प्राप्त कर चुके हैं, जैसे राजेन्द्र यादव, यादवेन्दु शर्मा, कमल जोशी, गुरुदत्त, फणीश्वर नाथ रेणु आदि। इस युग में प्रकाशित प्रसिद्ध उपन्यास उदय शंकर भट्ट का उपन्यास सागर लहरें और मनुष्य, इलाचन्द्र जोशी का उपन्यास जहाज के पंछी, रांगेय राघव का काका, राजेन्द्र यादव का उखड़े हुए लोग आदि।⁸

निष्कर्ष— सामाजिक उपन्यासों की अपेक्षा ऐतिहासिक उपन्यासों की वर्तमान जीवन के लिए उपादेयता किसी प्रकार से कम नहीं है। ऐतिहासिक उपन्यास कोरे ऐतिहासिक विवरण मात्र नहीं होते हैं, उनमें वर्तमान को गति देने वाली दृष्टि से इतिहास को प्रस्तुत किया जाता है। इतिहास की ऐसी कथाओं, पात्रों से घटनाओं को चुनकर कथा का रूप प्रदान किया जाता है। जो आज की समस्याओं और जीवन संघर्ष में आगे बढ़ाते हैं, इनसे मन में संघर्ष करने की शक्ति बढ़ती है। इनसे मन में साहस और मनोबल का संचार होता है, जिसके आलोक में अपने वर्तमान जीवन की अनेक समस्याओं का समाधान करने की दृष्टि प्राप्त की जा सकती है। वर्मा जी के शब्दों में हम उनके माध्यम से विवेक द्वारा अतीत को परखते हैं। वर्तमान में अतीत के अनुभव के आधार पर भविष्य के लिए अपना मार्ग प्रसस्त करते हैं। उनके माध्यम से हमें अपनी परंपरा का ज्ञान होता है। हिन्दी उपन्यास की विकास यात्रा को प्रमुखतः चार कालों में विभक्त किया जा सकता है।⁹

प्रथम काल या भारतेन्दु काल (1850 से 1915)— हिन्दी उपन्यासों का प्रारम्भ भारतेन्दु काल में हो गया था। लाला श्री निवास दास का परीक्षा गुरु हिन्दी का प्रथम मौलिक उपन्यास माना जाता है। परन्तु आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने श्रद्धाराम फिल्लौरी रचित उपन्यास भाग्यवती को प्रथम बताया। भारतेन्दु काल में किशोरी लाल गोस्वामी के उपन्यासों में लवंगता, माधव—माधवी आदि उपन्यासों का विकास इसी युग में हुआ। इस काल में सामाजिक उपन्यास तिलस्मी, ऐय्यारी, जासूसी, प्रेमाख्यात्मक, ऐतिहासिकता आदि विषयवस्तु पर लिखे जाते थे।

⁸ रमेश पोखरियाल 'निशंक', प्रतिज्ञा, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014.

⁹ रमेश पोखरियाल 'निशंक', भागों वाली, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2015.

जगमोहन सिंह का श्याम स्वरूप, बालकृष्ण भट्ट का नूतन ब्रह्मचारी, सौ अजान एक सुजान, किशोरी लाल का स्वर्गीय कुसुम, राधा स्वामी गोस्वामी का विधवा विपत्ति, राधाकृष्ण दास का निस्सहाय हिन्द आदि इस काल के उपन्यास हैं।

द्वितीय काल या द्विवेदी काल (प्रेमचन्द युग) 1916 से 1936— बीसवीं शताब्दी के पहले दो दशक के पथ प्रदर्शक, विचारक और साहित्य नेता आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम पर ही इस काल का नाम द्विवेदी युग पड़ा। इसे हिन्दी साहित्य में जागरण या सुधार काल भी कहा जाता है, प्रेमचंद जी ने इसी काल से उपन्यास लिखना आरम्भ किया था। प्रेमचंद जी के उपन्यास सेवा सदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कर्मभूमि, कायाकल्प, निर्मला, गबन, गोदान प्रमुख हैं। प्रताप नारायण मिश्र, गोपाल राम गहमरी, ईशप्रसाद शर्मा, अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध, कार्तिक प्रसाद खत्री, रूपनारायण पाण्डेय, रामकृष्ण पाण्डेय आदि इस काल के प्रमुख उपन्यासकार हैं।

तृतीय काल या प्रेमचन्दोत्तर युग 1936 से 1960— प्रेमचन्द के बाद साहित्य में दृष्टिकोण, विषय आदि में कई प्रकार के परिवर्तन दिखाई देते हैं, यह परिवर्तन जैनेन्द्र कुमार, इलाचन्द्र जोशी, अज्ञेय, यशपाल आदि के उपन्यासों में इतना प्रबल हो गया कि इनकी धारा ही बदलती चली गई। इनके उपन्यासों पर फ्रायड का गहरा प्रभाव है।

आधुनिक युग 1960 से अब तक— इस समय के उपन्यास विषय वस्तु तथा शैली की दृष्टि से पूर्ववर्ती सभी उपन्यासों से भिन्न हैं। इन उपन्यासों में चिन्तन की प्रधानता एवं विचारों की गहराई है। इस समय के उपन्यासों में डॉ० धर्मवीर भारती के गुनाहों का देवता, सूरज का सातवां घोड़ा, उपेन्द्रनाथ अशक का गिरती दीवारें, गर्म राख, बांधो ना नाव इस ठांव, नागार्जुन के बलचनमा, बाबा बटेश्वर, रतिनाथ की चाची, अमृत लाल नागर की बूंद और समुद्र, अमृत और विष, मानस के हंस, सुहाग के नुपुर आदि उल्लेखनीय हैं। इस समय अनेक महिलाएं उपन्यास लेखन का कार्य कर रही हैं इनमें उषा देवी, कंचनलता, शिवानी, मन्नू भण्डारी, अमृता प्रितम, कृष्णा सोबती, नाशिरा शर्मा, मृदुला गर्ग, डॉ० निशंक जी आदि हैं। आधुनिक समय में डॉ० रमेश पोखरियाल निशंक जी ने 12 उपन्यासों की रचना की है।

3.4 डॉ० 'निशंक' जी का प्रारंभिक काल

हिन्दी साहित्य के आधुनिक उपन्यासकारों में डॉ० 'निशंक' जी का अद्वितीय स्थान है। इनके उपन्यासों का प्रारंभिक काल 1997 से आज तक माना जाता है। इनका सर्वप्रथम उपन्यास 'मेजर निराला' है जो एक ग्रामीण जीवन, देशभक्ति, समाज सेवा पर आधारित है उनके उपन्यास निम्न लिखित हैं—

शिखरों के संघर्ष— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी द्वारा मेजर निराला, बीरा, पहाड से ऊंचा, छूट गया पडाव चार उपन्यासों को शिखरों के संघर्ष रूप में संकलित किया गया है। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी द्वारा रचित उपन्यास अग्रलिखित हैं।

मेजर निराला— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी द्वारा रचित यह पहला उपन्यास है। मेजर निराला उपन्यास 1997 को वाणी प्रकाशन नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित उपन्यास देशभक्ति और समाज सेवा से परिपूर्ण है। मेजर निराला उपन्यास से ही हैं।

मेजर निराला को आज जेल में 15 साल हो गये हैं, कल वह जेल से रिहा हो जाएंगे, आज नीरु के पास फीस के लिए पैसे नहीं थे, तो नीरु की मां तारा गांव के ही झब्बन हवलदार के पास पैसे मांगती है। जिसे झब्बन हवलदार कहता है, कि हम दोनों ही अकेले हैं। अतः हम दोनों को कहकर अश्लील हरकत करता और तो तारा उसको धक्का देकर एक तरफ खड़ी हो जाती है तभी नीरु भी वहां पर आता है अपनी मां का पक्ष लेते हुए झब्बन से लड़ पड़ता है, जिससे झब्बन नीरु को भी गालियां देता है, नीरु भी गुस्से में झब्बन से बड़ा फौजी बनने की कसम खाता है। इस प्रकार नीरु दसवीं पास करने के बाद फौज में भर्ती हो जाता है। अब नीरु की मां तारा देवी नीरु की शादी की बात सावित्री से चलाती है, और उचित अवसर पर दोनों की शादी हो जाती है, शादी के छह महीने बाद ही तारा देवी छज्जे से गिर पड़ती है। गांव वाले तारा देवी को अस्पताल ले जाते हैं नीरु को भी घर बुलाते हैं। नीरु के घर आते ही तारा देवी की मृत्यु हो जाती है, नीरु आर्मी में कमीशन पास करके बड़ा अफसर बन जाता है। नीरु अब मेजर निराला बन जाता है उसका बेटा

बबलू भी अब बड़ा होने लगता है, वह बड़ा जिद्दी तथा शरारती होता है, पहले-पहले वह शरारतें करता है फिर बदतमीज भी बनता जाता है। सारे गांव वाले बबलू की शरारतों से तंग आकर शिकायत करते रहते हैं, सावित्री के भी कई बार समझाने पर बबलू बात नहीं मानता है, सावित्री कई बार पत्र में बबलू की शिकायत मेजर साहब से करके कहती बबलू मेरी बात नहीं सुनता है और बिगड़ता जा रहा है। इस बार तो हद ही हो गई थी बबलू ने गांव की ही एक लड़की को छेड़ दिया था, जिससे नाराज होकर गांव वाले बबलू को पीटते-पीटते उनके घर की तरफ ही ला रहे थे। उसी समय मेजर निराला भी छुट्टी आते हैं, सारा माजरा समझने के बाद मेजर गांव वालों को समझाने की कोशिश करते हैं। इस पर गांव वाले भड़क जाते हैं फिर मेजर निराला अपनी बन्दूक निकाल कर बबलू की तरफ बढ़ता है मेजर का गुस्सा देखकर सावित्री सामने पर खड़ी हो जाती है। फिर मेजर निराला सावित्री को एक तरफ धक्का देकर गोली चला देता है, लेकिन अचानक सावित्री एक तरफ गिर जाती है मेजर निराला सावित्री की तरफ बढ़कर उसको पकड़ता है। तभी मौका देखकर बबलू वहां से भाग जाता है, और सावित्री की मृत्यु हो जाती है। पटवारी मेजर निराला को गिरफ्तार करके ले जाता है, मेजर निराला को 15 साल की जेल हो जाती है, और कोर्ट मार्शल भी हो जाता है। 15 साल की जेल में सारे लोग उसे मेजर साहब पुकार कर सम्मान देते हैं, आज जेल से रिहा होने के बाद सिपाही गेट खोलकर मेजर निराला को बाहर छोड़कर गेट बन्द कर देता है। मेजर निराला धीरे-धीरे गांव की तरफ चल पड़ता है। घास पात से पूरा घर और चौक ढका हुआ था मेजर निराला धीरे से दरवाजा खोलकर अन्दर जाकर बैठे ही थे, कि कोई दरवाजा खुला देखकर आपस में स्थानीय बोली में फुसफुसा रहे थे। मेजर निराला को यह सब दिल चुभाने वाली घोर निन्दा लगी और उसी समय गांव छोड़कर हरिद्वार की ओर चल पड़े सड़क में कई गाड़ियां आ-जा रही थी।

मेजर निराला गमगीन सिर नीचा करके आगे बढ़ते रहे अचानक ट्रक की ठोकर ने मेजर निराला को एक तरफ फेंक दिया चोट लगने से मेजर निराला का सिर फट गया था, जिससे वहां पर काफी लोग जमा हो गये लोग सोच रहे थे यह कोई पागल ही होगा उसी समय भीड़ देखकर वहां पर आर्मी की जिप्सी से एक आर्मी कैप्टन बाहर आया और चोट लगे मेजर निराला को पहचानकर पैरों में गिर

पडा। और पिता जी मुझे क्षमा करना मेरे कारण आपकी ऐसी हालत हुई और रो पडा, कैप्टन बबलू मेजर निराला को जल्दी-जल्दी अस्पताल ले गया, होश आने पर कैप्टन बबलू ने बताया, घर से भागकर हरिद्वार दुकान पर काम करने पर दयालु दुकानदार के सहयोग से दिन-रात तैयारी करके सीडीएस क्वालीफाई करके कमीशन अफसर बना, इस प्रकार मेजर निराला को बबलू की संघर्ष भरी कहानी सुनकर बहुत खुशी हुई। इसी बीच एक पुलिस की जिप्सी भी वहां पर आकर रुकती है, पुलिस के सिपाही गाडी में से उतर कर कहते है। मेजर साहब आपको एस0पी0 साहब ने बुलाया है, फिर कैप्टन बबलू मेजर साहब के साथ एस0 पी0 के पास जाते हैं वहां जाते ही, एस0 पी0 बने जग्गू ने मेजर साहब के पैर छूकर उनका स्वागत किया। इस प्रकार जगमोहन रावत (जग्गू) जिसकी पढाई में मेजर निराला ने बचपन में मदद की थी। बचपन में बबलू गरीबी के हालात पर उपहास उड़ाते हुए बेइज्जत करता था। वही जग्गू आज उसके सामने एस0 पी0 बना खडा है।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी द्वारा लिखा गया मेजर निराला उपन्यास एक सच्चे देश भक्त फौजी और एक ईमानदार पति, एक जिम्मेदार पिता, एक प्रकृति प्रेमी पहाडी युवक का बहुत ही मार्मिक चित्रण किया है। भाषा शैली बहुत ही सटीक और उत्तम प्रकार की प्रयोग की गई है, पात्रों का चित्रण भी बहुत ही सुन्दर ढंग से किया गया है। उपन्यास मेजर निराला पर स्थानीय गढवाली भाषा में डा० 'निशंक' जी की बेटी आरुषी निशंक के द्वारा मेजर निराला नाम से ही फिल्म भी बनी हुई है। फिल्म को बहुत सारे पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है।¹⁰

निशांत— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी द्वारा लिखित उपन्यास निशांत 2008 में भावना प्रकाशन नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित एक ग्रामीण आंचलिक उपन्यास है जो कि वास्तविक एक निर्धन परिवार पर लिखा गया है। उपन्यास एक सर्वोच्च कृति है जिसमें उच्च कोटि की साहित्यिक शैली का प्रयोग हुआ है।

उपन्यास से रमाकान्त शास्त्री जी शिक्षक पद पर कार्यरत हैं। उनके बच्चों में मिताली, सोनाली, राहुल, शेखर हैं। मिताली 12 वर्ष की हुई तो उसकी मां भी चल

¹⁰ रमेश पोखरियाल 'निशंक', मेजर निराला, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1997

बसी अब घर की सारी जिम्मेदारी मिताली के कंधों पर आ गई थी। मां के असमय मृत्यु से उसके पिता भी टूट से गए थे, कुछ दिन बाद उनको भी दिल का ऐसा दौरा पड़ा कि वे भी चल बसे, अब तो सारी जिम्मेदारी मिताली के कंधों पर आ गई थी। उस समय सोनाली ग्यारहवीं में राहुल नौवीं में शेखर सातवीं में पढ़ते थे रिश्तेदार भी एक-एक करके अपने-अपने घर चले गये, पिता जी के फण्ड, पेंशन आदि को सही कराने में एक महीना लग गया इस बीच मिताली का भी टीचर ट्रेनिंग के लिए सलेक्शन हो गया तो ज्वाइन करके उसने ट्यूशन पढ़ाना जारी रखा। अब घर का खर्चा सही ढंग से चल जाता था। इसी बीच सोनाली, राहुल, शेखर सभी अपनी-अपनी कक्षा में पास हो जाते हैं और मिताली भी टीचर ट्रेनिंग पूरी करके सरकारी स्कूल में लग जाती है। अब राहुल भी इंजीनियरिंग की पढाई के लिए अमेरिका चला जाता है। सोनाली का भी कालेज में एडमिशन हो जाता है, तो शेखर दसवीं में फेल हो जाता है फिर तो शेखर आवारागर्दी और नशा भी करने लगा। वह सरकारी विभाग से ठेका दादागिरी और दबंगई से जबरदस्ती अपने नाम करवाता और काम भी सही ढंग से न करवाता जिससे विभाग में पुलिस ने उसके खिलाफ धोखाधड़ी का केस लगा दिया इस बार तो शेखर को जेल की सजा भी हो गई थी, जिससे मिताली की बहुत बदनामी हुई थी। जिससे उसने सरकारी शिक्षक की नौकरी छोड़ दी और घर छोड़कर रामपुर नामक गांव में आ गई थी वहां पर सभी कुछ उसके लिए नया था, फिर भी उसने वहां पर एक निजी स्कूल में पढ़ाना शुरू कर दिया था स्कूल का मालिक कोई द्वारिकानाथ जम्मीदार के नाम का ट्रस्ट का थाइस संस्था के कारखाने, सामाजिक संस्थाएं, अनाथ आश्रम, कई प्रकार के गोदाम आदि थे मिताली के अलावा विद्यालय में अनेक शिक्षक थे।

पर मिताली के व्यक्तित्व को देखकर वार्षिक उत्सव में संचालन का कार्य मिताली को ही दिया गया, मिताली का संचालन और योगदान देखकर निशांत जी बहुत प्रभावित हुए, जो कि जम्मीदार जगन्नाथ के बेटे थे। निशांत के दादा जी ठाकुर द्वारिकानाथ जी को अंग्रेजों ने राय बहादुर की पदवी से सम्मानित करके बहुत अधिक धन सम्पदा, जमीन जायदाद दी हुई थी। पास पड़ोस के गांवों में भी उनका बहुत मान सम्मान था धन दौलत की कमी न होने के कारण उनका बेटा जगन्नाथ गलत संगति में फंस गया था। द्वारिकानाथ जी ने कई बार जगन्नाथ को समझाने

की कोशिश की मगर हर बार असफल रहेशादी कराकर उन्होंने सोचा शायद सुधर जाएगा कुछ दिन सब कुछ सही होता रहा मगर जगन्नाथ फिर अपने दोस्तों को बुलाकर घर में ही गुलछरें उड़ाने लग गया और धीरे-धीरे और ज्यादा अय्याश बनता गया इसी बीच निशांत का भी जन्म हो जाता है। अब निशांत की मां भी बीमार रहने लगती है तो जगन्नाथ ने रोजी नामक एंग्लो इण्डियन दाई की सुंदरता को देखकर निशांत की देख-रेख के लिए रख लिया. जगन्नाथ की गलत संगति के कारण द्वारिकानाथ जी बीमार हो जाया करते थे। जिससे उन्होंने अपनी वसीयत को निशांत के नाम कर दिया और कुछ दिन बाद ही द्वारिकानाथ जी की मृत्यु हो जाती है। अब तो जगन्नाथ को रोकने-टोकने वाला कोई नहीं होने से जगन्नाथ दिन रात शराब में ही डूबा रहता है और शीघ्र ही निशांत की मां की भी मृत्यु हो जाती है, इसी बीच निशांत 12 वीं पास करके पढाई के लिए दिल्ली चला जाता है। इधर जगन्नाथ भी ज्यादा शराब पीने से बीमार पड़ जाते हैं तो फिर निशांत को दिल्ली से घर बुलाया गया और अपनी गलतियों के लिए क्षमा मांगते हैं, कुछ दिन बाद जगन्नाथ की भी मृत्यु हो जाती है। इसी बीच रोजी भी रुपये पैसे लेकर भाग जाती है, अब निशांत भी पढाई पूरी करके घर को सम्भालता है, और कई सारे प्रकार के सामाजिक कार्यों की शुरुआत भी करता है। इस प्रकार कार्यक्रम का सही और सफल संचालन करने पर निशांत मिताली के पास जाकर उसकी भूरी-भूरी प्रशंसा करते हुए संचालन के लिए बधाई देता और अपना परिचय देते हुए बताता है। कि हमारा इस विद्यालय के अलावा एक महिला आश्रम भी है आप वहां पर भी जाया करिए मिताली पहले तो इसे बड़े लोंगो की चाल समझती है फिर धीरे-धीरे निशांत को समझने लगती है। इस प्रकार निशांत और मिताली एक दूसरे के काफी नजदीक आ जाते हैं। इसी बीच मिताली शेखर को भी अपने पास बुलाती है। शेखर यहां पर भी आश्रम की लड़कियों को फंसाकर अपनी हरकतों से बाज नहीं आता है आश्रम की शालिनी को अपने जाल में फंसाकर निशांत के खिलाफ करके निशांत को बदनाम करता है। मिताली भी उसके झांसे में आकर निशांत पर ही शक करने लगती है किन्तु सही समय पर शालिनी मिताली को सचाई बताकर निशांत के ऊपर ऊछाली गई कीचड़ को साफ करती है। मिताली बहुत ही क्षुब्ध होकर निशांत से मिलने के लिए तड़प उठती है। रात भर आत्म ग्लानी के कारण उसे नींद नहीं

आती है। सुबह जल्दी ही निशांत के जागने से पहले ही वहां पहुंच जाती है, उसी समय कर्नल विक्रम भी वहां पहुंच कर ऊंची आवाज में गला खंगारते हैं। तो कर्नल विक्रम को देखकर निशांत और मिताली दोनों दूर-दूर हो जाते हैं कर्नल विक्रम पुलिस के साथ मिलकर शेखर को पकड़ लेते हैं। पुलिस शेखर को सजा देती है बाद में निशांत शेखर को भी क्षमादान देकर अपने साथ ले आते हैं।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने निशांत उपन्यास को उत्तम प्रकार की शैली का प्रयोग करके बहुत ही लोकप्रिय और उच्च कोटि का उपन्यास बना दिया है। उपन्यास में जहां निशांत ऊंचे घराने का होने के बाद भी मिताली जैसी साधारण सी लड़की की तरफ खिंचता चला जाता है, जो कि निचले मध्यम वर्ग की होकर भी निशांत के दिल में जगह बना लेती है। पूरे उपन्यास में दिल को छू जानी वाली शैली का प्रयोग किया गया है।¹¹

वीरा उपन्यास— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने वीरा उपन्यास में भी अन्य उपन्यासों की ही भांति कथावस्तु, पात्र, स्थान आदि का बहुत ही सुन्दर वर्णन किया है।

उपन्यास के नायक एवं नायिका की भूमिका को भी अति सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया है। उपन्यास की नायिका वीरा जो कि पहाड़ों में स्थित छोटे से गांव में रहती थी, आधुनिक युग में एकल परिवारों का चलन होने से वीरा के परिवार वाले भी अलग-अलग हो जाते हैं। तो कुछ समय बाद वीरा के मां-बाप भी गुजर जाने के बाद लोक-लाज के डर से उसके चाचा-चाची वीरा को अपने पास रख लेते हैं। वीरा के चाचा पास ही गांव के प्राथमिक विद्यालय में सरकारी अध्यापक थे, वे चाहते थे वीरा स्कूल जाए पर चाची मना कर देती थी। इसी झगड़े के डर से चाचा ज्यादातर चुप ही रहा करते थे। चाची सारे दिन वीरा से काम कराती रहती थी हालांकि वीरा के हंसमुख स्वभाव के कारण गांव के सारे लोग खुश रहते थे, पर फिर सोचते थे कि वीरा को इस छोटी सी खेलने-खाने की उम्र में चाची द्वारा कामकाज में बांध देना गलत है। वीरा के मामा-मामी जिनकी कोई संतान नहीं थी वीरा को अपने पास लाना चाहते थे, पर हर बार चाची कोई न कोई बहाना करके

¹¹ रमेश पोखरियाल 'निशंक', निशांत, भावना प्रकाशन, दिल्ली, 2008.

वीरा को जाने से रोक देती थी। आज फिर मामा जी जैसे ही वीरा को ले आने के लिए आंगन में पहुँचे तो ऊंची आवाज में वीरा को आवाज लगाते हैं आवाज सुनकर चाची बाहर आई और प्रणाम करते हुए बोली अपने आने के बारे में पहले बता देते तो वीरा दिखाई नहीं दे रहा है, मामा जी कहते हैं तो चाची कहती है। पड़ोस में खेलने के लिए गई होगी पर अचानक वीरा सिर पर घास का बोझा लेकर आ गई मामा जी को देखकर दौड़कर कर लिपटकर सिसकने लगी मामा जी ने मौका सही देखकर कहा वीरा को कुछ दिन के लिए मैं अपने साथ ले जाना चाहता हूँ। बाहर से ही चाचा जी ने दोनों की बातें सुनी तो मन ही मन खुश हुए पर चाची के डर से कुछ नहीं कह सके अब चाचा-चाची तथा मामा में तय हुआ कि एक महीने के लिए वीरा मामा-मामी के पास चली जाएगी वीरा पूरी रात सो ही नहीं पाई सुबह भी सबसे पहले ही उठकर तैयार होकर मामा के साथ चल पड़ी, पूरे रास्ते वीरा बिना थके मामा के आगे-आगे उछल-उछल कर भागे जा रही थी, मामी भी वीरा को पाकर बहुत खुश हुई। अब वीरा के मामा ने स्कूल में एडमिशन करवा दिया था वीरा अब मन लगाकर पढ़ने लगी थी, वीरा अब तो हर कक्षा में अव्वल आने लगी थी। पड़ोस की श्यामा काकी के साथ वीरा की बहुत अच्छी पटती थी, श्यामा काकी भरी जवानी में ही विधवा हो गई थी एक बेटा दीपक था। उसका दीपक वीरा को काफी चिढ़ाता रहता था। वीरा भी मौका देखकर दीपक को चिढ़ाती रहती थी, दीपक ने दसवीं में टॉप किया था, इण्टर भी मौसी के घर से पास किया था। और कालेज की तैयारी कर रहा था, दीपक की मदद से वीरा ने भी प्राइवेट से 12वीं पास भी कर लिया था। दीपक अब श्रीनगर जाकर पढ़ने लगा था। वहाँ पर उसका रूम पार्टनर आशीष भी उसे अपने घर की कहानी सुनाता है। अब दीपक और वीरा काफी नजदीक आ जाते हैं। पंधरे पर बिमला भाभी वीरा को कहती है कि दीपक के साथ रिस्ता बनाने से पहले ढंग से सोच लेना बिमला कहती है, कि वह राकेश प्रसाद नामक कम्पाउण्डर से प्यार करके धोखा खा चुकी थी। जो उसे धोखा देकर उस गांव से ट्रांसफर करके कहीं और जा चुका था। उसके पिता जी गांव के प्रधान थे, तो राकेश प्रसाद कम्पाउण्डर बनकर नया-नया उस गांव में आया था, तो सबने उस पर विश्वास करके अपने ही घर पर रहना और खाना दे दिया तो वह बिमला के साथ मेल जोल बढ़ाने लगा। जगत सिंह प्रधान ने राकेश को बिमला के साथ शादी

करने के लिए कहा तो राकेश प्रसाद उल्टा जगत सिंह को गाली-गलौज करके चला गया और फिर कभी वापस नहीं आया बिमला भी उससे रो-रो कर मिलने गई पर उसने शादी करने के लिए साफ-साफ मना कर दिया तो जगत सिंह ने अपनी ही विरादरी में औने-पौने में उसकी शादी कर दी। दीपक पहले से ही वीरा की पढाई में काफी मदद करता था वीरा और दीपक एक दूसरे को पसंद करने लगे थे। अब मामी को भी इसका अहसास होने लगा तो मामी के कहने पर मामा वीरा के लिए गुमान सिंह के लडके का रिस्ता तय करते हैं, तो राजू 12वीं पास करने के बाद दिल्ली में प्राइवेट नौकरी करता था। और उसकी सोच भी दिल्ली के बाजारू जैसी हो जाती है। इसी कारण से वह वीरा के मामा- मामी या परिवार से बहुत अधिक दहेज की आशा करके शादी को तैयार होता है।

वागदान पर दीपक पूरी मदद करके श्रीनगर वापस आता है इतना खर्च होने पर भी राजू की दहेज की भूख बढ़ती जाती है। तो उसके पिता गुमान सिंह उसे लज्जित होते हुए समझाते हैं। अभी तक कृपाल सिंह जी ने अपना बचाया हुआ पैसा सब कुछ खर्च कर दिया अब उनके पास इतना खर्च नहीं है, कि वे शादी करा सके पर राजू भी दिल्ली जाकर वहां के माहौल के कारण लोभी बन चुका था। वीरा के मामा (कृपाल सिंह) बैंक में जमा अपनी सारी पूंजी निकाल कर खर्च कर देते हैं, तब भी राजू की दहेज की भूख बढ़ती जाती है। गुमान सिंह सब कुछ समझ कर राजू को समझाने की कोशिश करते हैं, पर राजू के न मानने पर उनकी शादी टूट जाती है। अब दीपक भी बीएससी कर लेता है, और शादी टूटने पर वीरा को एक वर्षीय नर्स की पढाई करने को कहता है। एक वर्षीय नर्स की पढाई करने के बाद वीरा को अपने गांव से 15-20 किमी दूर ही स्थित प्राथमिक अस्पताल में नौकरी मिल जाती है। दीपक भी एम0 एस-सी0 करने के बाद एक एनजीओ की नौकरी ज्वाइन करके वीरा के अस्पताल के गाँव में ही किसानों को आधुनिक खेती की सीख सिखाता है अब वीरा और दीपक साथ-साथ रहने लगते हैं।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी का वीरा उपन्यास वाणी प्रकाशन दरियागंज नई दिल्ली द्वारा प्रथम संस्करण 2008 में छपा था। वीरा उपन्यास में डॉ० निशंक जी द्वारा पात्रों का चरित्र चित्रण बहुत ही सुन्दर ढंग से किया है। पहाड

के युवाओं को पलायन रोकने में सहायक कृषि कार्यों को ध्यान में रखकर उपन्यास रचा गया है। शैली बहुत ही उत्तम प्रकार की है, पाठकों द्वारा उपन्यास की भूरी-भूरी प्रशंसा की गई है।¹²

प्रतिज्ञा उपन्यास— डॉ० 'निशंक' जी द्वारा रचित उपन्यास प्रतिज्ञा 2010 में प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित एक घटना प्रधान आंचलिक उपन्यास है। मदनपुर गांव में भागुली देवी अपने बेटे बीर सिंह को पढ़ने के लिए शहर भेजती है, शहर से पढ़कर बीरसिंह गांव में ही दुकान खोलता है। गांव के लोग शहर में पढ़े लिखे बीरसिंह को गांव में ही दुकानदारी करते देखकर शहर में नौकरी करने को छोड़कर गांव आने का कारण पूछते हैं। बीरसिंह गांव वालों को खेती करने के नये-नये तरीकों के बारे में बताता है, और खुद भी खेती करके गांव वालों को बताता है, इस साल उगी हुई फसल को वह गांव वालों में बांट देता है इस प्रकार गांव वाले भी धीरे-धीरे सब्जी की खेती शुरू करते हैं। इसके अलावा बीरसिंह गांव में बन रहे शराब को जिससे बहुत सारे परिवारों के घरों में रोज-रोज झगड़े होते रहते थे। गांव में फैल रहे शराब के इस अवैध धन्धे से फैल रही नशाखोरी और इसके कारण उजड़ते परिवारों को बचाने के लिए पास के गांवों को भी अपने साथ कर लेता है। बीरसिंह से प्रभावित होकर बहुत सारे स्कूल वाले अपने सालाना उत्सवों, कार्यक्रमों में बीरसिंह को मुख्य अतिथि के लिए बुलाते रहते थे। अब बीर सिंह एक चिरपरिचित चेहरा बन चुका था। इसी बीच बीरसिंह की शादी की बात सुनीता के साथ तय हो जाती है। पहले तो सुनीता की मां मना करती है, पर बाद में सुनीता तथा सुनीता के पिताजी जो कि गाँव के स्कूल में हेडमास्टर हैं। सुनीता के पिता के तैयार होने से सुनीता की मां भी तैयार हो जाती है, सुनीता बीरसिंह के साथ शादी करके खुशी से रहती है। सुनीता ने बीरसिंह को पहले भी कई बार मुख्य अतिथि के रूप में कई सामाजिक संस्थाओं में देखा था, पर कभी भी बीरसिंह से बात नहीं कर पाई थी। बीरसिंह जैसे व्यक्ति से उसकी शादी होने पर वह खुश थी, अब बीरसिंह और गांव वालों के कारण शराब माफियों का सारा काम धन्धा बन्द होने लगता है। इसलिए शराब माफिया बीरसिंह को सबक सिखाने के लिए एक होने लगते हैं, और बीरसिंह को सबक सिखाने की कोशिश करते हैं। इसी बीच शराब

¹² रमेश पोखरियाल 'निशंक', बीरा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008.

माफिया को मदनपुर से 2 मील दूर कुलसारी गांव के कुलदीप (कुल्लू) के बारे में पता चलता है।

कुलदीप बचपन से ही जिद्दी तथा बदमाश किस्म का लडका था। उसकी बदमाशियों के चर्चे सभी को पता था, आखिरी बार वह एक नई-नई शादी शुदा दम्पति को लूटने के लिए चाकू मारकर गांव से शहर भाग जाता है। वहां पर वह पहले ढाबे पर काम करता है और बाद में चोरी करके भाग कर किराये पर मारने वाला बन जाता है। इधर शराब माफिया भी कुल्लू को ही बीरसिंह को मारने के लिए शहर से बुलाते हैं, कुल्लू गांव आकर मां से मिलने का बहाना करके बीरसिंह के बारे में सारी जानकारी इकट्ठा करता है, और कुछ दिन बाद उसके गुरगे बीरसिंह को चाकू मारकर सुधरने की धमकी देकर चले जाते हैं। उधर बीरसिंह भी हार नहीं मानता है और आगे के बारे में सोचते हैं और सभी मिलकर शराब माफिया को और दुगुने जोश से रोकना शुरू करते हैं। इस बार कुल्लू के भी सारे आदमी आकर बीरसिंह को चाकू मार-मार कर अधमरा करके वही छोड़कर सबको धमकाते चले जाते हैं। और गांव वाले भी पटवारी के सामने कोई भी मुंह नहीं खोलता है। अतः कुछ दिन बाद फाईल बन्द कर दी जाती है। घर में सुनीता का रो-रो कर बहुत बुरा हाल था, अब सुनीता अपने पति वीरसिंह का बदला लेने के लिए गांव की महिलाओं को एक करने की कोशिश करती है लेकिन डर के कारण कोई भी उसकी मदद नहीं कर रही थी। फिर सावित्री ने नशे से तबाह परिवारों की महिलाओं को अपने साथ मिलाना शुरू कर दिया। पडोसी गांव (सिमलखेत) की रजनी भी उसके साथ हो गई थी, जब कुल्लू को इस बारे में पता चलता तो वह रजनी से मिलता है, यहां तक कि उसको शहर ले आने के लिए गाड़ी भेजता है। रजनी उससे काफी प्रभावित होती है, अब रजनी को कुलदीप अपने जाल में फंसा लेता है। रजनी पूरी तरह से कुलदीप के चक्कर फंस कर समझती है, कि कुलदीप उसे प्यार करता है। रजनी कुलदीप के सपने देखना शुरू कर देती है, पिछली बार जब कुलदीप रजनी को शहर अपनी कोठी पर बुलाता है तो रजनी को ऐसा लगता है, कि अब कुलदीप से ही उसकी शादी होगी। रजनी अब खुलकर सुनीता के सामने कुलदीप के बारे में ज्यादातर खामोश ही रहा करती थी। रजनी की दशा देखकर सुनीता को रजनी के कुलदीप से मिलने की आशंका होनी लगती है, पर वह कर भी क्या सकती थी।

रजनी की मनोदशा देखकर सावित्री कूटनीति ढंग से काम लेकर रजनी से कुलदीप के बारे में बात करती है। रजनी अब खुलकर सुनीता के ही सामने कुलदीप का पक्ष ले कर कहती किसी ने पिछली बार के जैसे सुनीता को भी कुछ कर दिया तो उसके बाद उसके परिवार को कौन देखेगा। अब सुनीता के इस प्रकार से पलट जाने से असमन्जस में फंस जाती है। अब सुनीता कूटनीति तरीके से काम लेने की कोशिश करती है, सुनीता अपनी चार सहेलियों को अपनी राजदार बनाकर कुलदीप के सामने क्षमा मांगने के लिए रजनी को ही माध्यम बनाकर कुलदीप के पास संदेशा भेजते हैं। इस प्रकार रजनी भी सुनीता को नहीं समझ पाती है, इधर सुनीता अपनी सारी कूटनीति में रजनी को भी फंसा देती है। रजनी के ही द्वारा कुलदीप को पंचायत भवन में बुलाकर क्षेत्र के गणमान्य लोगों के सामने कुलदीप के सामने क्षमायाचना (आत्मसमर्पण) करेगी। पंचायत भवन गांव वालों गणमान्य लोगों से खचाखच कर भर गया था। रजनी द्वारा कुलदीप को बिना गुर्गों के ही पंचायत भवन में बुलाया गया कुलदीप के अन्दर आते ही सुनीता हाथ जोड़कर कुलदीप के पास जाती है सबके सामने क्षमा मांगते हुए कहती है सुनीता की दो सहेलियां दरवाजा बंद करके सुनीता कुलदीप के सामने जाकर हाथ जोड़कर खड़ी होकर क्षमा मांगते कहती है। हमारे परिवार को कोई भी देखभाल करने वाला न होने से मैं आप लोगों को आज के बाद साथ नहीं दे पाऊंगी इसलिए मैं आप लोगों से क्षमा मांगती हूं और इतना सुनते ही कुलदीप सुनीता से निश्चित हो जाता है। तो सुनीता भी शरीर में छुपाई दरांती को बाहर निकालकर धडाधड कुलदीप पर कई वार करती है। कुलदीप के नीचे गिरते ही रजनी वहां से भाग जाती तो बाकि लोग भी एक-एक करके वहां से चले जाते हैं। बाहर मेले के शोरगुल में कुछ भी सुनाई नहीं दे रहा था, कुलदीप का क्षत विक्षत शरीर वहीं पर पड़ा रहता है। सुनीता भी अपनी सहेलियों के साथ वहां से चली जाती है, पुलिस जांच करके पूछताछ करती है। सभी लोगों के बयान हमने नहीं देखा कहने पर पुलिस ने बिना गवाह के केस को बन्द कर दिया, इस प्रकार कुलदीप का भी दर्दनाक अंत हो जाता है।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने प्रतिज्ञा उपन्यास में सुनीता के उत्साही चरित्र का चित्रण किया है। अन्य पात्र बीरसिंह, कुल्लू (कुलदीप), आदि का भी जीवन्त चित्रण करके उपन्यास को पाठकों के बीच दिलचस्प बनाया है। एक बार

फिर उन्होंने अपनी श्रेष्ठतम शैली का प्रयोग करके हिंदी के श्रेष्ठ रचनाकार होने का परिचय दिया है।¹³

पहाड से ऊँचा— डॉ० 'निशंक' जी द्वारा लिखित उपन्यास पहाड से ऊँचा 2008 में वाणी प्रकाशन नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित यह उपन्यास संपूर्ण उत्तराखण्ड के ज्वलंत समस्या के बारे में लिखा गया है। अवकाश प्राप्त आनरेरी कैप्टन शंकर दत्त कुछ ही दिन पहले ही रिटायर हुए थे, उनके साथ के सूबेदार मेजर गोपालदत्त और मोहन सिंह बिष्ट हरिद्वार, रुडकी और देहरादून में बस गये थे, पर कैप्टन शंकरदत्त ने गांव में ही रहने का फैसला किया। घर में पत्नी बडा बेटा प्रकाश और बेटी शांति थे। प्रकाश प्राइवेट से एम० ए० कर रहा था, शान्ति ने भी इस वर्ष बारहवीं पास कर लिया था। चाय पीते समय गोपाल चाचा कह रहे थे अब शांति के लिए लडका ढूंढना शुरू कर देना चाहिए उधर मोहन भी एम० बी० बी० एस० फाईनल कर रहा था। मोहन की पढाई का खर्चा भी शंकर दत्त ही देते थे, इसलिए मोहन अपने को हमेशा अपने तायाजी (ताऊजी) को अपना सर्वस्व मानता था। अब रमेश भी प्रकाश के घर आया था, दोनों काफी देर तक बातें करते रहे फिर प्रकाश बोला यार मेरे लिए भी नौकरी ढूंढ लेना रमेश भी हां कहकर चला गया। आनन फानन में शान्ति के लिए रिटायर सुबेदार मेजर सोमेश दत्त का इकलौता लडका हरिकृष्ण शान्ति को देखने के लिए बुलाया गया। रमेश भी दिल्ली जाने की तैयारी करता है। प्रकाश भी रमेश के साथ दिल्ली जाने के लिए अपने पिता शंकरदत्त से कहता है पर शंकरदत्त और पत्नी के हजार समझाने पर भी न मानने पर भी शंकरदत्त प्रकाश को शांति की शादी के बाद दिल्ली जाने को हां कहते हैं, पर प्रकाश शादी में बाद में आने को कहकर दिल्ली चला जाता है। हरिकृष्ण शान्ति को देखते ही पसन्द कर लेता है पर शान्ति की नजरें हरिकृष्ण को देखने की हिम्मत नहीं कर पा रही थी, परन्तु सुबह ही हरिकृष्ण से नजर मिल गई थी तो शान्ति भी मां बाप की पसंद को ही अपनी भी पसंद समझती है। आनरेरी कैप्टन शंकरदत्त तथा सूबेदार मेजर सोमेश दत्त समधी बन जाते हैं शादी की बात तय हो जाती है। अब प्रकाश को दिल्ली पत्र से सूचित कर दिया जाता है प्रकाश भी सही समय पर दिल्ली से घर आ जाता है। शान्ति की शादी हरिकृष्ण से हो जाती है, शान्ति अपनी ससुराल चली जाती है। पर मन

¹³ रमेश पोखरियाल 'निशंक', प्रतिज्ञा, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014.

उसका मां बाप के ही पास रहता है मां-बाप अकेले कैसे रहते होंगे उधर दिल्ली जाने पर प्रकाश भी मां-बाप को अकेला छोड़कर पछता रहा था। दिल्ली में उसने रमेश से कमरा अलग कर लिया था कमरा बहुत ही गंदा और सीलन भरा था। मोहन के कालेज में आज दीक्षांत समारोह था। प्रोफेसर सकील अन्सारी मुख्य अतिथि थे, मोहन ने टॉप किया था, उसे गोल्ड मेडल मिलना था। प्रोफेसर सकील एक डॉक्टर की जिम्मेदारी को बताते हुए बहुत कुछ कह रहे थे, अंत में प्रोफेसर सकील ने मोहन के साथ विभिन्न विषयों पर बात की और गोल्ड मेडल दिया। मोहन के साथ गीता ने भी डॉक्टरी पूरी की तथा मोहन को अपने परिवार को मिलाने के लिए ले गई। गीता के पिता का भी मोहन के साथ डॉक्टरी तथा समाज के बारे में विभिन्न पहलुओं पर काफी बहस हुई। गीता की मां, गीता की सहेली सभी बड़े ध्यान से मोहन के तर्कों को सुन रहे थे। गीता के पिता जी किसी प्राइवेट कम्पनी से डायरेक्टर पद से रिटायर हुए थे। उनका शहर में बड़ा सा घर था, नौकर चाकर थे पर उनका मन शहर से उदास हो गया था। गीता उनकी इकलौती बेटी थी उसकी परवरिश उन्होंने बड़े ही शानौ-शौकत ढंग से की थी। उन्होंने उसके सारे शौक पूरे किये थे मगर फिर भी उसको नाममात्र का घमण्ड भी नहीं था। गीता की मां भी गृहस्थी को सम्भालती थी। मोहन के तर्कों को सुनकर गीता की सहेलियां गीता के पिता के सामने कहती हैं, आखिर इन तर्कों के पीछे मोहन की गीता यही तो है। गीता झेंप सी जाती है। अब मोहन अपने गांव की तरफ चलने लगता है, गीता भी उसी के साथ आई थी शान्ति का जीवन हरिकृष्ण के साथ बड़े आराम से गुजर रहा था। शाम को हरिकृष्ण गाड़ी खड़ी करके घर आ जाया करता था। कुछ दिन तो बहुत अच्छे ढंग से गुजरे मगर कुछ दिन बाद हरिकृष्ण शाम को शराब पीकर आने लगा। शान्ति को जब आभास हुआ तो उसने हरिकृष्ण को समझाया हरिकृष्ण चुपचाप ही रहता था। फिर एक दिन अचानक गाड़ी का एक्सीडेंट हो गया हरिकृष्ण तो बच गया पर गाड़ी केवल कबाड लायक ही बची रही। अब हरिकृष्ण भी बेरोजगार हो गया था, उधर दिल्ली में रमेश का हाथ भी मशीन के अन्दर जाने से कट जाता है। कम्पनी वाले थोड़ा बहुत पैसा देकर रमेश को गांव वापस भेज देते हैं, अब प्रकाश भी रमेश के कमरे पर आ जाता है। वहां से रमेश भी अब गांव आ चुका था। फिर प्रकाश भी वापस गांव जाता है, गांव आकर मोहन घर पर ही है, पता

चलते ही रमेश और प्रकाश दोनों मोहन को लेने चलते हैं। मोहन और गीता दोनों गांव पहुंच जाते हैं, गांव पहुंचने पर दोनों का गांव वालों द्वारा भव्य स्वागत किया जाता है। मोहन अपनी स्थानीय भाषा में रमेश और प्रकाश से बात करते हैं, तो गीता उनके आपसी स्नेह को देखकर बहुत खुश होती है। गांव में शंकर दत्त मिलते हैं तो मोहन साष्टांग प्रणाम करता है, और गीता का परिचय देते हुए कहता है यह मेरे साथ डॉक्टर गीता है। गीता भी पैर छूकर प्रणाम करती है, अब धीरे-धीरे मोहन द्वारा अपने मां बाप से किए गये वादे अनुसार गांव में ही क्लिनिक खोलकर लोगों का इलाज शुरू कर दिया जाता है। धीरे-धीरे अस्पताल में भीड़ बढ़ने लगती है। आस-पास के गांव वाले भी अब इलाज करवाने के लिए आने लग गये थे। अब अस्पताल बनाने की योजना बन गई थी, अस्पताल बनते ही रमेश को पर्ची बनाने का काम दिया गया। एम्बुलेंस को हरिकृष्ण चलाया करता था तो प्रकाश दवाइयों की बिक्री आदि देखता था। इस प्रकार अस्पताल बहुत सही और इमानदारी से चल रहा था। आज बारिश लगातार बरस रही थी। मोहन और गीता सो चुके थे, तभी दरवाजे पर कोई थाप देता है, रात काफी हो चुकी थी। गीता ने आशंका जताकर दरवाजा नहीं खोला पर मोहन ने दरवाजा खोला तो चारों तरफ अंधेरा ही अंधेरा था। बिजली कड़कते ही मोहन ने देखा प्रकाश के साथ एक लडका बहुत बिनती कर रहा था। मोहन गीता के आशंकित होने पर भी उस लडके के पास जाता है, डॉक्टर साहब मेरी मां को बचा लीजिए, पहले उसने खून की उल्टी की और तब से उसकी हालत बहुत खराब है। मोहन गाड़ी लेकर चलने लगता है तो गीता भी चलनी लगती है, तो मोहन अन्य लोगों को अपने साथ ले जाता है रातभर इलाज के बाद मरीज के कुछ ठीक होते ही जब मोहन को लगा कि अब मुझे घर जाना चाहिए तो ऊंगते-ऊंगते वह घर पहुंच गया इस कर्तव्यपरायणता के लिए मोहन को सभी ने श्रद्धा से सिर झुका लिया था।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी द्वारा पहाड से ऊंचा उपन्यास में भी उन्होंने अपनी उत्तम शैली द्वारा पाठकों को बरबस अपनी तरफ आकर्षित किया गया है। अन्य उपन्यासों की भांति इस उपन्यास में भी पात्रों का चित्रण बहुत ही अच्छे

ढंग से किया हुआ है। डॉ० 'निशंक' जी जी द्वारा एक बार फिर सर्वोच्च साहित्यकार होने का प्रमाण मिलता है।¹⁴

अपना पराया— डॉ० 'निशंक' जी जी द्वारा रचित उपन्यास 2010 में प्रभात प्रकाशन दिल्ली द्वारा प्रकाशित यह उपन्यास देश-सेवा, मातृभूमि प्रेम, समाज पर आधारित है। सुरेश सीला गांव का रास्ता चलते-चलते पंधरे पर पहुंच गया। वहां पर गांव की महिलाएं, बहु-बेटियां आपस में चुहलबाजी करती हुई दिखती हैं इनके शोरगुल के बीच सुरेश उनको गांव के रास्ते के बारे में पूछता है, पर कोई कुछ जवाब नहीं देता है सुरेश चुपचाप आगे बढ़ जाता है कुछ आगे जाते ही सुरेश को लगता है, कोई पीछे से आ रहा है। सुरेश पीछे देखता है तो चेहरे पर झूलती लटों पर गिरती पानी की बूंदें सिर पर पानी की गागर उठाए एक सुंदर सी लड़की जो उस पंधरे पर अन्य के साथ चुहलबाजी कर रही थी।

वह बोल पड़ी किसके घर जाना है, सिला गांव के श्री महिमानन्द जोशी जी के घर नाम सुनकर एक बार तो लक्ष्मी लज्जा से झेंप गई, फिर जल्दी ही उसने अपने आपको सहेजते हुए हाथ से इशारा करते हुए कहा उस तरफ सिला गांव के महिमानन्द जोशी जी आस पड़ोस के गांव में पण्डिताई, ज्योतिषी, शादी का लग्न-मुहूर्त करने के लिए जाने जाते थे। सभी लोग बहुत इज्जत करते थे उनकी लक्ष्मी उनकी सबसे बड़ी बेटी थी। उसके बाद विनीता ने भी लक्ष्मी के जैसे ही गांव के ही विद्यालय से ही आठवीं पास किया था। आगे का स्कूल बहुत दूर होने से सभी आठवीं तक ही लड़कियों को पढ़ाया करते थे, लक्ष्मी भी आठवीं करने के बाद घर का काम काज सम्भालती थी। उसकी ही शादी के लिए सुरेश लक्ष्मी को देखने के लिए आया है। सुरेश लक्ष्मी से मिलकर वापस अपने गांव चला जाता है, सुरेश के पिताजी श्री चौतराम जी एक छोटी सी नौकरी करते थे। इसी के कारण सुरेश भी दसवीं के बाद मेरठ की एक फैक्टरी में नौकरी कर लेता है, सुरेश के बाद राजेश, रेणु, राहुल चार बच्चे थे। चौतराम और कमला देवी के कमला देवी जब शादी होकर इस घर में आई थी, तो उसकी सास ने डांटते हुए कहा था, मेरा बेटा शरीफ है इस घर में रहना है तो इस प्रकार उस दिन के बाद से कमला सभी को

¹⁴ रमेश पोखरियाल 'निशंक', पहाड़ से ऊँचा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002.

डांटती फटकारती रहती है। आज भी सुरेश के सिला गांव से आने के बाद छोटी बहन रेणु भाग-भाग कर पूछती है, भैया कैसी है भाभी कमला बीच में ही बोल पड़ती है कैसी होगी कंगाल कैसे होते हैं। कमला बोलकर चली जाती है सुरेश अपनी नौकरी पर मेरठ चला जाता है। इधर कमला महिमानन्द जी को रिश्ते के लिए मना कर देती है, तथा पड़ोस के गांव के प्रधान की बेटी सुशीला को पसन्द करती है। लालच और लोभ से कमला सिला गांव से सुरेश की पसन्द का रिश्ता तोड़ती है, सुरेश भी छुट्टी लेकर गांव आता है। सब बातें सुनकर सुरेश सिला गांव पहुंचता है। मगर आज पंधरे पर कोई भी नहीं था। सुरेश महिमानन्द जी के घर में देखता है महिमानन्द जी किसी की जन्म कुण्डली देखने में व्यस्त थे, सुरेश चुपचाप पैर छूता है तो महिमानन्द जी आने का कारण पूछते हैं। सुरेश एक बार तो झिझकता है, पर फिर हिम्मत करके बोलता है कि अपनी शादी की बात करने पर लक्ष्मी की हमने दूसरी जगह बात कर दी है बैठो, कहने पर सुरेश बैठ जाता है। हिमानन्द जी कहते हैं आप लोगों ने मना कर दिया था सुरेश कहता है पिता जी आपसे बात करने के लिए आएंगे और अपने गांव चल पड़ता है। घर पहुंचते ही उसकी कमला से तीखी बहस होती है। अंत में सिला गांव में बात पक्की हो जाती है, और दोनों की शादी हो जाती है। लक्ष्मी दुल्हन बनकर अपने ससुराल आती है। भाभी को देखकर सभी खुश होते हैं पर कमला कहती है, केवल नाम की ही लक्ष्मी है कि काम-काज की भी है। तो कंगाल घर की ही कमला लक्ष्मी को सताना, डांटना शुरू कर देती है इधर सुरेश भी छुट्टी पूरी करके मेरठ चला जाता है। घर आते समय कोटद्वार से बस छूट जाती है तो सुरेश पूरी तरह भरी हुई सूमो में बैठता है। गांव के पास आते ही गाड़ी का सन्तुलन बिगड़ने से गाड़ी गहरी खाई में गिर जाती है। सुरेश की भी मृत्यु होने से गांव में रोना धोना शुरू हो जाता है, कमला सारा दोष लक्ष्मी पर डालकर कहती है। तुझ कुलक्षणी के कारण ही मेरे बेटा अल्प मृत्यु मरा है, कुछ दिन महिनों बाद तो कमला ने उसको मारना पीटना भी शुरू करती है। अब राजेश भी 12 वीं पास करके पढ़ने शहर चला जाता है। रेणु भी अपनी मां की बातें सुनकर लक्ष्मी से बोलना बन्द कर देती है राहुल छोटा था, तो लक्ष्मी को वही सांत्वना देता था कई बार उसने कमला से मारते हुए लक्ष्मी को बचाया था, राजेश भी शहर के किसी सरकारी कार्यालय में टेम्परेरी नौकरी कर लेता है। कमला राजेश की नौकरी पक्की

होने पर एक लडकी से बात शुरू करती है परिवार में दो भाई और पिता जी सरकारी नौकरी वाले थे। कमला मोटा दहेज के लिए राजेश के लिए ऐसी ही लडकी ढूँढ रही थी, मगर राजेश अपनी सहकर्मी के साथ ही शादी की बात करता है, घर वालों से भी शादी में शामिल होने के लिए कहता है इधर चौतराम जी की मृत्यु हो जाती है, कमला लक्ष्मी को ही इसका दोषी मानकर प्रताड़ित करती है।

पिता जी महिमानन्द की भी मृत्यु भी हो जाती अब तो लक्ष्मी सोचती है, कि उसको अपने मायके जाने का अवसर मिल जाय, किन्तु कमला के साफ ना बोलने पर पिता के अंतिम संस्कार में भी सामिल नहीं हो पाती है। समय अपनी गति से चलता रहा विनीता की शादी में भी कमला लक्ष्मी को नहीं जाने देती है, एक दिन राहुल चुपके से अपनी भाभी के ससुराल जाता और वहां से आकर लक्ष्मी के साथ किचन में था तभी खेतों से कमला आती है।

आते ही कमला लक्ष्मी को पीटना शुरू करती है, बीच बचाव करने राहुल आता है, अब लक्ष्मी को छोड़कर कमला राहुल को ही पीटना शुरू करती है राहुल के भी ऊंची आवाज में चिल्लाने से कमला भी उसका बैग किताबें बाहर फेंककर लक्ष्मी के मायके जाने को कहती है, राहुल रातभर बाहर ही रहता है ज्यों ही सुबह होती है राहुल घर छोड़कर चला जाता है...गांव से बिना पैसों के ही बस में चढ़कर. कंडक्टर पैसे मांगता राहुल रुआंसा सा होने पर कंडक्टर कहता है, कहां जाओगे राहुल चुप रहता है, स्टेशन आने पर कंडक्टर एक ढाबे वाले से बात करके राहुल को ढाबे के काम पर लगा देता है, कुछ दिन बाद इंजीनियर पाण्डे की नजर राहुल पर पड़ती है तो उसे अपने साथ चलने के लिए कहते हैं, पहले तो ढाबे वाला तैयार नहीं होता.फिर पाण्डे जी राहुल को अपने पास रखकर 10 वीं, 12 वीं के बाद पॉलिटेक्निक में एडमिशन दिला देते हैं, इसी बीच राहुल को पता चलता है कि लक्ष्मी की मां की मृत्यु हो जाती है।

राहुल वहां जाकर देखता है कि अब उनके घर का सहारा भी नहीं रहता है फिर मीरा और सुनीता किसके पास रहेंगे लक्ष्मी की मौसी की कोई सन्तान न होने से दोनों को वह अपने साथ ले जाती है, इसी बीच मीरा की भी शादी हो जाती है, अब सुनीता पढ़ती रहती है 12 वीं के बाद राहुल उसको बी0 टी0 सी0 का टेस्ट

दिलाने पौड़ी ले जाता है। टेस्ट क्वालिफाई करने पर उसका बी० टी० सी० में एडमिशन हो जाता है, इधर राहुल को भी पाण्डे जी जे० इ० की नौकरी में लगा देते हैं, उधर सुनीता के लिए पाण्डे जी सरकारी नौकरी वाला लडका देखते हैं सुनीता सोचती है। शायद राहुल के साथ ही उसकी शादी हो जाय, समय पर सुनीता और सुधीर की शादी हो जाती है। कुछ साल बाद दो बेटियां होने पर सुधीर की मृत्यु हो जाती है। अब सुनीता सरकारी टीचर की नौकरी के लिए अप्लाई करती है उसकी नौकरी राहुल के ही गांव में मिलती है लक्ष्मी का बेटा भी आई० आई० टी० कानपुर में एडमिशन करके पास कर लेता है। आगे की पढाई के लिए अमेरिका चला जाता है, पढाई पूरी होने पर बेंगलौर में उसकी नौकरी मिल जाती है, अब सभी लोग राहुल को शादी करने के लिए कहते हैं पाण्डे जी ने गैरोला जी की बेटी जो कि ऋषिकेश में लेक्चरर थी। बात की किन्तु ऐन मौके पर कमला की बीमारी के कारण राहुल गांव आता है। मौका देखकर पाण्डे और गैरोला जी भी कमला से शादी की बात पक्की करवाने आते हैं मगर कमला राहुल का हाथ सुनीता के हाथ में देकर कमला की आंखें खुलती हैं, और खुली की खुली रह जाती है, राहुल पलकों को धीरे से बन्द कर देता है, फिर तो राहुल अपनी मां से किया गया वादा पूरा करने के लिए दृढ़ हो जाता है।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने अपना—पराया उपन्यास में विभिन्न किरदारों का चित्रण बड़े ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है। यह उनकी मजबूत साहित्यिक पकड़ का ही परिणाम है। भाषा शैली अद्वितीय है, पाठकों ने उपन्यास को पढकर भूरी—भूरी प्रशंसा की है। साहित्य जगत में अपना—पराया उपन्यास की प्रसिद्धि डा० निशंक जी के लिए मील का पत्थर साबित हुई है।¹⁵

पल्लवी— डॉ० रमेश पोखरियाल जी द्वारा लिखित पल्लवी उपन्यास 2010 में भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा प्रकाशित है। यह उपन्यास दो मासूमों की देशभक्ति, समाज सुधार, प्रेम कहानी पर आधारित है, रमाकान्त एक उच्च सरकारी अधिकारी थे। घर में कोई वस्तु की कमी नहीं की थी सब कुछ था उनके पास, एक बहुत बड़ी कोठी, कारें, विलासिता की सारी सुविधाएं इसी कारण से उनकी सोच भी ऊंचे दर्जे की बन चुकी

¹⁵ रमेश पोखरियाल 'निशंक', अपना—पराया, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2010.

थी, अहंकार, शानोशौकत का घमंड, परिवार में बेटा एम० बी० बी० एस० कर रहा था। बेटा से उन्होंने इंजीनियर बनने की आस रखी थी पर पल्लवी कुछ और ही बनना चाहती थी इस कारण से उन्होंने कोचिंग की व्यवस्था भी करवा दी थी पर पल्लवी ने साफ मना कर दिया तथा बी० एस० सी० में एडमिशन ले लिया था पत्नी धार्मिक प्रवृत्ति की होने से पूजा पाठ और घर को सम्भालने का कार्य करती, देवीधार गांव में कल्याण सिंह अपनी थोड़ी बहुत खेती करके जीवन यापन करते थे। उनके दो बेटे थे, बड़ा बेटा ध्रुव और छोटा बेटा श्रवण। ध्रुव बचपन से पढ़ने में होशियार थातो श्रवण अपंग ध्रुव को 10 वीं में जिले में सर्वोच्च स्थान मिलने पर सरकार की तरफ से छात्रवृत्ति मिलनी शुरू हुई, तो उसने जमा करके रख दिया इसी बीच श्रवण की बीमारी पर जमा पैसों से इलाज कराने पर, जमा पैसे समाप्त हो जाते हैं, ध्रुव फिर 12 वीं में उच्च स्थान पाने की तैयारी करके पहले से भी ज्यादा अंकों में पास हो जाता है तथा फिर वजीफा मिलता है, इस बार ध्रुव शहर के कॉलेज में बी० ए० में एडमिशन करवाता है आज कॉलेज का वार्षिकोत्सव था ध्रुव का कविता पाठ की सभी लोग प्रशंसा कर रहे थे, जैसे ही ध्रुव मंच से नीचे उतरा पल्लवी की नजर उससे मिली उसे देखकर पल्लवी ने कामिनी से कहा इसको कही देखा लगता है, फिर पल्लवी को नोटिस बोर्ड याद आता है जो पिछले साल का टापर रह चुका है पल्लवी उससे मिलती हैं। और उसकी कविता की प्रशंसा करके उससे अन्य कविताएं भी देने को कहती थी इस प्रकार दोनों की मुलाकातों का सफर शुरू हो जाता है। पल्लवी उसकी कविताओं को बड़े ध्यान से पढ़ती थी, उनमें छुपे हुए अर्थ को वह भली भांति समझ जाती थी। पल्लवी और ध्रुव अब दिल के काफी नजदीक आ चुके थे तो पल्लवी ने आगे के बारे में पूछा तो ध्रुव ने सी० डी० एस० तैयारी बताई तो पल्लवी चुप हो गई, आखिर आर्मी को ही तो उसने बचपन से अपना सपना बनाया था होता भी क्यों नहीं किशन भैया को वह फौज की वर्दी में अपने बचपन से देखता आया है। किशन सुंदर गांव का उसका दूर का रिश्तेदार था छुट्टियों में अक्सर गांव आया करता था, किशन दसवीं पास करने के बाद फौज में भर्ती हुआ था उसके बाद ही वह कमीशन अफसर बना था, किशन की पत्नी बिन्दु लालची स्वभाव की थी। उसका अपने भैया भाभी की बातों में आकर शहर में बसाना चाहती थी, लेकिन कैप्टन किशन के मां बाप गांव में ही रहना चाहते थे। इस प्रकार

किशन अपने मां बाप को कष्ट नहीं देना चाहता था, लेकिन इस बार बिन्दु को बच्चे की पढाई का बहाना मिलकर अकड़ने लगती है, तो किशन बिन्दु को शहर छोड़ देता है। इसी बीच सीमा पर जंग शुरू हो जाती है और कैप्टन किशन शहीद हो जाते हैं। ध्रुव इस बार भी टॉप आता है तो पल्लवी के पिताजी उससे मिलने को घर बुलाकर आगे भविष्य के बारे में पूछते हैं। आर्मी कहने पर वे ध्रुव को एम0 बी0 ए0 या प्रशासनिक सेवाओं के क्षेत्र में जाने को कहते हैं, पर ध्रुव के फौज के झुकाव को देखकर वे उठकर चले जाते हैं। पल्लवी को अपने पिता की सभी बातें मिथ्या लगती हैं, तथा वह ध्रुव को छोड़ने के लिए गेट तक आती है, और पिताजी की बातों पर क्षमा मांगती है ध्रुव ट्यूशन पढ़ाकर अपनी पढ़ाई करता व घर भी पैसा भेजता था। बी0 ए0 पूरा होने पर पल्लवी द्वारा जबरदस्ती कोचिंग के लिए पैसों की व्यवस्था करके ध्रुव कोचिंग करता है, और अब इण्टरव्यू की तैयारी करके पास हो जाता है।

फिर देहरादून की मिलिट्री अकादमी में ट्रेनिंग शुरू कर लेता है और कमीशन अधिकारी बन जाता है। ध्रुव और पल्लवी की शादी हो जाती है, सीमा पर जंग शुरू होने का समाचार रेडियो पर सुनते ही घर वाले चिंतातुर हो उठते हैं। उधर कैप्टन ध्रुव की टुकड़ी के सामने एक बड़ा सा गोला फटता है और सब इधर दृढ़ धर बिखर जाते हैं। जिला प्रशासन के अधिकारी देवीधार गांव में आकर कल्याण सिंह के, आकर उनमें से सबसे उम्र दराज व्यक्ति ने धीरे से ध्रुव की शहीद होने की बात कही, अब आर्मी चीफ और राष्ट्रपति के आदेश पर पल्लवी कमीशन अधिकारी बन जाती है। और गांव में एक संस्थान खोलती है, श्रवण को भी गायक बना देती है।

उधर गांव में कुंती पल्लवी को बिन्दु के बारे में बताती है, बिन्दु के भाई उसके सरकार द्वारा दिया गया पैसों से पेट्रोल पम्प पर पैसों में भारी हेर-फेर बिन्दु की जबरदस्ती एक शादीशुदा वकील के साथ शादी करवा देते हैं, जो धीरे-धीरे कोरे कागजों पर बिन्दु के साइन करवा कर सारी सम्पत्ति हड़प लेता है। और मजबूर होकर गांव वापस आ जाती है। देवीधार गांव में पल्लवी की सभी लोगों द्वारा भूरी-भूरी प्रशंसा करके अपना आदर्श बना दिया जाता है, और पल्लवी अब अपनी

ड्यूटी पर चल पड़ती है। तो सभी लोग पल्लवी को छोड़ने के लिए कालूडांडा बस स्टेशन तक आते हैं।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने एक बार फिर पल्लवी उपन्यास में पूरे पात्रों का चित्रण बहुत ही विशुद्ध ढंग से किया है। पाठकों ने पल्लवी उपन्यास को पढ़कर डॉ० 'निशंक' जी की शैली की बहुत प्रशंसा की है। पात्रों का चित्रण बहुत ही सुंदर और सटीक ढंग से किया है। हिंदी साहित्य में डॉ० 'निशंक' जी द्वारा पल्लवी उपन्यास एक उपहार स्वरूप है।¹⁶

कृतघ्न— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी द्वारा रचित यह उपन्यास 2015 में प्रभात प्रकाशन द्वारा प्रकाशित किया गया था। इस उपन्यास में शुरू से लेकर अंत तक उच्च तथा मध्यम वर्गीय समाज के अंतर्द्वन्द को दर्शाया गया है अंबुज के दादा जी कभी जम्मीदार हुआ करते थे, जम्मीदार ही नहीं बल्कि एक छोटा सा रजवाड़ा ही था। आजादी के बाद राजे रजवाड़े सब देश में विलीन कर दिये गये थे, अंबुज के पिताजी श्री रामनाथ जी ने अपना कारोबार फैला रखा था, जिसे वे चाहते थे कि अंबुज संभालने वाला बने। उन्होंने अंबुज को शहर के सबसे अच्छे बोर्डिंग स्कूल में रखा था, ताकि अंबुज के मन में बड़प्पन बना रहे। एक दिन अंबुज रामनाथ जी को कहता है पिताजी आप कहते हैं हम सबको भगवान ने बनाया है रामनाथ जी हां में सिर हिलाते हैं फिर अंबुज कहता है, फिर कोई अमीर कोई गरीब क्यों है रामनाथ जी आसान सा जवाब देते जो ज्यादा मेहनत करता है वह अमीर जो कम मेहनत करता है वह गरीब हो जाता है, पर वे हम से ज्यादा मेहनत करते हैं फिर भी गरीब हैं इस पर रामनाथ जी चुप रह जाते हैं। धीरे-धीरे अंबुज 12 वीं पास कर लेता है तो रामनाथ जी उसे आगे की पढ़ाई के लिए अमेरिका भेज देते हैं। अमेरिका से एम० बी० ए० करके अंबुज वापस घर में रामनाथ जी के साथ कारोबार संभालना शुरू करता है। अब अंबुज ने निराश्रित महिलाओं के लिए एक आश्रम भी खोल दिया था, वहीं पर अचानक एकसीडेंट हो जाता है बेहोशी की हालत में एक लड़की अस्पताल में भर्ती होती है, अंबुज वहीं पर रहता है, इसलिए वह भी उसको देखता है, होश आने पर उसकी मजबूरी के कारण अंबुज उसको आश्रम में रख लेता है,

¹⁶ रमेश पोखरियाल 'निशंक', पल्लवी, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 2010.

उसका नाम पूनम है। जो अपने चाचा-चाची के साथ पुस्तैनी घर में रहते थे, जिसमें उसकी दादी और चाचा रहते थे, उसके पिताजी के असमय चले जाने के कारण दुकान की कमाई भी कम हो गई थी फिर भी उसकी दादी पहले की भांति उसका पूरा ध्यान रखती थी। कुछ समय बाद उसके चाचा की शादी हो जाती है पहले-पहले चाची उसको बराबर प्यार करती थी, पर अब छोटा भाई पैदा होने से उसका ध्यान सही ढंग से नहीं रख पाती थी, जिससे वह चिडचिडी व जिद्दी हो जाती है। अब घर के खर्चे बढ़ने से उसकी आवश्यकता की पूर्ति नहीं हो पाती तो वह गंदे और मैलै कपड़े पहनकर ही स्कूल जाती थी, तो टीचर द्वारा डांट देने पर व स्कूल से जल्दी ही घर आ जाती है, फिर तो वह स्कूल जाने के लिए भी मना करने लगती है, तो चाची सरकारी स्कूल में उसका एडमिशन करवा कर आठवीं के बाद उसकी पढाई बंद करवा देती है लेकिन वह पढना चाहती है। चाचा-चाची से थक हार कर वह किरायेदार राघवेन्द्र को मिलकर अपनी मजबूरी बताती है, तो वह उसे पत्राचार माध्यम से पढने को कहता है, तो पूनम फार्म भर कर परीक्षा पास कर लेती है। तथा चाचा-चाची को उसके बारे में पता चल जाता है तो रात में राघवेन्द्र के साथ में देखते हैं राघवेन्द्र को भी बुरा भला कहकर दूसरे दिन राघवेन्द्र भी वहां से कमरा बदल देता है अब तो वे पूनम की शादी जल्दी ही कराना चाहते थे।

मगर पूनम साफ मना कर देती है। अंबुज ने पूनम को आश्रम में रखकर नर्सिंग में एडमिशन दिलाकर नर्सिंग पास कर लेती हैं, और अंबुज उसे शहर के बड़े अस्पताल में नौकरी दिला देता है। अंबुज एक दिन वर्षा के साथ एक्सीडेंट में बुरी तरह घायल हो जाता है, जबकि पत्नी वर्षा की मौत हो जाती है, अंबुज को बेहोशी की हालत में ही अस्पताल में भर्ती किया जाता है। वहां पर पूनम को ही उसकी देखरेख में लगाया जाता है। कुछ दिन बाद अंबुज अस्पताल से घर चलने के लिए कहकर पूनम को नर्स उसकी सेवा के लिए घर में ही देखभाल के लिए रखा जाता है, पूनम घर पर पहुंचकर महलनुमा घर देखकर उसको बचपन में दादी द्वारा सुनाई गई कहानियों की उसे याद आती है। पूनम अंबुज का दिन रात पूरा ध्यान रखती है, आज थकावट के कारण पूनम अंबुज के पास ही लेटी रहती है। उसको देखकर अंबुज मनोमप्तिस्क बीमारी के कारण वर्षा समझ कर पूनम को गले लगाता है, पूनम इस बात का फायदा उठाकर रामनाथ तथा जानकी ने पूनम की मदद के लिए

सुकन्या को भी निशान्त की सेवा में पूनम के साथ भेज देती है। पूनम सुकन्या को बात-बात पर तंज कसती जाती है सुकन्या रामनाथ जी के ही घर के आउटर में रहती थी। कुछ दिन पहले ही उसके पिताजी की मृत्यु हुई थी उसके पिताजी मास्टर जी एक निजी स्कूल में हिन्दी पढ़ाते थे। मामूली सा वेतन बड़ी मुस्किल से गुजारा होता था इसी के चलते पत्नी गुजर जाने के बाद उन्होंने सुकन्या की देख रेख के लिए गांव की बेसहारा महिला रखी जिसको सुकन्या अम्मा कहती थी, और मास्टर जी दीदी। फिर एक दिन मास्टर जी भी चल बसे अब सुकन्या ने पढ़ाई भी पूरी कर ली तो अम्मा जी भी उसे छोड़कर चली गई। अंबुज ने आश्रम से लाकर उसे एक छोटे से कमरे (आउटर) में रहने की जगह दे दी सुकन्या अंबुज के बच्चों को ट्यूशन के साथ पढ़ाई और होम वर्क में मदद करती थी। जिससे बच्चे बड़ी जल्दी ही उसके साथ घुल मिल गये, अंबुज अब धीरे-धीरे ठीक हो गये तो अपनी दिनचर्या में खोए रहे। अब एक दिन मौका देखकर जानकी अंबुज को समझा कर शादी करने का सुझाव देती है, तो एक लड़की अंजली तैयार हो जाती है। जानकी पूनम को भी खुशखबरी सुनाने के लिए बुलाकर साडी भेंट कर सगाई में आने को कहती ही पूनम के पैरों की जमीन खिसक जाती है, कमरे पर जाकर गुंजन को बताती है, कि जब जरूरत थी तो मुझे प्रयोग किया और अब शादी किसी और के साथ मैं भी इनको सबक सिखाकर रहूंगी, गुंजन उसको समझाती है। कि क्या पता अंबुज सर के मन में ऐसी भावना न हो चाहे तो एक बार अंबुज सर से मिल कर देख ले, और वह अंबुज से मिलती और सब कुछ कहती है। अंबुज पूनम की गलतफहमी दूर करते हुए कहते हैं, पूनम मुझसे यह गलती नासमझ में हुई होगी, यह सुनते ही पूनम गुस्से में वहां से चली जाती है, कमरे पर पहुंचते ही पूनम गुंजन को कहती है, मैं अंबुज को सबक सिखा कर रहूंगी, इतना कहकर वह कमरे से बाहर चली जाती है। पूनम ने अपने मोबाइल फोन से अंबुज के साथ काफी फोटो खींच कर रखे थे। अंबुज की समाज सेवा और ईमानदारी से बहुत सारे दुश्मन भी बन गये थे, इन्हीं लोगों ने उचित मौका देखकर पूनम को अपने साथ मिलाकर अंबुज के खिलाफ कोर्ट में केस फाइल करके नारी उत्पीडन का केश दर्ज करवा लिया था। पुलिस अंबुज को गिरफ्तार करके जेल भेज देती है, निर्दोष होने पर भी अंबुज के पास कोई सबूत नहीं था, अंबुज को जेल भेजकर पूनम बहुत खुश थी।

रामनाथ जानकी के साथ सुकन्या बच्चों की देखरेख के साथ घर में भी सबका बराबर ध्यान रखती है। बच्चों के पापा को पूछने पर सुकन्या एक हफ्ते के लिए बाहर जाने का बहाना बनाकर बच्चों को चुप करा देती है, सुकन्या अंबुज को छुड़ाने की युक्ति के बारे में सोचती है, उसे कोई उपाय नजर नहीं आता है। सुकन्या भारी मन से पूनम के कमरे की तरफ चल पड़ती है, कमरे पर गुंजन मिल गई, सुकन्या के पूछने पर गुंजन बोलती है पूनम तो चार-पांच दिन से कमरे पर वापस नहीं आयी है। सुकन्या गुंजन को अंबुज पर लगाए आरोपों के बारे में पूनम की करतूतों में मदद को कहती है, सुकन्या पूनम की सभी चीजों को ध्यान से देखती है।

फिर अचानक उसकी नजर अलमारी के अन्दर रखी गई डायरियों पर पड़ती है, इन डायरियों को सुकन्या ध्यान से पढ़ती है। पहली डायरी में कुछ खास नहीं था। मगर दूसरी डायरी में से पूनम ने अंबुज के बारे में जो कुछ लिखा था, जो काम आ सकता था, सुकन्या डायरियां को लेकर रामनाथ और जानकी जी को बताकर वकील नरेश को बुलाती है। नरेश डायरी को पढ़कर बड़ा सबूत बताकर अपने साथ ले जाता है। कोर्ट में बहस के बाद अंबुज जीत जाता है। अंबुज अपने घर के अन्दर अपने आप को बन्द कर लेता है, अब अंजली के घर से भी वापस शादी का प्रस्ताव आता है अंबुज ने तो पहले ही मना कर दिया। जानकी और रामनाथ जी ने भी मना कर दिया था। एक रात को अंबुज खाना खाने के बाद जैसे ही अपने कमरे में आया तो, जानकी भी अंबुज के पीछे-पीछे कमरे में आकर अंबुज से कहा हम दोनों की उम्र का पता नहीं चला। बड़ी होकर दोनों बेटियां अपने ससुराल चली जाएंगी फिर तू अकेला कैसे रहेगा, सुकन्या सबसे अच्छी लड़की है। दोनों बेटियां भी उससे घुली मिली रहती हैं, अंबुज गंभीरता से विचार करने को कहता है तो जानकी खुश होकर चली जाती है। सुबह जल्दी से उठकर बच्चे स्कूल चले जाते हैं, तो जानकी सुकन्या को अपनी गोदी में बैठाकर अंबुज के साथ शादी करने को कहती है। सुकन्या धीरे से जानकी के पैर छूकर प्रणाम करती है।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने कृतघ्न उपन्यास में पात्रों का चरित्र चित्रण बड़े भावुक और संवेदनात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी द्वारा इस प्रकार के श्रेष्ठ लेखन से पाठक बरबस उत्सुक होते रहते हैं,

भाषा शैली उत्तम प्रकार की है। हिंदी साहित्य में कृतघ्न उपन्यास से एक नया अध्याय जुड़ता है।¹⁷

भागोंवाली— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी का भागोंवाली उपन्यास 2015 में प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास में एक परिवार के अंतर्द्वन्द और टूटते-बिखरते रिश्तों की मार्मिक कहानी का वर्णन किया गया है। यह उपन्यास एक बुजुर्ग की व्यथा, घोर स्वार्थ के बीच उलझी ममता की हृदय स्पर्शी गाथा के साथ बेटों को पूँजी मानने वाले समाज के मुँह पर करारा तमाचा है। रामानंद शास्त्री पश्चिमी उ० प्र० में एक सम्पन्न घराने में पैदा हुए, खेती बहुत ज्यादा थी साथ ही साथ घर में गाय, भैंस आदि भी घी दूध के लिए भरपूर थे, घर में किसी चीज की कोई कमी नहीं थी। फिर भी रामानन्द जी की प्राथमिक शिक्षा गांव के ही विद्यालय में होने के बाद, उच्च शिक्षा के लिए घर वालों ने बनारस भेज दिया था। बनारस से शास्त्री की उपाधी लेकर रामानन्द शास्त्री जी को घर में ज्यादा दिन न रहना पड़ा, उनको सरकारी शिक्षक की नौकरी मिल गई मगर नौकरी पहाड़ में मिली थी। शास्त्री जी ने स्कूल में जाकर पढ़ाना शुरू कर दिया पहले-पहले शास्त्री जी को पहाड़ में बड़ा अटपटा अजीब सा लगा, फिर धीरे-धीरे उनके लिए सामान्य होता चला गया। अब शास्त्री जी सबके साथ घुल मिल गये थे, उनको सभी लोग अपने जैसे लगने लग गये पहाड़ की आबो हवा भी उनको इतनी भा गई कि एक दिन भी पहाड़ से बाहर नहीं रह पाते थे। इसी बीच शास्त्री जी की शादी हो जाती है, पत्नी भी बड़े जमींदार घराने से थी। अतः पत्नी को भी ससुराल की हवेलीनुमा घर और दूर-दूर तक फैले खेत खलिहान, अतः शादी के कुछ दिन बाद शास्त्री जी पहाड़ आ गये थे पत्नी को उन्होंने तीन साल तक गांव में ही छोड़ दिया था। अक्सर छुट्टियों में ही शास्त्री जी गांव जाया करते थे। ससुराल में उसके चार देवर-देवरानियां थी दो देवर शास्त्री जी के जैसे बाहर सरकारी नौकरी करते थे, तो दो देवर गांव में रहकर खेती सम्भालते थे।

इस बार भी शास्त्री जी गांव आये तो पत्नी ने कहा यहां गांव में इतनी खेती है, इधर ही स्थानान्तरण करवा लेते शास्त्री जी कहते मेरा तो पहाड़ छोड़ने का मन

¹⁷ रमेश पोखरियाल 'निशंक', कृतघ्न, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2015.

नहीं करता है। वहां के लोग मुझे अपनों से भी करीबी लगने लगे हैं, उनको छोड़ना अब बहुत ही असम्भव है। इस प्रकार शास्त्री जी एक दिन पत्नी को भी शास्त्री जी पहाड़ ले आये, पहाड़ में पहले-पहले अजीब लगा था, पर शास्त्री जी हंसी मजाक करके माहौल खुशनुमा बना देते थे। शास्त्री जी स्कूल से घर और घर से स्कूल तक ही सीमित रहते, इसके अलावा पड़ोस में दो समपन्न घर के बच्चों को ट्यूशन पढ़ाते थे। अब तो शास्त्री जी की पत्नी भी स्थानीय महिलाओं से न सिर्फ घुल मिल गई बल्कि वो स्थानीय बोली भी बोलने लग गई थी। उनको भी पहाड़ अच्छे लगने लग गये थे, यहां की जलवायु इतनी अच्छी लगी कि वे भी यही पर घर बनाने को शास्त्री जी से कहने लगी थी। अब शास्त्री जी ने कुछ टीचरों के साथ मिलकर एक ही जगह पर जमीन खरीद ली थी, नाम रखा था, टीचर कॉलोनी। अब कभी कभार शास्त्री जी वहां पर जाया करते थे, अब शास्त्री जी ने वहां पर सब्जियां भी बोनी शुरू कर दी थी वहां से शास्त्री जी ताजी-ताजी भिण्डी, करेला, कद्दू, ककड़ी, खीरा, लौकी, तोरी, चिचिण्डा, राई, पालक, मूली, धनिया, मेथी आदि सब्जियां मिलती तो शास्त्री जी खुश हो जाया करते थे। शास्त्री जी ने दोनों बड़ी बेटियों की शादी कर दी थी। दोनों की शादी अच्छे परिवार में हुई थी अब शास्त्री जी रिटायर हो गये थे, रिटायरमेंट के बाद उन्होंने मकान का काम शुरू कर दिया था। इसी बीच शास्त्री जी का बड़ा बेटा सुरेश भी दिल्ली में नौकरी पर लग जाता है, छोटा बेटा दिनेश की भी यही आसपास ही नौकरी लग जाती है, फिर तो दोनों भी शास्त्री जी को पैसे देना शुरू कर देते हैं। और अब तो घर में पैसों की तंगी भी कम होने लगी थी।

लगभग छह महीने में ही मकान का ढांचा तैयार हो गया था। अब शास्त्री जी ने दोनों बड़े बेटों की शादी भी करवा दी थी, सुरेश शादी के बाद अपनी नौकरी पर दिल्ली चला गया था, छह महीने बाद सुरेश वापस आता है, तथा पत्नी को भी ले जाने की बात कहता है। इसी बीच शास्त्री जी घूमते समय ट्रक वाले के द्वारा टक्कर लगकर मृत्यु हो जाती है। आज सभी कार्य पूरे होने पर सभी रिस्तेदार अपने-अपने घर चले जाते हैं। अब सुरेश की बेटी भी अपनी दादी के काफी नजदीक रहने से शास्त्री की पत्नी उसके साथ घुल मिल जाती है। सुरेश द्वारा बच्चों को भी अपने साथ दिल्ली ले जाने की बात कह कर एक बार फिर शास्त्री जी की पत्नी छुटकी से दूर नहीं होना चाहती थी। सुरेश अपने बच्चों को अपने साथ

दिल्ली ले कर चला जाता है। इधर छुटकी के बिना उसकी दादी बहुत परेशान रहती है, धीरे-धीरे दिनेश की पत्नी भी सास के साथ बोलना कम कर देती है। कीचन पर पूरी तरह वह अपना कब्जा कर लेती है फिर अम्मा के पास अब केवल साफ सफाई का ही काम रह गया था। कुछ दिन के बाद कुलदीप भी सुरेश के साथ दिल्ली जाकर नौकरी लग जाता है, अब जयदीप ही पढ़ने वाला रहता है। तो दिनेश की पत्नी से जयदीप के फीस मांगने पर दिनेश की पत्नी कहती है मेरे पास तो पैसे हैं नही बहू की बात सुनकर शास्त्री जी की पत्नी का मन धक्क सा रह जाता है। लेकिन वह कर भी क्या सकती थी, उसके अपने पास भी तो कुछ नही था। अब जयदीप ट्यूशन पढ़ाना शुरू कर देता है, सुबह जाकर शाम को ही घर आता है, इसी बीच कुलदीप की भी शादी के लिए बात चलती है। जयदीप भी फौज में भर्ती हो जाने से कुलदीप की शादी में शामिल नही हो सकता दोनों बहू आधा-आधा खर्च देने को तैयार होते हैं। फिर मामा जी को बुलाकर मामा जी खर्च बड़े नियंत्रित ढंग से करते हैं, तो अम्मा जी के जेवर बिकने से बच जाते हैं। अब कुलदीप की पत्नी अम्मा की सेवा बहुत ही अच्छी ढंग से करती है अम्मा अब एक बार फिर प्रसन्नता से रहती है, दिनेश की पत्नी कुलदीप की पत्नी को अपने झांसे मंस लाने की कोशिश करती है, पर कुलदीप की पत्नी दूर ही रहने की कोशिश करती। अब जयदीप भी घर छुट्टी पर आता है, तो माधुरी और दिनेश की पत्नी भी जयदीप को शादी के लिए कहते हैं तो जयदीप साफ मना करके कहता है, कि बहु के आ जाने से अम्मा की देख रेख कोई नही करता है। अब जयदीप बड़े अफसरों से मिलकर वही पर अपना स्थानांतरण करवा लेता है। दिन रात अम्मा के साथ जयदीप के होने से अम्मा तंदुरुस्त हो जाती है, कुछ दिन बाद सभी भाई घर को लेकर आपस में झगड़ते हैं, चारों आपस में बात करते हैं कि दिनेश ही घर रखेगा और बाकी सबको रुपये चुका देगा रुपये चुकाने के बाद दिनेश की पत्नी जयदीप को घर खाली करने को कहती है, पर अम्मा साफ मना कर देती है, और अंत में अम्मा भी प्राण त्याग देती है।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी द्वारा रचित उपन्यास भागोंवाली में पात्रों का चरित्र-चित्रण अत्यन्त प्रभावशाली ढंग से किया है। इस उपन्यास में भी उन्होंने अन्य रचनाओं की भांति सर्वश्रेष्ठ शैलियों का प्रयोग के साथ-साथ उत्तम कोटि की

रचना रच कर साहित्य जगत में सर्वोच्च स्थान बनाया है। पात्रों का चित्रण बहुत ही सुन्दर ढंग से किया है, सभी पात्रों की भूमिकाएं जीवंत लगती हैं। भागोंवाली उपन्यास ने पाठकों के बीच दिलचस्पी की अलख जगाकर हिन्दी साहित्य को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाना शुरू किया है।¹⁸

छूट गया पड़ाव— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी का यह उपन्यास 2016 में वाणी प्रकाशन द्वारा प्रकाशित किया गया है। इस उपन्यास में डॉ० निशंक जी द्वारा गढवाल के विनगढ गाँव के जन जीवन और अशिक्षा से घिरे सम्पन्न समाज की विसंगतियों को व्यापक धरातल पर उठाया गया है। विनगढ गाँव प्रकृति के बीच में बसा हुआ एक सुन्दर सा गाँव है। प्रकृति ने इस गाँव को सन्तरा, अमरुद, दाडिम, खुबानी, पोलम, अलुचा, अखरोट, आदि फलदार पेड़ों से भरपूर बगीचों से परिपूर्ण विनगढ गाँव को मानों प्रकृति ने अनमोल उपहार दिया हो प्रकृति ने केवल फलदार पेड़ों को ही विनगढ गाँव को नहीं दिया बल्कि प्राकृतिक स्रोत भी भरपूर मात्रा में दिये हैं। इन प्राकृतिक उपहारों के कारण ही इस गाँव का नाम विनगढ रखा होगा, हर प्रकार के पहाड़ी उत्पाद विनगढ में आलू, राजमा, और अन्य खेती भरपूर मात्रा में विनगढ गाँव में हो जाती थी। विनगढ गाँव के लोग भी सारे भले चंगे ही थे, गाँव में एक प्राथमिक स्कूल खुला था। मगर कोई अध्यापक न होने के कारण गाँव वाले बच्चों की शिक्षा के बारे में बहुत चिंतित रहते थे, ऐसा भी नहीं था कि कोई आता नहीं था। सरकार अध्यापक भेजती थी, मगर रास्ता जंगल के बीच गुजरने से ज्यादातर अध्यापक जंगली जानवरों का बहाना बनाकर स्थानांतरण करवा लेते थे। कुछ तो गाँव वालों पर ही अशिष्ट, असभ्य होने का आरोप लगाकर वापस गाँव में आते ही नहीं थे। इस बार भी गाँव वालों ने सज्जन, ईमानदार और मेहनती आनन्दसिंह को ही जिम्मेदारी सौंपी थी आनन्द सिंह भी शिक्षा विभाग के चक्कर लगाते-लगाते थक चुके हैं, पर फिर भी अफसरों के साथ भी कई बार बहस तक हो गई थी। इस बार भी बहुत बहस के बाद ही विनगढ गाँव के लिए एक मास्टरनी जी की व्यवस्था हो गई थी सरोज नाम की मास्टरनी आज विनगढ गाँव पहुँच गई थी। गाँव के सभी लोग उनके स्वागत के लिए आ गए, सभी गाँव वालों ने सरोज का बहुत अच्छा स्वागत किया। पौड़ा नृत्य, ढोल-दमाऊँ, गाजे-बाजे से पूरे गाँव

¹⁸ रमेश पोखरियाल 'निशंक', भागों वाली, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2015.

वाले झूमते रहे सरोज भी गांव में ही पैदा हुई थी वह गांव की महिलाओं की मजबूरी समझती थी। अतः उसने सबसे हाथ जोड़कर कहा कि बच्चों को कल से स्कूल भेज देना। सरोज भी बच्चों पर काफी मेहनत करती थी, गांव वाले भी सरोज की मेहनत और पढाई का तरीका देखकर बहुत खुश हुए। गांव वाले सरोज को खाना बनाने के लिए दो तीन लडकियाँ आज दो तीन दिन की छुट्टी होने से सरोज ने अपने गांव जाने के लिए बोला तो सारे गांव वाले अपने-अपने तरफ से कुछ न कुछ ले आये थे, कोई अखरोट कोई सब्जी, कोई अरसा तो कोई कुछ न कुछ लाये थे। सारा सामान बांधकर सरोज को छोड़ने के लिए गांव वाले बस तक आ जाते थे। सरोज के गांव पहुचते ही सास सामान देखकर बहुत खुश हुई, घर के सारे लोगों को कुछ न कुछ मिलने के कारण सारे लोग बहुत खुश थे। अपने गांव में कुछ दिन रहने के कारण सरोज वापस आ गई थी, गांव वाले सरोज को देखकर बोले आ गयी मास्टरनी जी हम सोच रहे थे, पता नहीं कब आएंगी मास्टरनी जी आनंद सिंह जी शुरू से ही सरोज को अपने घर ले जाते रहते थे। आनंद सिंह जी की एक ही बेटी थी रानी। एक दिन रानी शाम को घी लेकर सरोज के पास जाती है, तो सरोज पूछती है कौन है रानी जवाब पाकर सरोज उसकी तरफ देखती है। किसकी बेटी है? सरोज को विश्वास नहीं होता है कि आनंद सिंह जी की यह लडकी है सरोज जैसे तैसे दिन व्यतीत करके शाम को आनंद सिंह जी के घर चली जाती है। आनंद सिंह जी के बाहर आते ही सरोज कहती है, आज तक देखा नहीं इसको अंदर ही रहती है, आनंद सिंह ने कहा तो सरोज कल से इसको स्कूल भेजना कहकर रात का खाना खाकर वापस आ जाती है। स्कूल में रानी पढ़ने में बहुत अच्छी थी और बच्चों को छोड़कर केवल रानी ही सबसे अच्छा और साफ सुथरा काम करके लाती थी, खेलों में भी रानी अन्य बच्चों से आगे थी। चेहरा को देखकर सरोज ने प्लाष्टिक सर्जरी के बारे में सुझाव दिया तो खर्चा के बारे में सुनकर सभी लोग सन्न रह गये थे। सरोज ने बहुत से स्वयं सेवी संस्थाओं से बात की तो उनमें से एक से मदद मिली सरोज वैसे तो पहले मुख्यमंत्री साहब से भी इस बारे में मिल चुकी थी, पर बात वहां न बनी तो सरोज ने गैर सरकारी संस्थाओं से अब सरोज कई बार उन लोगों से मिल चुकी थी। इधर गांव में कुछ सरारती मनचलों ने सरोज के बारे में बोलना शुरू किया मास्टरनी है, तो मास्टरनी के जैसी रहना चाहिए समाज सेवा

करना है तो दिन भर सरोज इसी उधेड बुन में लगी रही। शाम को आनंद सिंह के घर जाकर सारी बात बता दी आनंद सिंह ठहाका मारकर हंसते हुए बोले इन निकम्मों की बात सुनेंगे तो बन गया हमारा काम इनकी इसी सोच के कारण ये इसी गांव में पड़े हुए हैं। सरोज का सारा भार कम हो गया था, सरोज को याद आया कि संस्था ने अब देहरादून बुलाया है रानी को लेकर आनंद सिंह रानी और सरोज दूसरे ही दिन देहरादून के लिए रवाना हो गये। देहरादून जाकर संस्था के संचालक श्री रामप्रकाश जी से उनके कार्यालय में ही मुलाकात हो गई, सरोज को देखते ही रामप्रकाश जी बोले आओ बहन जी आओ हम आपके ही बारे में सोच रहे थे। रामप्रकाश जी को देखकर एक बार तो सरोज को लगा कि हम उतनी दूर से बेकार ही इनके पास आए हैं, पर अगले ही क्षण उन्होंने बोलना शुरू किया मेरी बेटी भी बचपन में ऐसी ही थी। उसका भी हमने बहुत इलाज कराया पर हम उसको बचा नहीं पाये इतना कहकर वह भावुक हो गये थे, पर कोई बात नहीं हम रानी के इलाज में पूरी मदद करेंगे। सरोज को अब लग रहा था कि उनका काम हो जाएगा रामप्रकाश जी ने डेढ लाख का चेक सरोज को थमा दिया तथा शुभकामनाएं देकर विदा कर दिया। अब सरोज को रानी को इलाज के लिए चण्डीगढ़ जाना था। सरोज का भी अपना परिवार था पति, सास, ससुर, बच्चे सभी थे। इसलिए वह चण्डीगढ़ जाने से पहले अपने घर वालों को मिलकर आना चाहती थी उसके पति ने उसको बोला तो कुछ नहीं पर अब सरोज, आनंद सिंह और रानी दिन भर की यात्रा के बाद चण्डीगढ़ पहुंच गये। सी० एम० सी० में पहुंचकर डॉ० दुग्गल से मिले तो डॉ० दुग्गल ने कहा रामप्रकाश जी का फोन सुबह से कई बार आ चुका है डॉ० दुग्गल ने रानी का मुआयना करते हुए कहा कोशिश करते हैं, भगवान ने चाहा तो ठीक हो जाएगा। कल सुबह आपरेशन होगा आप लोग बाहर बैठ जाओ शाम चार बजे मैं खुद ही आपको आवाज दूंगा सरोज वहीं बाहर बेंच पर बैठकर सपनों में खो गई थी। रानी ठीक हो चुकी तो पढाई में भी वह टॉप करती जाती फिर यूनिवर्सिटी में भी टॉप करके सिविल सर्विस आफिसर बन कर सड़क पर उसकी गाडी आगे बढ़ती जाती है। अचानक डॉ० दुग्गल उसको आवाज लगाते हैं, वह हड बडाकर खडी हो जाती है सॉरी मैडम हम रानी को बचा नहीं पाये आवाज सुनते ही सरोज भी मूर्छित हो जाती है सरोज भी अस्पताल में भर्ती हो जाती है,

तथा दो दिन बाद उसे होश आता है। अब आनंदसिंह सरोज के पति को फोन करके अस्पताल बुला लेता है पति ने जैसे ही सरोज का माथा छुआ तो सरोज के धीरे से आंखें खोलने पर कहता है। कैसी हो सरोज अब डॉक्टर सरोज को अस्पताल से छुट्टी दे देते हैं, दो महीने तक ज्यादा बात न करने को कहते हैं धीरे-धीरे सरोज ठीक हो जाती है।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी द्वारा रचित उपन्यास छूट गया पड़ाव पर उनके पी० आर० ओ० डॉ० बेचैन कंडियाल जी के निर्देशन में गढ़वाली फिल्म— यु कनु रिश्ता भी बन चुकी है। जो कि दर्शकों द्वारा बहुत पसंद की जा रही है। उपन्यास में पात्रों का चरित्र-चित्रण आदि का बहुत ही व्यवस्थित ढंग से वर्णन किया है, भाषा शैली भी अद्वितीय है। एक बार फिर पाठकों द्वारा उपन्यास को पढ़कर डॉ० निशंक की भूरी-भूरी प्रशंसा की है।¹⁹

जिंदगी रूकती नहीं— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी द्वारा रचित उपन्यास जिंदगी रूकती नहीं उनका बारहवां उपन्यास है। 2013 में आयी केदार नाथ आपदा पर आधारित यह उपन्यास डॉ० 'निशंक' जी की सर्वोत्तम कृति है। इस उपन्यास को डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने केदारनाथ आपदा में उपस्थित रहकर पूरे घटना क्रम को अपनी आंखों देखकर ही लिखा है। इसीलिए इस उपन्यास को दिप्ती शैली (फलैश बैक शैली) का उपन्यास कहा जाता है। डॉ० योगेंद्र नाथ शर्मा जी के अनुसार डॉ० 'निशंक' जी का यह उपन्यास कालजयी उपन्यास है।

पचास भागों वाले इस उपन्यास को डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने एक सौ छियासठ पृष्ठों में समाहित किया है। इस उपन्यास में पर्वतीय महिला के शालीन व्यवहार, सौम्यता, शिष्टता, मधुरता को दर्शाते हुए उपन्यास की नायिका लक्ष्मी को आदर्श पहाड़ी महिला के रूप में प्रस्तुत किया है। नायक विक्रम भी गांव के गरीब परिवार में जन्म लेकर अपनी ईमानदारी, मेहनत और संघर्ष से अपनी मंजिल पर पहुंचता पर उसी समय भयानक आपदा आ जाती है, जिससे विक्रम आपदा में फंसे सभी लोगों की बराबर मदद करता है। इसी आपदा में विक्रम के गांव के जमन चाचा और राघव भी आपदा में बुरी तरह फंसे रहते हैं। इनको भी

¹⁹ रमेश पोखरियाल 'निशंक', छूट गया पड़ाव, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010.

विक्रम समान रूप आपदा से बाहर निकालता है। जबकि गांव में जमन चाचा विक्रम को पांचवी से आगे पढ़ाने के लिए विक्रम की मां को मना करता है तथा जातिवाचक शब्दों द्वारा बेइज्जती करके जमन को घर से निकल जाने को कहता है, और बाद में राघव विक्रम को मरवाने के लिए अपने आदमियों को भेजता है। इसी आपदा के बारे में कमल के अनुसार कई बार श्रीनगर से ऋषिकेश आना-जाना होता है। पर अलकनंदा का इतना भयंकर रूप कभी भी नहीं देखा है।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने अपने सामने घटते घटनाक्रम को देखकर जिन्दगी रूकती नहीं उपन्यास रचकर अपने भावों को व्यक्त किया है। डॉ० किरण खन्ना के शब्दों में उपन्यास के पात्रों की भूमिकाएं कहीं पर भी आभासी नहीं लगती हैं, पूरा उपन्यास पाठक को संवेदनाओं में खो देता है। पाठक को सारी आपदा यथार्थ लगती हैं। डॉ० 'निशंक' जी ने पूरी उपन्यास को दार्शनिक रूप में संजोया है। शैली आत्मविभोर और मंत्रमुग्ध करने वाली है। डॉ० 'निशंक' जी ने आपदा के दौरान बहुत सारे पार्टी के नेताओं को सेल्फी लेते देखकर स्वार्थी राजनेताओं की भी उपन्यास में कड़ी आलोचना की तथा केदारनाथ में चारों तरफ जल प्रलय के समय पीने का पानी उपलब्ध ना होने पर कुछ लोगों द्वारा दस रुपये की पानी की बोतल को पचास रुपये में बेचने पर पर्यटन को बढ़ावा मानने पर भी कड़ी आलोचना उपन्यास में की है। उसी प्रकार भयंकर बाढ़ और त्रासदी के समय सभी जाति तथा प्रांत के तीर्थयात्रियों द्वारा संकट की घड़ी में मंदिर के छोटे से गर्भ गृह जहां पर तिल रखने के लिए भी जगह नहीं थी, उसी में शरण ली इन शब्दों को भी उपन्यास में बहुत ही मार्मिक और संवेदनात्मक रूप में वर्णन करते हुए लिखा है कि भगवान के घर में सभी मनुष्य एक जैसे हैं, कोई छोटा या बड़ा नहीं। आस्ट्रेलिया के सिडनी से डॉ० रेखा राजवंशी ने वेबीनार द्वारा डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के उपन्यास जिन्दगी रूकती नहीं पर अपने व्याख्यान देते हुए कहा कि डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी की कविता की निम्न पंक्तियां उनके विचारों की दार्शनिकता की और उनके शब्दों की परिपक्वता को दर्शाता है। उनकी भाषा शैली अनूठी एवं विद्वतापूर्ण है, उपन्यास में उन्होंने वही पीड़ा को लिखा है जो उन्होंने केदार नाथ आपदा में महसूस की है। त्रासदी के शीर्षक से ही विदित होता है कि चाहे कितनी भी त्रासदी क्यों न आ जाय जीवन रुकता नहीं है निरंतर चलता रहता

है। आना-जाना चलता ही रहता है, हमें नकारात्मक सोच लेकर नहीं चलना चाहिए हमें सकारात्मक सोच लेकर ही आगे बढ़ना चाहिए।

जिंदगी के बाद शरीर पर एक सा ही कफन होता है ।

दौलत चाहे करोड़ों की हो, दो गज में ही दफन होता है ।।

आपदा में घायल लक्ष्मी जो कि अपने परिवार के अन्य सदस्यों को खो देती है। जिन्दगी रूकती नहीं की मुख्य पात्र है। अस्पताल में रहती है तो विक्रम संघर्ष करते हुए अपनी मेहनत और ईमानदारी से आपदा के बाद ही सही मंजिल पा लेता है। इस प्रकार पवन भी एक ईमानदार युवा के रूप में मदद करता है।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी की यह कविता उपन्यास जिन्दगी रूकती नहीं को सही परिभाषित करती है।

अभी भी समय इतना मेरी कुछ बात मानो तुम।

समय कितना है बलशाली, इसे भी जान जाओ तुम।।

3.5 डॉ० 'निशंक' जी के उपन्यासों का वर्गीकरण

उपन्यासकार उपन्यास के माध्यम से पाठकों को दो प्रधान कार्य समझाने का कार्य करते हैं। पहला उपदेश देना और दूसरा कहानी सुनाना। हिन्दी में दूसरी पीढ़ी के उपन्यासकार होने के साथ-साथ सुधारवादी तथा नीतिवादी भी थे। उनके लिए उपन्यास केवल मनोरंजन का साधन नहीं बल्कि जीवन संगम का अस्त्र भी था। डॉ० 'निशंक' जी के उपन्यासों को निम्नलिखित वर्गों में बांटा जा सकता है:-

- घटना प्रधान उपन्यास
- चरित्र प्रधान उपन्यास
- ऐतिहासिक उपन्यास
- सामाजिक उपन्यास
- मनोवैज्ञानिक उपन्यास
- आंचलिक उपन्यास

घटना प्रधान उपन्यास— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी का वीरा उपन्यास एक घटना प्रधान उपन्यास है। इन घटना प्रधान उपन्यासों में चमत्कारिक घटनाओं की प्रधानता रहती है। इन उपन्यासों में घटना ही मुख्य बिन्दु होता है, और वास्तविकता की अपेक्षा काल्पनिक तथा चमत्कारपूर्ण जीवन का प्रधान्य होता है। इनकी कथावस्तु प्रेमाख्यान, पौराणिक कथाएं, जासूसी तथा तिलस्मी घटनाओं से निर्मित होती हैं, जिससे पाठक उपन्यास का भरपूर रसास्वादन करता है। घटनाओं के क्रमशः होते रहने के कारण पाठकों की दिलचस्पी उपन्यास के प्रति बढने लगती है।

चरित्र प्रधान उपन्यास— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी का मेजर निराला एक चरित्र प्रधान उपन्यास है। इन उपन्यासों में घटना के स्थान पर चरित्र की या पात्रों की प्रधानता होती है, इसमें पात्रों के चारित्रिक विकास पर ही पूरा ध्यान दिया जाता है। पात्र घटनाओं से पूर्ण स्वतंत्र होते हैं। हिन्दी में जैनेन्द्र, ऋषभ चरण जैन, चतुरसेन शास्त्री, आदि के उपन्यास इसी वर्ग के उपन्यास हैं।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी का उपन्यास मेजर निराला मेजर निराला की विभिन्न भूमिकाओं पर आधारित है, उपन्यास में बचपन के संघर्ष से लेकर एक फौजी तथा फौजी से लेकर मेजर और अकस्मात पत्नी की हत्या और फिर 15 वर्ष की जेल की सजा और छूटना, अचानक बेटे से मुलाकात तक की चारित्रिक भूमिकाओं का वर्णन है। जो कि चरित्र प्रधान उपन्यास की ही विशेषता है।

ऐतिहासिक उपन्यास— किसी ऐतिहासिक घटना या चरित्र से प्रभावित होकर जब उपन्यासकार सम्बद्ध युग और देश की सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक तथा आर्थिक आदि परिस्थितियों का चित्रण अपनी रचनाओं में करता है, तो उसे ऐतिहासिक उपन्यास माना जाता है। आधुनिक युग हिन्दी ऐतिहासिक उपन्यासों के लेखकों में डॉ० वृंदावन लाल वर्मा का नाम उल्लेखनीय है। जिनके प्रमुख ऐतिहासिक उपन्यास गढकुंढार विराट की पद्मिनी, मृगनयनी, टूटे कांटे, अहिल्याबाई आदि उपन्यास हैं। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने भी अपने समस्त उपन्यासों में ऐतिहासिक घटनाओं, चारित्रिक विशेष, धार्मिक घटना आदि का

विशेष वर्णन किया है। इन्हीं विशेषताओं से ऐतिहासिक उपन्यास होने का हमें अनुभव होता है।

सामाजिक उपन्यास— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी का अपना-पराया एक सामाजिक उपन्यास है। सामाजिक उपन्यासों में सामाजिक युग के विचार आदर्श और समस्याएं चित्रित रहती हैं, सामाजिक समस्याओं का चित्र इनका मुख्य उद्देश्य रहता है। हिन्दी साहित्य में अधिकांश उपन्यास सामाजिक उपन्यास की श्रेणी में आते हैं। हिन्दी पाठकों में सबसे अधिक पाठकों की संख्या सामाजिक उपन्यासों के हैं, समाज में घटने वाली घटनाओं का इन उपन्यासों में विस्तृत उल्लेख मिलता है। सबसे अधिक पाठक होने से सबसे अधिक लिखी जानी वाली उपन्यास भी सामाजिक उपन्यास ही हैं।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के सभी उपन्यास वास्तव में सामाजिक उपन्यास ही कहे जा सकते हैं, जो कि कहीं ना कहीं से समाज से जुड़े हुए हैं। विभिन्न सामाजिक समस्याओं, संस्कारों, रीति-रिवाजों, कुरितियों, प्रथाओं आदि का विस्तृत वर्णन अपने उपन्यासों में डॉ० निशंक जी के द्वारा किया गया।

मनोवैज्ञानिक उपन्यास— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने अपने समस्त उपन्यासों में भरपूर मनोवैज्ञानिकता का प्रयोग किया है, जिसमें पाठकों को विषयवस्तु समझने के लिए काफी सहजता के साथ-साथ उत्सुकता बनी रहती है। प्रमुखतः पल्लवी और निशांत दोनों मनोवैज्ञानिक उपन्यास हैं। पल्लवी उपन्यास में विभिन्न प्रकार की कथावस्तु के अनुसार पात्रों का चित्रण किया गया है जो कि मनोवैज्ञानिक, रहस्य और उत्सुकता से भरपूर है। उपन्यास पढ़ते-पढ़ते पाठक कई बिंदुओं पर रोमांचित हो जाता है। उसी प्रकार निशांत उपन्यास में भी कई बार पाठक रहस्य, रोमांच, उत्सुकता से भर जाता है। यही महत्वपूर्ण पहचान मनोवैज्ञानिक उपन्यासों की विशेषता होती है, जिनको कि डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी द्वारा अपने सभी उपन्यासों में वर्णित किया गया है। परंतु निशांत और पल्लवी उपन्यासों में भरपूर ढंग से मनोविज्ञान का प्रयोग किया गया है।

हिन्दी साहित्य में सर्वप्रथम मनोवैज्ञानिक उपन्यासों की रचना प्रथम विश्व युद्ध के बाद हुई। मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में कथानक के बाह्य स्वरूप को अधिक महत्व

ना देकर पात्रों के मानसिक और भावात्मक पक्ष पर सबसे अधिक बल दिया जाता है। मनोवैज्ञानिक उपन्यासों की रचना प्रेम चन्द की देन है, आजकल ज्यादातर उपन्यासकार मनोवैज्ञानिक उपन्यास ही लिखते हैं। इन उपन्यासों को अधिकांश उच्च शिक्षित वर्ग या पढाकू वर्ग के पाठक पढते हैं, इन उपन्यासों में कथावस्तु ज्यादातर संदेहास्पद बनी रहने के कारण पाठक की व्यग्रता बढ़ती ही जाती है। इन उपन्यासों में विज्ञान और इससे सम्बंधित खोज, आविष्कार, वैज्ञानिक कहानियां आदि भी आते हैं। इस परंपरा में जैनेन्द्र, अशक, अज्ञेय, डॉ० 'निशंक' जी आदि हैं।

आंचलिक उपन्यास— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के सभी उपन्यास आंचलिक या स्थानीय हैं, जिनमें अपना-पराया उपन्यास में स्थानीय शब्दावली-पंदेरा (पनघट), रैबार (संदेस), पिठाई (तिलक), थोल (मेला), परोठी (घी रखने का लकड़ी का बर्तन) आदि शब्दों, विभिन्न परिधान, मेले, विवाह, हल्दीदृढ़ बटन आदि परम्पराओं में लोक-जीवन के गहरे रंग भरे हैं। वीरा, मेजर निराला, निशांत, आदि सभी आंचलिक उपन्यास हैं। इन उपन्यासों में क्षेत्रिय या स्थानीय समाज पर आधारित कथावस्तु या उपन्यास की स्थानीय कहानी लिखी गयी है। जिसमें मुख्यतः स्थानीय भौगोलिक दशा, इतिहास, संस्कृति, रीति रिवाज, परंपराएं, धर्म, विश्वास, स्थानीय बोली या भाषा का विस्तृत वर्णन रहता है, यही आंचलिक उपन्यासों की पहचान होती है, या इसमें किसी अंचल विशेष का समग्र चित्रण होता है। फणीश्वर नाथ रेणु, नागार्जुन, उदयशंकर भट्ट, डॉ० रमेश पोखरियाल निशंक आदि सभी आंचलिक उपन्यासकार ही हैं।

इन उपन्यासकारों ने जितने भी उपन्यास लिखे हैं वे सभी स्थानीय जीवन पर आधारित होने से अथवा सभी का क्षेत्र स्थानीय होने तक ही सीमित नहीं हैं। कथाकार इन उपन्यासों में अपने प्रदेश अंचल के व्यवहारिक जीवन का जीता जागता स्वरूप प्रस्तुत करता है, आंचलिक होने के कारण पाठकों की संख्या कभी-कभी तो सीमित होती है। तो कभी-कभी उच्च साहित्यिक शैलियों के प्रयोग के कारण बहुत अधिक हो जाती है, कभी-कभी तो ये उपन्यास बहुत प्रसिद्ध हो जाने से इन उपन्यासों पर फिल्में, लघु फिल्में, टी0वी0 धारावाहिक आदि बनाए जाती हैं। तथा कभी-कभी तो सरकार द्वारा इन उपन्यासों पर लघु फिल्में बनाकर जन-जागृति के

लिए भी उपयोग में लाई जाती हैं। बहुत सारे उपन्यासों को या उपन्यासकारों को सर्वोत्तम कृति के लिए स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया जाता है। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के मेजर निराला, छूट गया पडाव, पल्लवी, निशांत, वीरा आदि ऐसे ही लोकप्रिय उपन्यास हैं, जिन पर फिल्मों के अलावा सर्वोत्तम कृति के लिए स्थानीय, राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय उपाधियां, सम्मान, पदक, पारितोषिक, पुरस्कार आदि से समय-समय पर सम्मानित किया जाता है।

निष्कर्ष — डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी द्वारा रचित बारह उपन्यासों में उन्होंने विशेषतः पहाड़ों के ही जनजीवन को आधार बनाकर रचनाएं रची हैं, उनके उपन्यासों में पहाड़ के लोगों का जन-जीवन, दिनचर्या, रहन-सहन, धार्मिक विश्वास, आपसी रिश्ते, रीति-रिवाज, परंपराएं, देशप्रेम, देशभक्ति आदि को कथावस्तु बनाई हैं। उपन्यासों में वर्णित उच्च गुणवत्ता की भाषा-शैली, साहित्यिक विवेचना, पात्रों का चित्रण, पात्रों की भूमिकाएं आदि को बहुत ही परिपक्व एवं उच्च कोटि के साहित्यकार की भांति उल्लेख किया गया है।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने अपने उपन्यासों में पहाड़ के लोगों की विभिन्न समस्याओं और उनका समाधान भी बताया है। उन्होंने अपने उपन्यासों के माध्यम के द्वारा भी जन-जागृति का काम किया है, सभी उपन्यास हिंदी साहित्य की अनमोल धरोहर के साथ अमूल्य विरासत में शामिल हो चुके हैं। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी निसंदेह विश्व के उच्च कोटि के प्रसिद्ध साहित्यकारों में शामिल हो चुके हैं।

उपरोक्त विवेचना से स्पष्ट है कि डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी द्वारा लिखित उपन्यास न केवल स्थानीय हैं। बल्कि सर्वोत्तम कृति होकर उच्च कोटि की साहित्यिक रचनाएं हैं, और हिंदी साहित्य को प्रदत्त अनमोल कृतियां हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ : —

1. रमेश पोखरियाल 'निशंक', मेजर निराला, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1997.
2. रमेश पोखरियाल 'निशंक', बीरा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008.
3. रमेश पोखरियाल 'निशंक', निशांत, भावना प्रकाशन, दिल्ली, 2008.
4. रमेश पोखरियाल 'निशंक', छूट गया पड़ाव, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010.
5. रमेश पोखरियाल 'निशंक', अपना—पराया, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2010.
6. रमेश पोखरियाल 'निशंक', पहाड़ से ऊँचा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002.
7. रमेश पोखरियाल 'निशंक', पल्लवी, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 2010.
8. रमेश पोखरियाल 'निशंक', प्रतिज्ञा, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014.
9. रमेश पोखरियाल 'निशंक', भागों वाली, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2015.
10. रमेश पोखरियाल 'निशंक', कृतघ्न, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2015.
11. रमेश पोखरियाल 'निशंक', शिखरों के संघर्ष, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016.

सहायक ग्रंथ :—

1. तिवारी, रामचंद्र (2014), हिन्दी का गद्य साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
2. शर्मा, वीरेंद्र प्रकाश (2004), भारतीय समाज: मुद्दे और समस्याएँ, पंचशील प्रकाशन, जयपुर।
3. मिश्र, रामदरश (2016), हिन्दी उपन्यास: एक अंतरयात्रा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. राय, गोपाल (2006), उपन्यास की संरचना, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

5. लाल, लक्ष्मीनारायण (2019), हिन्दी कहानियों की शिल्प विधि का विकास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. जैन, निर्मला (2009), साहित्य का समाजशास्त्रीय चिंतन, हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली।
7. सिंह, बच्चन (2022), साहित्य का समाज शास्त्र, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
8. शर्मा, डॉ. केशव देव (2009), आधुनिक हिंदी उपन्यास और वर्ग संघर्ष, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
9. मदान, इंद्रनाथ (2006), आधुनिकता और हिन्दी साहित्य, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
10. शर्मा, विनय मोहन— हिन्दी उपन्यास स्थिति और गति पृष्ठ 45
11. डॉ० रामचन्द्र शुक्ल— हिन्दी साहित्य का इतिहास 23
12. वही— पृष्ठ 24
13. टंडन, डॉ० प्रतापनारायण— प्रेमचन्द पृष्ठ 78
14. वही— पृष्ठ 80

राष्ट्र और राष्ट्रीयता

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने भली-भांति उल्लेख किया है। कि जब लोगों के एक समूह की किसी जाति, भाषा, तौर-तरीके आदि के संबन्ध में किसी प्रकार की पहचान होती है या यहां तक कि एक भावुक या भावनात्मक संबन्ध वह समूह एक राष्ट्रीयता का गठन करता है। जब वह समूह स्वतंत्रता की आकांक्षा रखता है या वास्तव में स्वतंत्रता जैसी राजनीतिक स्थिति प्राप्त करता है तो वह राष्ट्रीयता एक राष्ट्र बन जाता है। राष्ट्र एक राष्ट्रीयता और राज्य का मिश्रण है। राष्ट्र सांस्कृतिक अवधारणा को दर्शाता है। डॉ० 'निशंक' जी के अनुसार अगर आसान भाषा में कहा जाय तो राष्ट्र उसे कहते हैं, जो धर्म, भाषा, जातियता, नस्ल, क्षेत्र, सांस्कृतिक परंपरा, समान अतीत, और एक समान भविष्य एवं साझापन के विचारों पर एक होने की भावना को निर्मित करे। जो लोगों का संगठन और समुदाय बनाएगा उससे बने हुए समुदाय को राष्ट्र कहा जाता है और दूसरी तरफ राष्ट्रीयता किसी एक जाति विशेष में जन्म या रक्त संबन्ध के आधार पर संबन्धित होना।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने लिखा है कि राष्ट्रीयता की भावना अत्यधिक बलयुक्त ऊर्जा होती है। उसकी तुरंत अभिव्यक्ति उस समय होती है जब कोई राष्ट्र किसी संकट से ग्रसित रहता है। राष्ट्रीयता व्यक्ति के मन की वह मनोदशा है। जो उसे प्रेरणा देकर व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठकर राष्ट्र के लिए बहुत बड़े से बड़े त्याग करने को तैयार करती है। जिस देश के निवासियों में राष्ट्र के प्रति उनकी मनोदशा या राष्ट्रीय भावनाएं विद्यमान रहती हैं। वह राष्ट्र हमेशा अग्रसर रहता है। इसलिए वर्तमान समय में हर नागरिक के मन में राष्ट्रीयता की भावना होना अति आवश्यक है।

राष्ट्रीयता एक प्रवृत्ति है जिसके मूल में आत्मरक्षा और एकत्र रहने की वृत्ति काम करती है। यह मानव स्वभाव में अत्यन्त गहराई तक बैठी होती है। राष्ट्रीयता के कारण ही एक भू-भाग के निवासियों की सुखात्मक अनुभूतियों, अतीत के

गौरव-अगौरव की भावनाओं और भविष्य के प्रति उद्देश की अभिव्यक्ति मिलती है। राष्ट्रीयता एक राष्ट्र के निवासियों में परस्पर भाईचारे की भावना है जो उन्हें एक सूत्र में पिरोती है। जिससे राष्ट्र के नागरिकों में राष्ट्रीयता का भाव विद्यमान रहता है। वह सदैव उन्नति की ओर अग्रसर रहता है। आधुनिक समय में नागरिकों के हृदय में राष्ट्रीयता की भावना का होना अति आवश्यक है।

श्री अरविन्दो के अनुसार— राष्ट्र में भागवत एकता के साक्षात्कार की भावनापूर्ण आकांक्षा ही राष्ट्रीयता है। यह एक ऐसी एकता है जिसमें सभी अवयवभूत व्यक्ति चाहे उनके कार्य राजनैतिक, सामाजिक या आर्थिक तत्वों के कारण कितने ही विभिन्न और आपतः असमान प्रतीत होते हैं। वस्तुतः तथा आधारभूत रूप से एक और समान है।¹

4.1 राष्ट्र की परिभाषा और विकास

राष्ट्र शब्द अंग्रेजी के शब्द नेशन का अनुवाद है। नेशन शब्द को लैटिन भाषा के नेशीऊ शब्द से लिया है। जिसका अर्थ है जन्म या जाति परंतु राष्ट्र शब्द में राजनीति एवं अध्यात्म दोनों धारणा छुपी हुई है। अंग्रेजी में नेशन शब्द से अभिप्राय किसी विशेष भूमिखण्ड में रहने वाले निवासियों से है, जबकि राष्ट्र शब्द विशेष भूमिखण्ड में रहने वाले निवासी और उनकी संस्कृति का बोध कराता है।

भौगोलिक रूप से और राजनैतिक दृष्टिकोण से एक विशेष भूमि-खण्ड को देश की संज्ञा दी जाती है, किन्तु इसका सम्बंध मानव समुदाय से नहीं है। मानव समुदाय का सम्बंध समाज से है और इसका अभिप्राय जाति से है।

राष्ट्र शब्द में व्यापक अर्थ निहित है। अंग्रेजी में उसके लिए कोई समानार्थक शब्द नहीं है। उसके अंतर्गत देश और जाति दोनों की संकल्पना निहित है। वैदिक काल से ही राष्ट्र शब्द का प्रयोग भूमि, जन और संस्कृति के अंतर्गत चला आ रहा है। अथर्ववेद में कहा गया है, कि हमारे ऋषियों ने जगत के कल्याण के लिए अपने ज्ञान और ओज से राष्ट्र को उत्पन्न किया—

¹ राधाकृष्ण दिक्षित— स्वातन्त्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में राष्ट्रवाद पृष्ठ 2

भद्रम इच्छन्त ऋषयः स्वर्विदः

तपो दीक्षां उपसेदुःअग्रे ।

ततो राष्ट्रम बलं ओजश्च जायम

तदस्यै देवा उपसंमन्तु ।²

(अथर्ववेद संहिता)

इस प्रकार अनादि काल से भारत एक संगठित राष्ट्र के रूप में अस्तित्व में रहा है। वास्तव में तीन संदर्भों का सम्मिलन होता रहता है। वास्तव में पहला वह भूखण्ड या भूमि जिसमें मानव रहता है, दूसरा स्वयं मानव समुदाय और तीसरा उस मानव समुदाय की संस्कृति।

मनुस्मृति में राष्ट्र को जिला, मण्डल, प्रदेश, या राज्य देश के साथ-साथ प्रजा, जनता के अर्थ में परिभाषित किया गया है। इसमें भूमि, जन और उनकी संस्कृति सभी कुछ समाहित है। अपनी जन्मभूमि के प्रति अनन्य प्रेम की अभिव्यक्ति से भी राष्ट्र की भावना जन्म लेती है। इसी अभिव्यक्ति को रामायण के रचियता महर्षि वाल्मीकी ने रावण वध के बाद श्री राम के मुख से कहलवाया —

अपि स्वर्णमयी लंकानमे लक्ष्मण रोचते ।

जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ।।³

साधारण शब्दों में कहा जाय तो राष्ट्रीयता व्यापक अर्थों में राष्ट्र से संबंधित है। जिसमें भौगोलिक स्थिति, सांस्कृतिक परंपरा, धार्मिक, ऐतिहासिक, आर्थिक हितों की एकता को सम्मिलित किया जाता है।

इसमें राजनीतिक आकांक्षाओं की एकता और शासन की एकता का मिश्रण मिलता है। राष्ट्र शब्द को परिभाषित करते हुए भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों ने अपने-अपने मत प्रस्तुत किये हैं। इन विद्वानों के मतों को ध्यान में रखकर कहा जा सकता है कि राष्ट्र शब्द एक व्यापक अर्थ लिए हुए है।

² पुखराज जैन— प्रमुख राजनीतिक विचारक पृष्ठ

³ रमेश चंद कौशिक— नागरिक शास्त्र एवं भारतीय संविधान पृष्ठ 85

भारतीय दृष्टिकोण— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने उल्लेख किया कि श्री विपिन्न चंद्रपाल का मत है कि राष्ट्र यान्त्रित संविधा से निर्मित नहीं है, वह पृथक व्यक्तियों का कृत्रिम जमाव नहीं है। वह एक अवयवी है और सर्वव्यापी बुद्धि तथा नैतिक बंधन से अनुप्राणित है। राष्ट्र मनुष्यों का ही आवर्धित तथा विस्तारित स्वरूप है। यह विराट पुरुष का ही बाह्य कारण है। इसलिए माना गया है कि अपने वृहत्तर अहम के लिए त्याग करना व्यक्ति का परम कर्तव्य है। आध्यात्मिक तथा नैतिक घटकों के रूप में राष्ट्र अपने अटल ऐतिहासिक स्मृतियों तथा भावी उद्देश्यों को चिरस्थायी अविच्छिन्नता में व्यक्त करता है।

महादेवी वर्मा के अनुसार— “राष्ट्र केवल पर्वत, नदी, समतल का संघात नहीं होता, उससे उस भूमि खंड में निवास तथा विकास करने वाले समूह का जीवन संपूर्ण रूप से जुड़ा रहता है।”⁴

डॉ० सुधीर के विचार— “भूमि, भूमिनिवासी और जन संस्कृति तीनों के सम्मिलन से राष्ट्र का स्वरूप बनता है। भौगोलिक एकता, जन गण की राजनीतिक एकता और जन संस्कृति या जन सांस्कृतिक एकता तीनों का समुचित नाम राष्ट्र है।”

वासुदेव शरण अग्रवाल के शब्दों में— “भूमि—भूमि पर बसने वाला जन और जन की संस्कृति, इन तीनों के सम्मिलन से राष्ट्र का स्वरूप बनता है।”⁵

राष्ट्र की परिभाषा नंद दुलारे वाजपेई के अनुसार— “राष्ट्र केवल सीमाओं और जनसंख्या के समुच्चय का नाम नहीं है, उसके साथ परिस्थितियों के एक विशिष्ट आपात और विशिष्ट इतिहास का भी योग होता है। राष्ट्र एक व्यक्ति के सदृश्य ही है।”

पाश्चात्य विद्वानों के मतबर्गेस के अनुसार— “राष्ट्र भौगोलिक एकता वाले एक ही क्षेत्र में निवास करने वाली केवल एक ही नस्ल की जनसंख्या है।”

⁴ रविन्द्र गासो— भीष्म साहनी की उपन्यासिक चेतना पृष्ठ 13

⁵ सरोज चौरसिया — मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में युगचेतना पृष्ठ 71

गार्नर के अनुसार— “राष्ट्र सांस्कृतिक रूप से संगठित और एक समरूप है। यह सामाजिक समूह है, जिसे अपने मनोवैज्ञानिक जीवन की एक एकता और अभिव्यक्ति का ज्ञान है और जो इसके प्रति चेतन और दृढ़ है।”

ब्राइस ने राष्ट्र के बारे में कहा— “राष्ट्रीय एवं राष्ट्रियता वह है जिसने अपने को एक राजनीतिक समूह के रूप में संगठित कर लिया है और जो स्वाधीन है।”

यदि सरल भाषा में कहा जाय तो राष्ट्र उसे कहते हैं, जो धर्म, भाषा, जातीयता, नस्ल क्षेत्र, संस्कृति परंपरा, समान अतीत के समान भविष्य एवं साझापन के विचारों पर एक होने की भावना को निर्मित करे। जो लोगों का संगठन और समुदाय बनाएगा उससे बने हुए समुदाय को राष्ट्र कहा जाता है।

राष्ट्र का विकास— राष्ट्र या राष्ट्रीय विकास देश के निवासियों के जीवन स्तर को ऊपर उठाने की क्षमता है। यह व्यक्तियों को बुनियादी आजीविका तथा आवश्यकताओं के साथ प्रदान करके और उन्हें रोजगार आदि प्रदान करके प्राप्त किया जा सकता है। विकास ऐसी प्रक्रिया है जो विकास करती है, प्रगति लाती है और सकारात्मक बदलाव लाती है। विकास एक स्वस्थ संकेत है।

निजी विकास के अंतर्गत एक व्यक्ति के विकास पर जोर दिया जाता है। जबकि राष्ट्रीय विकास के अंतर्गत सरकार यह निर्णय लेती है कि कौन सा न्याय संगत तथा सही है।

- राष्ट्रीय विकास के अंतर्गत केवल उन्ही कार्यक्रमों तथा नीतियों को लागू किया जा सकता है।
- राष्ट्रीय विकास के अंतर्गत विचारों की भिन्नता तथा उनके समाधान के बारे में निर्णय लेना बहुत महत्वपूर्ण है।

विकास के दो पहलू हैं: —

1. आर्थिक विकास या लोगों की आय में वृद्धि ।
2. सामाजिक प्रगति में साक्षरता, स्वास्थ्य और सार्वजनिक सेवाओं का प्रावधान शामिल है ।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के अनुसार राष्ट्र के विकास में एक व्यक्ति और एक राष्ट्र के जीवन के सभी पहलुओं को शामिल किया गया है। राष्ट्र के विकास में हमारे उद्योगों, कृषि, शिक्षा, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक संस्थाओं का पूर्ण रूप से विकास और विस्तार शामिल है।

राष्ट्रीय विकास का अर्थ संपूर्ण राष्ट्र के विकास से होता है। उसे राष्ट्र के विभिन्न पहलुओं के सर्वांगीण विकास और संतुलित विकास के रूप में सर्वोत्तम रूप से परिभाषित किया जा सकता है। राष्ट्र के विकास में राजनीतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, सामाजिक, वैज्ञानिक सामग्री महत्वपूर्ण है।

एक राष्ट्र के लिए चुनौतीपूर्ण मील के पत्थर को पार करने और गौरव हासिल करने के लिए राष्ट्र को बेहतर करने के लिए निरंतर प्रयास करने की आवश्यकता है। हमारी सरकार गौरव तब प्राप्त करती है जब राष्ट्र हर क्षेत्र में उच्च स्तर का विकास देखता है, जिससे उसके नागरिक सरकार पर अधिक निर्भर होते हैं।

'निशंक' जी के अनुसार राष्ट्रीय विकास एक व्यापक शब्द है। जो राष्ट्र के विकास और व्यक्तियों के सभी क्षेत्रों में एक समग्र दृष्टिकोण को समाहित करता है, इसका उद्देश्य अपने नागरिकों के जीवन स्तर में सुधार करना है। राष्ट्र के सभी समूहों के बीच शांतिपूर्ण सह अस्तित्व की उपस्थिति में राष्ट्रीय विकास का उद्देश्य राष्ट्र के सभी क्षेत्रों में आधुनिकीकरण करना है। राष्ट्रीय विकास का विभिन्न व्यक्तियों द्वारा अध्ययन और परिभाषित किया गया है— राष्ट्रीय विकास को इस प्रकार परिभाषित किया गया है, कि राष्ट्रीय विकास सभी नागरिक शक्तियों का कुल प्रभाव है और भौतिक, मानव संसाधन, ज्ञान और कौशल के भण्डार में जोड़ा जाता है।

हमारे राष्ट्र के विकास में योगदान करने के लिए राष्ट्रीय विकास के अर्थ को समझना अनुभवजन्य है। संयुक्त राष्ट्र की दशक रिपोर्ट राष्ट्रीय विकास को परिभाषित करती है— राष्ट्रीय विकास एक विकास प्लस परिवर्तन है। बदले में परिवर्तन सामाजिक और सांस्कृतिक होने के साथ-साथ आर्थिक और गुणात्मक होने के साथ-साथ मात्रात्मक भी है।

राष्ट्रीय विकास के अर्थ को समझते हुए, हमें यह जानने की जरूरत है कि यह मानव संसाधनों की वृद्धि, औद्योगिक उत्पादन का दोहन, स्वास्थ्य, उद्योग और कपड़ा और कृषि क्षेत्र में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग, प्रावधान सहित कई मापदण्डों को समाहित करता है। बड़े पैमाने पर शिक्षा और वंचितों और गरीबों के लिए सुविधाएं और एक नियोजित और सुव्यवस्थित सुविधा के माध्यम से विकास। इसलिए एक राष्ट्र के समग्र और सन्तुलित राष्ट्रीय विकास को प्राप्त करने के लिए सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक, वैज्ञानिक, आर्थिक और भौतिक पहलुओं सहित राष्ट्र को समझने वाले सभी पहलुओं पर गौर करने की आवश्यकता है।

राष्ट्रीय विकास के घटक:—

राष्ट्रीय विकास के घटक इस प्रकार हैं:—

ग्रामीण क्षेत्रों का विकास— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के अनुसार ग्रामीण क्षेत्रों का विकास होना ही असली राष्ट्रीय विकास कहा जाता है। अधिक से अधिक ग्रामीण क्षेत्रों में विकास की गति तीव्र हो तो देश का विकास सर्वोत्तम प्रकार का माना जाता है। पूरी दुनिया में जितने भी विकसित देश हैं, सभी ने सर्वप्रथम अपने ग्रामीण अंचलों का विकास पहले किया है उसके बाद दूसरे क्षेत्रों का विकास किया है।

ग्रामीण क्षेत्रों में पक्की और मजबूत साफ-सुथरी सड़कें, घर-घर में पहुंचता पानी, खेतों-खलिहानों तक सिंचाई के लिए पहुंचता भरपूर पानी, घर-घर तथा खेतों तक पर्याप्त मात्रा में पहुंचती बिजली, गांव के लोगों के लिए सुसज्जित अस्पताल जिसमें सभी प्रकार की सुविधाएं सहित, स्कूल, कालेज आदि बुनियादी जरूरतों का सबसे पहले विकास करना होगा, ताकि ग्रामीणों को सुविधाओं के अभाव में पलायन न करना पड़े या स्कूल कालेज के लिए दूर न जाना पड़े।

इन मूलभूत जरूरतों के विकास से ही ग्रामीण क्षेत्रों का विकास पूरा माना जाता है, जो कि ग्रामीण क्षेत्रों के लिए बहुत ही परम आवश्यक है।

कृषि उत्पादन में वृद्धि— देश का सर्वांगीण विकास कृषि उत्पादन में वृद्धि से ही संभव है। आधुनिक कृषि यंत्रों का विकास करके खेत-खलिहान में काम-काज में

तीव्रता आने के कारण समय की बचत तथा जल्दी से सारा कार्य पूरा हो जाता और उत्पादकता में भी वृद्धि हो जाती। जैविक खादों का प्रयोग करके फसलें जैविक प्रकार की होती हैं जो कि स्वास्थ्य के लिए बहुत पौष्टिक होती हैं, इन खादों से किसानों की मृदा को भी अधिक नुकसान या उत्पादकता कम नहीं होती है।

जहां पर जैविक खाद उपलब्ध नहीं होती है वहां पर किसान ज्यादातर मृदा परीक्षण के पश्चात रासायनिक खादों का प्रयोग करके उत्पादकता में वृद्धि करवा सकते हैं। उन्नत किस्म के बीजों की मदद से कृषि उत्पादन या फसलों की पैदावारों में वृद्धि करके देश का सर्वोत्तम विकास माना जाता है। इस प्रकार विभिन्न प्रकार की फसलों का उत्पादन या पैदावार में वृद्धि का होना या उत्पादकता बढ़ने से स्वतः ही देश का विकास होने लगता है।

आर्थिक ज्ञान का विकास— डॉ० रमेश पोखरियाल निशंक जी के अनुसार किसी भी देश के विकास में सबसे महत्वपूर्ण घटक उसके नागरिकों की साक्षरता या विशेषतः आर्थिक ज्ञान होता है। नागरिकों का आर्थिक ज्ञान या वस्तुओं की खरीददारी के लिए आवश्यक मुद्रा या रुपये—पैसों या बजट संबंधी ज्ञान या जानकारी ही आर्थिक ज्ञान कहा जाता है। अगर सभी नागरिकों को यह वित्त (मुद्रा) या बजट या विभिन्न प्रकार की वस्तुओं को खरीदने या बेचने का ज्ञान उस पर लगने वाले कर सहित आदि का भली भांति का आर्थिक ज्ञान होना चाहिए, इसी प्रकार से ही विभिन्न प्रकार की योजनाओं के बारे में पता चलता है। इसी आर्थिक ज्ञान से प्रत्येक नागरिक समय पर उचित लाभ ले सकते हैं तथा दूसरे व्यक्तियों को भी इससे लाभ पहुंचते हैं।

देश का विकास विभिन्न प्रकार की योजनाओं से ही चरणबद्ध रूप से संभव होता है। इसके विकास के साथ-साथ जनता का आर्थिक ज्ञान भी समकालीन हो तो योजनाओं का कार्यान्वयन भी अच्छे ढंग से हो जाए तो सबसे बड़ा विकास माना जाता है।

शहरी क्षेत्रों में विकास— डॉ० निशंक जी के तथ्यों के अनुसार शहरी क्षेत्रों का विकास भी राष्ट्रीय विकास में महत्वपूर्ण घटक माना जाता है। शहरों में समुचित या प्रयाप्त मात्रा में घर-घर को जोड़ने वाली विद्युत व्यवस्था, पक्की, मजबूत एवं घर-घर तक जुड़ी चौड़ी सड़कें, सड़क के दोनों तरफ तथा घरों के

चारों ओर बनी नालियां, बाहनों के लिए पर्याप्त पार्किंग, विभिन्न प्रकार की मनोरंजक सुविधाएं आदि।

इसके अलावा विभिन्न रोगों के उपचार हेतु अस्पताल, स्कूल, कालेज, अग्निशमन, पुलिस, नगर पंचायत, नगर पालिका, महानगर पालिका आदि का समुचित विकास ही शहरी विकास माना जाता है। इसके अलावा प्रशासनिक तंत्र, न्याय व्यवस्था, चुनाव तंत्र आदि ही शहरी क्षेत्रों का विकास माना जाता है।

गरीबी उन्मूलन— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने कहा कि सभी राष्ट्रों के विकास का प्रथम घटक गरीबी को समाप्त करना ही होता है। इसके लिए सबसे पहले शिक्षा तंत्र या शिक्षा व्यवस्था को मजबूत करके व्यावसायिक शिक्षा को घर-घर पहुंचा कर अधिक से अधिक लोगों को आत्मनिर्भर बनाकर देश के विकास की मजबूत आधारशिला रख सकते हैं।

आय के साधनों की प्रचुर मात्रा बढ़ाकर रोजगार उपलब्ध कराकर गरीबी को समाप्त किया जा सकता है, और यही राष्ट्र के विकास में सबसे मुख्य घटक माना जाता है। इनके अलावा युवाओं को विभिन्न प्रकार के रोजगार का प्रशिक्षण देकर और व्यावसायिक क्षमता को युवों में विस्तारित करने के साथ-साथ अत्यधिक विकसित शिक्षा के माध्यम से गरीबी को घटाया जा सकता है।

शिक्षा के क्षेत्र में विकास— 'निशंक' जी के अनुसार सम्पूर्ण विश्व में किसी भी देश का विकास बिना शिक्षा के संभव नहीं है, क्योंकि विकास की योजनाएं शिक्षा के ही माध्यम से तैयार की जाती हैं, उस देश का विकास तब तक संभव नहीं हो सकता है जब तक सम्पूर्ण देश शिक्षित (साक्षर) ना हो जाय।⁶

शिक्षा के माध्यम से ही उच्च प्रकार की तकनीकी का विकास होता है, जो कि विकास की मशीन कही जा सकती है। व्यावसायिक शिक्षाओं के माध्यम से विभिन्न प्रकार के वैज्ञानिक आविष्कार, विभिन्न प्रकार की मशीनों का आविष्कार, चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में उन्नति, विभिन्न प्रकार की उच्च शिक्षाओं में विशेषज्ञता वाले पाठ्यक्रमों से परिचित कराना, कृषि यंत्रों का आविष्कार, विभिन्न प्रकार की

⁶ श्री शंभु रत्न त्रिपाठी— समाजशास्त्र के आधार पृष्ठ 32

खादों का निर्माण, इंजीनियरिंग में उन्नति करके कृषि के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन हो जाते हैं।

डैमों या बांधों के निर्माण से बिजली, पेयजल, सिंचाई, उद्योग—धंधों आदि से क्रांतिकारी परिवर्तन लाये जा सकते हैं।

राष्ट्रीय विकास में महिलाओं का योगदान— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने उल्लेख किया है कि देश के विकास में महिलाओं का योगदान सबसे अधिक होता है। जिस देश की महिलाएं जितनी शिक्षित या उच्च शिक्षित होंगी वह देश उतना ही तीव्र गति से विकास करेगा। महिलाएं जो केवल घर को ही नहीं संभालती अपितु संपूर्ण परिवार, समाज, देश का भी नव निर्माण कर लेती हैं।

एक महिला के शिक्षित या जागरूक होने से पूरा समाज ही शिक्षित या जागरूक हो जाता है। महिलाओं का शिक्षित होना राष्ट्र के विकास में सही अर्थों में सही विकास है। महिलाएं उच्च शिक्षित होने से प्रत्येक क्षेत्र में कार्य करती हैं। उनके द्वारा कार्य ईमानदारी एवं कड़ी मेहनत से किया जाता है जो कि प्रेरणापूर्ण होता है। इससे अन्य लोग भी प्रेरणा लेकर सुधरने का प्रयास करते हैं, स्त्री—पुरुष दोनों ही के पारंगत होने से देश का चहुंमुखी विकास संभव है।

राष्ट्रीय विकास में साहित्य का योगदान— डॉ० 'निशंक' जी के अनुसार देश का विकास सच्चे अर्थ में विकास की रुपरेखा, योजना, स्वरूप, आदि को सर्वप्रथम संचार माध्यमों द्वारा प्रसारित किये जाते हैं जो कि साहित्य का ही हिस्सा है। विभिन्न प्रकार के साहित्य के द्वारा ही जनता के द्वारा विकास योजनाओं तक पहुंचना संभव हुआ है। साहित्य में विभिन्न प्रकार के पाठ्यक्रम की पुस्तकें, पत्रिकाएं, अखबार, संचार माध्यम, टी०वी०, इण्टरनेट माध्यम आदि सभी साहित्य का ही भाग है। यही वे माध्यम हैं जो शीघ्रता से विकास कार्यों को जनता के घर—घर पहुंचा कर विकास कार्यों को आगे बढ़ाता है। अभी भी जनता द्वारा सबसे सशक्त माध्यम साहित्य ही माना जाता है, इसी के माध्यम से जनता सब समय विकास कार्यों की जानकारी या ज्ञान ले सकती है।

राष्ट्रीय विकास में विज्ञान का योगदान— डॉ० 'निशंक' जी ने लिखा है कि किसी भी देश का विकास सबसे अधिक विज्ञान और तकनीकी पर आधारित या निर्भर होता है। विज्ञान जितना अधिक विकसित होगा देश का विकास उतना ही जल्दी फैलता जाएगा। सुई से लेकर समुद्री जहाज तक के निर्माण की तकनीकी विज्ञान व इंजीनियरिंग द्वारा ही संभव हो पाया है। विभिन्न प्रकार की मशीनें, यंत्र, कम्प्यूटर, मोबाइल फोन, सैटेलाइट, आधुनिक खोजी यंत्र, परमाणु संयंत्र सभी प्रकार के तकनीकी विज्ञान पर ही आधारित हैं।

आधुनिक कम्प्यूटर से आई क्रान्ति से ही मोबाइल फोन का भी विकास हुआ है। इसी आधार पर रोबोट का भी विकास हुआ है, जो घर-घर के कामों से लेकर विभिन्न प्रकार के अन्य कार्य भी कर रहे हैं। विज्ञान में उन्नति या तरक्की से ही डैम बने हैं जिससे विद्युत पैदा होकर पूरी दुनिया में ही परिवर्तन हो रहा है। विद्युत के निर्माण से कृषि के क्षेत्र में महत्वपूर्ण या सुधारवादी परिवर्तन आये, विभिन्न प्रकार के यंत्र, संयंत्र, खाद आदि से क्रांतिकारी परिवर्तन हुए।

राष्ट्र के विकास में हिन्दी का योगदान— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने कहा हिन्दी राष्ट्र भाषा होने से पूरे देशवासी आपस में हिन्दी में वार्तालाप या हिन्दी माध्यम में आपसी सहयोग करके विकास कार्यों को शीघ्रता से प्रचार-प्रसार कर सकते हैं। हिन्दी भाषा में बनी फिल्मों एक सशक्त माध्यम है जिसको जनता सब समय देखती और आपस में एक दूसरे से विचार-विमर्श करती रहती है। यही वो माध्यम है जिससे शीघ्रता से प्रचार-प्रसार होता चला जाता है।

हिन्दी क्षेत्रों में भारत की सबसे अधिक जनसंख्या घनत्व होने से सभी राज्यों में हिन्दी भाषा एक साथ प्रसारित होती है, और राजभाषा होने से अन्य राज्यों में भी हिन्दी फिल्मों के माध्यम से प्रचार-प्रसार होता है। देश के वैज्ञानिक और इंजीनियर बिना रुकावट के एक कोने से दूसरे कोने पर जा सकते हैं। नई-नई तकनीकी इसी प्रकार एक कोने से दूसरे कोने तक फैल जाती है साथ ही लोगों में भी आपस में एकता बनी रहती है।⁷

⁷ रत्नाकर पाण्डेय— हिन्दी साहित्य, सामाजिक चेतना पृष्ठ 153

एक राष्ट्र को विकसित या पूर्ण रूप से विकास के लिए जिम्मेदार बनाने वाले इन पहलुओं पर ध्यान और विकास समग्र रूप से राष्ट्र की वृद्धि और विकास को सुनिश्चित करेगा।

पंचवर्षीय योजनाएं— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के अनुसार राष्ट्रीय विकास परिषद जो कि देश के विकास से जुड़े मामलों पर निर्णय लेने और रणनीति बनाने के लिए प्राथमिक निकाय है। राष्ट्र को आर्थिक विकास की ओर ले जाने के लिए परिषद द्वारा निर्धारित विभिन्न उद्देश्यों में से कुछ देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने के आवश्यक पहलुओं में से एक है। देश राष्ट्रीय विकास की ओर अग्रसर होता रहे क्योंकि देश की अर्थ व्यवस्था इसकी प्रगति की रीढ़ बनी हुई है।

1947 से 2017 तक यह भारतीय अर्थव्यवस्था नियोजन की अवधारणा पर आधारित और नेतृत्व में थी, जिसकी निगरानी योजना आयोग करता था। यह पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से किया गया था। विकास की विभिन्न योजनाओं को तैयार करके बजट के अनुसार बांटकर चरणबद्ध तरीके से देश का विकास किया जाता है।

प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने संसद में पंचवर्षीय योजनाओं को प्रस्तुत किया, जो प्राथमिक क्षेत्र के विकास पर केंद्रित थी। प्रथम पंचवर्षीय योजना का आदर्श वाक्य कृषि का विकास था। इसके बाद एक कार्यशील राष्ट्र के निर्माण में आवश्यक विभिन्न पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

अभी तक 12 पंचवर्षीय योजनाएं चलाई गई हैं। जिनमें तेजी से औद्योगिकीकरण, आर्थिक उदारीकरण, देश के विज्ञान और अर्थव्यवस्था क्षेत्र का उन्नयन, समाजवाद, ऊर्जा उत्पादन, बजट को लागू करना, शिक्षा के प्रावधान शामिल है। पांच वर्षों के लिए इन वार्षिक योजनाओं का विश्लेषण और उन पर सालाना काम करते हुए, हमारे देश ने उपरोक्त पहलुओं के बारे में महत्वपूर्ण प्रशंसा प्राप्त हुई।⁸

⁸ श्याम सुन्दर दास— हिन्दी शब्द सागर पृष्ठ 4957

राष्ट्रीय विकास के लिए चुनौतियाँ— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने कहा है कि प्रत्येक देश के लिए राष्ट्रीय विकास एक आवश्यक जरूरत और उसके नागरिकों के लिए उचित विशेषाधिकार है, विकास में कुछ चुनौतियाँ उत्पन्न होती हैं जो इस विकास प्रक्रिया में बाधा उत्पन्न करती हैं। संयुक्त राष्ट्र ने उन विशिष्ट चुनौतियों को सूचीबद्ध किया तथा जो दुनियाभर के देशों में उत्पन्न होती रहती हैं, जो कि देशों के विकास को धीमा करती हैं।

इन बाधक चुनौतियों को दूर करने की सख्त आवश्यकता होती है। निम्नलिखित चुनौतियाँ हमें विश्वभर में राष्ट्रीय विकास करते समय बाधित करती हैं, जिनको राष्ट्र के विकास कार्य की निरंतरता बनाये रखने के लिए दूर करने की विशेष जरूरत होती है।

1—जनसंख्या का घनत्व— डॉ० 'निशंक' जी के लेखन के अनुसार देश के विकास में जनसंख्या का घनत्व सबसे बड़ी भूमिका निभाती है, जनसंख्या का घनत्व अधिक ना हो तो देश का विकास निरंतर तीव्र गति से चलता रहता है। अधिक जनसंख्या के कारण गरीबी, बेरोजगारी, वित्तीय तंगी और भूखमरी बढ़ जाती है। जिससे विकास कार्य योजनाएं सही व सतत ढंग से नहीं हो पाती हैं अतः विकास कार्य रुक जाता है। यही कारण है कि अधिक जनसंख्या घनत्व के कारण विकास कार्य रुक जाते हैं या प्रभावित होते हैं।

2—गरीबी— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के अनुसार राष्ट्रीय विकास में सबसे बड़ी रुकावट गरीबी का होना है। गरीबी के कारण राष्ट्रों को विकास से पहले गरीबी को समाप्त करने के बारे में ध्यान देना पड़ता है। जिससे योजनाएं विकास से भटककर गरीबी की तरफ जाकर रुक जाती हैं और गरीबी का मुख्य कारण भी अशिक्षा, रोजगार या वित्तीय तंगी होती है।

सरकार का सारा विकास कार्य का बजट गरीबी को मिटाने में लग जाता है यह ऐसा शूल होता है जो जनसंख्या वृद्धि के साथ बढ़ता जाता है। फलस्वरूप विकास कार्यों की गति धीमी पड़ जाती है इसी कारण से राष्ट्रीय विकास में गरीबी एक चुनौती बन जाती है।

3—सतत विकास में देरी— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने बताया है कि राष्ट्रीय विकास में सतत विकास में देरी भी मुख्य चुनौती बनकर खड़ी हो जाती है। सतत विकास या विकास का जो क्रम रहता है कुछ कारणों से रुकावट या उसमें व्यवधान आ जाता है। जिससे विकास कार्य प्रभावित होकर सतत विकास में रुकावट आ जाती है, अर्थात् राष्ट्रीय विकास में देरी होनी लगती है। यह दूसरी सबसे बड़ी चुनौती है।

4—मानवाधिकारों का अन्याय— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी लिखते हैं कि राष्ट्रीय विकास में सबसे बड़ी चुनौती मानवाधिकारों का अन्याय है, जो कहीं ना कहीं राष्ट्रीय विकास में चुनौती खड़ा करता ही करता है। जैसे अवैध जगह पर बैठे या रचे-बसे शरणार्थियों को राष्ट्रीय विकास में बाधा के कारण हटाने पर बीच में मानवाधिकार संस्थाएं आकर खड़ी हो जाती हैं जिससे विकास कार्य रुक जाता है। इस प्रकार मानवाधिकार का सामान्यतः यह अन्याय ही माना जाता है।

5—लैंगिक समानता का अभाव— राष्ट्रीय विकास में पांचवी चुनौती लैंगिक समानता का रही है जिससे राष्ट्रीय विकास में चुनौती पैदा हो जाती है। लैंगिक असमानता के कारण शैक्षिक योजनाएं, विकास परियोजनाएं, विभिन्न प्रकार के उद्योग-धंधों को विकसित नहीं कर पाते हैं, अतः राष्ट्र के विकास के लिए लैंगिक समानता का होना भी बहुत जरूरी है।

6—संकट और सदमें के प्रति लचीलेपन की कमी— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के उपन्यासों में उल्लेख किया गया है। कि संकट या आपदा के समय अस्त व्यस्तता के कारण विकास कार्य या योजनाएं लचीलेपन के कारण भी विकास कार्य बाधित होता है। विभिन्न प्रकार की आपदा या प्राकृतिक प्रकोप के समय भी यही लचीलापन विकास को बाधित करती हैं।

7—नैतिक और वैज्ञानिक मूल्यों के बीच बेमेल— विकास की योजनाएं तकनीकी और विज्ञान पर आधारित होती हैं। विज्ञान प्रारम्भ से ही नैतिकता के साथ चलता है या उसी में विलीन होता रहता है, तभी कोई भी विज्ञान की किसी खोज की प्रारम्भिक अवस्था पर प्रश्न नहीं करता। किसी वैज्ञानिक खोज पर प्रश्न तभी होता है जब वह समाज के नैतिक नियमों को चुनौती देती है। कभी-कभी नैतिकता वादियों के कारण

भी विकास कार्य प्रभावित हो जाते हैं। अतः यही नैतिक और वैज्ञानिक तथ्यों के बीच में वितर्कता के कारण से विकास कार्य बाधित होते हैं।

8—निरक्षरता— विकास कार्य में सबसे अधिक महत्वपूर्ण भूमिका जनता की साक्षरता की होती है। जनता जितनी साक्षर या शिक्षित होगी विकास उतना ही तीव्र गति से होगा, जनता के निरक्षर होने से विकास की योजनाएं धरी की धरी रह जाती हैं। बहुत सारी योजनाएं जनता के साक्षर ना होने से उनको अधिकारियों के चक्कर में फंसकर बंद या आधी अधूरी छूट जाती है, जिससे यह महत्वपूर्ण है कि जनता साक्षर बने और विकास योजनाएं तीव्रता से जनता के बीच फैले।

9—स्वच्छता और सार्वजनिक स्वास्थ्य के साधनों का अभाव— स्वच्छता और स्वास्थ्य भी राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। साफ—सफाई और सार्वजनिक स्वास्थ्य के पर्याप्त फैलाव के कारण विकास कार्य सही और सुचारु रूप से चलते रहते हैं। यदि कहीं और कभी भी जनता को स्वास्थ्य संबंधी कोई शिकायत या समस्या हो तो विकास कार्य या योजनाएं प्रभावित होने लगती हैं। योजनाओं के कर्मचारी या स्टाफ स्वच्छता या बीमारियों के कारण उस क्षेत्र में नहीं जाते हैं या योजनाओं को बीच में छोड़कर पलायन कर चले जाते हैं, जिससे राष्ट्रीय विकास बीच में ही फंस जाता है या बंद पड़ जाता है।

अतः उपरोक्त कारण ही मुख्यतः राष्ट्र के विकास में मुख्य चुनौतियां हैं। अगर इन चुनौतियों को समाप्त कर दिया जाय तो राष्ट्र का सर्वांगीण विकास अबाध रूप से चलता रहेगा और देश विकसित होता जाएगा।

निष्कर्ष— इस प्रकार संक्षेप में राष्ट्रीय विकास राष्ट्र और उसके नागरिकों के समृद्ध होने की कुंजी है। राष्ट्रीय विकास के सही अर्थ को प्राप्त करने के लिए सरकार को राष्ट्र को चलाने के लिए आवश्यक विकास कार्य करने के लिए साधन और प्रावधान प्रदान करने की आवश्यकता है। जिससे देश की उन्नति निरंतर होती रहे।

4.2 राष्ट्र की वर्तमान स्थिति

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी कहते हैं कि प्रत्येक राष्ट्र का साहित्य अपने देश की भौगोलिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक परिस्थिति से संबद्ध

होता है। साहित्य अपने देश के अतीत से प्राप्त विरासत पर गर्व करता है, वर्तमान का मूल्यांकन करता है और भविष्य के सपने बुनता है। इस प्रकार कहा जाता है कि वह राष्ट्रीय आकांक्षाओं से परिचित होता है। राष्ट्रीयता की भावना विकसित करने में आधुनिक साहित्य का बहुत बड़ा योगदान है।

मानवीय सभ्यता के विकास में साहित्य का महत्वपूर्ण योगदान रहा है, विचारों से ही साहित्य का उदय हुआ है, साहित्य ने मानवीय विचारधारा को गतिशीलता प्रदान की है। इतिहास साक्षी है कि किसी राष्ट्र या समाज में जितने परिवर्तन हुए हैं सभी साहित्य से हुए हैं। साहित्यकार समाज में फैली कुरीतियों, विसंगतियों, अभावों, विसमताओं तथा असमानताओं के बारे में लिखते हैं। इनके प्रति जन मानस को जाग्रत करने का कार्य करता है। जब सामाजिक जीवन में नैतिक मुल्यों का पतन होने लगता है तब साहित्य ही जनमानस का मार्गदर्शन का कार्य करता है।

छायावाद के प्रसिद्ध कवि सुमित्रानन्दन पन्त का कहना युक्ति-युक्त है— हमारा विशाल देश राष्ट्र की भावना या कल्पना वैदिक साहित्य से परिचित रहा है। वर्तमान साहित्यकारों के लिए आज भी भारत की मौलिक समस्या भूख, गरीबी, रोजगारी और असमानता आदि ही हैं। समाज की आंतरिक और बाह्य प्रगति के लिए साहित्य हमेशा कल्पवृक्ष बना दिया गया है।

साहित्य की परिधि समाज का प्रत्येक हिस्सा रहा है। यहाँ किसी प्रकार का भेदभाव नहीं रहा है। जो अन्याय व अत्याचार का शिकार हुआ साहित्य ने खड़े हो कर पीड़ित के आँसू भी पोछे हैं। यह काम साहित्य ही कर पाता है। साहित्य मनुष्य को बाहर और भीतर दोनों ओर से सभ्य बनाने में मदद करता है। वास्तव में साहित्य बहुत ही तन और मन की सभ्यता प्रदान करता है। वर्तमान साहित्य प्रकृति एवं राष्ट्रीयता का मानवीकरण ही नहीं करता बल्कि प्रकृति, समाज एवं राष्ट्र को उसकी ठोस सामाजिक संदर्भ के साथ भी रेखांकित करता है।

हिंदी समाचार पत्रों की भूमिका— प्रत्येक देश का साहित्य अपने देश का साहित्य, अपने देश की भौगोलिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों से जुड़ा होता है, हिंदी पत्र एवं पत्रिकाओं की भूमिका के कारण ही जन-जन तक पहुंचता है। जिनके माध्यम से राष्ट्रीय विकास को अंतर्राष्ट्रीयता के परिपेक्ष में रखकर कोशिश की जानी

चाहिए। भारत जैसे देश के संदर्भ में राष्ट्रीयता के बारे में कुछ दुविधाएं हैं, भारत मिश्रित संस्कृतियों का देश है।

साहित्य का उद्देश्य मनोरंजन करना मात्र नहीं है, इनका उद्देश्य समाज का मार्गदर्शन करना है। राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त ने कहा है कि केवल मनोरंजन ही साहित्य का उद्देश्य नहीं होना चाहिए, उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए।

हिन्दी फिल्मों का योगदान— हिन्दी फिल्मों का भी हिन्दी भाषा को बढ़ावा देने में अहम योगदान रहा है। 1940 से लेकर 1980 तक हिन्दी भाषा में बहुत अच्छी फिल्में बनीं जो कि एक-एक फिल्म हर शहर में पांच-पांच महीने तक हाउस फुल रहती थी। इसका कारण हिंदी भाषा को प्रसारित करना ही है।

साहित्य के प्रति रूचि— साहित्य में रूचि से ही राष्ट्र का वर्तमान स्वरूप प्रभावित रहता है। अक्सर देखा गया है कि हिंदी भाषा की आलोचना करने वाले वही लोग होते हैं जो देशभक्ति अंग्रेजी को दे रहे हैं। राष्ट्रभाषा हिंदी होने से साहित्य का हिंदी में होना राष्ट्र का विकास ही समझा जा सकता है। हिंदी का विकास ना होना भी राष्ट्र की वर्तमान स्थिति को प्रभावित करता है। डॉ० 'निशंक' जी के उपन्यासों या साहित्य में राष्ट्र की वर्तमान स्थिति के विषय में वर्णन प्रतिज्ञा उपन्यास में डॉ० निशंक जी द्वारा राष्ट्र की वर्तमान स्थिति क्या है उसका विस्तृत रूप में चित्रण किया है।⁹

4.3 डॉ० 'निशंक' जी के उपन्यासों में राष्ट्रीय चेतना

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के समग्र साहित्य में राष्ट्रीय चेतना या राष्ट्रीय जागरण के तत्व बिखरे पड़े हैं। उन्होंने देशप्रेम, देशसेवा एवं सुरक्षा, मानवता, राष्ट्रीय एकता, वैज्ञानिक चेतना, भाईचारा, सहयोग, मातृभूमि तथा विभिन्न तत्वों पर विचार विमर्श व चिंतन व्यक्त किया। लेखक अपना-पराया उपन्यास की पंक्तियों में विदेश के बजाए स्वदेश में रहकर काम करने की वरियता देता है इससे राष्ट्रीयता को बढ़ावा मिलता है। चेतना के मूल आधार मस्तिष्क, मानव जगत तथा सामाजिक वातावरण है। चेतना के ये आधार न्यूनाधिक परावर्तित व परिवर्तित हैं। मानव समाज की गतिशीलता में चेतना का विकास भी कभी रुक नहीं सकता। अगर हिंदी का

⁹ शिवदत्त ज्ञानी— भारतीय संस्कृति पृष्ठ 200

शब्द संसार देखें तो चेतना का अर्थ व्यक्तिगत विकास तथा अपने वातावरण के बारे में ज्ञान को ही कहा जाता है।

विश्वकोश के अनुसार— चिंतन वह अनुभूति है, जो मस्तिष्क में पहुंचने वाले अभिगामी आवेगों से उत्पन्न हुआ माना जाता है। इन आवेगों का अर्थ शीघ्र या बाद में आभास होता है।

वर्ल्ड यूनिवर्सिटी इंसाइक्लोपीडिया के अनुसार— चेतना आत्मबोध की शक्ति के रूप में भी जाना जाता है।

डॉ० रामविलास शर्मा के अनुसार— चेतना मस्तिष्क में निहित पदार्थ का गुण है। विचार केवल चिंतन द्वारा ही अपने भीतर से उत्पन्न नहीं किये जाते हैं अर्थात् विचारों के लिए चेतना और बाह्य जगत का संपर्क जरूरी है।

4.4 चेतना का अर्थ एवं राष्ट्रीय चेतना

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के शब्दों में चेतना का अर्थ निर्धारण करना संभव नहीं है, चेतना की बदौलत ही मनुष्य द्वारा परिवेशी यर्थाथ का संज्ञान लेता है या करता है। अगर विश्वकोश की माने तो मानव चेतना की तीन विशेषताएं हैं। वह ज्ञानात्मक, भावात्मक और क्रियात्मक होती है। अन्य विशेषताओं को भी माना जाता है।

1. चेतना ज्ञान है।
2. चेतना मनोभाव है।
3. चेतना कल्पना है।
4. चेतना इच्छा है।
5. चेतना आत्म चेतना है।

चेतना के प्रकार— हमारे मन में जिस प्रकार की चेतना जागृत होती है वह समाज में रहकर ही होती है, समाज के बिना मानव का अस्तित्व संभव नहीं है। अतः चेतना को विभिन्न प्रकार में बांटा जा सकता है।

1—राष्ट्रीय चेतना— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने लिखा है— यह सर्व सत्य है कि राष्ट्रीयता एक मानसिक अनुभूति है, प्रत्येक देश वासी की आशाएं, आकांक्षाएं और परंपराएं उन्हें एकता के सूत्र में बांधते हैं यही सच्चे शब्दों में राष्ट्रीयता है। अपने देश, अपनी संस्कृति, धर्म से सभी को अनुराग होता है। राष्ट्र के प्रति राष्ट्रीयता व्यक्तित्व के दायरे से निकलकर एक निश्चित भौगोलिक सीमा के अंतर्गत निवास करने वाले समस्त प्राणियों के कल्याण का नाम है। राष्ट्रीय चेतना के अभाव में अन्य सभी तत्वों के वर्तमान में रहने पर भी राष्ट्रीयता का निर्माण नहीं किया जा सकता है। राष्ट्रीय चेतना संपन्न जन समुदाय के प्राचीन काल की महान उपलब्धियों को याद करके अपने को गौरवान्वित होते रहते हैं विपदाओं को भी याद करके राष्ट्रीय चेतना मय रहते हैं।

2—साहित्यिक चेतना— डॉ० 'निशंक' जी के साहित्यिक विवेचना से सभी को पता है कि भारतीय चिंतन में कला और जीवन का घनिष्ठ संबंध है। कहा जाता है कि काव्य के अभाव में जीवन की कल्पना तो की जा सकती है पर जीवन के अभाव में काव्य की कल्पना संभव नहीं है। भारतीय साहित्य में काव्य और जीवन को एक—दूसरे का पर्याय माना गया है। इसलिए तुलसी का काव्य स्वांत सुखाय घोषित होते हुए भी लोक मंगल की भावना से संयुक्त है। जो कृति केवल कलाकार और उसके युग को ही प्रभावित करते हैं वह हीन प्रकार की कला मानी जाती है।

3—पर्यावरणीय चेतना— पर्यावरण शब्द संस्कृत की वृ धातु में परि तथा आ उपसर्ग एवं ल्युट प्रत्यय जोड़ने से बना है अर्थात् परिआवृत्युट— पर्यावरण। परि का अर्थ चारों ओर फेंकना, फैलाना, प्रसार और घेरना होता है। आवरण का अर्थ ढकना, छिपाना, गुदना, घेरना, बंद करना आदि होता है। मनुष्य के संपूर्ण क्रिया—कलाप और भौतिक वस्तुएं तथा विचारणाएं आदि जिस आवरण से आच्छादित होता है सामान्यतः उसे ही पर्यावरण कहते हैं। हम सभी कुछ पर्यावरण से ही प्राप्त करते हैं।

के.आर. दीक्षित के अनुसार— पर्यावरण की परिभाषा तथा विषय क्षेत्र हमारे हित, अभिरुचि तथा प्राथमिकताओं द्वारा निश्चित होते हैं। हमारा तात्कालिक हित स्थान जिस पर हम रहते हैं, जिसमें हम सांस लेते हैं, हमारा भोजन, हमारा जल, वे

संसाधन जिन्हें हम अपनी अर्थ व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने के लिए पर्यावरण से प्राप्त करते हैं, यही पर्यावरण की गुणवत्ता है।

4—मनोवैज्ञानिक चेतना— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के विचारों से साधारणतः मन के विज्ञान को मनोविज्ञान कहा जाता है, ग्रीक शब्द साइक्लोजी से इसकी उत्पत्ति मानी जाती है। साइको तथा लोगस दो शब्दों से मिलकर ही साइकोलॉजी शब्द बना है, साइको का अर्थ मन या आत्मा और लागोस का अर्थ विचार विमर्श होता है।

अतः साइकोलॉजी चेतना का भी विज्ञान है— जिसमें चित्त की वृत्तियों का अध्ययन या विवेचन होता है। मानव की प्रत्येक क्रिया मूल रूप से उसके मानस से संबन्धित है। अतः उसके सृजनात्मक क्रिया को समझने के लिए मानसिक ढांचे और उसकी मानसिक क्रिया को समझना आवश्यक हो जाता है।

5—नैतिक चेतना— प्रत्येक मनुष्य सुखी व शांतिपूर्ण जीवन जीने के लिए नैतिकता अत्यंत आवश्यक या नैतिकता बहुत ही जरूरी मानी जाती है। समाज में फैली कुरीतियों को दूर करने के लिए नैतिकता का पालन ही जरूरी है। साहित्य में नैतिकता का मूल बोध नीति से ही है। नीति से मूलबोध व्यवहार का ढंग है।

6—सौंदर्यगत चेतना— निशंक जी के शब्दों में सौंदर्यता मनुष्य को प्रकृति द्वारा अनमोल वरदान है। सौंदर्य का संबंध शरीर, मानव और चरित्र तीनों से होता है, सीधा संबंध चेतना से होता है। चेतना के ही आधार पर किसी को कोई वस्तु अच्छी या बुरी लगती है। चेतना का यह स्वरूप समय के अनुसार परिवर्तनीय होता है। सौंदर्य के प्रमुख प्रकार शारीरिक, मानसिक, प्राकृतिक, चारित्रिक और कलात्मक आदि होते हैं जो मानव के अंतर्मन में चेतना का परवाह करते हैं।

7—दार्शनिक चेतना— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने अपने लेखों में लिखा है कि दर्शन शोध का ही एक नाम है, दर्शन की कोई सीमा नहीं होती है। बड़े-बड़े विचारक, चिंतक, शोध-जिज्ञासु अपनी जिज्ञासाओं को शांत करने के लिए निरंतर प्रयास करते रहते हैं। अंतिम सच तक पहुंचना बहुत कठिन होता है जहां तक पहुंचना नामुमकिन होता है। भारतीय साहित्य में धर्म, संस्कृति और मूल्यों का

मिला-जुला मिश्रण होता है जिसका कोई अंत या कोई स्थिरता नहीं होता है। दर्शन शब्द की उत्पत्ति दृश धातु से हुई है, जिसका अर्थ देखना होता है।

इसका अर्थ जिसके द्वारा देखा जाय, भी माना जाता है— दृश्यते अनेन इति दर्शनम्।

आचार्य बलदेव उपाध्याय ने दर्शन शब्द का प्रयोग ज्ञान का प्रेम से माना है।

8-आर्थिक चेतना- आर्थिक चेतना का मानव जीवन से घनिष्ठ संबंध है। डॉ० 'निशंक' जी ने बताया है कि अर्थ जीवन यापन का प्रमुख आधार है। आध्यात्मिकता और विशुद्ध आर्य संस्कृति के कारण ही भारत सोने की चिड़िया कहलाता था। इससे जीवन में किसी न किसी रूप में अर्थ की महत्ता को स्वीकृति मिलती है। यह सर्वविदित है कि बिना आर्थिकी के कोई भी विकास संभव नहीं है, अर्थात् किसी भी व्यक्ति और समाज की उन्नति एवं समृद्धि आर्थिक विकास पर ही निर्भर करती है। कार्ल मार्क्स के दर्शन में भी जीवन की विवेचना में अर्थ को प्रमुख स्थान दिया गया है।

9-राजनीतिक चेतना- राजनीति शब्द पॉलीटिक्स का पर्याय है। पश्चिम से आया यह शब्द भारत के राजधर्म तथा राजशास्त्र का ही पर्यायवाची है। पॉलिटिक्स यूनानी भाषा के शब्द पॉलिश से बना है जिसका अर्थ नगर या राज्य होता है।

किसी भी देश को सुचारु रूप से चलाने के लिए विशेष नियमावली होती है इसी नियमावली को उस देश की राजनीति कहते हैं। प्रत्येक देश की राजनीति उस देश की आर्थिक, सामाजिक, नैतिक तथा सांस्कृतिक स्थिति का दर्पण मानी जाती है।

10-धार्मिक चेतना- डॉ० 'निशंक' जी ने उल्लेख किया है। धर्म शब्द धृ (धारण) करना है। इसलिए धर्म उन शाश्वत सिद्धांत के समुदाय को कहा जाता है जिनके द्वारा मानव समाज संमार्ग में परिवर्तित होकर उन्नत होकर अपने अस्तित्व को धारण करता है। हिंदी शब्दकोष के अनुसार चरण या वृत्ति जिससे जाति या समाज को रक्षा और सुख, शांति की वृद्धि तथा परलोक में अच्छी गति मिले। भारत

में प्राचीनकाल से ही धर्म को वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया है। वैशेषिक दर्शन के प्रणेता महर्षि कणाद ने धर्म की व्याख्या करते हुए कहा है—

यतोअभ्युदः निःश्रेयस सिद्धिः सः धर्मः¹⁰

अर्थात् धर्म मनुष्य के इहलोक और परलोक को कल्याणकारी बनाता है।

11—वेदों में निहित राष्ट्रीय चेतना— निशंक जी ने उपन्यासों में भली प्रकार से समझाया है, कि वैदिक साहित्य में राष्ट्रीय चेतना बहुत ही विस्तृत ढंग से वर्णित है। वेदों में उल्लिखित राष्ट्रीय चेतना बड़ी उच्च कोटि की है वह संकीर्णता से बहुत दूर है। उनमें केवल अपने सुख की ही कामना नहीं की गई है, बल्कि समस्त विश्व को सुखी देने का आश्चर्यजनक चिंतन है। वेदों में लिखित राष्ट्रीय अवधारणा किसी सीमित देश या राज्य पर लागू न होकर एक आदर्श रूप बन जाती है।

प्रत्येक देश का आधार एक निश्चित भूखण्ड या जमीन होती है, किन्तु केवल जमीन का एक बहुत बड़ा टुकड़ा या भूखण्ड राष्ट्र नहीं होता है। उस भूमि के भाग पर जो संस्कृति फलती-फूलती है उसी संस्कृति का महत्व उस भूखण्ड से अधिक होता है। अतः संस्कृति के अभाव में वह भूमि केवल भूखण्ड ही रह जाता है एक राष्ट्र नहीं।

वैदिक ऋषि के अनुसार राष्ट्र का अभिप्राय या अर्थ केवल एक विशिष्ट भूमि पर स्थित मानवीय संस्कृति से रहता है। जिसका वाहक वहां की राष्ट्रभाषा होती है। राष्ट्र के स्वरूप में भूमि, संस्कृति तथा भाषा तीनों जुड़े होते हैं। वेदों में राष्ट्र विषयक अवधारणा भूमि, भारतीय तथा सरस्वती क्रमशः राष्ट्रभूमि, राष्ट्रीय संस्कृति और राष्ट्रभाषा के प्रतीक हैं।

राष्ट्रीय चेतना के प्रमुख तत्व— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के विचार से राष्ट्रीय चेतना के जिन प्रमुख तत्वों का उल्लेख किया जाता है निम्नलिखित हैं।

1. देश-प्रेम की भावना ।
2. जातीयता प्रेम ।

¹⁰ मैथिलीशरण गुप्त— जयभारत पृष्ठ 55

3. भाषा प्रेम ।
4. स्वर्णिम अतीत का चित्रण ।
5. वर्तमान दुर्दशा के प्रति क्षोभ और आक्रोश ।
6. पराधीन के प्रति उद्गार तथा अन्याय के विरुद्ध संघर्ष ।
7. क्रांतिकारी भावना तथा क्रांतिकारी गतिविधियों का चित्रण ।
8. समकालीन घटनाओं तथा आंदोलनों का चित्रण ।
9. आशा और उद्बोधन का स्वर ।

जी.पी. गूच का विचार है कि राष्ट्रीय एक राष्ट्र की आत्म चेतना है। यह चेतना राष्ट्र को इकाई मानकर उसके परतंत्र रहने पर स्वतंत्र बनाने के लिए आवश्यक है। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के समस्त उपन्यासों से उन्होंने गहन राष्ट्रीय चेतना का संदेशा दिया है, जो कि उनके समस्त उपन्यासों में कूट-कूट कर भरी पड़ी है। राष्ट्रीय चेतना को डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के उपन्यासों द्वारा निम्नलिखित शीर्षकों पर परिचित कराया गया है।

मातृभूमि प्रेम— राष्ट्रीय चेतना का एक मुख्य तत्व अपने देश से प्रेम भी है, जिस भूमि पर हमने जन्म लिया है हमें उस मिट्टी का उपकार कभी भी भूलना नहीं चाहिए इसी भूमि पर उठ-गिर कर बड़े हुए हैं। यही जीवन भर हमारा बोझ सहते हैं साथ ही हमें पेड़-पौधों, झरनों, नदियों आदि का उपहार भी देते हैं। अतः मातृ भूमि के चरणों में सदैव प्रणाम करना चाहिए।

पल्लवी उपन्यास की निम्न पंक्तियां दृष्टव्य हैं—

प्यास सदा ही करती रहती।

कभी न दुख को प्रकट किया।

शैशव, किशोर, तरुणाई में भी।

तूने हमसे कुछ न लिया ।¹¹

¹¹ डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल— कला और संस्कृति पृष्ठ 71

देश भक्ति— राष्ट्रीय चेतना के लिए व्यक्ति के मन में देशभक्ति का भाव का रहना अति महत्वपूर्ण है। जब तक मनुष्य के मन में देश के प्रति सब कुछ अर्पण करने की भावना न हो तो तब तक वह सच्चा देश भक्त नहीं हो सकता। पल्लवी उपन्यास का पात्र ध्रुव सेना में भर्ती होता है उसकी इन बातों में देशभक्ति की झलक नजर आती है— जब वह जोश में आता है तो वह अपनी बहादुरी की कहानी सुनाता है। दुश्मन सीमा के अंदर घुस आया और हमें पता ही नहीं चला यह वक्त है कुछ कर दिखाने का एक बार मुँह तोड़ जवाब मिल गया तो सब कुछ समझ में आ जाएगा।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी का मेजर निराला उपन्यास में मेजर निराला रात्रि के चार बजने की इंतजारी में है। अब तक दुश्मन को उनकी उपस्थिति का अहसास न हो सका है। मेजर और उनके जवानों ने पत्थरों की ओट से पोजीशन लेकर ताबड़-तोड़ गोलियों की बरसात कर देंगे बस उन्हें मेजर निराला के आदेश का इंतजार है।

मेजर निराला ने दुश्मन के कैम्प का जायजा लिया तो उनको एक तोप और उसके चारों तरफ बीस-पच्चीस राइफल धारी जवान दिखाई दिये। मेजर साहब दायें-बाएं नजर दौड़ाकर पूर्णतः आश्वस्त हो जाना चाहते थे कि जिस चौकी पर दुश्मन कब्जा जमाए बैठा है, उस पर उतने ही सैनिक हैं, जितने दिखाई दे रहे हैं।

पूरी तरह आश्वस्त होने पर मेजर गोली चलाने का आदेश देते हैं, तभी वाकी-टाकी का फोन बजता है। उधर से कर्नल डी० राजा को फोन पर कहता है मेजर सुखविंदर को तुम्हारी जगह भेजा जा रहा है। तुरंत वापस आ जाओ। मेजर को करारा झटका लगा, उन्हें लगा मानों हाथ में आया दुश्मन का गिरेबान छूट गया हो। मेजर की आवाज ने कहा कि मुझे छुट्टी नहीं जाना सर..यह देशभक्ति का ही उदाहरण है।

देशभक्ति देश के प्रति प्यार और सम्मान की भावना है। देशभक्त अपने देश के प्रति निःस्वार्थ प्रेम तथा उस पर गर्व करने के लिए जाना जाता है। दुनिया के हर देश में उनके देशभक्तों का एक समूह होता है जो अपने देश के विकास के लिए कुछ भी करने के लिए तैयार रहते हैं। हालांकि देश भक्ति की भावना हर क्षेत्र में बढ़ती प्रतिस्पर्धा के साथ-साथ लोगों की बदलती जीवन शैली के कारण या निम्न

स्तरीय राजनीति के कारण लुप्त होती जा रही है। अतः राजनेताओं को चाहिए कि देशभक्ति जैसे राष्ट्रीय चेतना के मुद्दे पर घटिया राजनीति न की जाए।

देशभक्ति का अनुभव स्थापित किया जाना चाहिए— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के विचारानुसार ब्रिटिश शासन काल के दौरान कई लोग अपने देशवासियों के अंदर देशभक्ति की भावना पैदा करने के लिए आगे आये। देशभक्तों ने बैठकों का आयोजन किया तथा उनके आस-पास के लोगों को प्रेरित करने के लिए भाषण देते हुए कई उदाहरणों का उपयोग किया। उसी प्रकार जब बच्चे छोटे हों तभी से उनके अन्दर देश-भक्ति की भावना पैदा की जानी चाहिए।

'निशंक' जी कहते हैं कि स्कूलों और कालेजों में भी बच्चों के अन्दर अपने देश के प्रति प्यार और सम्मान की भावना को स्थापित करना चाहिए। इसलिए बच्चों में देशभक्ति से संबंधित देशभक्ति और देशप्रेम से संबंधित कविता, गाने, भाषण, प्रतियोगिता, चर्चा आदि का आयोजन समय-समय पर किया जाना नितांत जरूरी है ताकि देशभक्ति बच्चों के दिल में बस जाय।

डॉ० 'निशंक' जी कहते हैं कि 15 अगस्त (स्वतंत्रता दिवस) या 26 जनवरी (गणतंत्र दिवस) के अवसरों पर देशभक्ति गीत गाये जाते हैं। और उस दौरान देशभक्ति की भावना आस-पास के पूरे क्षेत्र या देश को घेरे रहती है। लेकिन क्या यह असली देशभक्ति है या नहीं। ऐसा सामान्य रूप में होना चाहिए ना कि केवल इन विशेष तिथियों के आस-पास ही, तभी ये देशभक्ति की भावनाएं हमेशा के लिए लोगों के मन में बैठेंगी। जिस देश के युवा अपने देश से प्यार करते हैं उस देश की सामाजिक और आर्थिक स्थिति स्वतः ही सुधर जाती है।¹²

निष्कर्ष— राष्ट्रीय चेतना एक विस्तृत अवधारणा है, इसे एक संकुचित दायरे में नहीं रखा जा सकता। किसी भी राष्ट्र में चेतना तभी आती है जब उस राष्ट्र का प्रत्येक नागरिक अपने प्रति, परिवार, समाज, राज्य, राष्ट्र और राजनीति के प्रति जाग्रत की भावना या चेतना जागृत होनी चाहिए। भारतभूमि पर अनेक आक्रांताओं द्वारा अपनी-अपनी सत्ता स्थापित की गई जब भारतीयों में चेतना जाग्रत हुई तब उन्होंने

¹² सुनिती— दिनकर के काव्य में चेतना पृष्ठ 03

बाहरी सत्ता को उखाड़ फेंका। अगर यही चेतना पहले जाग्रत हुई होती तो विदेशी कभी भी यहां पर राज नहीं कर पाते। हमें सदैव तन—मन—धन से राष्ट्र सेवा में लगना चाहिए, राष्ट्र सेवा के लिए त्याग नीति सर्वोपरि होती है। अगर संक्षेप में कहें तो किसी भी राष्ट्र की संपूर्ण आन—बान—शान उसके नागरिकों की जागरूकता या चेतना पर निर्भर करती है।

एक सच्चा देशभक्त वह होता है जो अपने देश की स्थिति सुधारने में जितना हो सकता है, उतनी कड़ी मेहनत कर अपना योगदान देता है। एक सच्चा देशभक्त न केवल अपने देश के निर्माण की दिशा में काम करता है, बल्कि उसके आस—पास के लोगों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करता है। देशभक्ति का सर्वश्रेष्ठ आदर्श सैनिकों को मानकर देशवासियों द्वारा सम्मानित किये जाते हैं।

राष्ट्रीय साक्षरता— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने भी शिक्षा पर अधिक प्रकाश डाला है। ताकि प्रत्येक व्यक्ति शिक्षा प्राप्त कर सके यदि व्यक्ति विभिन्न साधनों से कितना भी संपन्न हो बगैर शिक्षा के वह स्वाभिमान रहित होता है। छूट गया पड़ाव उपन्यास के गाँव बिनगढ के लोगों की यही दशा है। बिनगढ गांव की अशिक्षा को देखते हुए स्कूल को सुचारु रूप से चलाने की ठान ली और शुरू करने लगे अध्यापक की तलाश वैसे राष्ट्रीय साक्षरता का अर्थ साधारणतः यह माना जाता है। कि जो व्यक्ति अपने हस्ताक्षर और पैसे को गिन सकता है तो साक्षर माना जाता है। पूरे भारत देश में साक्षरता सबसे अधिक केरल राज्य की ही मानी जाती है जो निम्न लिखित है।

भारत में सबसे अधिक अशिक्षित लोग निवास करते हैं। वर्तमान स्थिति निम्न प्रकार से है। पूरे देश में साक्षरता दर 77.70 प्रतिशत (2021 और 2022) है। जिसमें केरल राज्य 96.2 प्रतिशत के साथ पहले स्थान पर तथा आंध्रा—प्रदेश 66.4 प्रतिशत के साथ सबसे कम साक्षरता वाला राज्य है।

1—पुरुष साक्षरता प्रतिशत— राष्ट्रीय सांख्यिकीय कार्यालय द्वारा जारी रिपोर्ट में पुरुष साक्षरता दर 84.7 प्रतिशत बताई गई है। केरल की 97.4, दिल्ली की 93.7, तथा अलग—अलग राज्यों की साक्षरता महिलाओं की तुलना में अधिक है, जिसका कारण लिंगभेद माना गया है।

2—स्त्री साक्षरता 70.3 प्रतिशत— राष्ट्रीय सांख्यिकीय कार्यालय द्वारा दिए गये आंकड़ों के अनुसार (2017 और 2018) भारत में महिलाओं की साक्षरता 70.3 प्रतिशत है जिसमें केरल की 95.2 प्रतिशत, दिल्ली 82.4 प्रतिशत और महिलाओं की साक्षरता पुरुषों की अपेक्षा कम पाई गई है।

3—सर्वाधिक साक्षरता दर केरल 96.2 प्रतिशत— पूरे देश में केरल की साक्षरता सबसे अधिक मिली है। जिसमें पुरुषों की सबसे अधिक 96.2 तथा महिलाओं की भी 95.2 होकर सबसे अधिक है। केरल की तुलना में अन्य राज्य बहुत अधिक पिछड़े हुए हैं। इसके बाद दिल्ली तथा उत्तराखण्ड क्रमशः दूसरे तथा तीसरे नंबर पर आते हैं।

4—न्यूनतम साक्षरता दर आंध्र-प्रदेश— राष्ट्रीय सांख्यिकीय कार्यालय की रिपोर्ट के अनुसार संपूर्ण भारत में आंध्र-प्रदेश की साक्षरता सबसे कम 66.4 बताई गई है जिसमें 73.4 प्रतिशत पुरुषों का तथा 59.5 प्रतिशत महिलाओं का है।

राष्ट्रीय सांख्यिकीय कार्यालय द्वारा उपरोक्त सर्वेक्षण भारत के 8097 गांवों के 64519 ग्रामीण परिवारों और 6188 ब्लकों के 49238 शहरी परिवार शामिल हैं। रिपोर्ट में यह भी पता चला है कि 4 प्रतिशत ग्रामीण तथा 23 प्रतिशत शहरी घरों में कम्प्यूटर लगे हुए हैं। 15—29 वर्ष के 24 प्रतिशत ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र में 59 प्रतिशत लोग कम्प्यूटर शिक्षित हैं।

भारत में शिक्षा का अधिकार लागू करने से भारत की साक्षरता बहुत अधिक बढ़ी है जहां केरल हिमाचल, मिजोरम और तमिलनाडू जैसे भी राज्य हैं जिन्होंने बदलाव करके शिक्षा में अधिक सुधार किया है। वहीं बिहार जैसा राज्य भी है जहां पर लोगों की मूलभूत आवश्यकता रोटी, कपडा और मकान का भी जुगाड नही हो पाता है तो किताबों का खर्च मुश्किल होता है। यही कारण राज्य के पिछडने का होता है, जिससे कि राष्ट्र का विकास भी पिछडा रह जाता है। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के उपन्यासों में राष्ट्रीयता या राष्ट्रवाद कूट-कूटकर भरा हुआ है।¹³

¹³ डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' — पल्लवी पृष्ठ 23

मातृभूमि से प्रेम— डॉ० 'निशंक' जी जी एक कवि हृदयी व भावुक व्यक्तित्व रहे हैं। उनकी कविताओं और उपन्यासों में मातृभूमि से प्रेम पल्लवी उपन्यास में झलकता हुआ दिखाई देता है। मातृभूमि वह भूमि है।

जहां मनुष्य जन्म लेता है। उसी मिट्टी में खेलकर बड़ा होता है। इस मिट्टी को अपनी जान से भी ज्यादा प्रेम करता है और उसे मां का दर्जा देता है उसे मातृभूमि कहते हैं।

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।¹⁴

इसका साधारण सा अर्थ है कि मां और मातृभूमि स्वर्ग से बढकर है। एक सच्चा देशभक्त अपनी मिट्टी से इतना प्रेम करता है कि वह अपने प्राणों की बलि देने से भी नहीं हिचकिचाता है। प्रत्येक मनुष्य के लिए उनकी मातृभूमि की एक अलग ही महत्ता होती है, जिसे शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता है।

सुभाष चन्द्र बोस, चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह और अनेक क्रांतिकारियों ने अपनी जन्म भूमि के लिए ही हंसते हुए प्राणों को न्यौछावर कर दिया था। जिसे आज भी याद किया जाता है या आदर्श माना जाता है। यह देश प्रेम का सर्वोत्तम उदाहरण है।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी का भागोंवाली उपन्यास भी देशप्रेम पर आधारित है। जिसमें शास्त्री जी पश्चिमी उ० प्र० में अपनी अच्छी-खासी जमीन—जायदाद छोड़कर पहाड़ में शिक्षण करते—करते यहीं बस जाते हैं। यही पर घर बनाकर बच्चों का पालन—पोषण करके बच्चों को पढ़ा—लिखाकर बच्चे भी पहाड़ में ही अपना घर बनाकर पहाड़ के ही होकर रह जाते हैं, यह देशप्रेम का ही सर्वोत्तम उदाहरण है।

प्रतिज्ञा उपन्यास में भी डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने शहर में पढ़े—लिखे वीरसिंह के वापस अपने गांव में आकर गांववालों को आधुनिक खेती के गुण सिखाते हुए गांव में ही दुकान खोलकर रुक जाना देशप्रेम का ही उदाहरण है।

¹⁴ डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' — मेजर निराला पृष्ठ 12

छूट गया पडाव में भी उपन्यास की नायिका सरोज बिनगढ गांव में शिक्षण कार्य के साथ-साथ गांव के लोगों की भी मदद करके देशप्रेम का ही उदाहरण देती है।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने अपने समस्त उपन्यासों को देशप्रेम की भावना से ओत प्रोत किया है। उनके समस्त पात्र भी देश प्रेम, देशभक्ति की भावना से परिपूर्ण हैं, मेजर निराला, वीरा, निशांत, पहाड से ऊंचा, पल्लवी, आदि सभी देशभक्ति की भावना से परिपूर्ण हैं। जिनमें सैनिकों और उनके परिवारों की विभिन्न समस्याओं के बारे में लिखा है।

मेजर निराला उपन्यास में मेजर निराला के दिल में देश की माटी की सेवा के लिए अथाह प्रेम है, जिससे वह अपने देश के लिए कुछ भी करने के लिए तैयार है। अपने लहू की एक-एक बूंद बहाने के लिए तैयार है, किंतु एक इंच जमीन भी वह दुश्मनों के कब्जे में नहीं देखना चाहता। मेजर अपने साथियों सहित लगातार आगे बढ़ रहा है, यह सब देश प्रेम का ही उदाहरण है। पहाड से ऊंचा उपन्यास में डॉ० दीपक और डॉ० गीता एम० बी० बी० एस० करने के पश्चात अपने देश प्रेम के कारण ही अपने गांव वापस आकर के अपना अस्पताल खोलते हैं और गांव वालों की सेवा करते हैं।

डॉ० 'निशंक' जी का उपन्यास प्रतिज्ञा में भी पात्र बीरसिंह भी शहर से पढाई करके शहर में बसने के बजाए गांव में ही दुकान खोलकर अपने खेतों में सब्जियां लगाना भी शुरू करता है, यह भी देश प्रेम का ही उदाहरण है।

देश की रक्षा एवं सेवा— डॉ० 'निशंक' जी ने राष्ट्रीय चेतना को अंतर मन में बसाने के लिए विभिन्न तरह से उत्तेजना पैदा करने का प्रयास किया है। निशंक जी के रोम- रोम में देश सेवा की भावना दिखाई देती है। उनके समस्त उपन्यास देश की रक्षा एवं सेवा पर ही आधारित हैं। मेजर निराला उपन्यास भी देश की रक्षा एवं देश की सेवा पर आधारित है। सेवा एवं रक्षा का भाव रखने वाला व्यक्ति संपूर्ण रूप से देश के प्रति समर्पित रहता है। मेजर निराला, पल्लवी, वीरा उपन्यासों में लेखक ने देश की रक्षा एवं सेवा भाव का वर्णन किया है। मेजर साहब, आपका टेलीग्राम आया है कल से। आते ही पोस्टमैन बोला मेजर ने पोस्टमैन के रजिस्टर पर हस्ताक्षर करते हुए टेलीग्राम लिया। खोलकर पढता उससे पहले ही सावित्री बोल उठी,

किसका है? आर्मी हेडक्वार्टर से है। मेजर ने तार खोला क्या लिखा है सावित्री ने कहा। मुझे बुलाया है, छुट्टियां कैंसिल। मेजर ने मुस्कुराते हुए कहा सन्न रह गई थी सावित्री।

भारत पाकिस्तान युद्ध के समय सेना का पत्र आते ही मेजर निराला तुरन्त जाने के लिए तैयार हो जाता है जो कि देश की रक्षा और सेवा का ही उदाहरण है। पल्लवी उपन्यास में भी पल्लवी नायिका के घर में सभी प्रकार की भौतिक सुविधाएं होने के बाद भी वह देश की रक्षा को समर्पित नायक ध्रुव को ही जीवन साथी बनाती है जो कि एक सैन्य अधिकारी ही बनता है। उसी प्रकार वीरा उपन्यास में भी नायक पारिवारिक पृष्ठभूमि से देश सेवा से परिपूर्ण सैनिक ही होता है।

क्षेत्रीय चिंता— जो व्यक्ति अपने देश या क्षेत्र से प्रेम करता है, उसकी चिंता करना भी स्वाभाविक ही है। डॉ० निशंक जी पहाड़ी क्षेत्र से संबंध रखते हैं, तो उनके साहित्य में पहाड़ की ऊँचाइयों के साथ-साथ यहां फैली बुराइयों को भी सामने लाने का प्रयास किया गया है। शराब जैसे दुर्व्यसन का वर्णन करते हुए लेखक कहता है—गीता शराब तो पहाड़ की सबसे बड़ी समस्या बन गई है।

अंग्रेज चले गये लेकिन फैशन यहीं छोड़ गये। यहां नामकरण से लेकर शमसान तक सभी शराब की चपेट में आ चुके हैं। शराब से यहां अब तक कोई नहीं बच पाया है। सूर्य अस्त पहाड़ मस्त की कहावत पूरी तरह से यहां फिट बैठती है। यहां के लोग क्रोध नहीं दया के पात्र हैं। बहुत बड़े जन जागरण एवं जन चेतना की आवश्यकता है। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी द्वारा अपने उपन्यासों में वर्णित क्षेत्रीय चिंताएं निम्नलिखित शीर्षकों पर संकलित की गई हैं।

बेकारी एवं बेरोजगारी— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने अपने समस्त उपन्यासों में बेरोजगारी और बेकारी की बात की है। आज के समय में पढ़े-लिखे युवा रोजगार की तलाश में भटक रहे हैं। डिग्रियां एकत्रित करते-करते उम्र बीत जाती है, किंतु वे किसी काम नहीं आती है।

बेरोजगारी के इसी माहौल से अवगत लेखक ने कराया है। उसके पीछे लेखक का तात्पर्य है कि व्यक्ति केवल नौकरी पाने के लिए ही न पढ़े बल्कि वह

रोजगार पैदा करने वाला बने ताकि औरों को उत्साह और प्रेरणा मिले। पढ़-लिखकर भी ज्यादातर युवा बेरोजगार ही रहते हैं। पहाड़ से ऊंचा उपन्यास की निम्न पंक्तियां यही कहती हैं—भाई प्रकाश उससे चार साल बड़ा था। मां की तबियत बहुत अच्छी नहीं रहती थी घर की खेती, पशु आदि कार्यों का बोझ शांति के कंधों पर ही था। प्रकाश यद्यपि बीएससी पास कर चुका था, पर अभी भी बेरोजगार ही था। एम0 ए0 प्राइवेट से पढ़ रहा था, किंतु उसका मन घर—गांव में कम लगता था।

ऐसे ही एक अन्य उदाहरण में भी बेकारी को उजागर किया गया है— वह समझता था कि प्रकाश उससे अधिक पढ़ा लिखा है। उसने सोचा मैं इण्टर पास व प्रकाश बी0 ए0 है देर सवेर कहीं कोई सरकारी नौकरी मिल ही जाएगी, फिर प्रकाश एम0 ए0 भी कर रहा है। कुछ नहीं तो मास्टरी तो मिल ही जाएगी, किंतु वह इस बात से भी अनभिज्ञ नहीं था कि पढ़े लिखे लोगों की क्या स्थिति है। डिग्री लिए बेकारों की भीड़ दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है।

शहरीकरण— डॉ0 'निशंक' जी ने बताया है कि शहरीकरण की समस्या आज एक प्रमुख समस्या बन चुकी है। लोग अपनी पैत्रिक भूमि को छोड़कर सुंदर खुशहाल जीवन त्यागकर, हरियाली व स्वच्छता वाले वातावरण को भूलकर धूल, शोर—शराबा वाले प्रदूषण युक्त भीड़ में भागे जा रहे हैं। लेखक ने इस समस्या का वर्णन करते हुए लिखा है—

वास्तव में भौतिकवादी चकाचौंध से दूर ऐसे नैसर्गिक स्वस्थ वातावरण में कार्य करने का परम आत्मिक आनंद है। मुझे समझ में नहीं आता है कि क्यों लोग शहरों की तरफ भागे जा रहे हैं। धुआं, धूल, भीड़ —भड़ाका, प्रदूषण, कोलाहल, कृत्रिम संबंध, कृत्रिम भोजन, कृत्रिम व्यवहार और न जाने क्या—क्या कृत्रिम ही तो है।

संवेदनहीनता— डॉ0 रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने लिखा है कि नैतिक मूल्यों के गिरते स्तर के कारण और आज मनुष्य के अंदर संवेदनहीनता ने घर कर दिया है। आधुनिकता के पीछे भाग-भाग कर आज भारतीय अपनी संस्कृति को भूलता जा रहा है। उसमें किसी के प्रति कोई संवेदनशीलता नहीं बची है। डॉ0 निशंक जी लिखते हैं कि इंसान भी बड़ा अवसरवादी जीव है। जब मानव जीवन चाहिए होता है, तो

परमार्थ का जाप कर प्रभु को रिझा लेता है और सांसारिक ऐशो आराम मिलते ही परमार्थ को छोड़िए प्रभु को भी भूल जाता है और महास्वार्थी बन जाता है।

बस अपने में ही मस्त दुनियादारी से कोई मतलब नहीं रहता है, केवल एक ही सिद्धांत को मानता है— बस अपना काम बनता भाड में जाए जनता। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने छूट गया पडाव उपन्यास में बिनगढ गांव की शिक्षिका सरोज का चरित्र—चित्रण करते हुए उल्लेख किया है। कि उसने तो प्रारम्भ से शहरी जीवन देखा था, जहां बगैर मतलब के किसी को किसी से कोई लेना—देना ही नहीं होता कोई संवेदना भी नहीं।

प्रशासनिक लापरवाही— डॉ० 'निशंक' जी के अनुसार कोई भी सरकारी कार्य तीव्र गति से नहीं होता है उसमें दिन, महिने व वर्षों लग जाते हैं। प्रशासन के किसी भी विभाग पर अगर नजर दौड़ाई जाय तो स्पष्ट हो जाता है कि कर्मचारियों में सबसे ज्यादा निकम्मापन के कारण ही सरकारी कामों में देरी होती है जिससे सारी सरकार, सारा तंत्र बदनाम होता है और इसका जिम्मेदार प्रशासन ही होता है।

अगर प्रशासन किसी भी विभाग में पूर्णतः अनुशासन अपनाए तो सरकारी कार्यों में कर्मचारियों की स्थिति ही कुछ अलग होगी और यह होना भी चाहिए। लेखक एक सरकारी स्कूल का उदाहरण देते हुए प्रशासन की पोल खोलने की कोशिश की है ताकि प्रशासन व जनता दोनों जागरूक हों।

निष्कर्ष— डॉ० 'निशंक' जी साहित्य के क्षेत्र में लगातार संघर्षरत हैं। यह आम व्यक्ति के बस की बात नहीं। उनके साहित्यों में राष्ट्रीयता के स्वरो व मानवता की झलक दिखाई देती है। उन्होंने भारतीय समाज और उसकी जीवन शैली को बड़ी संवेदनशीलता के साथ न केवल महसूस किया बल्कि उसको शब्दों का रूप भी दिया है। भले ही जीवन में महत्वाकांक्षा और शौक ने उन्हें एक शिक्षक और राजनेता के रूप में व्यस्त किया हो पर उन्होंने अपने अंदर के लेखक को थमने नहीं दिया। सक्रिय राजनीति में रहते हुए भी जिस प्रखरता से डॉ० 'निशंक' जी साहित्य में लगातार सक्रिय हैं वह एक देशभक्त एवं राष्ट्रवादी व्यक्तित्व के धनी व्यक्ति हैं।

संदर्भ

1. राधाकृष्ण दिक्षित— स्वातन्त्रयोत्तर हिंदी उपन्यासों में राष्ट्रवाद पृष्ठ 2
2. पुखराज जैन— प्रमुख राजनीतिक विचारक पृष्ठ
3. रमेश चंद कौशिक— नागरिक शास्त्र एवं भारतिय संविधान पृष्ठ 85
4. रविन्द्र गासो— भीष्म साहनी की उपन्यासिक चेतना पृष्ठ 13
5. सरोज चौरसिया — मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में युगचेतना पृष्ठ 71
6. श्री शंभु रत्न त्रिपाठी— समाजशास्त्र के आधार पृष्ठ 32
7. रत्नाकर पाण्डेय— हेन्दी साहित्य, सामाजिक चेतना पृष्ठ 153
8. श्याम सुन्दर दास— हिन्दी शब्द सागर पृष्ठ 4957
9. मैथिलीशरण गुप्त— जयभारत पृष्ठ 55
10. शिवदत्त ज्ञानी— भारतीय संस्कृति पृष्ठ 200
11. डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल— कला और संस्कृति पृष्ठ 71
12. सुनिती— दिनकर के काव्य में चेतना पृष्ठ 03
13. वही— पृष्ठ 11
14. डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' — पल्लवी पृष्ठ 23
15. वही — पृष्ठ 45
16. वही — पृष्ठ 39
17. डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' — मेजर निराला पृष्ठ 12
18. वही — पृष्ठ 13
19. वही — पृष्ठ 10
20. वही — पृष्ठ 15

21. डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' – भागोवाली पृष्ठ 38
22. वही – पृष्ठ 28
23. डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' – प्रतिज्ञा पृष्ठ 52
24. वही – पृष्ठ 16
25. डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' – छूट गया पढाव पृष्ठ 35
26. वही – पृष्ठ 36
27. डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' – पहाड से ऊँचा पृष्ठ 45
28. वही – पृष्ठ 54
29. वही – पृष्ठ 8, 9
30. डॉ० रवीन्द्र कुमार शर्मा— अधिगमकर्ता का विकास एवं शिक्षण —अधिगम क्रिया पृष्ठ 1
31. वही—पृष्ठ 2
32. डॉ० जगदीश शर्मा— मूल्य, पर्यावरण और मानव अधिकार शिक्षण पृष्ठ 5

संस्कृति का स्वरूप

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के अनुसार विश्व की सर्वश्रेष्ठ संस्कृति भारत की ही है। यह कोई गर्वोक्ति नहीं वास्तविकता है। भारतीय संस्कृति को आदर्शता के कारण ही देव संस्कृति कह कर सम्मानित किया गया है। डॉ० 'निशंक' जी के अनुसार भारतीय संस्कृति हमारी भारतीय मानव जाति के विकास का उच्चतम स्वरूप कहा जा सकता है। इसी की परिधि में विश्व के सारे राष्ट्रों के विकास के—वसुधैव कुटुंबकम्— के सारे सूत्र आ जाते हैं।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के उपन्यासों में उन्होंने भारतीय संस्कृति को बहुत ही सुन्दर ढंग से दर्शाया है। उनके समस्त उपन्यासों में भारतीय संस्कृति की अनुपम झलक देखने को मिलती है।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी द्वारा वर्णित भेष—भूषा, खान—पान, रहन—सहन, जीवन शैली, परंपराएं, कला, शिक्षा, संस्कार, भाषा, बोली, रंग—रूप, धार्मिक मान्यताएं, विश्वास आदि का डॉ० 'निशंक' जी ने विशुद्ध भारतीय संस्कृति में सुन्दर ढंग से वर्णन किया है।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के समस्त उपन्यासों में उन्होंने वर्णन किया है कि भारतीय संस्कृति प्राचीन एवं गौरवपूर्ण है, विश्व संस्कृति के इतिहास में इसका विशिष्ट स्थान है। इस संस्कृति को समृद्ध और समुन्नत बनाने में हमारे ऋषि मुनियों, साधु—संतों, दार्शनिकों—विचारकों आदि का महत्वपूर्ण योगदान है।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के विचार से महर्षि वेदव्यास, बाल्मिकी, कालिदास, स्वयंभू, पुष्पदंत, संत कबीरदास, गुरुनानकदेव, गुरुगोविन्दसिंह, रामधारी सिंह दिनकर, जय शंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा, आदि ऐसे महान संत, कवि, लेखक हुए थे, जिन्होंने भारतीय संस्कृति में जीवन्तता प्रदान की है।

भारतीय संस्कृति को राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर साहित्य के माध्यम से प्रकाशित किया गया है। संस्कृति समूह के साथ—साथ जीवन व्यतीत करने के लिए

आवश्यक है कुछ नियम, विधान, व्यवहार कि जो व्यक्ति के पारस्परिक संबंधों, व्यवहारों व क्रियाओं को निर्देशित व नियमित कर सकें।

सामूहिक जीवन के ये नियम, विधान, व्यवहार प्रणालियां, मूल्य, मानक एवं आचार-विचार व्यक्ति की सांस्कृतिक विरासत का अंग होते हैं। भारतीय संस्कृति हमारी मानव जाति के लिए विकास का एक उच्चतम घटक कही जा सकती है।

भारतीय संस्कृति की परिधि में सारे विश्व एवं राष्ट्र के विकास के वसुधैव कुटुम्बकम् के सारे सूत्र आ जाते हैं। संस्कृति का सीधा संबंध समाज के विकास कार्यों से है। समाज व प्रकृति के बीच संबंध होने के कारण संस्कृति का सम्बन्ध प्रकृति से भी गहरा है।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के अनुसार संस्कृति किसी भी देश की आत्मा है संस्कृति से किसी भी देश का सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, बौद्धिक विकास संभव है। किसी समाज की संस्कृति जहां आंतरिक विशेषता एवं सिद्धांत के रूप में देखने को मिलती है, वही सभ्यता बाह्य विशेषता एवं व्यवहार के रूप में प्रकट होती है।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के उपन्यासों में जहां एक ओर धर्म, राष्ट्रीयता, उत्सव एवं त्यौहार आदि का विवरण मिलता है। वहीं उनमें मंदिर पूजा पाठ, संगीत, साहित्य आदि के अनेक प्रसंग भी हैं, जो लेखक की सांस्कृतिक एकता तथा भावात्मक एकता के परिचायक हैं।

डॉ० 'निशंक' जी का उपन्यास कृत्घ्न में इन सबका वर्णन है। यह सत्य है कि उपन्यास साहित्य में समाज और समकालीन संस्कृति अपनी पूरी सिद्धता के साथ विध्यमान रहती है। उपन्यासकार एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहने के कारण उसके साहित्य में कल्पना एवं विचार शक्ति, समाज और संस्कृति से घुल-मिलकर अभिव्यक्ति होती है।

हिंदी उपन्यासों में भारतीय समाज एवं संस्कृति अपनी संपूर्ण कलात्मकता के साथ अभिव्यक्ति की जाती हैं। चाहे वो शहरी समाज की संस्कृति हो या ग्रामीण समाज की संस्कृति। यह भी सच है कि वे उपन्यास महान हुए हैं जो समाज और संस्कृति की आवाज बनते हैं।

समाज और संस्कृति के वे ही तत्व महत्वपूर्ण समझे जाते हैं जो समय-समय पर जनता का सही मार्ग दर्शन करते हैं। उपन्यास का समाज और संस्कृति से गहरे संबंध का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि मानव संस्कृति के साथ-साथ समाज में जो बदलाव आता है, उसका प्रभाव सबसे अधिक साहित्य पर भी पड़ता है। उपन्यास समाज के समस्त स्वरूपों, विषमताओं तथा जीवन संघर्षों की सफल अभिव्यक्ति करता है। इस प्रकार की यह अभिव्यक्ति अन्य स्वरूपों में संभव नहीं है।¹

5.1 संस्कृति की परिभाषा एवं प्रकार

संस्कृति शब्द संस्कृत भाषा के कृ धातु से त्कन प्रत्यय और सम उपसर्ग को जोड़कर बना है, संस्कृत्कन-संस्कृति वास्तव में संस्कृति शब्द का अर्थ अत्यन्त ही व्यापक है। कुछ विद्वानों के अनुसार संस्कृति संस्कार का रूपान्तरित शब्द है। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के शब्दों में संस्कृति का अर्थ सुधरी हुई स्थिति होती है। मनुष्य स्वभावतः प्रगतिशील प्राणी है। वह अपनी बुद्धि के प्रयोग से अपने चारों तरफ की प्राकृतिक परिस्थितियों को निरंतर सुधारता और विकास करता रहता है। वह प्रत्येक जीवन पद्धति, रीति-रिवाज, रहन-सहन, अचार-विचार, नवीन अनुसंधान एवं आविष्कार कर पशुओं और जंगलियों के दर्जे से ऊपर उठकर सभ्य बना है। सभ्यता संस्कृति का अंग है। संस्कृति का शब्दार्थ संस्कार की हुई अर्थात् उत्तम या सुधरी हुई स्थिति। मनुष्य स्वभावतः प्रगतिशील प्राणी है। यह बुद्धि के प्रयोग से अपनी चारों ओर प्राकृतिक परिस्थिति में निरंतर परिस्कार करता रहता है।

ऐसी प्रत्येक जीवन पद्धति, रीति रिवाज, रहन-सहन, अचार-विचार नवीन अचार-विचार, नवीन अनुसंधान और आविष्कार जिसमें मनुष्य पशुओं और जंगलियों के दर्जे से ऊपर उठता है तथा सभ्य बनता है, वही संस्कृति है।

भारतीय संस्कृति को संस्कृतिकरण की प्रक्रिया ने बड़े व्यापक रूप में प्रभावित किया है। इस विषय में प्रसिद्ध समाजशास्त्री श्यामाचरण दुबे जी श्रीनिवास की संस्कृतिकरण की अवधारणा का उल्लेख करते हुए स्पष्ट करते हैं। संस्कृतिकरण की प्रक्रिया वह है जिसके अंतर्गत वर्ण व्यवस्था में नीचे धरातल की जातियां उच्च वर्णों की जीवन शैली, विश्वास और कर्मकाण्ड अपनाता है।

¹ प्रो० रमन बिहारी लाल एवं डॉ० नीरू मल्होत्रा — उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा पृष्ठ 350

यह प्रक्रिया कई समाजों में देखी गई है। कुछ इसके द्वारा ऊंचे स्थान पर पहुंच गए अनेक को तीव्र सामाजिक विरोध और दमन सहना पड़ा। इस प्रक्रिया से जिन लोगों ने समाज में ऊंचा स्थान प्राप्त किया वे लोग बाद में स्वयं ही जातियों से घृणा करने लगे यहां तक कि इन लोगों ने अपनी ही जाति के लोगों से मिलना-जुलना बंद कर दिया और सहानुभूति भी कम हो गई।

सर्वदा सत्य है कि भारतीय समाज एवं संस्कृति में बाहरी तत्वों को पचाने की अद्भुत शक्ति रही है। दिनकर ने हिन्दु संस्कृति की इस उदारता की चर्चा करते हुए लिखा है कि नीग्रो से लेकर हूणों तक इस देश में रहने वाली सभी जातियां इसी लचीलेपन के कारण खप गई हैं। कालक्रम में हिंदु धर्म के भीतर से उसके खिलाफ बौद्ध धर्म अलग हुआ मगर धीरे-धीरे बौद्ध धर्म भी हिंदु धर्म का ही अनुसरण करता दिखाई देता है।

सनातन संस्कृति ने अनेक संस्कृति पाकर अपनी ताकत बढ़ाई है। यहां तक कि इस्लाम जो अपने व्यक्तित्व को स्वतंत्र रखने का मंसूबा रखकर चला था भारत में आकर परिवर्तित हो गया। सभ्यता से मनुष्य के भौतिक क्षेत्र की प्रगति होती है और संस्कृति से मानसिक क्षेत्र का विकास होता है। मनुष्य केवल भौतिक परिस्थितियों में सुधार करके ही संतुष्ट नहीं रह सकता है। वह सिर्फ भोजन से ही नहीं जीता है, उसके शरीर के साथ उसका मन और आत्मा अतृप्त ही रहेंगे जिसे संतुष्ट करने के लिए मनुष्य विकास और उन्नति करता है उसे संस्कृति कहते हैं। इस प्रकार मानसिक क्षेत्र में उन्नति ही उसके प्रत्येक सम्यक कृति की संस्कृति बन जाती है।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के अनुसार किसी भी राष्ट्र की महानता एवं गरिमामय व्यक्तित्व का निर्माण उसकी उत्तम संस्कृति एवं सामाजिक परंपराओं पर निर्भर करता है। भारतवर्ष अपनी विशाल व आदर्शमयी जीवन धारणा के कारण ही पूरे विश्वभर में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

भारत का प्राकृतिक दृश्य, जीवन दर्शन और लोगों का सौन्दर्य, उनकी आत्मीयता, विभिन्न धर्मों, साम्प्रदायों, मतों, विचारों, और भावनाओं की विविधताओं के बावजूद भी राष्ट्र के संदर्भ में एकमत होना यहां की संस्कृति की महानता है।

संस्कृति के विषय में विद्वानों के मत निम्न हैं —

संस्कृति का शब्दार्थ— “संस्कृति शब्द का अर्थ संस्कार की हुई अर्थात् उत्तम या सुधरी हुई स्थिति से है। मनुष्य एक प्रगतिशील प्राणी है वह अपनी बुद्धि के बल पर अपने चारों ओर प्राकृतिक परिस्थितियों में उन्नति करता है। ऐसी जीवन-पद्धति, रीति-रिवाज, रहन-सहन, अचार-विचार, नवीन अनुसंधान और आविष्कार जिससे मनुष्य अन्य प्राणियों में श्रेष्ठ और सभ्य बना रहे यही संस्कृति है।”

डॉ० वासुदेव अग्रवाल के शब्दों में— “संस्कृति मनुष्य के भूत, वर्तमान, और भावी जीवन का सम्पूर्ण प्रकार है। हमारे जीवन का ढंग संस्कृति है। जीवन की नाना विधि रूपों का समुदाय ही संस्कृति है वे इसे मानव जीवन का प्रेरक शक्ति मानते हुए विश्व के प्रति अनन्त मैत्री की भावना कहते हैं। उनके अनुसार— विचार और कर्म के क्षेत्र में जो राष्ट्र का सृजन है वही उसकी संस्कृति है।”

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में— “मनुष्य की श्रेष्ठ साधनाएं संस्कृति है। उनके मत में संस्कृति मनुष्य की विविध साधनाओं और सुन्दर परिणति को ही भारतीय संस्कृति कहते हैं। जीवन के प्रत्येक सामूहिक दृष्टिकोण से संस्कृति का निर्माण होता है।”

रामधारी सिंह दिनकर के शब्दों में— “संस्कृति एक ऐसा गुण है, जो हमारे जीवन में छाया हुआ है। यह एक आत्मिक गुण है, जो मनुष्य के स्वभाव में भी उसी प्रकार व्याप्त है जिस प्रकार फूलों में सुगंध और दूध में मक्खन। इसका निर्माण एक या दो दिन में नहीं बल्कि युग-युगांतर में होता है।”

जिस प्रकार संस्कृतिजन्य निर्माण कठिन है। उसी प्रकार इसका नष्ट होना भी कठिन है। संस्कार हजारों सालों में निर्मित होते हैं। हमारे राष्ट्र का जीवन मूल्य मूलतः संस्कृति की साधना का प्रतिफल है, जो सदियों से मानवता के मनोरम भाव के रूप में विद्यमान है। इसलिए भारतीय संस्कृति सराहनीय है।

डॉ० भगवानदास के अनुसार— “मानसिक क्षेत्र में मनुष्य की प्रत्येक उन्नति संस्कृति का अंग है। इसमें धर्म, दर्शन, सभी ज्ञान-विज्ञान और कलाएं तथा सामाजिक और राजनीतिक संस्थाओं एवं प्रथाओं का समावेश होता है।”

डॉ० विद्या निवास मिश्र का कथन— “संस्कृति एक प्रकार की सकारात्मक परिणति है। वस्तुतः, मनुष्य या मनुष्य का कोई व्यवहार हो सबका विशिष्ट उद्देश्य से जब परिष्कार किया जाता है या परिष्कार की परिकल्पना की जाती है, तो वह वस्तु वह

मनुष्य या उसका व्यवहार सभी सुसंस्कृत हो जाते हैं। संस्कृति को मनुष्य रचता है यह जितना सही है, उतना ही सही यह है कि संस्कृति मनुष्य को रचती है।”

श्री गोपालस्वरूप पाठक के अनुसार— “भौतिक साधन, विचार धाराएं, आदर्श तथा आस्थाएं, भावनाएं, शुद्ध मूल्य एवं सामाजिक रीति-रिवाज जो किसी भी समाज में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को विरासत में मिलते हैं, उन्हें के सामूहिक रूप के संचयन को संस्कृति कहते हैं।”

मनुस्मृति के अनुसार— “लोक की वृद्धि के लिए ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र की सृष्टि क्रमशः ब्रह्मा जी के मुख, बाहू, उरु और पैर से हुई।”²

श्री अरविन्द के अनुसार— “संस्कृति मानव की जीवन के प्रति चेतना की अभिव्यक्ति है।”

पाश्चात्य विद्वानों ने संस्कृति की परिभाषा निम्न दी है—

ओटावे के अनुसार— “किसी समाज की संस्कृति से तात्पर्य है उस समाज की सम्पूर्ण जीवन पद्धति।”

रेडफिल्ड के अनुसार— “रेडफिल्ड ने संस्कृति की परिभाषा इस प्रकार दी है— संस्कृति कला और उपकरण में जाहिर परंपरागत ज्ञान का वह संगठित रूप है, जो परंपरा के द्वारा संरक्षित होकर मानव समूह की विशेषता बन जाता है।”

पावेल के शब्दों में— “संस्कृति सीखा हुआ व्यवहार है, जो सीखा जा सके वह संस्कृति है।”

उपरोक्त अर्थ एवं परिभाषाओं से स्पष्ट है कि संस्कृति उस सामाजिक धरोहर के रूप में स्वीकार करना उचित है जो पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होती रहती है। यह सीखा हुआ व्यवहार तथा समाज के सभी क्षेत्र, धर्म, दर्शन, ज्ञान, विज्ञान तथा कला एवं राजनीतिक, सामाजिक संस्थाएं आती हैं।

संस्कृति के प्रकार:—

संस्कृति दो प्रकार की है —

1. भौतिक संस्कृति ।

2. अभौतिक संस्कृति ।

भौतिक संस्कृति— मनुष्य द्वारा निर्मित भौतिक तथा मूर्त वस्तुओं को भौतिक संस्कृति में शामिल किया जाता है। मनुष्य ने विभिन्न प्रकृति प्रदत्त वस्तुओं व शक्तियों को परिवर्तित करके अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप बनाया है भौतिक संस्कृति के अंतर्गत आते हैं।

प्रो० बीयरस्टीड ने भौतिक संस्कृति के तत्वों को निम्नलिखित वर्गों में विभाजित किया है। कार, स्कूटर, पेंसिल, सडक, वस्त्र, मशीनें, उपकरण आदि हैं।

भौतिक संस्कृति की विशेषताएं —

1. भौतिक संस्कृति मूर्त होती है।
2. इसमें निरंतर वृद्धि होती रहती है।
3. भौतिक संस्कृति मापी जा सकती है।
4. भौतिक संस्कृति में परिवर्तन शीघ्र होता है।
5. इसकी उपयोगिता एवं लाभ का मूल्यांकन किया जा सकता है।
6. भौतिक संस्कृति में बिना परिवर्तन किये इसे ग्रहण नहीं किया जा सकता है।

उदाहरण के लिए मोटर गाडी, पोशाक तथा कपडा आदि।

अभौतिक संस्कृति— अभौतिक संस्कृति के अतर्गत उन सभी अभौतिक अमूर्त वस्तुओं को समाहित किया जाता है जिनके कोई माप तोल, आकार एवं रंग आदि नहीं होते हैं। अभौतिक सांस्कृतिक समाजीकरण एवं सीखने की प्रक्रिया द्वारा एक पीढी से दूसरी पीढी में हस्तांतरित होती रहती है, इस प्रकार से कहा जा सकता है, कि जिसका कोई मूर्त रूप नहीं होता है, बल्कि विचारों एवं विश्वास के माध्यम से मानव व्यवहार को नियंत्रित करना एवं निरंतर आगे बढ़ाना है।³

डॉ० 'निशंक' जी के विभिन्न उपन्यासों के अध्ययन से हमें यह ज्ञात होता है कि अभौतिक संस्कृति के तत्वों को प्रो० बीयरस्टीड ने सभी आदर्श नियमों में निम्न वर्गों में बांटा है—

1. कानून ।

³डॉ० सीमा शर्मा —भारतीय संस्कृति एक अध्ययन पृष्ठ 24

2. अधिनियम ।
3. नियम ।
4. नियमन ।
5. प्रथाएं ।
6. जनरीतियां ।
7. लोकाचार ।
8. निषेध ।
9. फैशन ।
10. संस्कार ।
11. कर्मकांड ।
12. अनुष्ठान ।
13. सदाचार ।

अभौतिक संस्कृति की विशेषताएं –

1. अभौतिक संस्कृति अमूर्त होती हैं।
2. इसकी माप करना कठिन है।
3. अभौतिक संस्कृति जटिल होती है।
4. अभौतिक संस्कृति की उपयोगिता एवं लाभ का मूल्यांकन करना कठिन कार्य है।
5. अभौतिक संस्कृति में परिवर्तन बहुत ही धीमी गति से होता है।
6. अभौतिक संस्कृति मनुष्य के आध्यात्मिक एवं आन्तरिक जीवन से संबंधित होती है।

5.2 संस्कृति का वर्तमान स्वरूप

संस्कृति का वर्तमान स्वरूप परिवर्तनशील है। वर्तमान समय में आचार-विचार पर पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव पड़ा। संयुक्त परिवार प्रथा के स्थान

पर परिवारों का पृथक्करण होने लगा। इस संस्कृति में कला और विज्ञान के नवीन साधनों का आरंभ हुआ। राजनीतिक तथा सामाजिक व्यवस्था में मूल क्रांति का सूत्रपात हुआ और इसके परिणाम स्वरूप पश्चिमी यूरोप एवं भारत में एक नवीन चेतना का संचार हुआ।

- इस बदलती हुई संस्कृति में महिलाओं के प्रति भी सोच बदली और उसे सशक्तिकरण के बीच ले जाने का प्रयास किया जाने लगा। इस प्रकार वर्तमान में सांस्कृतिक, मानवतावादी, व्यक्तिवादी स्वरूप देखने को मिला।
- आधुनिकता की जड़ें यूरोपीय पुनर्जागरण से जुड़ी हैं। यूरोपीय पुनर्जागरण में नए-नए अन्वेषण और अविष्कार हुए धर्म दर्शन का नया संस्करण सामने आया।
- कला और विज्ञान के नवीन साधना का श्री गणेश हुआ, राजनीतिक तथा सामाजिक व्यवस्था में मौलिक क्रांति का सूत्रपात हुआ अब इसके परिणाम स्वरूप पश्चिमी यूरोप एवं एशिया भारत में एक नवीन चेतना का संचार हुआ।
- मानव के विकाशील एवं सृजनात्मक स्वभाव पर बल देते हुए धर्म एवं तर्क, विज्ञान, तर्क का ही नहीं वरन प्राच्य एवं पाश्चात्य विचारधाराओं के समन्वय का प्रयास किया गया।
- इस युग में सामाजिक आचार-विचार पर पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव पडा है। संयुक्त कुटुंब प्रथा के स्थान पर परिवारों का पृथक्कीकरण होने लगा।
- धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांत ने धर्म को पीछे धकेल दिया। विज्ञान ज्ञान के अपेक्षित स्वरूप की अपेक्षा कर दी भौतिकवाद उभरकर सामने आया भारतीयों का दृष्टिकोण अपने मूल लक्ष्य से भटक गया।
- संस्कृति के नए स्वरूप में गाँवों की संस्कृति को छोड़कर शहरीकरण देखा गया। इस पर विशेष ध्यान दिया जाने लगा। शहरीकरण से पलायन भी देखा गया। इस प्रकार लोग पुरानी संस्कृति को छोड़कर आधुनिक संस्कृति को अपनाने लगे।
- पीएम मोदी का नेतृत्व सांस्कृतिक पुनर्जागरण को बढ़ावा देने, लोगों को उनकी विरासत से दोबारा जोड़ने में सहायक रहा है।
- पीएम मोदी की पहल मंदिरों के निर्माण और जीर्णोद्धार से भी आगे तक फैली हुई है। इसमें सांस्कृतिक पुनरुद्धार के लिए एक समग्र दृष्टिकोण शामिल है, जिसमें धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा देना और वह जहाँ भी जाते हैं, भारत की लूटी और चुराई गई सांस्कृतिक विरासत को वापस लाते हैं। इस बात का प्रमाण है

कि पीएम मोदी भारतीय संस्कृति और इसके मूल को फैलाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर उपयोग कर रहे हैं।

- आज की संस्कृति मानव के विकास व सृजनात्मक स्वभाव पर बल देती है और वर्तमान संस्कृति के नये स्वरूप में गांवों की संस्कृति को छोड़कर शहरीकरण देखा गया। इस पर विशेष ध्यान दिया जाने लगा शहरीकरण के कारण पलायन भी देखा गया। इस प्रकार लोग पुरानी संस्कृति को छोड़कर आधुनिक संस्कृति को अपनाने लगे।
- अतः यह सपष्ट रूप से उल्लेखनीय है कि भारत में कभी भी एक ही संस्कृति पूर्ण से व्यापक नहीं रही और नहीं शायद किसी भी बड़े देश में कभी भी एक ही संस्कृति रही है। इस देश में आध्यात्मिक संस्कृति की प्रमुखता रही है। अतः संस्कृति में बदलाव निरंतर रहेगा।

5.3 डॉ० 'निशंक' जी के उपन्यासों में सांस्कृतिक चेतना

डॉ० रमेश पोखरियाल निशंक जी के समस्त उपन्यासों से हमें सांस्कृतिक चेतना का वर्णन मिलता है। संस्कृति वह रीति-रिवाज है जो कि व्यक्ति के जन्म से लेकर मृत्यु के बाद तक किये जाते हैं। अर्थात् इसको संस्कार भी कहा जा सकता है। जब बच्चा जन्म लेता है तो अनुष्ठान किया जाता है, और उसके बाद विवाह संस्कार और उसके बाद अंतिम संस्कार जो कि मनुष्य की मृत्यु के बाद ही होता है।

डॉ० 'निशंक' जी का साहित्य सांस्कृतिक चेतना से ओत-प्रोत है। उन्होंने भारतीय संस्कृति को भी बढावा देने के साथ-साथ भारतीय संस्कृति को भी बचाने का भी लगातार प्रयास किया है।

डॉ० 'निशंक' जी के उपन्यास मेजर निराला के पात्र मेजर अपने बेटे पर गोली चलाता है जो कि देश भक्ति एवं मातृभूमि की रक्षा का ही एक सर्वोत्तम उदाहरण है। उसी प्रकार मेजर का बेटा भी सेना में भर्ती होकर पहाड की सैनिक परम्परा वाली संस्कृति को दोहराता। वीरा उपन्यास में भी वीरा नारी शक्ति की परिचायक होने के साथ-साथ समझदार व जिम्मेदारी से भी परिपूर्ण है जो कि भारतीय संस्कृति की परम्परा की झलक है। निशांत उपन्यास में भी मिताली पारिवारिक जिम्मेदारियों के चलते सबको पढा लिखाकर भारतीय संस्कृति का उत्तम

उदाहरण प्रस्तुत करती है। और शेखर भी अंत में सुधर कर परम्परागत भारतीय संस्कृति को दर्शाता है।⁴

छूट गया पढाव में भी सरोज एक विद्यालय की शिक्षिका के जीवन के उतार-चढाव और पहाडी गाँव के लोगों की शिक्षा के प्रति अपने समर्पण को दर्शाना भी भारतीय संस्कृति का अनुपम उदाहरण है। अपना-पराया उपन्यास में भी डॉ० निशंक जी ने पहाडी संस्कृति को उजागर करते हुए पर्वतीय अंचल के रहन-सहन, सामाजिक वर्णन, भेष-भूषा का वर्णन भी पर्वतीय संस्कृति या भारतीय संस्कृति का ही उल्लेख किया।

पल्लवी उपन्यास में भी राष्ट्रीय एवं पर्वतीय संस्कृति का उल्लेख किया है। संयुक्त परिवार, मानव प्रेम, सहयोग आदि संस्कृति का ही उल्लेख है। कृतघ्न उपन्यास में भारतीय परम्परा का वर्णन सुकन्या के चरित्र में दिखता है। उसी प्रकार से भागोवाली उपन्यास, जिंदगी रुकती नहीं उपन्यासों में डॉ० 'निशंक' जी ने सांस्कृतिक चेतना का वर्णन किया है। डॉ० 'निशंक' जी उपन्यासों में सांस्कृतिक चेतना का उल्लेख निम्नलिखित रूपों में है—

- संस्कार वर्ण ।
- रीति रिवाज एवं परम्परा ।
- शकुन-अपशकुन ।
- क्षेत्रीय संस्कृति का वर्णन ।
- सांस्कृतिक बदलाव ।
- पर्व या त्योहारों के संबंध वर्णन ।

संस्कार वर्णन— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के समस्त उपन्यासों में या समस्त कृतियों में सनातन संस्कृति का या संस्कारों का बहुत ही विस्तृत वर्णन किया है। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के अनुसार उत्तम संस्कारों से ही वास्तविक जीवन जिया जा सकता है, संस्कारों से रहित मनुष्य एक पशु के समान होता है। डॉ० 'निशंक' जी ने अपने सम्पूर्ण साहित्य में संस्कारों का बहुत सुंदर ढंग से वर्णन या प्रयोग किया है। लेखक ने अपने उपन्यास पल्लवी और निशांत या सभी

⁴डॉ० सहाय प्रेमी —भाषा विज्ञान पृष्ठ 28

उपन्यासों में भारतीय संस्कारों को चित्रित करने का सुन्दर प्रयास किया है। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के उपन्यासों में सोलह संस्कारों का उन्होंने बहुत ही अच्छे ढंग से वर्णन किया है।

5.4 डॉ० निशंक के उपन्यासों में संस्कृति एवं संस्कार

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने अपने उपन्यासों में संस्कारों का बहुत ही बारीकी से वर्णन किया है। सनातन संस्कृति के अनुसार संस्कार संस्कृति प्रत्येक मनुष्य के जीवन का अभिन्न अंग है। मनुष्य के जीवन में सोलह संस्कार होते हैं जो कि मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु तक सम्पन्न होते रहते हैं।

डॉ० निशंक के उपन्यासों में संस्कृति के साथ-साथ संस्कारों का भी यत्र तत्र विवरण मिलता है। अपने पात्रों के माध्यम से वे रीति रिवाजों, परम्पराओं, खान-पान, बोली-भाषा को खूब प्रोत्साहित करते हैं।⁵

सनातन संस्कृति के अनुसार सोलह संस्कार निम्नलिखित माने गये हैं –

1. गर्भाधान संस्कार ।
2. पुंसवन संस्कार ।
3. सीमतोन्नयन संस्कार ।
4. जातकर्म संस्कार ।
5. नामकरण संस्कार ।
6. निष्क्रमण संस्कार ।
7. अन्नप्राशन संस्कार ।
8. मुंडन संस्कार ।
9. कर्णवेधन संस्कार ।
10. विद्यारम्भ संस्कार ।
11. उपनयन संस्कार ।
12. वेदारम्भ संस्कार ।

⁵ दीपक कुमार—भारतीय संस्कृति पृष्ठ 54

13. केशान्त संस्कार ।
14. सम्बर्तन संस्कार ।
15. विवाह संस्कार ।
16. अंतिम संस्कार या अंतैष्टि संस्कार ।⁶

1—गर्भाधान संस्कार— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी द्वारा लिखित उपन्यासों में वर्णित संस्कारों में गर्भाधान को सबसे पहला संस्कार माना जाता है, जब गर्भधारण होता है तो यही प्रथम संस्कार माना जाता है। गृहस्थ जीवन का प्रमुख उद्देश्य श्रेष्ठ संतानोत्पत्ति है। उत्तम संतति की इच्छा रखने वाले माता—पिता को गर्भाधान से पूर्व अपने तन—मन की पवित्रता के लिए यह संस्कार करना चाहिए।

2—पुंसवन संस्कार— गर्भस्थ शिशु के मानसिक विकास की दृष्टि से यह संस्कार उपयोगी समझा जाता है। गर्भाधान के दूसरे या तीसरे महीने में इस संस्कार को करने का विधान है। मनीषियों द्वारा यह संस्कार अत्यन्त जरूरी माना है, गर्भस्थ शिशु से संबन्धित इस संस्कार को शुभ नक्षत्र में सम्पन्न कराया जाता है।

3—सीमन्तोन्नयन संस्कार— सीमन्तोन्नयन को सीमन्तकरण या सीमन्त संस्कार भी कहते हैं। इसका अर्थ सौभाग्य संपन्न होना है, गर्भपात रोकने के साथ—साथ गर्भस्थ शिशु एवं उसकी माता की रक्षा करना भी इस संस्कार का मुख्य उद्देश्य है। इस संस्कार के माध्यम से गर्भिणी स्त्री का मन रखने के लिए सौभाग्यवती स्त्रियां गर्भवती की मांग भरती हैं, यह गर्भधारण के 6 या 8 महीने में होता है।

4—जातकर्म संस्कार— नवजात शिशु के नाकच्छेदन से पूर्व यह संस्कार सम्पन्न किया जाता है, इस संसार में आने वाले शिशु को सोने के खण्ड से मधु एवं घी चटाया जाता है। मधु एवं घी की बूंदें अभिमंत्रित करके चटाने से पिता द्वारा नौ मंत्रों का यज्ञ में उच्चारण के बाद बल, बुद्धि में निपुण होने की प्रार्थना करके मां द्वारा शिशु को स्तन पान कराया जाता है।

5—नामकरण संस्कार— जन्म के ग्यारहवें दिन यह संस्कार होता है। चूंकि जन्म के 10 दिन तक सूतक माना जाता है। इसलिए यह ग्यारहवें दिन में सम्पन्न कराया जाता है। ज्योतिष विज्ञानी नाम के आधार पर ही भविष्य की रूपरेखा तय करते हैं।

⁶डॉ० सचिदानंद शुक्ल— हिंदू धर्म के सोलह संस्कार पृष्ठ 60

6—निष्क्रमण संस्कार— इस संस्कार में शिशु को सूर्य और चन्द्रमा का दर्शन कराया जाता है। जन्म के चौथे महीने में यह संस्कार सम्पन्न कराया जाता है। इस संस्कार का तात्पर्य यही होता है कि शिशु समाज के सम्पर्क में आकर सामाजिक परिस्थिति से अवगत हो।

7—अन्नप्राशन संस्कार— इस संस्कार का अर्थ शिशु में खान—पान का आरम्भ कराना होता है। अब तक का जीवन बालक का दूध पीकर दूध पर आधारित रखता था, पर अब अन्न जिसको प्राण कहा जाता है अब शिशु को खिलाकर तम और मन को मजबूत बनाये। धर्माचार्यों ने अन्नप्राशन के लिए जन्म से 6 वें महीने को उपर्युक्त माना है।

8—चूडाकर्म संस्कार— चूडाकर्म संस्कार को मुण्डन संस्कार भी बोला जाता है। यह जन्म के 3 या 5 वें वर्ष में यह संस्कार सम्पन्न कराया जाता है। इस संस्कार को शुभ मुहूर्त में करने का विधान है। वैदिक मंत्रों से यह संस्कार सम्पन्न कराया जाता है।

9—विद्यारंभ या भूत संस्कार— विद्या अथवा ज्ञान ही मनुष्य की आत्मिक उन्नति का साधन है। सामान्यतः अन्नप्राशन के बाद विद्यारम्भ संस्कार उपर्युक्त लगता है। प्राचीनकाल में गुरुकुल की परंपरा थी, बालक को वेदाध्ययन के लिए भेजने से पहले अक्षर बोध कराया जाता था। बालक को मौखिक रूप से श्लोक, पौराणिक कथाएं आदि का अभ्यास कराया जाता था ताकि गुरुकुल में कठिनाई ना हो।

10—कर्णवेध संस्कार— हमारे मनीषियों ने सभी संस्कारों को वैज्ञानिक कसौटी पर कसने के बाद ही प्रारम्भ किया है। कर्णवेध संस्कार का आधार बिल्कुल वैज्ञानिक है। बालक की शारीरिक व्याधि से रक्षा ही इस संस्कार का मूल उद्देश्य है। कर्णवेधन से विभिन्न प्रकार की बीमारियां तो दूर होती ही हैं साथ ही कान की सुनने की क्षमता भी बढ़ती है और आभूषण लगाकर तो शोभा बढ़ती ही है।

11—उपनयन संस्कार— उपनयन संस्कार बौद्धिक विकास के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण संस्कार माना जाता है। धार्मिक और आध्यात्मिक उन्नति का इस संस्कार में पूर्ण रूपेण समावेश है। उपनयन संस्कार से ही बालक ब्रह्मचर्य की दीक्षा दी जाती है, इस संस्कार का उद्देश्य संयमित जीवन के साथ आत्मिक विकास में रत रहने के लिए बालक को प्रेरित करना है।

12— वेदारंभ संस्कार— यह संस्कार वेदारंभ से संबंधित है। इस संस्कार में बालक को विभिन्न शास्त्रों का अध्ययन शुरू करने से अभिप्राय होता है। उपनयन संस्कार के बाद बालकों को गुरुकुल में आचार्यों के पास भेजा जाता था, वेदारम्भ से पहले आचार्य अपने शिष्यों से ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करने एवं संयमित जीवन जीने की प्रतिज्ञा कराते थे।

13— केशांत संस्कार— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के साहित्य के अध्ययन के अनुसार गुरुकुल में वेदाध्ययन पूर्ण कर लेने पर आचार्य के समक्ष यह संस्कार पूरा किया जाता था, वस्तुतः यह संस्कार गुरुकुल से विदाई तथा गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने का उपक्रम है। केशों की सफाई करवाकर बालक को स्नातक की उपाधि दी जाती थी।

14— सम्वर्तन संस्कार— सम्वर्तन संस्कार में बालक की शिक्षा पूरी होने पर उसे केशांत करके आठ घड़ों के पानी से नहलाकर सुगन्धित एवं औषधीय पदार्थों से नहलाकर के मंत्रोच्चारण से ब्रह्मचर्य मेखला एवं दण्ड को छोड़ देता था। स्नातक की उपाधि आचार्य देते थे उपाधि से वह सगर्व घर जाकर गृहस्थ में प्रवेश करता था। सुन्दर वस्त्र तथा आभूषण पहनकर आचार्यों से विदा लेकर अपने घर के लिए विदा होता था।

15— विवाह संस्कार— प्राचीन काल से ही स्त्री और पुरुष दोनों के लिए यह महत्वपूर्ण संस्कार है। आठ प्रकार के विवाह हमारे शास्त्रों में वर्णित हैं। वैदिक काल में सभी आठ प्रकार के विवाह होते रहते थे। मनीषियों द्वारा विवाह संस्कार का आविष्कार करके हमारे समाज को सभ्य और सुसंस्कृत बनाया गया।

16— अंतेष्टि या अंतिम संस्कार— अंतिम संस्कार अथवा अग्नि परिग्रहण संस्कार भी कहा जाता है। मनुष्य अपने कर्मों के अनुसार फल भोगता है। इसी परिकल्पना के अनुसार मृत देह की विधिवत क्रिया होती है। जब तक आधे से ज्यादा शरीर जल ना जाय तब तक सभी को वहीं पर रहना पड़ता है।

रीति—रिवाज एवं परम्परा— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने अपने उपन्यासों में हिन्दुओं के सभी प्रकार के रीति—रिवाजों का उल्लेख किया है। जो कि भारतीय संस्कृति की अनमोल पहचान है। भारतीय रीति—रिवाज एवं परम्पराएं पूरे विश्व में प्रसिद्ध हैं। इन्हीं परंपराओं और सांस्कृतिक विरासत के कारण भारत में विभिन्नताओं

में एकता पाई जाती है, लेकिन कुछ परंपराएं आधुनिक समाज के लिए बदलनी जरूरी हो जाती हैं, जिससे आज इन परम्पराओं एवं रीति-रिवाजों में शनै-शनै बदलाव आ रहे हैं।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने भारतीय समाज की परम्परा को पुरानी परम्परा बताया है। इस परम्परा में दहेज प्रथा, बाल विवाह आदि सम्मिलित हैं, इन परम्पराओं को समाप्त करना अति आवश्यक है। कोई रीति, नीति अथवा प्रक्रिया कड़े और अनवरत प्रयोगों से गुजरने के बाद परंपरा का रूप ले पाती है, और वह संगत परिवर्तन की आशा भी साथ लेकर चलती है। स्वाभाविक है आधुनिकता की समझ के लिए परंपरा का ज्ञान आवश्यक है।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने अपने उपन्यासों में इन परम्पराओं का वर्णन करते हुए इनका बहिष्कार करने का उल्लेख बार-बार किया है। रीति-रिवाज और परंपराएं हर किसी की व्यक्तिगत आस्था का सवाल होता है। लेकिन हिन्दु धर्म में बहुत ऐसे रीति रिवाज हैं जिनका पर्याप्त वैज्ञानिक आधार होता है। हाथ जोड़कर प्रणाम करना हिन्दुओं की प्राचीन परंपरा और सभ्यता है। दोनों हाथ जोड़कर नमस्कार करने से आप सामने वाले को भी सम्मान देते हैं।⁷

कोरोना वायरस-19 महामारी के दौरान जब पूरा विश्व एक दूसरे से दूर-दूर भागे जा रहा थे, जिससे हाथ भी नहीं मिला सकते थे। अतः सम्मान और अभिवादन के लिए पूरे विश्व में भारतीय हाथ जोड़ने की परंपरा को बड़े-बड़े राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, नेता, अभिनेता, सेलीब्रिटी या कलाकार, महान खिलाड़ियों द्वारा एक दूसरे से मिलते समय भारतीय परंपरा हाथ जोड़कर एक दूसरे का अभिवादन सहर्ष स्वीकारा गया। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने अपने समस्त उपन्यासों में प्रमुख भारतीय परंपराओं को निम्नलिखित शीर्षकों पर उल्लेख करके बताया है—

1— हाथ जोड़ना— हाथ जोड़कर नमस्कार करते समय सभी उंगलियों के शीर्ष एक दूसरे के संपर्क में आते ही एक दूसरे पर दबाव डालते हैं एक्यूप्रेसर के कारण हमारी आंखों, कानों और मस्तिष्क पर असर पड़ता है। जिससे हम सामने खड़े व्यक्ति को लंबे समय तक याद रख सकते हैं।

⁷डॉ० एम० के० मिश्रा— हिंदू के सोलह संस्कार वैज्ञानिक आधार पृष्ठ 89

इस प्रकार हाथ जोड़ना पूर्णतः वैज्ञानिक विधियों पर आधारित है, जिसमें उंगलियों पर दबाव से तंत्रिकाओं के द्वारा मस्तिष्क द्वारा बहुत दिनों तक याद रखा जा सकता है।

2- पीपल की पूजा— बहुत सारे लोग सोचते हैं कि पीपल की पूजा करने से भूत-प्रेत भागते हैं। जबकि वैज्ञानिक तर्क पीपल का पेड़ सभी समय आक्सीजन गैस छोड़ता है, इसलिए सभी लोग इसका सम्मान करते हैं और पूज्य समझकर पूजा जाता है।

3- उपवास रखना— हिंदु धर्म में उपवास रखना तो कई सदियों से चला आ रहा है। उपवास को हिंदु धर्म में बहुत अधिक महत्व दिया गया है। नवरात्रि के व्रत, सोलह सोमवार का व्रत, जन्माष्टमी का व्रत, करवाचौथ आदि जैसे कितने ही मौकों पर हिंदु धर्म में व्रत रखे जाते हैं। लोगों का विश्वास होता है कि उपवास से हमारी मनोकामनाएं पूरी होती हैं। विज्ञान की दृष्टि से उपवास रखने से हमारे शरीर को कम कैलोरी मिलती है और वजन कम करने में मदद मिलती है। इससे दिल की बीमारी, मधुमेह जैसी बीमारियों को दूर किया जा सकता है।

4- कान छिदवाने की परंपरा— भारत में कान छिदवाने की परंपरा लगभग सभी धर्मों में है। दर्शनशास्त्री मानते हैं कि इससे सोचने की शक्ति बढ़ती है, जबकि चिकित्सा विज्ञान कहता है कि इससे बोली अच्छी होती है, और कान से होकर दिमाग को जाने वाली नस का रक्त संचार बढ़ता है।

5- जमीन पर बैठकर भोजन करना— जमीन पर बैठकर भोजन करने की परम्परा भारतीय संस्कृति में प्राचीन काल से ही होती आई है, यह एक प्रकार का योग ही है। इस पोजीशन में बैठने से मस्तिष्क शांत रहता है और भोजन पाचन सही ढंग से होता है।

6- मांग में सिंदूर भरना— सिंदूर की कीमत केवल हर एक विवाहित महिला बता सकती है, यह केवल सुहाग की निशानी नहीं है बल्कि उनकी लंबी उम्र से भी जुड़ा है। सिंदूर, हल्दी, चूना और पारा धातु से मिलकर बना होता है यह चंचलता को नियंत्रित करती है।

7— चूड़ियां पहनना— हिंदुओं में सुहागनों (शादी-शुदा महिलाओं) के हाथों में चूड़ियां पहनने का भी वैज्ञानिक कारण है, हाथ में चूड़ियां पहनने से हाथ में रक्त का संचरण सही ढंग से होता रहता है, तथा शरीर की उर्जा भी नियंत्रित करता है।

8— मंदिरों की बनावट— हिंदुओं के मंदिर प्रायः ऐसी जगह पर बनाए जाते हैं जहां पर उत्तर और दक्षिण ध्रुवों के चुंबकीय और विद्युत्तिय बलों के कारण सकारात्मक ऊर्जा भरपूर मात्रा में होती है। जो भी भक्त मंदिर में दर्शन के लिए आते हैं, असीम शांति का अनुभव प्राप्त करते हैं तथा मंदिरों में मुख्य मूर्ति ठीक बीच में स्थापित की जाती है। इसी जगह को गर्भगृह कहा जाता है। जहां मूर्ति स्थापित की जाती है उसके ठीक नीचे वेद मंत्रों से लिखी तांबे की धातुएं रखी जाती हैं।

तांबा धरती के चुंबकीय बल को अपनी तरफ खींचता है इसलिए जब कोई नियमित तौर पर मंदिर जाकर परिक्रमा करता है, तांबे के इसी चुंबकीय प्रभाव के कारण शरीर की नकारात्मक ऊर्जा भी सकारात्मक ऊर्जा का स्थान लेता है।

9— चोटी रखना— हिंदुओं में मुण्डन करने पर चोटी रखने की परंपरा है। आर्युवेद में कहा गया है कि सिर के जिस भाग में चोटी रखी जाती है वह भाग तंत्रिका तंत्र के सीधे संपर्क में होता है। चोटी इस तंत्र को सुरक्षा प्रदान करती है। इससे एकाग्रता बढ़ती है तथा शरीर को ऊर्जा मिलती रहती है।

10— मंदिर की घंटिया— हिंदू मंदिरों में घंटियों का होना भी वैज्ञानिक कारण है, घंटे की आवाज कानों में पड़ते ही आध्यात्मिक अनुभूति होती है। इससे एकाग्रता में वृद्धि होती है तथा मन भी शांत होता है। मंदिर में आये दर्शनार्थियों को बहुत ही शांति की अनुभूति होती है। हिंदुओं के मंदिरों में श्रद्धालुओं के द्वारा घंटियां बजाकर पूजा करना या दर्शन करते समय घंटियां बजाना आत्मिक श्रद्धा और शांति की कामना के लिए ही होती है।

11—तिलक लगाना— दोनों भौहों के बीच माथे पर तिलक लगाने से उस खास जगह पर दबाव पड़ता है जो तंत्रिका तंत्र का खास हिस्सा होता है, तिलक लगाने के दबाव से शरीर में रक्त का संचार बढ़ जाता है। इससे पूरे शरीर में नई ऊर्जा का प्रवाह होता है।

12— पानी मे पैसे फेंकना— पुराने समय में ज्यादातर तांबे के सिक्के हुआ करते थे जिनकी जगह आज स्टील के सिक्कों ने ले ली है। तांबा पानी को शुद्ध करता है

इसलिए प्राचीन समय में नदियों या पानी के तालाबों में सिक्के फेंके जाते थे, जिससे पानी साफ हो जाता था। वही परंपरा रहते हुए आज भी लोग पानी में सिक्के फेंकते रहते हैं।

13— पैर की उंगलियों में रिंग पहनना— पैर की उंगलियों में रिंग पहनना भारतीय संस्कृति का हिस्सा होने के साथ-साथ वैज्ञानिक कारण भी है। अमूमन रिंग पैर के अंगूठे के बगल वाली उंगली पर धारण किया जाता है। इससे गले की नस महिलाओं के गर्भाशय और दिल तक जाती है जिससे इनकी बीमारियों की गुंजाइश नहीं रहती है। साथ ही चांदी ध्रुवीय ऊर्जा से शरीर की ऊर्जा को और अधिक ऊर्जावान बना देता है।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के समस्त उपन्यासों में हम अध्ययन करते हैं कि भारतीय संस्कृति में रीति-रिवाज और परंपराएं वैज्ञानिक महत्व पर आधारित हैं। जैसे हमारे बुजुर्ग प्रातः उठकर अपने दोनों हाथों को देखते हैं और उसमें ईश्वर का दर्शन करते हैं। धरती पर पैर रखने से पहले धरती मां को प्रणाम करते हैं क्योंकि जो धरती मां धन-धान्य से परिपूर्ण करती है, उसी पर हम पैर रखते हैं। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी लिखते हैं कि रीति-रिवाज ऐसी परंपराएं या संस्कार हैं जो पीढ़ी दर पीढ़ी मानव जातियों में चले आये हैं।

रीति-रिवाजों के साथ-साथ दैनिक जीवन में होने वाली कुछ घटनाएं जो हिंदुओं द्वारा शुभ फल देने वाली घटनाएं शकुन तथा अशुभ फल देने वाली घटनाएं अपशकुन कहलाती हैं। जो अग्रलिखित बिंदुओं पर वर्णित हैं।

शकुन-अपशकुन— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के उपन्यासों में उन्होंने भारतीय समाज में विद्यमान शकुन-अपशकुन का भी वर्णन किया है। हमारी भारतीय परंपरा और संस्कृति में शकुन-अपशकुन का भी बहुत ध्यान दिया जाता है। विवाह, त्यौहार, पर्व, उत्सव इन सभी अवसरों पर लोग शकुन-अपशकुन को मानते हैं। अगर शुभ कार्य करने जाते समय कोई छींक आ जाय तो वह अपशकुन माना जाता है। यदि सांप रास्ता काटे या बिल्ली रास्ता काटती है या खाली घड़ा दिखाई दे आदि को अपशकुन माना जाता है, और शुभ मौकों पर घरों के आस-पास सियार का रोना भी अपशकुन माना जाता है।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के द्वारा अपने उपन्यासों में भारतीय संस्कृति का वर्णन करते हुए लिखा है। शकुन के संकेत को हम वेदों, पुराणों व धार्मिक ग्रंथों में भी पाते हैं। रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्यों में भी कई जगह शकुन-अपशकुन की बात कही गई है।^{१८}

शकुन का संकेत प्रकृति से, आकाश से, स्वप्नों से व शरीर के अंगों से संबंधित होते हैं। अच्छे या बुरे कार्य को करते समय कोई सांकेतिक घटनाएं घटित होना अच्छा या बुरा होने को बताता है। ज्योतिष-विज्ञान में भी शकुनों पर भी विशेष ध्यान दिया जाता है, प्राचीन काल से ही शकुनों का ज्ञान मौखिक रूप से पीढ़ी दर पीढ़ी स्थानान्तरण होते आये हैं।

शकुन के 12 सूत्र— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के अनुसार घर में हर छोटी तथा बड़ी वस्तु की अपनी उपयोगिता होती है। जिनसे लोगों के अच्छे और बुरे संकेत जुड़े होते हैं जो जीवन में कई मोड़ लाते हैं। शकुन अच्छे फल देने वाले होते हैं, जबकि अपशकुन बुरे फल देने वाले माने जाते हैं।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के उपन्यासों में लिखित भारतीय समाज में प्रचलित प्रमुख शकुन निम्न लिखित हैं:—

1— दूध का शकुन— हिंदुओं की मान्यताओं के अनुसार सुबह-सुबह दूध को देखना शुभ माना जाता है। दूध का उबलकर गिरना शुभ माना जाता है। इससे घर में सुख-शांति, संपत्ति, मान-सम्मान और वैभव की उन्नति होती है। दूध का विखर जाना अपशकुन माना जाता है जो किसी दुर्घटना का संकेत है, दूध का जानबूझकर छलकाना भी अपशकुन माना जाता है जिससे घर में कलह माना जाता है।

2— दर्पण का शकुन— हर घर में दर्पण का बहुत महत्व होता है। दर्पण से जुड़े बहुत सारे शकुन-अपशकुन मानव जीवन को कहीं न कहीं से प्रभावित अवश्य करते हैं। दर्पण का हाथ से गिरकर टूट जाना अशुभ माना जाता है। एक वर्ष तक के बच्चे को दर्पण दिखाना अशुभ माना जाता है। नव विवाहिता टूटे शीशे में श्रृंगार सहित देखने मात्र पर भी अशुभ मानी जाती है।

^{१८}रतन लाल मिश्र— भारतीय संस्कृति पृष्ठ 5, 6

3— पैसे का शकुन— आज के समय में पैसों को भगवान माना जाता है। जेब को खाली रखना अपशकुन माना जाता है। यह विश्वास किया जाता है कि प्रत्येक जेब में कुछ ना कुछ पैसे रखने चाहिए। कभी भी पर्स खाली नहीं रखना चाहिए।

4— चाकू का शकुन— चाकू एक ऐसी वस्तु है, जिसके बिना किसी भी घर में काम नहीं चल सकता, इसकी जरूरत हर किसी छोटे-बड़े काम में पड़ती ही है। इसलिए इसके बारे में कई अपशकुन हैं। टेबल पर चाकू रखना और टेबल से चाकू नीचे गिरना अपशकुन माना जाता है। उसी प्रकार तकिए के नीचे चाकू रखना तथा छोटे-छोटे बच्चों के गले में छोटा सा चाकू रखना शुभ माना जाता है।

5— झाड़ू का शकुन— घर के एक कोने में पड़े हुए झाड़ू को घर की लक्ष्मी माना जाता है क्योंकि यह घर की दरिद्रता को घर से बाहर निकालता है। इससे भी कई शकुन और अपशकुन जुड़े होते हैं। दीपावली के दिन घर में नया झाड़ू लाना शुभ माना जाता है तो सूर्य छुपने पर झाड़ू लगाना अपशकुन माना जाता है। छोटे बच्चे द्वारा झाड़ू लगाना नये मेहमान का आगमन माना जाता है।

6— बाल्टी का शकुन— सुबह के समय दूध से भरी बाल्टी दिखाई दिये तो शुभ माना जाता है। इससे मन में सोचे कार्य पूरे हो जाते हैं। खाली बाल्टी देखना अपशकुन माना जाता है जो बने-बनाए कार्यों को बिगाड़ देते हैं। रात को खाली बाल्टी को उल्टा करके रखना चाहिए।

7— लोहे का शकुन— घर में लोहे का होना शुभ माना जाता है। लोहे में एक शक्ति होती है जो बुरी आत्माओं को घर से भगा देता है। पुराने तथा जंग लगे लोहे को घर में नहीं रखना चाहिए इससे घर में अपशकुन माना जाता है।

8— हेयर पिन का शकुन— हेयर पिन एक बहुत मामूली सी वस्तु है परंतु इसका प्रभाव बड़ा आश्चर्यजनक होता है। यदि किसी व्यक्ति को राह में कोई हेयर पिन पड़ा मिल जाय तो समझो कोई नया मित्र मिलने वाला है। हेयरपिन खो जाने से अपशकुन माना जाता है। हेयरपिन घर में लटकाने से भाग्योदय माना जाता है।

9— रुई का शकुन— रुई का टुकड़ा अगर किसी के कपड़ों पर चिपका मिले तो यह शुभ माना जाता है। यह किसी शुभ समाचार का संकेत है या किसी प्रिय व्यक्ति के आने का संकेत है।

10— चाबियों का संकेत— चाबियों का गुच्छा गृहणी की संपूर्णता का प्रतीक है। यदि गृहणी के पास चाबियों का ऐसा गुच्छा है जिस पर बार—बार जंग लग जाता है। तो इसका यह भी अर्थ होता है कि कोई आपको अपनी संपत्ति में जगह देना चाहता है। चाबियों के गुच्छे को बच्चों के तकिए के नीचे रखना भी शुभ माना जाता है, इस चाबी के गुच्छे से बुरी आत्माएं तथा बुरी नजर हमेशा ही दूर रहती है।

11— बटन का शकुन— कभी—कभी कोट, कमीज, या अन्य कपड़ों पर बटन गलत जगह पर लग जाते हैं, जिससे अपशकुन माना जाता है। नतीजा काम उल्टे हो जाते हैं। इसके दुष्प्रभाव से बचने के लिए बटन को सही जगह पर लगाना पड़ता है। रास्ते में बटन मिलने पर कोई नया मित्र मिलने की संभावना रहती है।⁹

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के सभी उपन्यासों में उन्होंने भारतीय या पहाड़ में स्थित समाज में व्याप्त शकुन और अपशकुन का भली—भांति अपने संपूर्ण साहित्य में उल्लेख किया है। उपरोक्त वर्णित शकुन तथा अग्रलिखित अपशकुन वाली घटनाएं लोगों में प्राचीन काल से प्रचलित हैं।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के उपन्यासों में लिखित कुछ घटनाएं जो हमें संकेत देती हैं कि आपके जीवन में कुछ अनहोनी होने वाली है को अपशकुन माना जाता है।

1. अगर आपके हाथ से बार—बार दूध गिरे तो बड़ी धनहानि का संकेत माना जाता है।
2. अचानक कौआ कंधे पर आ कर के बैठे तोयह आने वाले दुर्भाग्य की तरफ इशारा करता है।
3. सोने का आभूषण खोना भी मान—सम्मान में कमी मानी जाती है।
4. घर से बाहर जाते समय कोई सिक्का या नोट मिलने पर काम में अडचन आने की संभावना रहती है।
5. घर में टूटे हुए शीशे में देखने पर अपशकुन माना जाता है।
6. घर में शीशे का चटकना भी अपशकुन माना जाता है। टूटा हुआ आईना कभी भी घर पर नहीं रखना चाहिए यह बहुत ही अशुभ माना जाता है।

⁹डॉ० शिवा रस्तोगी— लोक साहित्य एवं लोक संस्कृतियां पृष्ठ 78, 79

7. कहीं जाते समय छींकना भी अपशकुन माना जाता है। ऐसी दशा में घर वापस आकर पानी पीकर फिर दुबारा निकलना चाहिए।
8. खाली जेब अपशकुन मानी जाती हैं। इसलिए जेबों में कुछ नोट या सिक्के रखने चाहिए।
9. घर पर घायल चिड़िया का आना अपशकुन माना जाता है।
10. घर पर मकड़ी का जाला या चमगादड़ों का डेरा भी बड़ा अपशकुन माना जाता है।
11. घर पर बिल्लियों का रोना या लडना अपशकुन माना जाता है।

उपरोक्त घटनाओं को डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने अपने उपन्यासों में भली भांति उल्लेख किया है।

उनका साहित्य शब्द-शब्द में भारतीय समाज, परंपरा, शकुन-अपशकुन, सांस्कृतिक परंपरा का उल्लेख करता है। जो कि आमतौर पर भारतीय समाज में सभी जगह विद्यमान होते हैं, ये विश्वास वर्षों पूर्व से भारतीय समाज में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में होते चले आये हैं।

क्षेत्रीय संस्कृति का वर्णन— लेखक डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने अपने उपन्यासों में भारतीय संस्कृति के साथ-साथ पहाड़ी संस्कृति का भी वर्णन भली भांति किया है। पहाड़ी संस्कृति में अनेक परम्पराएं हैं, जिनको उन्होंने अपने उपन्यासों के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाया है। पहाड़ों में किसी मेहमान के आने पर उसका स्वागत कैसे किया जाता है यह संस्कृति का एक प्रतिमान है।

डॉ० 'निशंक' जी के अनुसार प्रत्येक क्षेत्र को एक विशिष्ट प्रकार के भोजन, कपड़े, कविता, नृत्य, संगीत के साथ-साथ कला के साथ जोड़ा जाता है जिसे सामूहिक रूप से उसकी संस्कृति कहते हैं। हम इनके आधार पर किसी विशेष क्षेत्र में रहने वाले लोगों की पहचान करते हैं। हालांकि कभी-कभी यह सच्चाई से बहुत दूर हो सकता है, क्योंकि उपमहाद्वीप के विभिन्न हिस्सों से विचारों के साथ स्थानीय परंपराओं के अंतः क्रिया के कारण एक क्षेत्र की संस्कृति विकसित होती है।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी द्वारा उल्लेख की गई प्रमुख क्षेत्रिय संस्कृतियां निम्नलिखित हैं। जो देश के अलग-अलग भागों से तुलनात्मक अध्ययन के लिए वर्णित है:-

मलयालम- चेरों की भाषा-

9वीं शताब्दी में भारतीय प्रायद्वीप के दक्षिण पश्चिम भाग में महोदरपुरम के चेर साम्राज्य की स्थापना हुई, जिसे वर्तमान में केरल के रूप में जाना जाता है। वहां पर प्रयुक्त होने वाली भाषा मलयालम मानी जाती है इसे शासकों ने न केवल अपनी भाषा में बल्कि शिलालेखों में भी प्रयोग किया था। यह उदाहरण भाषा और क्षेत्र के बीच संबंध और उप महाद्वीपीय में आधिकारिक अभिलेखिय क्षेत्रिय भाषा के उपयोग को दर्शाता है।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी लिखते हैं कि केरल का मंदिर रंगमंच संस्कृत महाकाव्यों पर आधारित माना गया था। मलयालम की पहली कृति 12वीं सदी में तथा चौदहवीं सदी का ग्रंथ लाला तिलकम (व्याकरण तथा काव्यशास्त्र) मणी प्रवालम शैली में लिखा गया है, मणी प्रवालम का शाब्दिक अर्थ हीरा और मूंगा माना जाता है।

पुरी उडीसा का जगन्नाथी संप्रदाय- मुख्यतः डॉ० रमेश पोखरियाल निशंक जी के अनुसार यह भगवान विष्णु का पर्यायवाची है।

- जगन्नाथ की काष्ठ प्रतिमा स्थानीय जनजातिय लोगों द्वारा बनाई जाती है।
- जगन्नाथ मूलतः श्री कृष्ण भगवान का ही स्थानीय नाम माना जाता है।
- बारहवीं शताब्दी में गंग वंश के राजा अनंत वर्मन ने पुरी जगन्नाथ के लिए एक मंदिर बनवाने का निश्चय किया।
- 1230 में राजा अनंगभीम तृतीय ने अपना राज्य जगन्नाथ को अर्पित कर स्वयं को जगन्नाथ का प्रतिनियुक्त घोषित किया।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने भिन्न-भिन्न क्षेत्रिय संस्कृतियों का भी सुन्दर वर्णन अपने उपन्यासों में किया है। जो निम्नलिखित अलग-अलग क्षेत्रिय संस्कृतियों का ही वर्णन है -

कथक नृत्य— कथक शब्द कथा से निकला है। जिसका प्रयोग संस्कृत तथा अन्य भाषाओं में कहानी के ले किया जाता है।

- कथक मूल रूप से उत्तर भारत के मंदिरों में कथा या कहानी प्रस्तुत करने वाली एक जाति थी।
- पंद्रहवीं से सोलहवीं शताब्दी में भक्ति आंदोलन के प्रसार के साथ कथक ने नृत्य शैली का रूप धारण कर लिया था।
- कथक में राधा-कृष्ण के आख्यान (कहानियां) नाटक रूप में प्रस्तुत किया जाता था। जिन्हें रासलीला कहा जाता था।
- मुगल बादशाहों के शासनकाल में कथक नृत्य राजदरबार में प्रस्तुत किया जाता था।
- आगे चलकर कथक दो घरानों में बंट गया –

अ— जयपुर घराना।

ब— लखनऊ घराना।

- अवध के अंतिम नवाब वाजिद अली शाह के संरक्षण में यह कला के रूप में उभरी।
- 1850 से 1875 के दौरान यह नृत्य शैली के रूप में पंजाब, हरियाणा, जम्मू और कश्मीर, बिहार और मध्य-प्रदेश के निकटवर्ती इलाकों में फैला।
- अंग्रेजों के शासनकाल में इसे ना पसंद किया गया।
- स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद इसे छह नृत्यों के रूप में मान्यता दी गई।

लघुचित्र की परंपरा—

- क्षेत्रीय संस्कृतियों में प्राचीनतम लघुचित्र, तालपत्र और लकड़ी की तख्तियों पर चित्रित किये गये थे।
- सर्वाधिक सुंदर चित्र पश्चिम भारत के जैन ग्रंथों को सचित्र बनाने के लिए प्रयोग किये गये।
- मुगल बादशाह, अकबर, जहांगीर, शाहजहां ने इतिहास और पांडुलिपियां चित्रित करने वालों को संरक्षण प्रदान किया हुआ था।

- पांडुलिपियों में दरबार के दृश्य, लड़ाई तथा शिकार के दृश्य और सामाजिक जीवन के पहलू चित्रित किये जाते हैं।
- मेवाड, जोधपुर, बूंदी, कोटा और किशनगढ़ जैसे केंद्रों में पौराणिक कथाओं तथा काव्यों के विषयों का चित्रण चलता रहता था।
- 1739 में नादिरशाह के आक्रमण और दिल्ली विजय के परिणाम स्वरूप मुगल कलाकार मैदानी इलाकों से पहाड़ी क्षेत्रों में पलायन करते हुए चले गये और कांगड़ा शैली चित्रकारी विकसित हुई।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने भारत की विभिन्न क्षेत्रीय संस्कृतियों में से एक बांग्ला भाषा के बारे में भी उल्लेख किया है।

बांग्ला भाषा का विकास —

1) बांग्ला बंगाली संस्कृत से निकली हुई भाषा मानी जाती है।

2) बंगाली प्रारंभिक साहित्य को दो श्रेणियों में बांटा गया है।

(अ) पहली संस्कृत की श्रेणी— इसमें संस्कृत महाकाव्यों के अनुवाद, मंगल काव्य और भक्ति साहित्य गौडीय वैष्णव आंदोलन के नेता चैतन्य देव की जीवनियां आदि शामिल हैं।

(ब) नाथ साहित्य— मैनावती—गोपीचंद के गीत, धर्म ठाकुर की पूजा से संबंधित कहानियां, परिकथाएं, लोककथाएं और गाथा गीत।

डॉ० रमेश पोखरियाल निशंक जी ने अपने सभी उपन्यासों में क्षेत्रीय संस्कृतियों का उल्लेख भी बारीकी से किया है। उनके अन्य साहित्य में भी उन्होंने पूरे भारत की भिन्न-भिन्न संस्कृतियों का बहुत ही मार्मिक ढंग से चित्रण किया है।

सांस्कृतिक बदलाव— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के अनुसार सांस्कृतिक बदलाव भी सांस्कृतिक चेतना का प्रमुख घटक है। इस पृथ्वी पर हर वस्तु परिवर्तनशील है चाहे जड हो या चेतन।

इसी प्रकार भारतीय संस्कृति व परम्परा भी बदलती दिखाई दे रही है। लोगों का रहन-सहन, खान-पान, प्रौद्योगिकी का तेजी से विकास, नए तकनीकी नवाचारों के साथ कार्य बल की आसान परिचितता, जिस तरह से हम काम करते हैं, उसमें

तेजी से बदलाव आया है। बदलती जनसांख्यिकी कार्यस्थल की गतिशीलता में एक अपरिहार्य परिवर्तन लाती है।

किसी भी कार्पोरेटर से पूछने पर पता चलता है कि कार्पोरेट जगत में परिवर्तन प्रौद्योगिकी के कारण हो रहे हैं। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के अनुसार जो कि सांस्कृतिक बदलाव के ही कारण हो रहा है। भारत 2022 तक विश्व का सबसे युवा देश बनता जा रहा है, जिसकी औसत आयु 29 वर्ष है और सहस्राब्दी जनसंख्या 400 मिलियन है।

वास्तव में भारत की सहस्राब्दी पीढ़ी चीन या अमेरिका की तुलना में बड़ी है, और 2027 तक दुनिया की सबसे बड़ी युवा शक्ति या श्रम शक्ति बनकर उभरेगी।

जनसांख्यिकी बदलने से कार्यस्थ की गतिशीलता में बदलाव देखने को मिल रहा है। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने भी अपने साहित्य या उपन्यासों के माध्यम से यह दिखाने का प्रयास किया है कि हमारी योगवादी संस्कृति धीरे-धीरे भोगवादी बनती जा रही है।

नई युवा पीढ़ी न केवल कार्यस्थ की अलग समझ है और साथ ही उससे अपेक्षाएं भी हैं, लेकिन वे अपनी राय दृढ़ता से व्यक्त करने और खुश नही होने पर नौकरी बदलने की भी अधिक संभावना रखते हैं। डॉ० निशंक जी के स्पष्ट शब्दों में कहें तो आज की युवा पीढ़ी मौद्रिक मुआवजे को महत्व देते हैं बल्कि नौकरी से भी संतुष्टि को भी महत्व देते हैं, जिसका एक बड़ा हिस्सा कार्यस्थल की संस्कृति से प्रवाहित होता है।

कार्यस्थल का लचीलापन, अधिक स्वायत्तता और चीजों को अलग तरीके से करने में सक्षम होने जैसे तत्व कार्यस्थल की संस्कृति को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

पर्व या त्योहारों संबंधित वर्णन— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के शब्दों में हमारा देश पर्व एवं त्योहारों का देश है। हर प्रांत के लोग अपने निजी पर्वों व त्योहारों को मनाते हैं। डॉ० 'निशंक' जी ने अपने साहित्य में कई भारतीय एवं क्षेत्रीय

पर्व और त्योहारों का वर्णन किया है। ये त्योहार भारत की अखण्ड संस्कृति को सुरक्षित रखते हैं। भारतीय आत्मा को जोड़ने के सेतु का कार्य करते हैं।¹⁰

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी द्वारा भारत में होने वाले त्योहारों का वर्णन निम्नलिखित हैं। उनके साहित्य में भी उन्होंने भारत को त्योहारों का देश कहा है। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के साहित्य के अनुसार भी भारत में त्योहारों को तीन प्रमुख भागों में बांटा जाता है।

1. धार्मिक त्योहार
2. राष्ट्रीय त्योहार
3. मौसमी त्योहार

1- धार्मिक त्योहार- हिन्दुओं के प्रमुख त्योहारों में धनतेरस, दीपावली, होली, नवरात्रि, दशहरा, महाशिवरात्रि, गणेश चतुर्थी, रक्षाबंधन, कृष्ण जन्माष्टमी, करवाचौथ, रामनवमी, छठ-पूजा, वसंत-पंचमी, मकर संक्रांति, दुर्गापूजा, भाईदूज, उगादि, ओणम, पोंगल, लोहड़ी, हनुमान जयंती, गोवर्धन पूजा, काली पूजा, विष्णु पूजा, कार्तिक पूर्णिमा, नरक चतुर्थी, रथ यात्रा, महाशिवरात्रि हिंदुओं के प्रमुख त्योहारों में से एक हैं।

बसन्त पंचमी- जब समस्त खेत सरसों की पीली ओडनी से ढक जाती है। तो विद्याओं की देवी सरस्वती का पूजन हर्षोल्लास से हिन्दु लोग करते हैं, इसी पर्व को बसन्त पंचमी कहते हैं, कुछ राज्य इस त्योहार को सरस्वती पूजन के रूप में भी मनाते हैं। ज्यादातर हिन्दु अपने बच्चों को शिक्षा हेतु शुभारम्भ इस पावन पर्व पर करते हैं। इस दिन अधिकतर लोग पीले कपड़े व पीला अलंकरण करते हैं।

बैसाखी- डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने अपने उपन्यासों में वर्णन करते हुए कहा है कि अप्रैल माह में पंजाब में सिख और हिंदुओं के द्वारा यह त्योहार मनाया जाता है। नई उपज या फसल की खुशी में यह त्योहार मनाया जाता है। दक्षिण भारत में इस त्योहार को युगादी तथा असम में भोगाली बिहू नाम से जाना जाता है।

¹⁰ डॉ० एस० ए० मंजुनाथ- भारतीय संत परंपरा पृष्ठ 76

महाशिवरात्रि— फाल्गुन मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को महाशिवरात्रि का त्योहार मनाया जाता है। यह समस्त भारत में बड़ी श्रद्धा और विश्वास से मनाया जाता है। यह हिंदुओं का सबसे बड़ा त्योहार माना जाता है।

श्री कृष्णजन्माष्टमी— भाद्रपद की कृष्णपक्ष की अष्टमी को भगवान श्री कृष्ण का जन्म दिवस होने के कारण यह त्योहार मनाया जाता है। यह त्योहार भी संपूर्ण भारत में अगाध श्रद्धा के साथ मनाया जाता है।

रक्षाबंधन— रक्षाबंधन हिंदुओं के प्रमुख त्योहारों में से एक है। यह श्रावण मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। इस दिन बहन अपने भाई की कलाई पर राखी बांधती है, भाई भी अपने बहन की रक्षा का वचन देता है। भाई—बहन का यह त्योहार पूरे भारत में धूम—धाम से मनाया जाता है।

नवरात्रि— नौ दिनों तक चलने वाला यह पर्व शक्ति की उपासना को समर्पित है। माता जी के नौ अवतारों की बारी—बारी से पूजा होती है। शक्ति की यह पूजा का यह त्योहार भी पूरे भारत में मनाया जाता है। वैसे तो वर्ष में दो बार यह त्योहार मनाया जाता है पर आश्विन मास में विशेष रूप से मनाया जाता है।

दशहरा / विजया दशमी— हिंदुओं का यह त्योहार आश्विन मास नवरात्रि की दशमी को यह दशहरा या विजया दशमी पर्व होता है इस दिन भगवान श्री राम ने रावण का बध किया था। पूरे देश में हर्ष और उल्लास के साथ बुराई पर अच्छाई की जीत का यह त्योहार मनाया जाता है।

होली— होली हिंदुओं का बसंत ऋतु में मनाया जाने वाला त्योहार है। यह फाल्गुन की पूर्णिमा को मनाया जाने वाला त्योहार है पर बच्चे बहुत दिन पहले से ही रंग डालना शुरू कर देते हैं। यह त्योहार भी पूरे भारत में मनाए जाने वाले त्योहारों में से एक है।

गणेश चतुर्थी— गणेश चतुर्थी हिंदुओं का एक त्योहार है। यह त्योहार भारत के विभिन्न भागों में मनाया जाता है, पर महाराष्ट्र और कर्नाटक में बड़ी धूम—धाम के साथ मनाया जाता है। भगवान श्री गणेश जी का जन्म इसी दिन होने से यह त्योहार गणेश चतुर्थी मनाया जाता है।

हनुमान जयंती— पंडितों और ज्योतिषियों के अनुसार चैत्र माह की पूर्णिमा पर धरती पर अत्याचारों की मुक्ति हेतु शंकर भगवान ने बारहवां रुद्र के रूप में अंजना के घर

चैत्र मास की पूर्णिमा को हनुमान के रूप में जन्म लिया। इसी दिन को हनुमान जयंती के रूप में मनाया जाता है।

श्राद्ध-तर्पण- हिंदू धर्म में देवी-देवताओं की पूजा के अलावा पितृ देवताओं की भी श्रद्धा के साथ पूजा की जाती है जिसको श्राद्ध-तर्पण कहा जाता है। पितरों, ऋषियों को तंदुल या तिल मिश्रित जल अर्पित करने की क्रिया को तर्पण कहते हैं, तर्पण करना ही पिण्डदान करना है। हिंदू धर्म में श्राद्ध का सबसे बड़ा महत्व माना जाता है।

2- राष्ट्रीय त्योहार- सभी धर्मों के द्वारा मनाए जाने वाले त्योहारों को राष्ट्रीय त्योहार कहते हैं। जो निम्नलिखित हैं -

स्वतंत्रता दिवस- 15 अगस्त 1947 को भारत को अंग्रेजों से 300 सालों की गुलामी से आजादी मिली थी। इसी दिन को राष्ट्रीय त्योहार के रूप में मनाया जाता है, प्रत्येक वर्ष यह पर्व बड़ी धूम-धाम से मनाया जाने वाला त्योहार है।

गणतंत्र दिवस- 26 जनवरी को मनाया जाने वाला यह राष्ट्रीय त्योहार भारत का अपना संविधान या कानून दिवस के रूप में मनाया जाता है। इसी दिन को पूरे देश में भारत का नया संविधान लागू हुआ था। यह दिन बड़े हर्ष और उल्लास के साथ मनाया जाता है।

गांधी जयंती- 2 अक्टूबर को प्रत्येक वर्ष गांधी जयंती मनाई जाती है। गांधी जी का जन्म दिवस के रूप में पूरे देश में यह दिन राष्ट्रीय पर्व के रूप में मनाया जाता है। इस दिन राष्ट्रीय अवकाश घोषित करके मुख्य प्रतिष्ठान बंद रखे जाते हैं।

3- मौसमी (ऋतु) त्योहार- वेदों में प्रकृति को ईश्वर का साक्षात् रूप मानकर पूजा हर रूप में की गई है। इसके अलावा आसमान के तारों और आकाश मंडल की स्तुति कर उनसे रोग और शोक मिटाने की प्रार्थना की गयी है। धरती और आकाश की प्रार्थना से हर तरह की सुख-समृद्धि पाई जा सकती है।

ऋषि-मुनियों ने प्रकृति के अनुसार जीवन-यापन करने की सलाह दी है। साथ ही उन्होंने वर्ष में होने वाले ऋतु परिवर्तन चक्र को समझकर व्यक्ति को उस दौरान उपवास और उत्सव करने के नियम बनाए ताकि मौसम परिवर्तन के नुकसान से बचकर उनका लाभ लिया जा सके।

हिंदुओं के बहुत से त्योहार मौसमी त्योहार भी होते हैं। इनमें प्रमुख मकर संक्रांति, पोंगल, ओणम, बिहू, बैसाखी आदि मौसमी त्योहार होते हैं, इनके अलावा बहुत सारे अन्य त्योहार होते हैं।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के उपन्यासों में वर्णन के अनुसार मकर संक्रांति को गुजरात में उत्तरायण, उत्तर प्रदेश और उत्तराखण्ड में खिचड़ी संक्रांति या घुघुति त्योहार, बिहार में दही चूरा, उड़ीसा में मकर संक्रांति और कर्नाटक, महाराष्ट्र, गोवा, पश्चिम बंगाल में पौष संक्रांति भी कहा जाता है।

भारत के अलावा विदेशों में भी इसे विभिन्न नामों से जाना जाता है —

1. माघ संक्रांति (नेपाल)।
2. सोंगक्रान (थाईलैंड)।
3. थिंगयान (म्यांमार)।
4. मोहन सोंगक्रान (कंबोडिया)।

निष्कर्ष— उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि डॉ० रमेश पोखरियाल के उपन्यासों में सांस्कृतिक चेतना का अत्यंत व्यापक रूप में चित्रण हुआ है। यह धर्म आधारित नीति, रीति, रूढ़ियों, साहित्य एवं लोक जीवन आदि समस्त क्षेत्रों में राष्ट्रीय एवं भावात्मक एकता को स्थापित करने का प्रयास किया है। आज के परिवेश को देखकर कहा जा सकता है कि आज हमारे दृष्टिकोण को नई स्फूर्ति एवं नवजागरण की आवश्यकता है।

स्वयं को जाति, वर्गों, क्षेत्रों, भाई भतीजावाद में विभाजित कर लिया है। एक ही संस्कृति में रहते हुए हमने मानवता को खंडित कर दिया है जिससे अनेक समस्याओं का जन्म हुआ है।

डॉ० 'निशंक' जी ने लिखा है कि हमेशा से भारतीय संस्कृति की महत्ता रही है, कि इसमें समन्वयशीलता, मानवता, विनयशीलता, क्षमा, दया, उदारता आदि तत्त्व प्रमुख रूप से हमारी सांस्कृतिक एकता में विद्यमान रहे हैं।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के अनुसार यदि मनुष्यों को अपनी संस्कृति का विकास करना है। तो निश्चित रूप से आत्मिक, बौद्धिक, शारीरिक, मानसिक स्तर पर हमें भावात्मक एकता को बनाए रखना होगा तभी हम विश्व बंधुत्व की

उच्च भावना में अपना सहयोग दे सकते हैं। तभी एक बार फिर हमारा देश विश्व गुरु की उपाधि प्राप्त कर सकता है।

अंत में केवल इतना ही कहा जा सकता है कि डॉ० रमेश पोखरियाल निशंक जी ने अपने उपन्यास लेखन द्वारा भारतीय संस्कृति में उच्च मूल्यों की स्थापना करने का सफल प्रयास किया है।

डॉ० रमेश पोखरियाल निशंक के समस्त उपन्यासों में हिंदुओं के विभिन्न त्योहारों का भली भांति सुन्दरता के साथ वर्णन किया है। हिंदुओं के 12 महीने कोई न कोई त्योहार बड़ी हंसी-खुशी से मनाया जाता है।

संदर्भ

1. प्रो० रमन बिहारी लाल एवं डॉ० नीरू मल्होत्रा – उदीयमान भारतिय समाज में शिक्षा पृष्ठ 350
2. वही –पृष्ठ 35
3. प्रेमचन्द –कुछ विचार विशिष्ट पृष्ठ 45
4. डॉ० सीमा शर्मा –भारतीय संस्कृति एक अध्ययन पृष्ठ 24
5. डॉ० सहाय प्रेमी –भाषा विज्ञान पृष्ठ 28
6. प्रो० गिरीश पैचौरी–ज्ञान एवं पाठ्यक्रम पृष्ठ 74
7. वही –पृष्ठ 75
8. वही –पृष्ठ 76
9. दीपक कुमार–भारतीय संस्कृति पृष्ठ 54
10. डॉ० सचिदानंद शुक्ल– हिंदू धर्म के सोलह संस्कार पृष्ठ 60
11. वही – पृष्ठ 69, 78
12. डॉ० एम० के० मिश्रा– हिंदू के सोलह संस्कार वैज्ञानिक आधार पृष्ठ 89
13. डॉ० एस० ए० मंजुनाथ– भारतीय संत परंपरा पृष्ठ 76
14. वही –पृष्ठ 78
15. वही– पृष्ठ 69
16. विभिन्न संचार माध्यम
17. रतन लाल मिश्र– भारतीय संस्कृति पृष्ठ 5, 6
18. डॉ० शिवा रस्तोगी– लोक साहित्य एवं लोक संस्कृतियां पृष्ठ 78, 79
19. वही– पृष्ठ 65

20. डॉ० रमेश पोखरियाल निशंक— मेजर निराला पृष्ठ 125
21. डॉ० निशंक— बीरा पृष्ठ 7
22. डॉ० निशंक— अपना पराया पृष्ठ 58
23. डॉ० निशंक— निशांत पृष्ठ 69
24. डॉ० निशंक— कृतघ्न पृष्ठ 23
25. डॉ० निशंक— भागोवाली पृष्ठ 23

उपसंहार

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी का कृतित्व संसार बहुविशाल है। वह उन महान विद्वानों में से एक हैं जिन्होंने हिन्दी साहित्य को नई शक्ति तथा नई दिशा प्रदान की है। बहुमुखी प्रतिभा से परिपूर्ण होने के कारण उनका व्यक्तित्व और जीवन समाज को प्रेरणा देने वाला रहा है। उन्होंने अपने साहित्य में जीवन के अनुभवों को बहुत ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया है जिनका पाठकों के मन पर अमिट छाप छोड़ देता है। विभिन्न विधाओं को लिखने के कारण हिन्दी साहित्य में डॉ० निशंक जी का मूर्धन्य स्थान है। इन्होंने कहानी, कविता, उपन्यास, यात्रावृत्तांत, निबन्ध, वैचारिका आदि प्रेरणादायक कृतियों को रचकर हिन्दी साहित्य में उच्च स्थान प्राप्त किया है। निशंक जी का कृतित्व का लक्ष्य मनुष्य तथा राष्ट्र के लिए श्रेष्ठ जीवन की खोज करना है। हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं पर लिखने के कारण अनेक संस्थाओं के द्वारा बहुत बार पुरस्कृत और सम्मानित किया गया है।

प्रस्तुत शोध प्रारूप को पांच अध्यायों में बांटा गया है। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के उपन्यासों से राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना शोध प्रबंध को प्रथम अध्याय से लेकर पंचम अध्याय तक निम्नलिखित है।

प्रथम अध्याय: डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के व्यक्तित्व का सामान्य परिचय से संबंधित उनका जन्म, परिवार, शिक्षा, विवाह, बच्चों के बारे में बताया गया है। तथा 'निशंक' जी का राजनीतिक जीवन तथा उनके व्यक्तित्व के प्रेरक प्रसंगों के विषय में सुन्दर वर्णन किया गया इनके प्रेरक प्रसंग इस प्रकार से—अत्यन्त गरीबी में गुजरा बचपन, साहित्यिक सफर, पहाड़ के लिए समर्पित व्यक्तित्व के धनी हैं। डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी का बाह्य व्यक्तित्व, जन्म एवं परिवार, शिक्षा—दिक्षा, आंतरिक व्यक्तित्व, देश सेवा आदि शीर्षकों पर डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी का परिचय प्रथम अध्याय में विस्तृत रूप से वर्णन किया गया है।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी का राजनीतिक जीवन और राजनीतिक सफर को बारीकी से प्रथम अध्याय में लिखा गया है, जो निम्नलिखित बिंदुओं पर है। पांच बार उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखण्ड से विधायक, उत्तराखण्ड के सबसे युवा मुख्य मंत्री, डोईवाला से विधायक, हरिद्वार लोकसभा क्षेत्र से सांसद, भारत के प्रथम शिक्षा मंत्री, उत्तराखण्ड की राजनीति के चाणक्य आदि बिंदुओं पर भली-भांति लिखा गया है।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी का सामाजिक परिवेश भी निम्नलिखित शीर्षकों पर लिखा गया है। सामाजिक प्रेरणा, दृढ़ निश्चयी, संघर्षशीलता, परिवर्तनशीलता, गरीबों से सहानुभूति, भाईचारा, जात-पात का विरोध, प्रगतिशीलता, जागरूकता एवं सृजनशीलता, स्वार्थहीनता पर बल, स्वयं निर्माणभाव आदि।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' के व्यक्तित्व के प्रेरक प्रसंग— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के प्रेरक प्रसंग निम्नलिखित बिंदुओं पर लिखा गया है—अत्यंत गरीबी में गुजरा बचपन, शिक्षा एवं पत्रकारिता से प्रेरणा, अटल जी के आह्वाहन से राजनीति में आये, 28 वर्षों का राजनीतिक सफर।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी का साहित्यिक सफर भी निम्नलिखित बिंदुओं पर सटीक ढंग से लिखा गया है—काव्य संग्रह, कहानी संग्रह, उपन्यास, पर्यटन ग्रंथ, यात्रा वृत्तांत, अन्य साहित्य, सम्मान एवं उपलब्धियां।

द्वितीय अध्याय में डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के कृतित्व के बारे में लिखा गया है। जिसमें मुख्यतः काव्य जगत: डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने निम्नलिखित काव्य संग्रह लिखे हैं— समर्पण, नवांकुर, जीवनपथ में, देश हम न जलने देंगे, प्रतिभा, सृजन के बीज, कोई मुश्किल नहीं, तुम भी मेरे साथ चलो, ऐ वतन तेरे लिए, मातृ भूमि के लिए आदि प्रमुख काव्य संग्रह हैं। इन्होंने साहित्य में कथा या कहानियों का भी बहुत ही सुन्दर ढंग से वर्णन किया है। इनकी कहानी संग्रह निम्न हैं—

(अ) मेरे संकल्प कहानी संग्रह: भाग्य की लकीरें, परीक्षा, ठिया, छलावा, भय, कहां भूल हुई, आदमखोर बाघ, आश्रय आदि कहानियां संग्रहित हैं।

(ब) **वाह जिंदगी:** कहानी संग्रह में वाह जिंदगी, वापसी, साक्षात्कार, रददीवाला, साक्षात दर्शन, दण्ड, भाग्यचक्र, वक्त की ठोकर, वसंती, सजा तो मिलेगी, आस्था जीत गई, ठौर, हम हैं न साथ, कफन, कर्म में, दुष्चक्र।

(स) **कहानी संग्रह भीड़ साक्षी है:** इस कहानी संग्रह में रोशनी की एक किरण, किसे दोष दें, मनीला, अंतिम क्षण तक, भीड़ साक्षी है, अप्रत्याशित, दिहाड़ी पर, ऐसा क्या कारण, झाँवर, अपना दर्द, टूटते दायरे।

(द) **वापसी कहानी संग्रह:** इस कहानी संग्रह में डॉ० 'निशंक' जी का कृतित्व में इनका काव्य जगत, कथा साहित्य तथा अन्य साहित्य में उपन्यास एवं पत्रिकाओं पर भी प्रकाश डाला गया।

(ध) **क्या नहीं हो सकता:** दे सको तो, बंद, कितना ईमानदार, वह जरूर लौटेगा, दोष किसे दूं, आत्महत्या करूंगी, दरार कहां पड़ी।

(न) **मनीआर्डर:** एक और बेड खाली हो गया, संवेदनहीन, बेजुबान, नकेल, एक यक्ष प्रश्न, गरीबी हटाओ, राम प्रसाद जी, पश्चाताप, आशियाना, चक्रव्यूह।

(प) **केदार नाथ आपदा:** और मैं कुछ नहीं कर सका, वो देख रहा है, मुआवजा, अपने ही जाल में, पानी और पानी, लौट आया हूं, सच उसका है, सब एक जैसे, घर वापसी, जिंदगी रुकती नहीं, नोटिस, जिंदा हूं, पीडा से भी ऊपर, अनजान, एक रिश्ता दिल का, तलाश अपनों की, कितना खुद्वार, लौटकर आयेगा, रिस्तों का भ्रमजाल, झगड़े का समाधान, भीड़ के बीच।

(फ) **खडे हुए प्रश्न:** खडे हुए प्रश्न, लक्ष्य, उम्मीद, वीनू, अपाहिज, तकदीर, अभिशप्त, कुछ नहीं जिंदगी, नियति, उत्सर्ग, अविश्वास आदि।

तृतीय अध्याय में डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के उपन्यासों का विश्लेषणात्मक अध्ययन है। जिसमें डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के उपन्यासों का वर्णन विस्तृत ढंग से किया गया है। शोध प्रारूप की तृतीय अध्याय में मुख्य रूप से डॉ० 'निशंक' जी के उपन्यास, साहित्य का इतिहास, उपन्यास का उद्भव एवं विकास, उपन्यासों के प्रकारों का विस्तृत वर्णन किया गया। तथा विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाओं का अध्ययन किया गया है। इसमें प्राचीन

साहित्याचार्य तथा उपन्यास साहित्य के इतिहास का प्रथम चरण, द्वितीय चरण, तृतीय चरण, उपन्यास तकनीकी नये प्रयोग, उपन्यास की विकास यात्रा विभिन्न कालों का अध्ययन— प्रथम काल या भारतेंदु काल, द्वितीय काल या द्विवेदी काल (प्रेमचंदोत्तर काल), आधुनिक काल, डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के उपन्यासों का काल, विभिन्न प्रकार के उपन्यासों का अध्ययन— घटना प्रधान उपन्यास, चरित्र प्रधान उपन्यास, ऐतिहासिक उपन्यास, सामाजिक उपन्यास, मनोवैज्ञानिक उपन्यास, आंचलिक उपन्यास इत्यादि का अध्ययन तृतीय अध्याय में किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में राष्ट्र और राष्ट्रीयता के अंतर्गत राष्ट्र की परिभाषा और राष्ट्र का विकास तथा व्याख्या, विकास तथा वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डाला गया है। डॉ० 'निशंक' जी के उपन्यासों में राष्ट्रीय चेतना में देशभक्ति, राष्ट्र धर्म, राष्ट्रीय साक्षरता, मातृभूमि प्रेम एवं भारतीय दृष्टिकोण, विभिन्न विद्वानों के मत, राष्ट्रीय विकास के घटक, कृषि उत्पादन में वृद्धि, आर्थिक ज्ञान का विकास, शहरी क्षेत्रों में विकास, गरीबी उन्मूलन, आदि पर प्रकाश डाला गया। इसके अलावा शिक्षा के क्षेत्र में विकास, राष्ट्रीय विकास में साहित्य का योगदान, राष्ट्रीय विकास में विज्ञान का योगदान, राष्ट्रीय विकास में हिंदी का योगदान, पंचवर्षीय योजनाओं का योगदान आदि तथा राष्ट्रीय विकास के लिए चुनौतियाँ— जनसंख्या, गरीबी, सतत विकास में देरी, मानवाधिकारों का अन्याय, लैंगिक समानता का अधिकार, संकट और सदमें में लचीलेपन का अभाव, नैतिक और वैज्ञानिक मूल्यों के बीच बेमेल निरक्षरता, स्वच्छता और सार्वजनिक स्वास्थ्य के साधनों का अभाव प्रमुख चुनौतियाँ हैं।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने राष्ट्रीय चेतनाओं— आर्थिक चेतना, साहित्यिक चेतना, मनोवैज्ञानिक चेतना, पर्यावरणीय चेतना, राजनीतिक चेतना, नैतिक चेतना, धार्मिक चेतना, सौंदर्यगत चेतना, और दार्शनिक चेतना आदि चेतनाओं का डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने अपने सभी उपन्यासों में भली— भाँति अध्ययन किया है जो चतुर्थ अध्याय में ही है।

शोध प्रबंध का पंचम अध्याय संस्कृति के स्वरूप के अंतर्गत संस्कृति की परिभाषा, प्रकारों तथा संस्कृति का वर्तमान स्वरूप एवं निशंक जी के उपन्यासों में सांस्कृतिक चेतना का वर्णन किया है। इस अध्याय के अंतर्गत संस्कृति के स्वरूप

की व्याख्या, परिभाषा या विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषा या व्याख्या दी गई है। इसमें विभिन्न प्रकार की संस्कृतियों— भौतिक संस्कृति, अभौतिक संस्कृति जो कि डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के उपन्यासों में सांस्कृतिक चेतना उनके द्वारा लिखित सोलह संस्कार, विभिन्न प्रकार के रीति—रिवाजों जैसे हाथ जोड़ना, पीपल की पूजा, उपवास रखना, कान छेदना, जमीन पर बैठकर भोजन करना, मांग में सिंदूर लगाना, चोटी रखना, तिलक लगाना, पानी में पैसे फेंकना, पैर की ऊंगलियों में रिंग पहनना आदि।

इसके अलावा डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने अपने उपन्यासों में विभिन्न प्रकार के शकुन तथा अपशकुन का भी उल्लेख किया है। इसके अतिरिक्त डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने अपने उपन्यासों में क्षेत्रिय संस्कृतियों का भी उल्लेख किया है। जिसमें प्रमुखतः उड़ीसा का जगन्नाथ संप्रदाय, मलयालम या चेरों की भाषा डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के उपन्यासों में वर्णित विभिन्न त्यौहार या पर्वों का अध्ययन किया गया है। और जिनमें राष्ट्रीय त्यौहार—गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस, गांधी जयंती आदि का बहुत ही सुन्दर उल्लेख किया गया है। तथा धार्मिक त्यौहारों में हिंदुओं के विभिन्न त्यौहारों का विस्तृत अध्ययन किया गया है। तथा मौसमी त्यौहारों में मकर संक्रांति, बिहू, ओणम, पोंगल, बैशाखी आदि के बारे में लिखा गया है।

इनके साथ डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय त्यौहारों का भी वर्णन किया है जैसे माघ संक्रांति (नेपाल), सोंगक्रान (थाईलैंड), थिंगयान (म्यांमार), मोहना सोंगक्रान (कंबोडिया) आदि।

अतः डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के उपन्यासों में उन्होंने राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना को कलात्मक शैली में प्रस्तुत करके हिंदी साहित्य में सर्वश्रेष्ठ स्थान पाया है। डॉ० 'निशंक' जी ने अपने आपको विषम भौगोलिक, आर्थिक, सामाजिक परिस्थितियों से जूझते या लड़ते हुए शीर्षस्थ स्थान पर स्थापित किया। इनके उपन्यासों से वर्तमान पीढ़ी को यह सीख मिलती है कि व्यक्ति को विषम परिस्थितियों में भी पीछे नहीं हटना चाहिए निरंतर आगे बढ़ने का प्रयास करते रहना चाहिए।

प्रभाव एवं प्रदेय —

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने अपने आपको विषम भौगोलिक, आर्थिक, सामाजिक परिस्थितियों से जूझते या लड़ते हुए शीर्षस्थ स्थान पर स्थापित किया। इनके उपन्यासों से वर्तमान पीढ़ी को यह सीख मिलती है कि व्यक्ति को विषम परिस्थितियों में भी पीछे नहीं हटना चाहिए निरन्तर आगे बढ़ने का प्रयास करते रहना चाहिए।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी की साहित्यिक रचनात्मक दृष्टि वसुधैव कुटुम्बकम् और सर्वे भवन्तु सुखिनः से ओत प्रोत है। डॉ० 'निशंक' जी साहित्य जीवन के कल्याणकारी स्तंभ के रूप में वर्तमान जगत को अपने ओज से प्रकाशवान कर रहे हैं। दक्षिण भारत की ओर से हिन्दी सेवी प्रतिभाओं द्वारा पहली बार किया गया यह समग्र मूल्यांकन ही अंततः तत्त्वदर्शी 'निशंक' ग्रंथ कहलाता है।

डॉ० 'निशंक' जी की रचनाएं पिछड़े एवं गरीब तबके की पीड़ा को सामने लाता है। जो संपूर्ण विश्व के संघर्ष को प्रदर्शित करता है। 'निशंक' जी के उपन्यासों में राष्ट्र चेतना के आयाम को प्रतिपादित करते हुए रिश्ते नाते आदर्श भी लोक जीवन और उसकी समस्याएं जैसी आयामों द्वारा प्रत्येक मनुष्य के जीवन मूल्यों से जोड़कर दिखलाने का प्रयास किया गया।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के उपन्यासों या साहित्यों में उत्तराखण्ड का दर्पण जैसा प्रतीत होता है। इसमें शामिल है— पर्वतीय आंचल का इतिहास—विकास, सम्पूर्ण प्राकृतिक परिदृश्य, जन—जीवन के संस्कार, पर्व त्यौहार, जाति—विचार, व्यवहार खान—पान, पहनाव, रहन—सहन, परंपराएं, रीति—रिवाजों का समावेश है। डॉ० निशंक जी के उपन्यासों के माध्यमों से हिमालयी संस्कृति की संधि का एक सकारात्मक संदेश दूर—दूर तक पहुंचाया जाता है, जो कि पाठकों को एक नई दिशा प्रदान करता है।

आधुनिक युग बोध के साहित्यकार डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी का साहित्य सृजन हाशिया पर धकेल लोगों के जीवन का दस्तावेज है। जो पाठकों को प्रेरणा देने का काम करता है।

प्रभावदृढ़ डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के साहित्य का निम्नलिखित प्रभाव पड़ा—

राजनीतिक प्रभाव— डॉ० 'निशंक' जी ने अपने करियर की शुरुवात शिक्षक से की थी तथा पत्रकारिता में इन्होंने अपने करियर की शुरुवात दैनिक जागरण से की थी। उनका राजनीतिक सफर उत्तर प्रदेश सरकार में विधायक पद से तथा 12 विभागों में मंत्री भी रहे यहाँ पर भी इन्होंने सभी विभागों के कार्यभार को बड़ी सहजता के साथ निर्वाहन किया। और उसके बाद नव निर्मित उत्तराखण्ड राज्य के युवा मुख्यमंत्री के रूप में चुने गये। 2012 में देहरादून डोईवाला से विधायक और 2014 में हरिद्वार लोकसभा क्षेत्र से सांसद तथा 2019 में भारत के शिक्षा मंत्री बने यहाँ पर भी इन्होंने शिक्षा में सुधार एवं बदलाव का कार्य किया। वर्तमान समय में वह हरिद्वार से सांसद पद पर आसीन हैं। डॉ० 'निशंक' जी आज की युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणा के स्रोत हैं।

सामाजिक प्रभाव— डॉ० 'निशंक' जी का सामाजिक जीवन आरम्भ से ही संघर्षमय रहा। वे विद्यालय जीवन से लेकर उच्च शिक्षा तक तक संघर्षों का सामना करते रहें। समाज को प्रभावित करने वाले प्रत्येक क्षेत्र को डॉ० निशंक जी ने अपने साहित्य का विषय बनाया। सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय रहने वाले डॉ० निशंक जी ने अब तक लगभग 200 से अधिक पुस्तकों का प्रकाशन करके राष्ट्र एवं समाज का गौरव बढ़ाया है।

सांस्कृतिक प्रभाव— डॉ० रमेश पोखरिया 'निशंक' जी ने साहित्य के माध्यम से अपने राष्ट्र की संस्कृति के विभिन्न पहलुओं का वर्णन बहुत ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया। इन्होंने राष्ट्रीय ही नहीं अन्तर्राष्ट्रीय संस्कृतियों को भी अपने साहित्य के माध्यम से पाठकों तक पहुंचाया। इनके साहित्य को पढ़कर पाठकों को विभिन्न संस्कृतियों की जानकारी प्राप्त होती है।

साहित्यिक प्रभाव— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी का साहित्यिक क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान है। वह एक उच्च कोटि के साहित्यकार हैं। इन्होंने कहानी, उपन्यास, काव्य, यात्रावृत्तांत और लेख आदि लिखकर साहित्य में गौरव प्राप्त किया। इन्होंने 1983 से आज तक 200 से अधिक रचनाएं रचकर साहित्य जगत में श्रेष्ठ

स्थान प्राप्त किया है। डॉ० 'निशंक' जी ने अनेक भाषाओं में साहित्य को रचा जो कि पाठकों के लिए अनुकरणीय है।

प्रदेय— डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के उपन्यासों से हमें राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना से संबन्धित शिक्षा मिलती है। देश की राजनीति इस प्रकार से प्रभावित करती जा रही है तथा इसके बहुआयामी लाभ तथा हानियों का ज्ञान होता है, और आर्थिक रूप से विकसित होने या न होने का ज्ञात हो जाता है। भारत जैसे विशाल एवं साहित्यिक उन्नति के सुधार तथा विकास की शिक्षा मिलती है।

डॉ० 'निशंक' जी के उपन्यासों से हमें विभिन्न संस्कृतियों एवं समाज के बारे में सूचना प्राप्त होती है। डॉ० 'निशंक' जी का साहित्यिक क्षेत्र विस्तृत है। इनका साहित्यिक क्षेत्र भारत में ही नहीं विश्व तक फैला हुआ है। इन्होंने अपने उपन्यासों में ग्रामीण जीवन से लेकर शहरी जीवन की विभिन्न बदलती हुई परिस्थितियों का बखूबी से वर्णन करके भावी पीढ़ी को जागरुक किया है।

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के उपन्यासों में देशसेवा, राष्ट्रप्रेम, संघर्षशीलता, कर्तव्यनिष्ठा आदि गुणों से ओत-प्रोत हैं, जो हमें अनुकरण करने लिए प्रेरित करता है। इसके साथ ही डॉ० 'निशंक' जी को राष्ट्रीय स्तर से लेकर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेकों सम्मानों से सम्मानित किया गया है, जो नव पीढ़ी के लिए एक नई दिशा प्रदान करने का कार्य करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

सहायक ग्रन्थ

1. शर्मा विनय मोहन — हिन्दी उपन्यास स्थिति और गति ।
2. शुक्ल डॉ० रामचन्द्र — हिन्दी साहित्य का इतिहास, प्रकाशन नागरी प्रचारणी सभा काशी, संस्करण 1997 ।
3. टंडन डॉ० प्रतापनारायण — प्रेमचन्द्र, प्रकाशन दरियागंज, दिल्ली, संस्करण 1969 ।
4. राधाकृष्ण दीक्षित — स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों में राष्ट्रवाद, नमन प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 2004 ।
5. पुखराज जैन — प्रमुख राजनीतिक विचारक, साहित्य भवन पब्लिकेशन, संस्करण 2022 ।
6. रमेशचन्द्र कौशिक — नागरिक शास्त्र एवं भारतीय संविधान ।
7. रवीन्द्र गासो — भीष्म साहनी की औपन्यासिक चेतना, दीपक प्रकाशन जालंधर, संस्करण 1990 ।
8. सरोज चौरासिया — मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में युग चेतना, प्रकाशन लोकवाणी संस्थान दिल्ली, संस्करण 2009 ।
9. श्री शंभु रत्न त्रिपाठी — समाजशास्त्र के आधार ।
10. श्यामसुन्दर दास — हिन्दी शब्दसागर, प्रकाशन काशी नागरी प्रचारणी, वाराणसी, संस्करण 1869 ।
11. मैथिलीशरण गुप्त — जयभारत, प्रकाशन साहित्य सदन, संस्करण 2004 ।
12. शिवदत्त ज्ञानी — भारतीय संस्कृति, रामकमल प्रकाशन ।
13. डॉ० जगदीश शर्मा — मूल्य पर्यावरण और मानव अधिकार शिक्षण, प्रकाशन जे०एम०डी० पब्लिकेशन हिमाचल प्रदेश, संस्करण 2010 ।

14. डॉ० रवीन्द्र कुमार शर्मा – अधिगमकर्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम क्रिया, प्रकाशन लक्ष्मी बुक डिपो हांसीगेट, भियानी (हरियाणा)
15. प्रो० रमन बिहारी लाल एवं डॉ० नीरु मल्होत्रा, उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा प्रकाशन आर०लाल० बुक डिपो मेरठ, संस्करण 2008 ।
16. टंडन डॉ० प्रतापनारायण – प्रेमचन्द्र, सामायिक प्रकाशन, दरियागंज दिल्ली, संस्करण 1969 ।
17. डॉ० सहाय प्रेमी – भाषा विज्ञान ।
18. प्रो० गिरीश पैचौरी – ज्ञान एवं पाठ्यक्रम प्रकाशन आर० लाल० पब्लिशर्स मेरठ, संस्करण 2008 ।
19. डॉ० सीमा शर्मा – भारतीय संस्कृति एक अध्ययन, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, संस्करण 2016 ।
20. सचिदानन्द शुक्ल – हिन्दू के सोलह संस्कार, प्रकाशन प्रतिभा प्रतिष्ठान, संस्करण 2017 ।
21. डॉ० एम० के० मिश्रा – हिन्दू के सोलह संस्कार का वैज्ञानिक आधार, के० के० प्रकाशन, संस्करण 2014 ।
22. डॉ० एस० ए० मंजुनाथ – भारतीय संत परम्परा, प्रकाशन नोशन प्रेस, संस्करण 2022 ।
23. रतन लाल मिश्र – भारतीय संस्कृति, हिमांशू पब्लिकेशन, संस्करण 2008 ।
24. डॉ० शिखा रस्तोगी – लोक साहित्य एवं संस्कृतियों, इलहाबाद लोकभारती प्रकाशन, संस्करण 2020 ।
25. डॉ० 'निशंक' का रचना संसार – आनलाईन पुस्तक वार्ता शृंखला, संस्करण 2022 ।
26. रत्नाकर पाण्डेय – हिन्दी साहित्य-सामाजिक चेतना, पाण्डुलिपि प्रकाशन नई दिल्ली 1976 ।

डॉ० रमेश पोखरियाल निशंक जी के उपन्यासों पर आधारित प्रस्तावित शोध अध्ययन के लिए निम्नलिखित संदर्भ ग्रंथों का अध्ययन किया गया है—

1. निशांत उपन्यास भावना प्रकाशन नई दिल्ली 2008 ।
2. पल्लवी उपन्यास भारतीय ज्ञानपीठ नई प्रथम संस्करण 2010 ।
3. प्रतिज्ञा उपन्यास प्रभात प्रकाशन दिल्ली प्रथम संस्करण 2014 ।
4. अपना पराया उपन्यास प्रभात प्रकाशन दिल्ली प्रथम संस्करण 2011 ।
5. बीरा उपन्यास वाणी प्रकाशन 21—ए दरियागंज नई दिल्ली 2008 ।
6. मेजर निराला वाणी प्रकाशन 21—ए दरियागंज नई दिल्ली 2016 ।
7. भागोंवाली प्रभात प्रकाशन 2015 नई दिल्ली से प्रकाशित 2015 ।
8. पहाड से ऊंचा वाणी प्रकाशन नई दिल्ली से प्रकाशित 2008 ।
9. कृतघ्न प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली से प्रकाशित 2008 ।
10. शिखरों के संघर्ष वाणी प्रकाशन नई दिल्ली से प्रकाशित 2016 ।
11. छूट गया पडाव वाणी प्रकाशन नई दिल्ली से प्रकाशित 2016 ।
12. जिंदगी रुकती नहीं वाणी प्रकाशन नई दिल्ली 2021 ।
13. इंटरनेट के विभिन्न स्रोतों का अध्ययन ।

डॉ० रमेश पोखरियाल निशंक जी की प्रमुख कहानियां —

1. रोशनी की एक किरण. 1986
2. बस एक ही इच्छा 1989
3. क्या नहीं हो सकता 1993
4. भीड़ साक्षी है 1993
5. एक और कहानी वाणी प्रकाशन नई दिल्ली 2008
6. खड़े हुए प्रश्न विनसर पब्लिकेशन देहरादून 2008
7. टूटते दायरे वाणी प्रकाशन नई दिल्ली 2010

8. मेरे संकल्प प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली 2006
9. वाह जिंदगी प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली 2005
10. अंतहीन राधा कृष्ण प्रकाशन प्रथम संस्करण 2014
11. विपदा जीवित है विनसर पब्लिकेशन 2008
12. जीने का नाम जिंदगी प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली 2021
13. सृजन के बीज प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली 2021
14. प्रकृति की गोद में मां की पाठशाला प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली 2021
15. मेरी प्रासंगिक कहानियां वाणी प्रकाशन नई दिल्ली 2018
16. मैं गंगा बोल रही वाणी प्रकाशन नई दिल्ली 2022
17. कथाएं पहाड़ों की वाणी प्रकाशन नई दिल्ली 2022
18. मील के पत्थर वाणी प्रकाशन नई दिल्ली 2010
19. टूटते दायरे वाणी प्रकाशन नई दिल्ली 2019
20. परीक्षा लेती है जिंदगी। प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली 2014
21. केदारनाथ आपदा की सच्ची कहानियां प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली 2014

डॉ० रमेश पोखरियाल निशंक जी की प्रमुख कविता संग्रह –

1. अंधेरा जा रहा है
2. कोई मुश्किल नहीं 2002
3. जीवन पथ में 1989
4. तुम भी मेरे साथ चलो 1986
5. देश हम न जलने देंगे 1988
6. नवांकुर 1984
7. प्रतीक्षा 2006

8. परीक्षा लेती जिंदगी प्रभात प्रकाशन 2002
9. मुझे विधाता बनना है 1985
10. संघर्ष जारी है 2009
11. समर्पण 1983
12. मातृभूमि के लिए
13. प्रतीक्षा
14. प्रतीक्षा (खण्ड काव्य)

डॉ० रमेश पोखरियाल निशंक जी के यात्रा वृत्तांत –

1. एक दिन नेपाल में प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली 2018
2. खुशियों का देश भूटान प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली 2019
3. चॉकलेट की वैश्विक राजधानी बेल्जियम प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली 2021
4. पूर्वी अफ्रिका का प्रवेशद्वार युगांडा प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली 2021
5. भारतीय संस्कृति का संवाहक इंडोनेशिया प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली 2020
6. दक्षिण पूर्व एशिया का प्रवेशद्वार थाईलैंड प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली 2021
7. परंपरागत संस्कृति, आधुनिकता का संगम ऑस्ट्रेलिया प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली 2022

डॉ० रमेश पोखरियाल निशंक के मुख्य लेख –

1. हिमालय कामहाकुंभ नंदा देवी राज जात यात्रा शक्ति प्रकाशन देहरादून 2009
2. स्पर्श गंगा, विनसर प्रकाशन 2010
3. आओ सीखें कहानियों से प्रभात प्रकाशन 2022
4. बाल कहानियां हिंदी और अंग्रेजी में प्रभात प्रकाशन 2022
5. सफलता के अचूक मंत्र (हिंदी और अंग्रेजी में) डायमंड बुक्स प्राइवेट लिमिटेड 2020

6. भाग्य पर नही परिश्रम पर विश्वास करें डायमंड बुक्स प्राइवेट लिमिटेड 2021

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी के विभिन्न भाषाओं के लेख—

1. खडे हुए प्रश्न (तमिल)
2. ऐ वतन तेरे लिए (तेलुगू)
3. भीड साक्षी है (अंग्रेजी)
4. बस एक ही इच्छा (जर्मन)

आधारभूत ग्रंथ

1. प्रो० गोपाल राव— हिंदी उपन्यास साहित्य का इतिहास —राजकमल प्रकाशन।
2. डॉ० भगवती शरण मिश्र— हिंदी के चर्चित उपन्यासकार— राजकमल प्रकाशन।
3. सिगमण्ड फ्रियड व्यावहारिक मनोविज्ञान
4. जयशंकर प्रसाद कंकाल, तितली, इरावती
5. वृजनन्दन सहाय सौंदर्योपासक 1919
6. अवधनारायण विमाता 1932
7. शिवपूजन सहाय देहाती दुनिया 1925
8. आचार्य चतुरसेन शास्त्री— हृदय की परख, व्यभिचार, अमर अभिलाषा, आत्म हत्या, नीलमती,

समाचार पत्र—

1. हिंदी दैनिक अमर उजाला मेरठ से प्रकाशित
2. हिंदी दैनिक दैनिक जागरण मेरठ से प्रकाशित
3. दैनिक भास्कर मेरठ से प्रकाशित
4. नवभारत टाइम्स दिल्ली से प्रकाशित

पत्रिकाएं

1. सरिता दिल्ली से प्रकाशित
2. सारिका दिल्ली से प्रकाशित
3. सुमन सौरभ दिल्ली से प्रकाशित
4. अन्य सहायक ग्रंथ धर्मवीर भारती धर्मयुग
5. नामवरसिंह आलोचना— दिल्ली 2012
6. दलवीर सिंह चौहान वाक्सुधा— प्रकाशन लखनऊ

पी.एच.डी. शोध के दौरान

उपन्यासकार डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी से साक्षात्कार

प्रश्न: नमस्कार सर जी!

मेरा नाम श्रीमती लक्ष्मी देवी है। मैं आपके साहित्य पर पी.के. विश्वविद्यालय, शिवपुरी मध्य प्रदेश से शोध कर रही हूँ। मेरा शोध विषय है डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' के उपन्यासों में राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना।

यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे आपसे बातचीत करने का अवसर प्राप्त हुआ है। अपनी शोध के निमित्त मैं आपसे कुछ प्रश्न करना चाहती हूँ।

डॉ० निशंक जी: नमस्कार । आपका स्वागत है।

प्रश्न 1: सर जी आपको लेखन की प्रेरणा किससे प्राप्त हुई?

उत्तर: मेरा जन्म हिमालय की गोदी में हुआ है तो निश्चित रूप से हिमालय की संस्कृति ने मुझे प्रभावित ही नहीं किया बल्कि पोषित भी किया है। मैं इसी संस्कृति में पला और बड़ा भी हूँ। यहां की संस्कृति पूरे विश्व की संस्कृतियों में सबसे अनूठी है। यही संस्कृति सम्पूर्ण भारत की संस्कृति का भी प्रतिनिधित्व करती है। हिमालय मेरी प्रेरणा का स्रोत रहा है। निश्चित रूप से ही मुझे लिखने की प्रेरणा भी हिमालय से ही मिली है।

प्रश्न 2: सर जी! आपके प्रिय कवि या लेखक कौन है और क्यों?

उत्तर: वैसे तो काफी सारे नाम हैं, जिन्हें मैंने पढ़ा है और जिन्हें मैं पसंद करता हूँ, किंतु मुख्य रूप से राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, रामधारी सिंह 'दिनकर' मेरे प्रिय कवि रहे हैं।

प्रश्न 4: सर जी! आपके उपन्यासों में सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय चेतना भरपूर है। इस पर आपके विचार जानना चाहती हूँ।

उत्तर: भारतीय संस्कृति में जननी और जन्मभूमि को स्वर्ग से भी श्रेष्ठ माना जाता है। 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'। हम अपने राष्ट्र 'भारत माता' कहकर संबोधित करते हैं। राष्ट्र की प्रति यही अपनत्व, ममत्व और अनुराग राष्ट्रीय चेतना कहलाता है। राष्ट्र की एकता, अखण्डता, समृद्धि और विकास के लिए हर व्यक्ति के अंदर राष्ट्रीय चेतना का भाव होना जरूरी है। इसी भाव को जन-जन के मन में भरने का कार्य कहानी एवं उपन्यासों के माध्यम से करता हूँ।

प्रश्न 6: सर जी! आपका कार्य क्षेत्र एवं साहित्यिक लेखन प्रक्रिया का तालमेल पर आपके विचार प्रस्तुत करें।

उत्तर: देखिए मैंने अपने आप को कवि, लेखक और रचनाकार कभी नहीं माना, मैंने तो जो देखा और जो भोगा, उसको अपनी सीधी और सरल भाषा में आम जनमानस तक पहुंचाने की कोशिश की है। रही मेरे कार्य क्षेत्र की बात, तो राजनेता के रूप में मेरी व्यस्तता जरूर रहती है। सच बात तो यह है कि मुझे रोज ही अपने कार्यक्रमों, जनसंपर्क और जन संवादों में अनेकों कहानियों और उपन्यासों के प्लॉट मिल जाते हैं, लिखने के लिए मुझे अलग से सोचने की जरूरत कभी नहीं पड़ी।

मैंने कभी भी राजनीति को अपने लेखन पर और लेखन को अपनी राजनीति पर हावी नहीं होने दिया। मैं अधिकतम चार घंटे ही नींद लेता हूँ। मैंने अपने समय प्रबंधन में अपने लेखन के लिए एक निश्चित ही समय रखा हुआ है इसके अतिरिक्त यात्रा करते हुई कभी कार में, हवाई जहाज में, हेलीकॉप्टर में, और रेल में जब जब भी मुझे समय मिलता है, मैं कुछ ना कुछ लिखता ही रहता हूँ। लिखना मेरे लिए उतना ही जरूरी है जितना कि जीने के लिए भोजन करना।

प्रश्न 7. सर जी! भारत की युवा पीढ़ी को आप अपने उपन्यासों के माध्यम से क्या संदेश देना चाहते हैं?

उत्तर: हमारे युवाओं में स्वस्थ मन और सबल तन होना जरूरी है। युवा स्वस्थ और सबल होगा तो राष्ट्र भी स्वस्थ और सबल होगा। युवाओं को जीवन भर अपने राष्ट्र के विकास और समृद्धि लिए संघर्ष करना चाहिए। जीवन में कितना भी संघर्ष

करना पड़े, लेकिन भारत मां का मस्तक हमेशा ऊंचा रहना चाहिए। युवाओं को अपने गौरवशाली इतिहास और अपने महापुरुषों के बारे में ज्ञान होना चाहिए।

प्रश्न 8: सर जी! आपके उपन्यासों में देश प्रेम, देश भक्ति, राष्ट्रीय चेतना, भारत देश का गौरवमय इतिहास भरपूर पाया गया है। इस पर आप के विचार प्रस्तुत करें।

उत्तर: भारत का अपना गौरवमय इतिहास रहा है। नालंदा, तक्षशिला और विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालय इस देश में ज्ञान के केंद्र रहे हैं, जहां सारी दुनिया के लोग पढ़ने आते थे। भारत ही एकमात्र ऐसा देश है, जिसकी संस्कृति विश्व की श्रेष्ठ संस्कृति मानी जाती है। भारत की संस्कृति सदैव उदारवादी रही है। विश्व बंधुत्व की भावना इसकी विशेषता रही है। यह संपूर्ण विश्व के लिए मानवता एवं शांति का संदेश देती आई है। यहां पर अनेक जातियां और उनकी संस्कृतियां आईं, परंतु सब इस संस्कृति में मिलकर एक हो गईं। अनेकता में एकता यही भारतीय संस्कृति की विशेषता है। अनेक आक्रांता और आक्रमणकारी इस देश में आये, किंतु सब रसातल में लीन हो चुके हैं, लेकिन भारत आज भी अपनी संस्कृति के साथ अजर—अमर है और अजर—अमर रहेगा। हमे अपने गौरवशाली इतिहास, संस्कृति और परंपराओं पर गर्व होना चाहिए।

प्रश्न 9: सर जी! लेखन में आपकी मनपसंद विधा कौन सी है।

उत्तर: बता नहीं सकता कि पसंदीदा विधा कौन सी है। सभी विधाओं में मैंने समान रूप से लिखा है। अब तक 16 काव्य संग्रह, 12 उपन्यास, 14 कहानी संग्रह के अतिरिक्त व्यक्तित्व विकास पर चार, पर्यटन एवं संस्कृति पर पांच, बाल सहित कई पांच पुस्तकें सहित मेरी 110 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

प्रश्न 10: सर जी, आगे क्या कुछ नया लिख रहे हैं, मैं जानना चाहती हूँ।

उत्तर: रचनाकर्म जारी है, जो भी कुछ नया प्रकाशित होगा आपके पास जरूर पहुंचेगा। धन्यवाद सर जी, आपने मुझे समय दिया और मेरे सभी प्रश्नों का सुंदर ढंग से उत्तर दिया। मैं इसके लिए आपका आभार व्यक्त करती हूँ। डॉ. निशंक जी आपका भी बहुत-बहुत धन्यवाद एवं आभार।